धम्मगिरि-पालि-गन्थमाला

[देवनागरी]

दीघनिकाये

सुमङ्गलविलासिनी

ततियो भागो

पाथिकवग्गट्ठकथा

विपश्यना विशोधन विन्यास

इगतपुरी

१९९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मगिरि-पालि-गन्थमाला

[देवनागरी]

दीघनिकाये

सुमङ्गलविलासिनी

ततियो भागो

पाथिकवग्गट्ठकथा

विपश्यना विशोधन विन्यास

इगतपुरी

१९९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मगिरि-पालि-गन्थमाला –६
[देवनागरी]

दीघनिकाय एवं तत्संबंधित पालि साहित्य ग्यारह ग्रंथों में प्रकाशित किया गया है।

प्रथम आवृत्तिः १९९८
ताइवान में मुद्रित, १२०० प्रतियां

मूल्य : अनमोल
यह ग्रंथ निःशुल्क वितरण हेतु है, विक्रयार्थ नहीं।

सर्वाधिकार मुक्त। पुनर्मुद्रण का स्वागत है।
इस ग्रंथ के किसी भी अंश के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति आवश्यक नहीं।

ISBN 81-7414-055-7

यह ग्रंथ छट्ठ संगायन संस्करण के पालि ग्रंथ से लिप्यंतरित है।
*इस ग्रंथ को **विपश्यना विशोधन विन्यास** के भारत एवं म्यंमा स्थित पालि विद्वानों ने देवनागरी में लिप्यंतरित कर संपादित किया। कंप्यूटर में निवेशन और पेज-सेटिंग का कार्य **विपश्यना विशोधन विन्यास,** भारत में हुआ।*

प्रकाशक :
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी, महाराष्ट्र– ४२२ ४०३, भारत
फोन : (९१-२५५३) ८४०७६, ८४०८६ फैक्स : (९१-२५५३) ८४१७६

सह-प्रकाशक, मुद्रक एवं दायक :
दि कारपोरेट बॉडी ऑफ दि बुद्ध एज्युकेशनल फाउंडेशन
११ वीं मंजिल, ५५ हंग चाउ एस. रोड, सेक्टर १, ताइपे, ताइवान आर.ओ.सी.
फोन : (८८६-२)२३९५-११९८, फैक्स : (८८६-२)२३९१-३४१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Dhammagiri-Pāli-Ganthamālā

[Devanāgarī]

Dīghanikāye

Sumaṅgalavilāsinī

Tatiyo Bhāgo

Pāthikavagga-Aṭṭhakathā

Devanāgarī edition of
the Pāli text of the Chaṭṭha Saṅgāyana

Published by
Vipassana Research Institute
Dhammagiri, Igatpuri -422403, India

Co-published, Printed and Donated by
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11th Floor, 55 Hang Chow S. Rd. Sec 1, Taipei, Taiwan R.O.C.
Tel: (886-2)23951198, Fax: (886-2)23913415

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Dhammagiri-Pāli-Ganthamālā—6
[Devanāgarī]

The Dīgha Nikāya and related literature is being published together in eleven volumes.

First Edition: 1998
Printed in Taiwan, 1200 copies

Price: Priceless
This set of books is for free distribution, not to be sold.

No Copyright—Reproduction Welcome.
All parts of this set of books may be freely reproduced without prior permission.

ISBN 81-7414-055-7

*This volume is prepared from the Pāli text of the Chaṭṭha Saṅgāyana edition. Typing and typesetting on computers have been done by **Vipassana Research Institute**, India. MS was transcribed into Devanāgarī and thoroughly examined by the scholars of **Vipassana Research Institute** in Myanmar and India.*

Publisher:
Vipassana Research Institute
Dhammagiri, Igatpuri, Maharashtra - 422 403, India
Tel: (91-2553) 84076, 84086, 84302 Fax: (91-2553) 84176

Co-publisher, Printer and Donor:
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11th Floor, 55 Hang Chow S. Rd. Sec 1, Taipei, Taiwan R.O.C.
Tel: (886-2)23951198, Fax: 886-23913415

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसय-सूची

प्रस्तुत ग्रंथ
Present Text
संकेत-सूची

१. पाथिकसुत्तवण्णना १
सुनक्खत्तवत्थुवण्णना १
कोरक्खत्तियवत्थुवण्णना ४
अचेलकळारमट्टकवत्थुवण्णना ७
अचेलपाथिकपुत्तवत्थुवण्णना ८
इद्धिपाटिहारियकथावण्णना ९
अग्गञ्ञपञ्ञत्तिकथावण्णना १२
२. उदुम्बरिकसुत्तवण्णना १५
निग्रोधपरिब्बाजकवत्थुवण्णना १५
तपोजिगुच्छावादवण्णना १८
उपक्किलेसवण्णना १९
परिसुद्धपपटिकप्पत्तकथावण्णना २१
परिसुद्धतचप्पत्तादिकथावण्णना २२
निग्रोधस्सपज्झायनवण्णना २३
ब्रह्मचरियपरियोसानादिवण्णना २४
३. चक्कवत्तिसुत्तवण्णना २६
अत्तदीपसरणतावण्णना २६
दळ्हनेमिचक्कवत्तिराजकथावण्णना २९
चक्कवत्तिअरियवत्तवण्णना ३०
आयुवण्णादिपरिहानिकथावण्णना ३२
दसवस्सायुकसमयवण्णना ३३
आयुवण्णादिवड्ढनकथावण्णना ३५
सङ्खराजउप्पत्तिवण्णना ३५
भिक्खुनो आयुवण्णादिवड्ढनकथावण्णना ३७
४. अग्गञ्ञसुत्तवण्णना ३९
वासेट्ठभारद्वाजवण्णना ३९
चतुवण्णसुद्धिवण्णना ४२
रसपथविपातुभाववण्णना ४४
चन्दिमसूरियादिपातुभाववण्णना ४५
भूमिपप्पटकपातुभावादिवण्णना ४७
इत्थिपुरिसलिङ्गादिपातुभाववण्णना ४७
महासम्मतराजवण्णना ४८
ब्राह्मणमण्डलादिवण्णना ४९
दुच्चरितादिकथावण्णना ४९
बोधिपक्खियभावनावण्णना ५०
५. सम्पसादनीयसुत्तवण्णना ५१
सारिपुत्तसीहनादवण्णना ५१
कुसलधम्मदेसनावण्णना ५९
आयतनपण्णत्तिदेसनावण्णना ६१
गब्भावक्कन्तिदेसनावण्णना ६१
आदेसनविधादेसनावण्णना ६२
दस्सनसमापत्तिदेसनावण्णना ६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुग्गलपण्णत्तिदेसनावण्णना ६५
पधानदेसनावण्णना ६७
पटिपदादेसनावण्णना ६७
भस्ससमाचारादिवण्णना ६७
अनुसासनविधादिवण्णना ६९
अञ्ञथासत्थुगुणदस्सनादिवण्णना ७१
अनुयोगदानप्पकारवण्णना ७२
तिपिटकअन्तरधानकथा ७३
सासनअन्तरहितवण्णना ७४
अच्छरियअब्भुतवण्णना ७८

६. पासादिकसुत्तवण्णना ८०

निगण्ठनाटपुत्तकालङ्किरियवण्णना ८०
धम्मरतनपूजा ८२
असम्मासम्बुद्धप्पवेदितधम्मविनयवण्णना ८३
सम्मासम्बुद्धप्पवेदितधम्मविनयादिवण्णना ८४
सङ्गायितब्बधम्मादिवण्णना ८५
पच्चयानुञ्ञातकारणादिवण्णना ८६
सुखल्लिकानुयोगादिवण्णना ८६
पञ्हब्याकरणवण्णना ८७
अब्याकतट्ठानवण्णना ८९
पुब्बन्तसहगतदिट्ठिनिस्सयवण्णना ८९

७. लक्खणसुत्तवण्णना ९१

द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणवण्णना ९१
सुप्पतिट्ठितपादतालक्खणवण्णना ९२
पादतलचक्कलक्खणवण्णना ९५
आयतपण्हितादितिलक्खणवण्णना ९७
सत्तुस्सदतालक्खणवण्णना ९८
करचरणादिलक्खणवण्णना ९९
उस्सङ्खपादादिलक्खणवण्णना १०१
एणिजङ्घलक्खणवण्णना १०१
सुखुमच्छविलक्खणवण्णना १०२
सुवण्णवण्णलक्खणवण्णना १०४
कोसोहितवत्थगुय्हलक्खणवण्णना १०५
परिमण्डलादिलक्खणवण्णना १०६
सीहपुब्बद्धकायादिलक्खणवण्णना १०७
रसग्गसग्गितालक्खणवण्णना १०७
अभिनीलनेत्तादिलक्खणवण्णना १०८
उण्हीससीसलक्खणवण्णना १०८
एकेकलोमतादिलक्खणवण्णना १०९
चत्तालीसादिलक्खणवण्णना १०९
पहूतजिव्हादिलक्खणवण्णना १०९
सीहहनुलक्खणवण्णना ११०
समदन्तादिलक्खणवण्णना १११

८. सिङ्गालसुत्तवण्णना ११२

निदानवण्णना ११२
छदिसादिवण्णना ११४
चतुठानादिवण्णना ११४
छअपायमुखादिवण्णना ११५
सुरामेरयस्स छआदीनवादिवण्णना ११६
पापमित्तताय छआदीनवादिवण्णना ११७
मित्तपतिरूपकादिवण्णना ११९
सुहदमित्तादिवण्णना १२०
छद्दिसापटिच्छादनकण्डवण्णना १२२

९. आटानाटियसुत्तवण्णना १२९

पठमभाणवारवण्णना १२९
परित्तपरिकम्मकथा १३७

१०. सङ्गीतिसुत्तवण्णना १३९

उब्भतकनवसन्धागारवण्णना १३९
भिन्ननिगण्ठवत्थुवण्णना १४२
एककवण्णना १४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुकवण्णना १४४
तिकवण्णना १५२
चतुक्कवण्णना १७१
अरियवंसचतुक्कवण्णना १७३
सोतापत्तियङ्गादिचतुक्कवण्णना १८५
पञ्हब्याकरणादिचतुक्कवण्णना १८७
दक्खिणाविसुद्धादिचतुक्कवण्णना १८९
अत्तन्तपादिचतुक्कवण्णना १९०
पञ्चकवण्णना १९१
अभब्बट्ठानादिपञ्चकवण्णना १९२
पधानियङ्गपञ्चकवण्णना १९३
सुद्धावासादिपञ्चकवण्णना १९४
चेतोखिलपञ्चकवण्णना १९४
चेतसोविनिबन्धादिपञ्चकवण्णना १९५
निस्सरणियपञ्चकवण्णना १९५
विमुत्तायतनपञ्चकवण्णना १९६
छक्कवण्णना १९७
विवादमूलछक्कवण्णना १९८
निस्सरणियछक्कवण्णना १९९
अनुत्तरियादिछक्कवण्णना २००
सततविहारछक्कवण्णना २०१
अभिजातिछक्कवण्णना २०१
निब्बेधभागियछक्कवण्णना २०१
सत्तकवण्णना २०२
अधिकरणसमथसत्तकवण्णना २०४
अट्ठकवण्णना २०७
नवकवण्णना २०९
दसकवण्णना २१०
अकुसलकम्मपथदसकवण्णना २११
कुसलकम्मपथदसकवण्णना २१३
अरियवासदसकवण्णना २१४
असेक्खधम्मदसकवण्णना २१५
पञ्हसमोधानवण्णना २१६
११. दसुत्तरसुत्तवण्णना २१७
एकधम्मवण्णना २१८
द्वेधम्मवण्णना २२१
तयोधम्मवण्णना २२२
चत्तारोधम्मवण्णना २२३
पञ्चधम्मवण्णना २२४
छधम्मवण्णना २२५
सत्तधम्मवण्णना २२६
अट्ठधम्मवण्णना २२६
नवधम्मवण्णना २२७
दसधम्मवण्णना २२८
निगमनकथा २३०
सद्दानुक्कमणिका [१]
गाथानुक्कमणिका [५५]
संदर्भ-सूची [५७]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो!

चिरस्थायी हो सद्धर्म!

द्वेमे, भिक्खवे, धम्मा सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तन्ति। कतमे द्वे? सुनिक्खित्तञ्च पदब्यञ्जनं अत्थो च सुनीतो। सुनिक्खित्तस्स, भिक्खवे, पदब्यञ्जनस्स अत्थोपि सुनयो होति।

अ० नि० १.२.२१, अधिकरणवग्ग

भिक्षुओ, दो बातें हैं जो कि सद्धर्म के कायम रहने का, उसके विकृत न होने का, उसके अंतर्धान न होने का कारण बनती हैं। कौनसी दो बातें? धर्म वाणी सुव्यवस्थित, सुरक्षित रखी जाय और उसके सही, स्वाभाविक, मौलिक अर्थ कायम रखे जांय। भिक्षुओ, सुव्यवस्थित, सुरक्षित वाणी से अर्थ भी स्पष्ट, सही कायम रहते हैं।

...ये वो मया धम्मा अभिञ्ञा देसिता, तत्थ सब्बेहेव सङ्गम्म समागम्म अत्थेन अत्थं ब्यञ्जनेन ब्यञ्जनं सङ्गायितब्बं न विवदितब्बं, यथयिदं ब्रह्मचरियं अद्धनियं अस्स चिरट्ठितिकं...।

दी० नि० ३.१७७, पासादिकसुत्त

...जिन धर्मों को तुम्हारे लिए मैंने स्वयं अभिज्ञात करके उपदेशित किया है, उसे अर्थ और व्यंजन सहित सब मिल-जुल कर, बिना विवाद किये संगायन करो, जिससे कि यह धर्माचरण चिर स्थायी हो...।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत ग्रंथ

दीघनिकाय साधना की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह भगवान बुद्ध के चौंतीस दीर्घाकार उपदेशों का संग्रह है जो कि तीन खंडों में विभक्त है– **सीलक्खन्धवग्ग, महावग्ग, पाथिकवग्ग।** इन उपदेशों में शील, समाधि तथा प्रज्ञा पर सरल ढंग से प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। व्यावहारिक जीवन में आगत वस्तुओं एवं घटनाओं से जुड़ी हुई उपमाओं के सहारे इसमें साधना के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डाला गया है।

बुद्ध की देशना सरल तथा हृदयस्पर्शी हुआ करती थी। उनकी यह शैली व्याख्यात्मिका थी पर कभी-कभी धर्म को सुबोध बनाने के लिये 'चूळनिद्देस' जैसी अट्ठकथाओं का उन्होंने सृजन किया। प्रथम धर्मसंगीति में बुद्धवचन के संगायन के साथ इनका भी संगायन हुआ। तदनंतर उनके अन्य वचनों पर भी अट्ठकथाएं तैयार हुईं। जब स्थविर महेन्द्र बुद्ध वचन को लेकर श्रीलंका गये, तो वे अपने साथ इन अट्ठकथाओं को भी ले गये। श्रीलंकावासियों ने इन अट्ठकथाओं को सिंहली भाषा में सुरक्षित रखा। पांचवी सदी के मध्य में बुद्धघोष ने उनका पालि में पुनः परिवर्तन किया।

दीघनिकाय के अर्थों को प्रकाश में लाते हुए बुद्धघोष ने **'सुमङ्गलविलासिनी'** नामक दीघनिकाय-अट्ठकथा का प्रणयन किया। यह भी तीन भागों में विभक्त है। इसके तृतीय भाग– **पाथिकवग्ग-अट्ठकथा** का मुद्रित संस्करण आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह प्रकाशन विपश्यी साधकों और विशोधकों के लिए अत्यधिक लाभदायक सिद्ध होगा।

निदेशक,
विपश्यना विशोधन विन्यास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Dīghanikāye

Sumaṅgalavilāsinī

Tatiyo Bhāgo

Pāthikavagga-Aṭṭhakathā

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Ciraṃ Tiṭṭhatu Saddhammo!

May the Truth-based Dhamma Endure for A Long Time !

"Dveme, Bhikkhave, Dhammā saddhammassa ṭhitiyā asammosāya anantaradhānāya saṃvattanti. Katame dve? Sunikkhittañca padabyañjanaṃ attho ca sunīto. Sunikkhittassa, Bhikkhave, padabyañjanassa atthopi sunayo hoti."

A. N. 1. 2. 21, Adhikaraṇavagga

"There are two things, O monks, which make the Truth-based Dhamma endure for a long time, without any distortion and without (fear of) eclipse. Which two? Proper placement of words and their natural interpretation. Words properly placed help also in their natural interpretation."

...ye vo mayā dhammā abhiññā desitā, tattha sabbeheva saṅgamma samāgamma atthena atthaṃ byañjanena byañjanaṃ saṅgāyitabbaṃ na vivaditabbaṃ, yathayidaṃ brahmacariyaṃ addhaniyaṃ assa ciraṭṭhitikaṃ...

D. N. 3.177, Pāsādikasutta

...the dhammas (truths) which I have taught to you after realizing them with my super-knowledge, should be recited by all, in concert and without dissension, in a uniform version collating meaning with meaning and wording with wording. In this way, this teaching with pure practice will last long and endure for a long time...

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Present Text

The *Dīgha Nikāya* is an important collection from the perspective of meditation practice. It contains thirty-four important long discourses of the Buddha, divided into three sections—the *Sīlakkhandhavagga, Mahāvagga* and *Pāthikavagga.* In these discourses a lot of material related to *sīla, samādhi* and *pañña* is available. Various aspects of practice have been elucidated by means of similes drawn from familiar objects and the everyday life of the times.

The Buddha's teachings were simple and endearing. His distinctive style was self-explanatory but, still, in order to make the Dhamma all the more lucid, he introduced the use of *aṭṭhakathā* (commentaries), such as the *Cūḷaniddesa* and the *Mahāniddesa.* These were recited, along with the discourses of the Buddha, at the first Dhamma Council. In time the other *aṭṭhakathā* commenting on all his discourses came into being.

When Ven. Mahinda conveyed the words of the Buddha to Sri Lanka he also took the *aṭṭhakathā* with him. The Sinhalese monks preserved these *aṭṭhakathā* in their own language. Later on, when they had been lost in India, Ven. Buddhaghosa was able to translate them back to Pāli, during the middle of the fifth century A.D. He then compiled the commentary on the *Dīgha Nikāya* named *Sumaṅgalavilāsinī* in three volumes to help clarify its meaning.

We sincerely hope that this publication, *Pāthikavagga-Aṭṭhakathā* will provide immense benefit to practitioners of Vipassana as well as research scholars.

Director,
Vipassana Research Institute,
Igatpuri, India.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The Pāli alphabets in Devanāgarī and Roman characters:

Vowels:

अ	a	आ	ā	इ	i	ई	ī	उ	u	ऊ	ū	ए	e	ओ	o

Consonants with Vowel अ (a):

क	ka	ख	kha	ग	ga	घ	gha	ङ	ṅa
च	ca	छ	cha	ज	ja	झ	jha	ञ	ña
ट	ṭa	ठ	ṭha	ड	ḍa	ढ	ḍha	ण	ṇa
त	ta	थ	tha	द	da	ध	dha	न	na
प	pa	फ	pha	ब	ba	भ	bha	म	ma

य	ya	र	ra	ल	la	व	va	स	sa	ह	ha	ळ	ḷa

One nasal sound (niggahīta): अं aṃ

Vowels in combination with consonants "k" and "kh": (exceptions: रु ru, रू rū)

क	ka	का	kā	कि	ki	की	kī	कु	ku	कू	kū	के	ke	को	ko
ख	kha	खा	khā	खि	khi	खी	khī	खु	khu	खू	khū	खे	khe	खो	kho

Conjunct-consonants:

क्क	kka	क्ख	kkha	क्य	kya	क्र	kra	क्ल	kla	क्व	kva
ख्य	khya	ख्व	khva	ग्ग	gga	ग्घ	ggha	ग्य	gya	ग्र	gra
ग्व	gva	ङ्क	ṅka	ङ्ख	ṅkha	ङ्ख्य	ṅkhya	ङ्ग	ṅga	ङ्घ	ṅgha
च्च	cca	च्छ	ccha	ज्ज	jja	ज्झ	jjha	ञ्ञ	ñña	ञ्ह	ñha
ञ्च	ñca	ञ्छ	ñcha	ञ्ज	ñja	ञ्झ	ñjha	ट्ट	ṭṭa	ट्ठ	ṭṭha
ड्ड	ḍḍa	ड्ढ	ḍḍha	ण्ट	ṇṭa	ण्ठ	ṇṭha	ण्ड	ṇḍa	ण्ण	ṇṇa
ण्य	ṇya	ण्ह	ṇha	त्त	tta	त्थ	ttha	त्य	tya	त्र	tra
त्व	tva	द्द	dda	द्ध	ddha	द्म	dma	द्य	dya	द्र	dra
द्व	dva	ध्य	dhya	ध्व	dhva	न्त	nta	न्त्व	ntva	न्थ	ntha
न्द	nda	न्द्र	ndra	न्ध	ndha	न्न	nna	न्य	nya	न्व	nva
न्ह	nha	प्प	ppa	प्फ	ppha	प्य	pya	प्ल	pla	ब्ब	bba
ब्भ	bbha	ब्य	bya	ब्र	bra	म्प	mpa	म्फ	mpha	म्ब	mba
म्भ	mbha	म्म	mma	म्य	mya	म्ह	mha	य्य	yya	व्य	vya
य्ह	yha	ल्ल	lla	ल्य	lya	ल्ह	lha	व्ह	vha	स्त	sta
स्त्र	stra	स्न	sna	स्य	sya	स्स	ssa	स्म	sma	स्व	sva
ह्म	hma	ह्य	hya	ह्व	hva	ळ्ह	ḷha				

१ 1	२ 2	३ 3	४ 4	५ 5	६ 6	७ 7	८ 8	९ 9	० 0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Notes on the pronunciation of Pāli

Pāli was a dialect of northern India in the time of Gotama the Buddha. The earliest known script in which it was written was the Brāhmī script of the third century B.C. After that it was preserved in the scripts of the various countries where Pāli was maintained. In Roman script, the following set of diacritical marks has been established to indicate the proper pronunciation.

The alphabet consists of forty-one characters: eight vowels, thirty-two consonants and one nasal sound (niggahīta).

Vowels (a line over a vowel indicates that it is a long vowel):

a - as the "a" in about	ā - as the "a" in father
i - as the "i" in mint	ī - as the "ee" in see
u - as the "u" in put	ū - as the "oo" in cool

e is pronounced as the "ay" in day, except before double consonants when it is pronounced as the "e" in bed: *deva, mettā;*
o is pronounced as the "o" in no, except before double consonants when it is pronounced slightly shorter: *loka, phoṭṭhabba.*

Consonants are pronounced mostly as in English.

g - as the "g" in get
c - soft like the "ch" in church
v - a very soft -v- or -w-

All aspirated consonants are pronounced with an audible expulsion of breath following the normal unaspirated sound.

th - not as in 'three'; rather 't' followed by 'h' (outbreath)
ph - not as in 'photo'; rather 'p' followed by 'h' (outbreath)

The retroflex consonants: ṭ, ṭh, ḍ, ḍh, ṇ are pronounced with the tip of the tongueturned back; and ḷ is pronounced with the tongue retroflexed, almost a combined 'rl' sound.

The dental consonants: t, th, d, dh, n are pronounced with the tongue touching the upper front teeth.

The nasal sounds:

ṅ - guttural nasal, like -ng- as in singer
ñ - as in Spanish señor
ṇ - with tongue retroflexed
ṃ - as in hung, ring

Double consonants are very frequent in Pāli and must be strictly pronounced as long consonants, thus -nn- is like the English 'nn' in "unnecessary".

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकेत-सूची

अ० नि० = अङ्गुत्तरनिकाय
अट्ठ० = अट्ठकथा
अनु टी० = अनुटीका
अप० = अपदान
अभि० टी० = अभिनवटीका
इतिवु० = इतिवुत्तक
उदा० = उदान
कङ्खा० टी० = कङ्खावितरणी टीका
कथाव०=कथावत्थु
खु० नि० = खुद्दकनिकाय
खु० पा० = खुद्दकपाठ
चरिया० पि० = चरियापिटक
चूळनि० = चूळनिद्देस
चूळव० = चूळवग्ग
जा० = जातक
टी० = टीका
थेरगा०=थेरगाथा
थेरीगा०=थेरीगाथा
दी० नि० = दीघनिकाय
ध० प० = धम्मपद
ध० स० = धम्मसङ्गणी
धातु०=धातुकथा
नेत्ति० = नेत्तिपकरण
पटि० म० = पटिसम्भिदामग्ग
पट्ठा० = पट्ठान
परि० = परिवार
पाचि० = पाचित्तिय
परा० = पाराजिक
पु० टी० = पुराणटीका
पु० प० = पुग्गलपञ्ञत्ति
पे० व० = पेतवत्थु
पेटको० = पेटकोपदेस
बु० वं० = बुद्धवंस
म० नि० = मज्झिमनिकाय
महाव० = महावग्ग
महानि० = महानिद्देस
मि० प० = मिलिन्दपञ्ह
मूल टी० = मूलटीका
यम० = यमक
वि० व० = विमानवत्थु
वि० वि० टी० = विमतिविनोदनी टीका
वि० सङ्ग० अट्ठ० = विनयसङ्गह अट्ठकथा
विनय वि० टी० = विनयविनिच्छय टीका
विभं० = विभङ्ग
विसुद्धि० = विसुद्धिमग्ग
सं० नि० = संयुत्तनिकाय
सारत्थ० टी० = सारत्थदीपनी टीका
सु० नि० = सुत्तनिपात

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीघनिकाये

सुमङ्गलविलासिनी

तितियो भागो

पाथिकवग्गट्ठकथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।। नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।।

दीघनिकाये

पाथिकवग्गट्ठकथा

१. पाथिकसुत्तवण्णना

सुनक्खत्तवत्थुवण्णना

१. **एवं मे सुतं...पे०... मल्लेसु विहरतीति** पाथिकसुत्तं। तत्रायं अपुब्बपदवण्णना। **मल्लेसु विहरतीति** मल्ला नाम जानपदिनो राजकुमारा, तेसं निवासो एकोपि जनपदो रुळ्हीसद्देन "मल्ला"ति वुच्चति, तस्मिं मल्लेसु जनपदे। "अनुपियं नाम मल्लानं निगमो"ति **अनुपियन्ति** एवंनामको मल्लानं जनपदस्स एको निगमो, तं गोचरगामं कत्वा एकस्मिं छायूदकसम्पन्ने वनसण्डे विहरतीति अत्थो। अनोपियन्तिपि पाठो। **पाविसीति** पविट्ठो। भगवा पन न ताव पविट्ठो, पविसिस्सामीति निक्खन्तत्ता पन पाविसीति वुत्तो। यथा किं, यथा "गामं गमिस्सामी"ति निक्खन्तो पुरिसो तं गामं अपत्तोपि "कुहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्थन्नामो''ति वुत्ते ''गामं गतो''ति वुच्चति, एवं। **एतदहोसी**ति गामसमीपे ठत्वा सूरियं ओलोकेन्तस्स एतदहोसि। **अतिप्पगो खो**ति अतिविय पगो खो, न ताव कुलेसु यागुभत्तं निट्ठितन्ति। किं पन भगवा कालं अजानित्वा निक्खन्तोति? न अजानित्वा। पच्चूसकालेयेव हि भगवा ञाणजालं पत्थरित्वा लोकं वोलोकेन्तो ञाणजालस्स अन्तो पविट्ठं भग्गवगोत्तं छन्नपरिब्बाजकं दिस्वा ''अज्जाहं इमस्स परिब्बाजकस्स मया पुब्बे कतकारणं समाहरित्वा धम्मं कथेस्सामि, सा धम्मकथा अस्स मयि पसादप्पटिलाभवसेन सफला भविस्सती''ति ञत्वाव परिब्बाजकारामं पविसितुकामो अतिप्पगोव निक्खमि। तस्मा तत्थ पविसितुकामताय एवं चित्तं उप्पादेसि।

२. **एतदवोचा**ति भगवन्तं दिस्वा मानथद्धतं अकत्वा सत्थारं पच्चुग्गन्त्वा एतं **एतु खो, भन्ते**तिआदिकं वचनं अवोच। **इमं परियाय**न्ति इमं वारं, अज्ज इमं आगमनवारन्ति अत्थो। किं पन भगवा पुब्बेपि तत्थ गतपुब्बोति? न गतपुब्बो, लोकसमुदाचारवसेन पन एवमाह। लोकिया हि चिरस्सं आगतम्पि अनागतपुब्बम्पि मनापजातिकं आगतं दिस्वा ''कुतो भवं आगतो, चिरस्सं भवं आगतो, कथं ते इधागमनमग्गो ञातो, किं मग्गमूळ्होसी''तिआदीनि वदन्ति। तस्मा अयम्पि लोकसमुदाचारवसेन एवमाहाति वेदितब्बो। **इदमासन**न्ति अत्तनो निसिन्नासनं पप्फोटेत्वा सम्पादेत्वा ददमानो एवमाह। **सुनक्खत्तो लिच्छविपुत्तो**ति सुनक्खत्तो नाम लिच्छविराजपुत्तो। सो किर तस्स गिहिसहायो होति, कालेन कालं तस्स सन्तिकं गच्छति। **पच्चक्खातो**ति ''पच्चक्खामि दानाहं, भन्ते, भगवन्तं न दानाहं, भन्ते, भगवन्तं उद्दिस्स विहरिस्सामी''ति एवं पटिअक्खातो निस्सट्ठो परिच्चत्तो।

३. **भगवन्तं उद्दिस्सा**ति भगवा मे सत्था ''भगवतो अहं ओवादं पटिकरोमी''ति एवं अपदिसित्वा। **को सन्तो कं पच्चाचिक्खसी**ति याचको वा याचितकं पच्चाचिक्खेय्य, याचितको वा याचकं। त्वं पन नेव याचको न याचितको, एवं सन्ते, मोघपुरिस, को सन्तो को समानो कं पच्चाचिक्खसीति दस्सेति। **पस्स मोघपुरिसा**ति पस्स तुच्छपुरिस। **यावञ्च ते इदं अपरद्ध**न्ति यत्तकं इदं तव अपरद्धं, यत्तको ते अपराधो तत्तको दोसोति एवाहं भग्गव तस्स दोसं आरोपेसिन्ति दस्सेति।

४. **उत्तरिमनुस्सधम्मा**ति पञ्चसीलदससीलसङ्खाता मनुस्सधम्माउत्तरि। **इद्धिपाटिहारिय**न्ति इद्धिभूतं पाटिहारियं। **कते वा**ति कतम्हि वा। **यस्सत्थाया**ति यस्स दुक्खक्खयस्स अत्थाय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो निय्याति तक्करस्साति सो धम्मो तक्करस्स यथा मया धम्मो देसितो, तथा कारकस्स सम्मा पटिपन्नस्स पुग्गलस्स सब्बवट्टदुक्खक्खयाय अमतनिब्बानसच्छिकिरियाय गच्छति, न गच्छति, संवत्तति, न संवत्ततीति पुच्छति। **तत्र सुनक्खत्ता**ति तस्मिं सुनक्खत्त मया देसिते धम्मे तक्करस्स सम्मा दुक्खक्खयाय संवत्तमाने किं उत्तरिमनुस्सधम्मा इद्धिपाटिहारियं कतं करिस्सति, को तेन कतेन अत्थो। तस्मिञ्हि कतेपि अकतेपि मम सासनस्स परिहानि नत्थि, देवमनुस्सानञ्हि अमतनिब्बानसम्पापनत्थाय अहं पारमियो पूरेसिं, न पाटिहारियकरणत्थायाति पाटिहारियस्स निरत्थकतं दस्सेत्वा "पस्स, मोघपुरिसा"ति दुतियं दोसं आरोपेसि।

५. **अग्गञ्ञन्ति** लोकपञ्ञत्तिं। "इदं नाम लोकस्स अग्ग"न्ति एवं जानितब्बम्पि अग्गं मरियादं न तं पञ्ञपेतीति वदति। सेसमेत्थ अनन्तरवादानुसारेनेव वेदितब्बं।

६. **अनेकपरियायेन खो**ति इदं कस्मा आरद्धं। सुनक्खत्तो किर "भगवतो गुणं मक्खेस्सामि, "दोसं पञ्ञपेस्सामी"ति एत्तकं विप्पलपित्वा भगवतो कथं सुणन्तो अप्पतिट्ठो निरवो अट्ठासि।

अथ भगवा– "सुनक्खत्त, एवं त्वं मक्खिभावे ठितो सयमेव गरहं पापुणिस्ससी"ति मक्खिभावे आदीनवदस्सनत्थं **अनेकपरियायेना**तिआदिमाह। तत्थ **अनेकपरियायेना**ति अनेककारणेन। **वज्जिगामे**ति वज्जिराजानं गामे, वेसालीनगरे **नो विसही**ति नासक्खि। **सो अविसहन्तो**ति सो सुनक्खत्तो यस्स पुब्बे तिण्णं रतनानं वण्णं कथेन्तस्स मुखं नप्पहोति, सो दानि तेनेव मुखेन अवण्णं कथेति, अद्धा अविसहन्तो असक्कोन्तो ब्रह्मचरियं चरितुं अत्तनो बालताय अवण्णं कथेत्वा हीनायावत्तो। बुद्धो पन सुबुद्धोव, धम्मो स्वाक्खातोव, सङ्घो सुप्पटिपन्नोव। एवं तीणि रतनानि थोमेन्ता मनुस्सा तुय्हेव दोसं दस्सेस्सन्तीति। **इति खो ते**ति एवं खो ते, सुनक्खत्त, वत्तारो भविस्सन्ति। ततो एवं दोसे उप्पन्ने सत्था अतीतानागते अप्पटिहतञाणो, मय्हं एवं दोसो उप्पज्जिस्सतीति जानन्तोपि पुरेतरं न कथेसीति वत्तुं न लब्भतीति दस्सेति। **अपक्कमेवा**ति अपक्कमियेव, अपक्कन्तो वा चुतोति अत्थो। **यथा तं आपायिको**ति यथा अपाये निब्बत्तनारहो सत्तो अपक्कमेय्य, एवमेव अपक्कमीति अत्थो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोरक्खत्तियवत्थुवण्णना

७. **एकमिदाह**न्ति इमिना किं दस्सेति? इदं सुत्तं द्वीहि पदेहि आबद्धं इद्धिपाटिहारियं न करोतीति च अग्गञ्ञं न पञ्ञपेतीति च। तत्थ "अग्गञ्ञं न पञ्ञपेती"ति इदं पदं सुत्तपरियोसाने दस्सेस्सति। "पाटिहारियं न करोती"ति इमस्स पन पदस्स अनुसन्धिदस्सनवसेन अयं देसना आरद्धा।

तत्थ **एकमिदाह**न्ति एकस्मिं अहं। **समय**न्ति समये, एकस्मिं काले अहन्ति अत्थो। **थूलूसू**ति थूलू नाम जनपदो, तत्थ विहरामि। **उत्तरका नामा**ति इत्थिलिङ्गवसेन उत्तरकाति एवंनामको थूलूनं जनपदस्स निगमो, तं निगमं गोचरगामं कत्वाति अत्थो। **अचेलो**ति नग्गो। **कोरक्खत्तियो**ति अन्तोवङ्कपादो खत्तियो। **कुक्कुरवतिको**ति समादिन्नकुक्कुरवतो सुनखो विय घायित्वा खादति, उद्धनन्तरे निपज्जति, अञ्ञम्पि सुनखकिरियमेव करोति। **चतुक्कुण्डिको**ति चतुसङ्घट्टितो द्वे जाणूनि द्वे च कप्परे भूमियं ठपेत्वा विचरति। **छमानिकिण्ण**न्ति भूमियं निकिण्णं पक्खित्तं ठपितं। **भक्खस**न्ति भक्खं यंकिञ्चि खादनीयं भोजनीयं। **मुखेनेवा**ति हत्थेन अपरामसित्वा खादनीयं मुखेनेव खादति, भोजनीयम्पि मुखेनेव भुञ्जति। **साधुरूपो**ति सुन्दररूपो। **अयं समणो**ति अयं अरहं समणो एकोति। तत्थ **वता**ति पत्थनत्थे निपातो। एवं किरस्स पत्थना अहोसि "इमिना समणेन सदिसो अञ्ञो समणो नाम नत्थि, अयञ्हि अप्पिच्छताय वत्थं न निवासेति, 'एस पपञ्चो'ति मञ्ञमानो भिक्खाभाजनम्पि न परिहरति, छमानिकिण्णमेव खादति, अयं समणो नाम। मयं पन किं समणा"ति? एवं सब्बञ्ञुबुद्धस्स पच्छतो चरन्तोव इमं पापकं वितक्कं वितक्केसि।

एतदवोचाति भगवा किर चिन्तेसि "अयं सुनक्खत्तो पापज्झासयो, किं नु इमं दिस्वा चिन्तेसी"ति? अथेवं चिन्तेन्तो तस्स अज्झासयं विदित्वा "अयं मोघपुरिसो मादिसस्स सब्बञ्ञुनो पच्छतो आगच्छन्तो अचेलं अरहाति मञ्ञति, इधेव दानायं बालो निग्गहं अरहती"ति अनिवत्तित्वाव एतं **त्वम्पि नामा**तिआदिवचनमवोच। तत्थ **त्वम्पि नामा**ति गरहत्थे पिकारो। गरहन्तो हि नं भगवा "त्वम्पि नामा"ति आह। "त्वम्पि नाम एवं हीनज्झासयो, अहं समणो सक्यपुत्तियोति एवं पटिजानिस्ससी"ति अयञ्हेत्थ अधिप्पायो। **किं पन मं, भन्ते**ति मय्हं, भन्ते, किं गारय्हं दिस्वा भगवा "एवमाहा"ति पुच्छति। अथस्स भगवा आचिक्खन्तो "ननु ते"तिआदिमाह। **मच्छरायती**ति "मा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अञ्ञस्स अरहत्तं होतू''ति किं भगवा एवं अरहत्तस्स मच्छरायतीति पुच्छति। **न खो अहन्ति** अहं, मोघपुरिस, सदेवकस्स लोकस्स अरहत्तप्पटिलाभमेव पच्चासीसामि, एतदत्थमेव मे बहूनि दुक्करानि करोन्तेन पारमियो पूरिता, न खो अहं, मोघपुरिस, अरहत्तस्स मच्छरायामि। **पापकं दिट्ठिगतन्ति** न अरहन्तं अरहाति, अरहन्ते च अनरहन्तोति एवं तस्स दिट्ठि उप्पन्ना। तं सन्धाय ''पापकं दिट्ठिगत''न्ति आह। **यं खो पनाति** यं एतं अचेलं एवं मञ्ञसि। **सत्तमं दिवसन्ति** सत्तमे दिवसे। **अलसकेनाति** अलसकब्याधिना। **कालङ्करिस्सतीति** उद्धुमातउदरो मरिस्सति।

कालकञ्चिकाति तेसं असुरानं नामं। तेसं किर तिगावुतो अत्तभावो अप्पमंसलोहितो पुराणपण्णसदिसो कक्कटकानं विय अक्खीनि निक्खमित्वा मत्थके तिट्ठन्ति, मुखं सूचिपासकसदिसं मत्थकस्मिंयेव होति, तेन ओणमित्वा गोचरं गण्हन्ति। **बीरणत्थम्बकेति** बीरणतिणत्थम्बो तस्मिं सुसाने अत्थि, तस्मा तं बीरणत्थम्बकन्ति वुच्चति।

तेनुपसङ्कमीति भगवति एत्तकं वत्वा तस्मिं गामे पिण्डाय चरित्वा विहारं गते विहारा निक्खमित्वा उपसङ्कमि। **येन त्वन्ति** येन कारणेन त्वं। यस्मापि भगवता ब्याकतो, तस्माति अत्थो। **मत्तं मत्तन्ति** पमाणयुत्तं पमाणयुत्तं। ''मन्ता मन्ता''तिपि पाठो, पञ्ञाय उपपरिक्खित्वा उपपरिक्खित्वाति अत्थो। **यथा समणस्स गोतमस्साति** यथा समणस्स गोतमस्स मिच्छा वचनं अस्स, तथा करेय्यासीति आह। एवं वुत्ते अचेलो सुनखो विय उद्धनट्ठाने निपन्नो सीसं उक्खिपित्वा अक्खीनि उम्मीलेत्वा ओलोकेन्तो किं कथेसि ''समणो नाम गोतमो अम्हाकं वेरी विसभागो, समणस्स गोतमस्स उप्पन्नकालतो पट्ठाय मयं सूरिये उग्गते खज्जोपनका विय जाता। समणो गोतमो अम्हे, एवं वाचं वदेय्य अञ्ञथा वा। वेरिनो पन कथा नाम तच्छा न होति, गच्छ त्वं अहमेत्थ कत्तब्बं जानिस्सामी''ति वत्वा पुनदेव निपज्जि।

८. **एकद्वीहिकायाति** एकं द्वेति वत्वा गणेसि। **यथा तन्ति** यथा असद्दहमानो कोचि गणेय्य, एवं गणेसि। एकदिवसञ्च तिक्खत्तुं उपसङ्कमित्वा एको दिवसो अतीतो, द्वे दिवसा अतीताति आरोचेसि। **सत्तमं दिवसन्ति** सो किर सुनक्खत्तस्स वचनं सुत्वा सत्ताहं निराहारोव अहोसि। अथस्स सत्तमे दिवसे एको उपट्ठाको ''अम्हाकं कुलूपकसमणस्स अज्ज सत्तमो दिवसो गेहं अनागच्छन्तस्स अफासु नु खो जात''न्ति सूकरमंसं पचापेत्वा भत्तमादाय गन्त्वा पुरतो भूमियं निक्खिपि। अचेलो दिस्वा चिन्तेसि ''समणस्स गोतमस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कथा तच्छा वा अतच्छा वा होतु, आहारं पन खादित्वा सुहितस्स मे मरणम्पि सुमरण''न्ति द्वे हत्थे जण्णुकानि च भूमियं ठपेत्वा कुच्छिपूरं भुञ्जि। सो रत्तिभागे जीरापेतुं असक्कोन्तो अलसकेन कालमकासि। सचेपि हि सो ''न भुञ्जेय्य''न्ति चिन्तेय्य, तथापि तं दिवसं भुञ्जित्वा अलसकेन कालं करेय्य। अद्वेज्झवचना हि तथागताति।

बीरणत्थम्बकेति तित्थिया किर ''कालङ्कतो कोरक्खत्तियो''ति सुत्वा दिवसानि गणेत्वा इदं ताव सच्चं जातं, इदानि नं अञ्ञत्थ छड्डेत्वा ''मुसावादेन समणं गोतमं निग्गण्हिस्सामा''ति गन्त्वा तस्स सरीरं वल्लिया बन्धित्वा आकड्ढन्ता ''एत्थ छड्डेस्साम, एत्थ छड्डेस्सामा''ति गच्छन्ति। गतगतट्ठानं अङ्गणमेव होति। ते कड्ढमाना बीरणत्थम्बकसुसानंयेव गन्त्वा सुसानभावं ञत्वा ''अञ्ञत्थ छड्डेस्सामा''ति आकड्ढिंसु। अथ नेसं वल्लि छिज्जित्थ, पच्छा चालेतुं नासक्खिंसु। ते ततोव पक्कन्ता। तेन वुत्तं– ''बीरणत्थम्बके सुसाने छड्डेसु''न्ति।

९. **तेनुपसङ्कमी**ति कस्मा उपसङ्कमि? सो किर चिन्तेसि ''अवसेसं ताव समणस्स गोतमस्स वचनं समेति, मतस्स पन उट्ठाय अञ्ञेन सद्धिं कथनं नाम नत्थि, हन्दाहं गन्त्वा पुच्छामि। सचे कथेति, सुन्दरं। नो चे कथेति, समणं गोतमं मुसावादेन निग्गण्हिस्सामी''ति इमिना कारणेन उपसङ्कमि। **आकोटेसी**ति पहरि। **जानामि आवुसो**ति मतसरीरं उट्ठहित्वा कथेतुं समत्थं नाम नत्थि, इदं कथं कथेसीति? बुद्धानुभावेन। भगवा किर कोरक्खत्तियं असुरयोनितो आनेत्वा सरीरे अधिमोचेत्वा कथापेसि। तमेव वा सरीरं कथापेसि, अचिन्तेय्यो हि बुद्धविसयो।

१०. **तथेव तं विपाकन्**ति तस्स वचनस्स विपाकं तथेव, उदाहु नोति लिङ्गविपल्लासो कतो, तथेव सो विपाकोति अत्थो। केचि पन ''विपक्क''न्तिपि पठन्ति, निब्बत्तन्ति अत्थो।

एत्थ ठत्वा पाटिहारियानि समानेतब्बानि। सब्बानेव हेतानि पञ्च पाटिहारियानि होन्ति। ''सत्तमे दिवसे मरिस्सती''ति वुत्तं, सो तथेव मतो, इदं पठमं पाटिहारियं। ''अलसकेना''ति वुत्तं, अलसकेनेव मतो, इदं दुतियं। ''कालकञ्चिकेसु निब्बत्तिस्सती''ति वुत्तं, तत्थेव निब्बत्तो, इदं ततियं। ''बीरणत्थम्बके सुसाने छड्डेस्सन्ती''ति वुत्तं, तत्थेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छड्डितो, इदं चतुत्थं। "निब्बत्तट्ठानतो आगन्त्वा सुनक्खत्तेन सद्धिं कथेस्सती"ति वुत्तो, सो कथेसियेव, इदं पञ्चमं पाटिहारियं।

अचेलककळारमट्टकवत्थुवण्णना

११. **कळारमट्टको**ति निक्खन्तदन्तमत्तको। नाममेव वा तस्सेतं। **लाभग्गप्पत्तो**ति लाभग्गं पत्तो, अग्गलाभं पत्तोति वुत्तं होति। **यसग्गप्पत्तो**ति यसग्गं अग्गपरिवारं पत्तो। **वतपदानी**ति वतानियेव, वतकोट्ठासा वा। **समत्तानी**ति गहितानि। **समादिन्नानी**ति तस्सेव वेवचनं। **पुरत्थिमेन वेसालि**न्ति वेसालितो अविदूरे पुरत्थिमाय दिसाय। **चेतिय**न्ति यक्खचेतियट्ठानं। एस नयो सब्बत्थ।

१२. **येन अचेलको**ति भगवतो वत्तं कत्वा येन अचेलो कळारमट्टको तेनुपसङ्कमि। **पञ्हं अपुच्छी**ति गम्भीरं तिलक्खणाहतं पञ्हं पुच्छि। **न सम्पायासी**ति न सम्मा ञाणगतिया पायासि, अन्धो विय विसमट्ठाने तत्थ तत्थेव पक्खलि। नेव आदिं, न परियोसानमद्दस। अथ वा "न सम्पायासी"ति न सम्पादेसि, सम्पादेत्वा कथेतुं नासक्खि। **असम्पायन्तो**ति कबरक्खीनि परिवत्तेत्वा ओलोकेन्तो "असिक्खितकस्स सन्तिके वुट्ठोसि, अनोकासेपि पब्बजितो पञ्हं पुच्छन्तो विचरसि, अपेहि मा एतस्मिं ठाने अट्ठासी"ति वदन्तो। **कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पात्वाकासी**ति कुप्पनाकारं कोपं, दुस्सनाकारं दोसं, अतुट्ठाकारभूतं दोमनस्ससङ्खातं अप्पच्चयञ्च पाकटमकासि। **आसादिम्हसे**ति आसादियिम्ह घट्टयिम्ह। **मा वत नो अहोसी**ति अहो वत मे न भवेय्य। मं वत नो अहोसीतिपि पाठो। तत्थ **म**न्ति सामिवचनत्थे उपयोगवचनं, अहोसि वत नु ममाति अत्थो। एवञ्च पन चिन्तेत्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा "खमथ मे, भन्ते"ति तं खमापेसि। सोपि इतो पट्ठाय अञ्ञं किञ्चि पञ्हं नाम न पुच्छिस्ससीति। आम न पुच्छिस्सामीति। यदि एवं गच्छ, खमामि तेति तं उय्योजेसि।

१४. **परिहितो**ति परिदहितो निवत्थवत्थो। **सानुचारिको**ति अनुचारिका वुच्चति भरिया, सह अनुचारिकाय सानुचारिको, तं तं ब्रह्मचरियं पहाय सभरियोति अत्थो। **ओदनकुम्मास**न्ति सुरामंसतो अतिरेकं ओदनम्पि कुम्मासम्पि भुञ्जमानो। **यसा निहीनो**ति यं लाभग्गयसग्गं पत्तो, ततो परिहीनो हुत्वा। "कतं होति उत्तरिमनुस्सधम्मा इद्धिपाटिहारिय"न्ति इध सत्तवतपदातिक्कमवसेन सत्त पाटिहारियानि वेदितब्बानि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अचेलपाथिकपुत्तवत्थुवण्णना

१५. **पाथिकपुत्तो**ति पाथिकस्स पुत्तो। **ञाणवादेना** ति ञाणवादेन सद्धिं। **उपड्ढपथन्**ति योजनं चे, नो अन्तरे भवेय्य, गोतमो अड्ढयोजनं, अहं अड्ढयोजनं। एस नयो अड्ढयोजनादीसु। एकपदवारम्पि अतिक्कम्म गच्छतो जयो भविस्सति, अनागच्छतो पराजयोति। **ते तत्था**ति ते मयं तत्थ समागतट्ठाने। **तद्दिगुणं तद्दिगुणाह**न्ति ततो ततो दिगुणं दिगुणं अहं करिस्सामि, भगवता सद्धिं पाटिहारियं कातुं असमत्थभावं जानन्तोपि "उत्तमपुरिसेन सद्धिं पट्ठपेत्वा असक्कुणन्तस्सापि पासंसो होती"ति ञत्वा एवमाह। नगरवासिनोपि तं सुत्वा "असमत्थो नाम एवं न गज्जति, अद्धा अयम्पि अरहा भविस्सती"ति तस्स महन्तं सक्कारमकंसु।

१६. **येनाहं तेनुपसङ्कमी**ति "सुनक्खत्तो किर पाथिकपुत्तो एवं वदती"ति अस्सोसि। अथस्स हीनज्झासयत्ता हीनदस्सनाय चित्तं उदपादि।

सो भगवतो वत्तं कत्वा भगवति गन्धकुटिं पविट्ठे पाथिकपुत्तस्स सन्तिकं गन्त्वा पुच्छि "तुम्हे किर एवरूपिं कथं कथेथा"ति? "आम, कथेमा"ति। यदि एवं "मा भायित्थ विस्सत्था पुनप्पुनं एवं वदथ, अहं समणस्स गोतमस्स उपट्ठाको, तस्स विसयं विजानामि, तुम्हेहि सद्धिं पाटिहारियं कातुं न सक्खिस्सति, अहं समणस्स गोतमस्स कथेत्वा भयं उप्पादेत्वा तं अञ्ञतो गहेत्वा गमिस्सामि, तुम्हे मा भायित्था"ति तं अस्सासेत्वा भगवतो सन्तिकं गतो। तेन वुत्तं "येनाहं तेनुपसङ्कमी"ति। **तं वाच**न्तिआदीसु "अहं अबुद्धोव समानो बुद्धोम्हीति विचरिं, अभूतं मे कथितं नाहं बुद्धो"ति वदन्तो तं वाचं पजहति नाम। रहो निसीदित्वा चिन्तयमानो "अहं 'एत्तकं कालं अबुद्धोव समानो बुद्धोम्ही'ति विचरिं, इतो दानि पट्ठाय नाहं बुद्धो"ति चिन्तयन्तो तं चित्तं पजहति नाम। "अहं 'एत्तकं कालं अबुद्धोव समानो बुद्धोम्ही'ति पापकं दिट्ठिं गहेत्वा विचरिं, इतो दानि पट्ठाय इमं दिट्ठिं पजहामी"ति पजहन्तो तं दिट्ठिं पटिनिस्सज्जति नाम। एवं अकरोन्तो पन तं वाचं अप्पहाय तं चित्तं अप्पहाय तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सज्जित्वाति वुच्चति। **विपतेय्या**ति बन्धना मुत्ततालपक्कं विय गीवतो पतेय्य, सत्तधा वा पन फलेय्य।

१७. **रक्खतेत**न्ति रक्खतु एतं। **एकंसेना**ति निप्परियायेन। **ओधारिता**ति भासिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अचेलो च, भन्ते, पाथिकपुत्तोति एवं एकंसेन भगवतो वाचाय ओधारिताय सचे अचेलो पाथिकपुत्तो। **विरूपरूपेनाति** विगतरूपेन विगच्छितसभावेन रूपेन अत्तनो रूपं पहाय अदिस्समानेन कायेन। सीहब्यग्घादिवसेन वा विविधरूपेन सम्मुखीभावं आगच्छेय्य। **तदस्स भगवतो मुसाति** एवं सन्ते भगवतो तं वचनं मुसा भवेय्याति मुसावादेन निग्गण्हाति। ठपेत्वा किर एतं न अञ्ञेन भगवा मुसावादेन निग्गहितपुब्बोति।

१८. **द्वयगामिनीति** सरूपेन अत्थिभावं, अत्थेन नत्थिभावन्ति एवं द्वयगामिनी। अलिकतुच्छनिप्फलवाचाय एतं अधिवचनं।

१९. **अजितोपि नाम लिच्छवीनं सेनापतीति** सो किर भगवतो उपट्ठाको अहोसि, सो कालमकासि। अथस्स सरीरकिच्चं कत्वा मनुस्सा पाथिकपुत्तं पुच्छिंसु "कुहिं निब्बत्तो सेनापती"ति? सो आह– "महानिरये निब्बत्तो"ति। इदञ्च पन वत्वा पुन आह "तुम्हाकं सेनापति मम सन्तिकं आगम्म अहं तुम्हाकं वचनमकत्वा समणस्स गोतमस्स वादं पतिट्ठपेत्वा निरये निब्बत्तोम्ही"ति परोदित्थाति। **तेनुपसङ्कमि दिवाविहारायाति** एत्थ "पाटिहारियकरणत्थाया"ति कस्मा न वदति? अभावा। सम्मुखीभावोपि हिस्स तेन सद्धिं नत्थि, कुतो पाटिहारियकरणं, तस्मा तथा अवत्वा "दिवाविहाराया"ति आह।

इद्धिपाटिहारियकथावण्णना

२०. **गहपतिनेचयिकाति** गहपति महासाला। तेसञ्हि महाधनधञ्ञनिचयो, तस्मा "नेचयिका"ति वुच्चन्ति। **अनेकसहस्साति** सहस्सेहिपि अपरिमाणगणना। एवं महतिं किर परिसं ठपेत्वा सुनक्खत्तं अञ्ञो सन्निपातेतुं समत्थो नत्थि। तेनेव भगवा एत्तकं कालं सुनक्खत्तं गहेत्वा विचरि।

२१. **भयन्ति** चित्तुत्रासभयं। **छम्भितत्तन्ति** सकलसरीरचलनं। **लोमहंसोति** लोमानं उद्धग्गभावो। सो किर चिन्तेसि– "अहं अतिमहन्तं कथं कथेत्वा सदेवके लोके अग्गपुग्गलेन सद्धिं पटिविरुद्धो, मय्हं खो पनब्भन्तरे अरहत्तं वा पाटिहारियकरणहेतु वा नत्थि, समणो पन गोतमो पाटिहारियं करिस्सति, अथस्स पाटिहारियं दिस्वा महाजनो 'त्वं दानि पाटिहारियं कातुं असक्कोन्तो कस्मा अत्तनो पमाणमजानित्वा लोके अग्गपुग्गलेन सद्धिं पटिमल्लो हुत्वा गज्जसी'ति कट्ठलेड्डुदण्डादीहि विहेठेस्सती"ति। तेनस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाजनसन्निपातञ्चेव तेन भगवतो च आगमनं सुत्वा भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा उदपादि। सो ततो दुक्खा मुच्चितुकामो तिन्दुकखाणुकपरिब्बाजकारामं अगमासि। तमत्थं दस्सेतुं **अथ खो भगवा**तिआदिमाह। तत्थ **उपसङ्कमी**ति न केवलं उपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा पन दूरं अड्ढयोजनन्तरं परिब्बाजकारामं पविट्ठो। तत्थपि चित्तस्सादं अलभमानो अन्तन्तेन आविज्झित्वा आरामपच्चन्ते एकं गहनट्ठानं उपधारेत्वा पासाणफलके निसीदि। अथ भगवा चिन्तेसि– "सचे अयं बालो कस्सचिदेव कथं गहेत्वा इधागच्छेय्य, मा नस्सतु बालो"ति "निसिन्नपासाणफलकं तस्स सरीरे अल्लीनं होतू"ति अधिट्ठासि। सह अधिट्ठानचित्तेन तं तस्स सरीरे अल्लीयि। सो महाअद्दुबन्धनबद्धो विय छिन्नपादो विय च अहोसि।

अस्सोसीति इतो चितो च पाथिकपुत्तं परियेसमाना परिसा तस्स अनुपदं गन्त्वा निसिन्नट्ठानं ञत्वा आगतेन अञ्ञतरेन पुरिसेन "तुम्हे कं परियेसथा"ति वुत्ते पाथिकपुत्तन्ति। सो "तिन्दुकखाणुकपरिब्बाजकारामे निसिन्नो"ति वुत्तवचनेन अस्सोसि।

२२. **संसप्पती**ति ओसीदति। तत्थेव सञ्चरति। **पावळा** वुच्चति आनिसदट्ठिका।

२३. **पराभूतरूपो**ति पराजितरूपो, विनट्ठरूपो वा।

२५. **गोयुगेही**ति गोयुत्तेहि सतमत्तेहि वा सहस्समत्तेहि वा युगेहि। **आविञ्छेय्यामा**ति आकड्ढेय्याम। **छिज्जेय्यु**न्ति छिन्देय्युं। पाथिकपुत्तो वा बन्धट्ठाने छिज्जेय्य।

२६. **दारुपत्तिकन्तेवासी**ति दारुपत्तिकस्स अन्तेवासी। तस्स किर एतदहोसि "तिट्ठतु ताव पाटिहारियं, समणो गोतमो 'अचेलो पाथिकपुत्तो आसनापि न वुट्ठहिस्सती'ति आह। हन्दाहं गन्त्वा येन केनचि उपायेन तं आसना वुट्ठापेमि। एत्तावता च समणस्स गोतमस्स पराजयो भविस्सती"ति। तस्मा एवमाह।

२७. **सीहस्सा**ति चत्तारो सीहा तिणसीहो च काळसीहो च पण्डुसीहो च केसरसीहो च। तेसं चतुन्नं सीहानं केसरसीहो अग्गतं गतो, सो इधाधिप्पेतो। **मिगरञ्ञो**ति सब्बचतुप्पदानं रञ्ञो। **आसयन्ति** निवासं। **सीहनादन्ति** अभीतनादं। **गोचराय पक्कमेय्यन्ति** आहारत्थाय पक्कमेय्यं। **वरं वरन्ति** उत्तमुत्तमं, थूलं थूलन्ति अत्थो। **मुदुमंसानी**ति मुदूनि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंसानि। "मधुमंसानी"तिपि पाठो, मधुरमंसानीति अत्थो। **अज्झुपेय्य**न्ति उपगच्छेय्यं। **सीहनादं नदित्वा**ति ये दुब्बला पाणा, ते पलायन्तूति अत्तनो सूरभावसन्निस्सितेन कारुञ्ञेन नदित्वा।

२८. **विघाससंवड्ढो**ति विघासेन संवड्ढो, विघासं भक्खिता तिरित्तमंसं खादित्वा वड्ढितो। **दित्तो**ति दप्पितो थूलसरीरो। **बलवा**ति बलसम्पन्नो। **एतदहोसी**ति कस्मा अहोसि? अस्मिमानदोसेन।

तत्रायं अनुपुब्बिकथा– एकदिवसं किर सो सीहो गोचरतो निवत्तमानो तं सिङ्गालं भयेन पलायमानं दिस्वा कारुञ्ञजातो हुत्वा "वयस, मा भायि, तिट्ठ को नाम त्व"न्ति आह। जम्बुको नामाहं सामीति। वयस, जम्बुक, इतो पट्ठाय मं उपट्ठातुं सक्खिस्ससीति। उपट्ठहिस्सामीति। सो ततो पट्ठाय उपट्ठाति। सीहो गोचरतो आगच्छन्तो महन्तं महन्तं मंसखण्डं आहरति। सो तं खादित्वा अविदूरे पासाणपिट्ठे वसति। सो कतिपाहच्चयेनेव थूलसरीरो महाखन्धो जातो। अथ नं सीहो अवोच– "वयस, जम्बुक, मम विजम्भनकाले अविदूरे ठत्वा 'विरोच सामी'ति वत्तुं सक्खिस्ससी"ति। सक्कोमि सामीति। सो तस्स विजम्भनकाले तथा करोति। तेन सीहस्स अतिरेको अस्मिमानो होति।

अथेकदिवसं जरसिङ्गालो उदकसोण्डियं पानीयं पिवन्तो अत्तनो छायं ओलोकेन्तो अद्दस अत्तनो थूलसरीरतञ्चेव महाखन्धतञ्च। दिस्वा 'जरसिङ्गालोस्मी'ति मनं अकत्वा "अहम्पि सीहो जातो"ति मञ्ञि। ततो अत्तनाव अत्तानं एतदवोच– "वयस, जम्बुक, युत्तं नाम तव इमिना अत्तभावेन परस्स उच्छिट्ठमंसं खादितुं, किं त्वं पुरिसो न होसि, सीहस्सापि चत्तारो पादा द्वे दाठा द्वे कण्णा एकं नङ्गुट्ठं, तवपि सब्बं तथेव, केवलं तव केसरभारमत्तमेव नत्थी"ति। तस्सेवं चिन्तयतो अस्मिमानो वड्ढि। अथस्स तेन अस्मिमानदोसेन एतं "को चाह"न्तिआदि मञ्ञितमहोसि। तत्थ **को चाह**न्ति अहं को, सीहो मिगराजा को, न मे ञाति, न सामिको, किमहं तस्स निपच्चकारं करोमीति अधिप्पायो। **सिङ्गालकंयेवा**ति सिङ्गालरवमेव। **भेरण्डकंयेवा**ति अप्पियअमनापसद्दमेव। **के च छवे सिङ्गाले**ति को च लामको सिङ्गालो। **के पन सीहनादे**ति को पन सीहनादो सिङ्गालस्स च सीहनादस्स च को सम्बन्धोति अधिप्पायो। **सुगतापदानेसू**ति सुगतलक्खणेसु। सुगतस्स सासनसम्भूतासु तीसु सिक्खासु। कथं पनेस तत्थ जीवति? एतस्स हि चत्तारो पच्चये

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ददमाना सीलादिगुणसम्पन्नानं सम्बुद्धानं देमाति देन्ति, तेन एस अबुद्धो समानो बुद्धानं नियामितपच्चये परिभुञ्जन्तो सुगतापदानेसु जीवति नाम। **सुगतातिरित्तानी**ति तेसं किर भोजनानि ददमाना बुद्धानञ्च बुद्धसावकानञ्च दत्वा पच्छा अवसेसं सायन्हसमये देन्ति। एवमेस सुगतातिरित्तानि भुञ्जति नाम। **तथागते**ति तथागतं अरहन्तं सम्मासम्बुद्धं आसादेतब्बं घट्टयितब्बं। अथ वा "तथागते"तिआदीनि उपयोगबहुवचनानेव। **आसादेतब्ब**न्ति इदम्पि बहुवचनमेव एकवचनं विय वुत्तं। **आसादना**ति अहं बुद्धेन सद्धिं पाटिहारियं करिस्सामीति घट्टना।

२९. **समेक्खियाना**ति समेक्खित्वा, मञ्ञित्वाति अत्थो। **अमञ्ञी**ति पुन अमञ्ञित्थ **कोत्थू**ति सिङ्गालो।

३०. **अत्तानं विघासे समेक्खिया**ति सोण्डियं उच्छिट्ठोदके थूलं अत्तभावं दिस्वा। **याव अत्तानं न पस्सती**ति याव अहं सीहविघाससंवड्ढितको जरसिङ्गालोति एवं यथाभूतं अत्तानं न पस्सति। **ब्यग्घोति मञ्ञती**ति सीहोहमस्मीति मञ्ञति, सीहेन वा समानबलो ब्यग्घोयेव अहन्ति मञ्ञति।

३१. **भुत्वान भेके**ति आवाटमण्डूके खादित्वा। **खलमूसिकायो**ति खलेसु मूसिकायो च खादित्वा। **कटसीसु खित्तानि च कोणपानी**ति सुसानेसु छड्डितकुणपानि च खादित्वा। **महावने**ति महन्ते वनस्मिं। **सुञ्ञवने**ति तुच्छवने। **विवड्ढो**ति वड्ढितो। **तथेव सो सिङ्गालकं अनदी**ति एवं संवड्ढोपि मिगराजाहमस्मीति मञ्ञित्वापि यथा पुब्बे दुब्बलसिङ्गालकाले, तथेव सो सिङ्गालरवंयेव अरवीति। इमायपि गाथाय भेकादीनि भुत्वा वड्ढितसिङ्गालो विय लाभसक्कारगिद्धो त्वन्ति पाथिकपुत्तमेव घट्टेसि।

नागेहीति हत्थीहि। **महाबन्धना**ति महता किलेसबन्धना मोचेत्वा। **महाविदुग्गा**ति महाविदुग्गं नाम चत्तारो ओघा। ततो उद्धरित्वा निब्बानथले पतिट्ठपेत्वा।

अग्गञ्ञपञ्ञत्तिकथावण्णना

३६. इति "भगवा एत्तकेन कथामग्गेन पाटिहारियं न करोती"ति पदस्स अनुसन्धिं दस्सेत्वा इदानि "न अग्गञ्ञं पञ्ञापेती"ति इमस्स अनुसन्धिं दस्सेन्तो **अग्गञ्ञञ्चाह**न्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसनं आरभि। तत्थ **अग्गञ्ञञ्चाहन्ति** अहं, भग्गव, अग्गञ्ञञ्च पजानामि लोकुप्पत्तिचरियवंसञ्च। **तञ्च पजानामीति** न केवलं अग्गञ्ञमेव, तञ्च अग्गञ्ञं पजानामि। ततो च उत्तरितरं सीलसमाधितो पट्ठाय याव सब्बञ्ञुतञ्ञाणा पजानामि। **तञ्च पजानं न परामसामीति** तञ्च पजानन्तोपि अहं इदं नाम पजानामीति तण्हादिट्ठिमानवसेन न परामसामि। नत्थि तथागतस्स परामासोति दीपेति। **पच्चत्तञ्ञेव निब्बुति विदिताति** अत्तनायेव अत्तनि किलेसनिब्बानं विदितं। **यदभिजानं तथागतोति** यं किलेसनिब्बानं जानन्तो तथागतो। **नो अनयं आपज्जतीति** अविदितनिब्बाना तित्थिया विय अनयं दुक्खं ब्यसनं नापज्जति।

३७. इदानि यं तं तित्थिया अग्गञ्ञं पञ्ञपेन्ति, तं दस्सेन्तो **सन्ति भग्गवाति**आदिमाह। तत्थ **इस्सरकुत्तं ब्रह्मकुत्तन्ति** इस्सरकतं ब्रह्मकतं, इस्सरनिम्मितं ब्रह्मनिम्मितन्ति अत्थो। ब्रह्मा एव हि एत्थ आधिपच्चभावेन इस्सरोति वेदितब्बो। **आचरियकन्ति** आचरियभावं आचरियवादं। तत्थ आचरियवादो अग्गञ्ञं। अग्गञ्ञं पन एत्थ देसितन्ति कत्वा सो अग्गञ्ञं त्वेव वुत्तो। **कथं विहितकन्ति** केन विहितं किन्ति विहितं। सेसं ब्रह्मजाले वित्थारितनयेनेव वेदितब्बं।

४१. खिड्डापदोसिकन्ति खिड्डापदोसिकमूलं।

४७. असताति अविज्जमानेन, असंविज्जमानट्ठेनाति अत्थो। **तुच्छाति** तुच्छेन अन्तोसारविरहितेन। **मुसाति** मुसावादेन। **अभूतेनाति** भूतत्थविरहितेन। **अब्भाचिक्खन्तीति** अभिआचिक्खन्ति। **विपरीतोति** विपरीतसञ्ञो विपरीतचित्तो। **भिक्खवो चाति** न केवलं समणो गोतमोयेव, ये च अस्स अनुसिट्ठिं करोन्ति, ते भिक्खू च विपरीता। अथ यं सन्धाय विपरीतोति वदन्ति, तं दस्सेतुं **समणो गोतमोति**आदि वुत्तं। **सुभं विमोक्खन्ति** वण्णकसिणं। **असुभन्त्वेवाति** सुभञ्च असुभञ्च सब्बं असुभन्ति एवं पजानाति। **सुभन्त्वेव तस्मिं समयेति** सुभन्ति एव च तस्मिं समये पजानाति, न असुभं। **भिक्खवो चाति** ये ते एवं वदन्ति, तेसं भिक्खवो च अन्तेवासिकसमणा विपरीता। **पहोतीति** समत्थो पटिबलो।

४८. दुक्करं खोति अयं परिब्बाजको यदिदं "एवंपसन्नो अहं, भन्ते"तिआदिमाह, तं साठेय्येन कोहञ्ञेन आह। एवं किरस्स अहोसि– "समणो गोतमो मय्हं एत्तकं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मकथं कथेसि, तमहं सुत्वापि पब्बजितुं न सक्कोमि, मया एतस्स सासनं पटिपन्नसदिसेन भवितुं वट्टती''ति। ततो सो साठेय्येन कोहञ्ञेन एवमाह। तेनस्स भगवा मम्मं घट्टेन्तो विय ''दुक्करं खो एतं, भग्गव तया अञ्ञदिट्ठिकेना''तिआदिमाह। तं पोट्ठपादसुत्ते वुत्तत्थमेव। **साधुकमनुरक्खाति** सुट्ठु अनुरक्ख।

इति भगवा पसादमत्तानुरक्खणे परिब्बाजकं नियोजेसि। सोपि एवं महन्तं सुत्तन्तं सुत्वापि नासक्खि किलेसक्खयं कातुं। देसना पनस्स आयतिं वासनाय पच्चयो अहोसि। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवाति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

पाथिकसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. उदुम्बरिकसुत्तवण्णना

निग्रोधपरिब्बाजकवत्थुवण्णना

४९. **एवं मे सुत**न्ति उदुम्बरिकसुत्तं। तत्रायमपुब्बपदवण्णना– **परिब्बाजको**ति छन्नपरिब्बाजको। **उदुम्बरिकाय परिब्बाजकारामे**ति उदुम्बरिकाय देविया सन्तके परिब्बाजकारामे। **सन्धानो** ति तस्स नामं। अयं पन महानुभावो परिवारेत्वा विचरन्तानं पञ्चन्नं उपासकसतानं अग्गपुरिसो अनागामी भगवता महापरिसमज्झे एवं संवण्णितो–

"छहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो सन्धानो गहपति तथागते निट्ठङ्गतो सद्धम्मे इरियति। कतमेहि छहि ? बुद्धे अवेच्चप्पसादेन धम्मे अवेच्चप्पसादेन सङ्घे अवेच्चप्पसादेन अरियेन सीलेन अरियेन ञाणेन अरियाय विमुत्तिया। इमेहि खो, भिक्खवे, छहि अङ्गेहि समन्नागतो सन्धानो गहपति तथागते निट्ठङ्गतो सद्धम्मे इरियती"ति (अ० नि० २.६.१२०-१३९)।

सो पातोयेव उपोसथङ्गानि अधिट्ठाय पुब्बण्हसमये बुद्धप्पमुखस्स सङ्घस्स दानं दत्वा भिक्खूसु विहारं गतेसु घरे खुद्दकमहल्लकानं दारकानं सद्देन उब्बाळ्हो सत्थु सन्तिके "धम्मं सोस्सामी"ति निक्खन्तो। तेन वुत्तं **दिवा दिवस्स राजगहा निक्खमी**ति। तत्थ **दिवा दिवस्सा**ति दिवसस्स दिवा नाम मज्झन्हातिक्कमो, तस्मिं दिवसस्सापि दिवाभूते अतिक्कन्तमत्ते मज्झन्हिके निक्खमीति अत्थो। **पटिसल्लीनो**ति ततो ततो रूपादिगोचरतो चित्तं पटिसंहरित्वा निलीनो झानरतिसेवनावसेन एकीभावं गतो। **मनोभावनीयान**न्ति मनवड्ढकानं। ये च आवज्जतो मनसिकरोतो चित्तं विनीवरणं होति उन्नमति वड्ढति।

५०. **उन्नादिनिया**तिआदीनि पोट्ठपादसुत्ते वित्थारितनयेनेव वेदितब्बानि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१. **यावताति** यत्तका। **अयं तेसं अञ्ञतरोति** अयं तेसं अब्भन्तरो एको सावको, भगवतो किर सावका गिहिअनागामिनोयेव पञ्चसता राजगहे पटिवसन्ति। येसं एकेकस्स पञ्च पञ्च उपासकसतानि परिवारा, ते सन्धाय "अयं तेसं अञ्ञतरो"ति आह। **अप्पेव नामाति** तस्स उपसङ्कमनं पत्थयमानो आह। पत्थनाकारणं पन पोट्ठपादसुत्ते वुत्तमेव।

५२. **एतदवोचाति** आगच्छन्तो अन्तरामग्गेयेव तेसं कथाय सुतत्ता एतं **अञ्ञथा खो इमेति**आदिवचनं अवोच। तत्थ **अञ्ञतित्थियाति** दस्सनेनपि आकप्पेनपि कुत्तेनपि आचारेनपि विहारेनपि इरियापथेनपि अञ्ञे तित्थियाति अञ्ञतित्थिया। **सङ्गम्म समागम्माति** सङ्गन्त्वा समागन्त्वा रासि हुत्वा निसिन्नट्ठाने। **अरञ्ञवनपत्थानीति** अरञ्ञवनपत्थानि गामूपचारतो मुत्तानि दूरसेनासनानि। **पन्तानीति** दूरतरानि मनुस्सूपचारविरहितानि। **अप्पसद्दानीति** विहारूपचारेन गच्छतो अद्धिकजनस्सपि सद्देन मन्दसद्दानि। **अप्पनिग्घोसानीति** अविभावितत्थेन निग्घोसेन मन्दनिग्घोसानि। **विजनवातानीति** अन्तोसञ्चारिनो जनस्स वातेन विगतवातानि। **मनुस्सराहस्सेय्यकानीति** मनुस्सानं रहस्सकरणस्स युत्तानि अनुच्छविकानि। **पटिसल्लानसारुप्पानीति** एकीभावस्स अनुरूपानि। इति सन्धानो गहपति "अहो मम सत्था यो एवरूपानि सेनासनानि पटिसेवती"ति अञ्जलिं पग्गय्ह उत्तमङ्गे सिरस्मिं पतिट्ठपेत्वा इमं उदानं उदानेन्तो निसीदि।

५३. **एवं वुत्तेति** एवं सन्धानेन गहपतिना उदानं उदानेन्तेन वुत्ते। निग्रोधो परिब्बाजको अयं गहपति मम सन्तिके निसिन्नोपि अत्तनो सत्थारंयेव थोमेति उक्कंसति, अम्हे पन अत्थीतिपि न मञ्ञति, एतस्मिं उप्पन्नकोपं समणस्स गोतमस्स उपरि पातेस्सामीति सन्धानं गहपतिं एतदवोच।

यग्घेति चोदनत्थे निपातो। **जानेय्यासीति** बुज्झेय्यासि पस्सेय्यासि। **केन समणो गोतमो सद्धिं सल्लपतीति** केन कारणेन केन पुग्गलेन सद्धिं समणो गोतमो सल्लपति वदति भासति। किं वुत्तं होति– "यदि किञ्चि सल्लापकारणं भवेय्य, यदि वा कोचि समणस्स गोतमस्स सन्तिकं सल्लापत्थिको गच्छेय्य, सल्लपेय्य, न पन कारणं अत्थि, न तस्स सन्तिकं कोचि गच्छति, स्वायं केन समणो गोतमो सद्धिं सल्लपति, असल्लपन्तो कथं उन्नादी भविस्सती"ति।

साकच्छन्ति संसन्दनं। **पञ्ञावेय्यत्तियन्ति** उत्तरपच्चुत्तरनयेन ञाणब्यत्तभावं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुञ्ञागारहताति सुञ्ञागारेसु नट्ठा, समणेन हि गोतमेन बोधिमूले अप्पमत्तिका पञ्ञा अधिगता, सापिस्स सुञ्ञागारेसु एककस्स निसीदतो नट्ठा। यदि पन मयं विय गणसङ्गणिकं कत्वा निसीदेय्य, नास्स पञ्ञा नस्सेय्याति दस्सेति। **अपरिसावचरो**ति अविसारदत्ता परिसं ओतरितुं न सक्कोति। **नालं सल्लापाया**ति न समत्थो सल्लापं कातुं। **अन्तमन्तानेवा**ति कोचि मं पञ्हं पुच्छेय्याति पञ्हाभीतो अन्तमन्तानेव पन्तसेनासनानि सेवति। **गोकाणा**ति एकक्खिहता काणगावी। सा किर परियन्तचारिनी होति, अन्तमन्तानेव सेवति। सा किर काणक्खिभावेन वनन्ताभिमुखीपि न सक्कोति भवितुं। कस्मा ? यस्मा पत्तेन वा साखाय वा कण्टकेन वा पहारस्स भायति। गुन्नं अभिमुखीपि न सक्कोति भवितुं। कस्मा ? यस्मा सिङ्गेन वा कण्णेन वा वालेन वा पहारस्स भायति। **इङ्घा**ति चोदनत्थे निपातो। **संसादेय्यामा**ति एकपञ्हपुच्छनेनेव संसादनं विसादमापन्नं करेय्याम। **तुच्छकुम्भीव नन्ति** रित्तघटं विय नं। **ओरोधेय्यामा**ति विनन्धेय्याम। पूरितघटो हि इतो चितो च परिवत्तेत्वा न सुविनन्धनीयो होति। रित्तको यथारुचि परिवत्तेत्वा सक्का होति विनन्धितुं, एवमेव हतपञ्ञताय रित्तकुम्भिसदिसं समणं गोतमं वादविनन्धनेन समन्ता विनन्धिस्सामाति वदति।

इति परिब्बाजको सत्थु सुवण्णवण्णं नलाटमण्डलं अपस्सन्तो दसबलस्स परम्मुखा अत्तनो बलं दीपेन्तो असम्भिन्नं खत्तियकुमारं जातिया घट्टयन्तो चण्डालपुत्तो विय असम्भिन्नकेसरसीहं मिगराजानं थामेन घट्टेन्तो जरसिङ्गालो विय च नानप्पकारं तुच्छगज्जितं गज्जि। उपासकोपि चिन्तेसि "अयं परिब्बाजको अति विय गज्जति, अवीचिफुसनत्थाय पादं, भवग्गग्गहणत्थाय हत्थं पसारयन्तो विय निरत्थकं वायमति। सचे मे सत्था इमं ठानमागच्छेय्य, इमस्स परिब्बाजकस्स याव भवग्गा उस्सितं मानद्धजं ठानसोव ओपातेय्या"ति।

५४. भगवापि तेसं तं कथासल्लापं अस्सोसियेव। तेन वुत्तं "अस्सोसि खो इमं कथासल्लाप"न्ति।

सुमागधायाति सुमागधा नाम पोक्खरणी, यस्सा तीरे निसिन्नो अञ्ञतरो पुरिसो पदुमनाळन्तरेहि असुरभवनं पविसन्तं असुरसेनं अद्दस। **मोरनिवापो**ति निवापो वुच्चति भत्तं, यत्थ मोरानं अभयेन सद्धिं निवापो दिन्नो, तं ठानन्ति अत्थो। **अब्भोकासे**ति अङ्गणट्ठाने। **अस्सासपत्ता**ति तुट्ठिपत्ता सोमनस्सपत्ता। **अज्झासय**न्ति उत्तमनिस्सयभूतं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदिब्रह्मचरियन्ति पुराणब्रह्मचरियसङ्खातं अरियमग्गं। इदं वुत्तं होति– "को नाम सो, भन्ते, धम्मो येन भगवता सावका विनीता अज्झासयादिब्रह्मचरियभूतं अरियमग्गं पूरेत्वा अरहत्ताधिगमवसेन अस्सासपत्ता पटिजानन्ती"ति।

तपोजिगुच्छावादवण्णना

५५. **विप्पकता**ति ममागमनपच्चया अनिट्ठिता, व हुत्वा ठिता, कथेहि, अहमेतं निट्ठपेत्वा मत्थकं पापेत्वा दस्सेमीति सब्बञ्ञुपवारणं पवारेसि।

५६. **दुज्जानं खो**ति भगवा परिब्बाजकस्स वचनं सुत्वा "अयं परिब्बाजको मया सावकानं देसेतब्बं धम्मं तेहि पूरेतब्बं पटिपत्तिं पुच्छति, सचस्साहं आदितोव तं कथेस्सामि, कथितम्पि नं न जानिस्सति, अयं पन वीरियेन पापजिगुच्छनवादो, हन्दाहं एतस्सेव विसये पञ्हं पुच्छापेत्वा पुथुसमणब्राह्मणानं लद्धिया निरत्थकभावं दस्सेमि। अथ पच्छा इमं पञ्हं ब्याकरिस्सामी"ति चिन्तेत्वा **दुज्जानं खो** एतन्तिआदिमाह। तत्थ **सके आचरियके**ति अत्तनो आचरियवादे। **अधिजेगुच्छे**ति वीरियेन पापजिगुच्छनभावे। **कथं सन्ता**ति कथं भूता। **तपोजिगुच्छा**ति वीरियेन पापजिगुच्छा पापविवज्जना। **परिपुण्णा**ति परिसुद्धा। **कथं अपरिपुण्णा**ति कथं अपरिसुद्धा होतीति एवं पुच्छाति। **यत्र हि नामा**ति यो नाम।

५७. **अप्पसद्दे कत्वा**ति निरवे अप्पसद्दे कत्वा। सो किर चिन्तेसि– "समणो गोतमो एकं पञ्हम्पि न कथेति, सल्लापकथापिस्स अतिबहुका नत्थि, इमे पन आदितो पट्ठाय समणं गोतमं अनुवत्तन्ति चेव पसंसन्ति च, हन्दाहं इमे निस्सद्दे कत्वा सयं कथेमी"ति। सो तथा अकासि। तेन वुत्तं "अप्पसद्दे कत्वा"ति। "तपोजिगुच्छवादा"तिआदीसु तपोजिगुच्छं वदाम, मनसापि तमेव सारतो गहेत्वा विचराम, कायेनपिम्हा तमेव अल्लीना, नानप्पकारकं अत्तकिलमथानुयोगमनुयुत्ता विहरामाति अत्थो।

उपक्किलेसवण्णना

५८. **तपस्सी**ति तपनिस्सितको। "अचेलको"तिआदीनि सीहनादे (दी० नि० अट्ठ०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१.३९३) वित्थारितनयेनेव वेदितब्बानि। **तपं समादियतीति** अचेलकभावादिकं तपं सम्मा आदियति, दळ्हं गण्हाति। **अत्तमनो होतीति** को अञ्ञो मया सदिसो इमस्मिं तपे अत्थीति तुट्ठमनो होति। **परिपुण्णसङ्कप्पोति** अलमेत्तावताति एवं परियोसितसङ्कप्पो, इदञ्च तित्थियानं वसेन आगतं। सासनावचरेनापि पन दीपेतब्बं। एकच्चो हि धुतङ्गं समादियति, सो तेनेव धुतङ्गेन को अञ्ञो मया सदिसो धुतङ्गधरोति अत्तमनो होति परिपुण्णसङ्कप्पो। **तपस्सिनो उपक्किलेसो होतीति** दुविधस्सापेतस्स तपस्सिनो अयं उपक्किलेसो होति। एत्तावतायं तपो उपक्किलेसो होतीति वदामि।

अत्तानुक्कंसेतीति "को मया सदिसो अत्थी"ति अत्तानं उक्कंसति उक्खिपति। **परं वम्भेतीति** "अयं न मादिसो"ति परं संहारेति अवक्खिपति।

मज्जतीति मानमदकरणेन मज्जति। **मुच्छतीति** मुच्छितो होति गधितो अज्झापन्नो। **पमादमापज्जतीति** एतदेव सारन्ति पमादमापज्जति। सासने पब्बजितोपि धुतङ्गसुद्धिको होति, न कम्मट्ठानसुद्धिको। धुतङ्गमेव अरहत्तं विय सारतो पच्चेति।

५९. **लाभसक्कारसिलोकन्ति** एत्थ चत्तारो पच्चया लब्भन्तीति लाभा, तेयेव सुट्ठु कत्वा पटिसङ्खरित्वा लद्धा सक्कारो, वण्णभणनं सिलोको। **अभिनिब्बत्तेतीति** अचेलकादिभावं तेरसधुतङ्गसमादानं वा निस्साय महालाभो उप्पज्जति, तस्मा "अभिनिब्बत्तेती"ति वुत्तो। सेसमेत्थ पुरिमवारनयेनेव दुविधस्सापि तपस्सिनो वसेन वेदितब्बं।

६०. **वोदासं आपज्जतीति** द्वेभागं आपज्जति, द्वे भागे करोति। **खमतीति** रुच्चति। **नक्खमतीति** न रुच्चति। **सापेक्खो पजहतीति** सतण्हो पजहति। कथं? पातोव खीरभत्तं भुत्तो होति। अथस्स मंसभोजनं उपनेति। तस्स एवं होति "इदानि एवरूपं कदा लभिस्साम, सचे जानेय्याम, पातोव खीरभत्तं न भुञ्जेय्याम, किं मया सक्का कातुं, गच्छ भो, त्वमेव भुञ्जा"ति जीवितं परिच्चजन्तो विय सापेक्खो पजहति। **गधितोति** गेधजातो। **मुच्छितोति** बलवतण्हाय मुच्छितो संमुट्ठस्सती हुत्वा। **अज्झापन्नोति** आमिसे अतिलग्गो, "भुञ्जिस्सथ, आवुसो"ति धम्मनिमन्तनमत्तम्पि अकत्वा महन्ते महन्ते कबळे करोति। **अनादीनवदस्सावीति**आदीनवमत्तम्पि न पस्सति। **अनिस्सरणपञ्ञोति** इध

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मत्तञ्ञुतानिस्सरणपच्चवेक्खणपरिभोगमत्तम्पि न करोति। **लाभसक्कारसिलोकनिकन्तिहेतू**ति लाभादीसु तण्हाहेतु।

६१. **संभक्खेती**ति संखादति। **असनिविचक्क**न्ति विचक्कसण्ठाना असनियेव। इदं वुत्तं होति "असनिविचक्कं इमस्स दन्तकूटं मूलबीजादीसु न किञ्चि न संभुञ्जति। अथ च पन नं समणप्पवादेन समणोति सञ्जानन्ती"ति। एवं अपसादेति अवक्खिपति। इदं तित्थियवसेन आगतं। भिक्खुवसेन पनेत्थ अयं योजना, अत्तना धुतङ्गधरो होति, सो अञ्ञं एवं अपसादेति "किं समणा नाम इमे समणम्हाति वदन्ति, धुतङ्गमत्तम्पि नत्थि, उद्देसभत्तादीनि परियेसन्ता पच्चयबाहुल्लिका विचरन्ती"ति। **लूखाजीवि**न्ति अचेलकादिवसेन वा धुतङ्गवसेन वा लूखाजीविं। **इस्सामच्छरिय**न्ति परस्स सक्कारादिसम्पत्तिखीयनलक्खणं इस्सं, सक्कारादिकरणअक्खमनलक्खणं मच्छरियञ्च।

६२. **आपाथकनिसादी होती**ति मनुस्सानं आपाथे दस्सनट्ठाने निसीदति। यत्थ ते पस्सन्ति, तत्थ ठितो वग्गुलिवतं चरति, पञ्चातपं तप्पति, एकपादेन तिट्ठति, सूरियं नमस्सति। सासने पब्बजितोपि समादिन्नधुतङ्गो सब्बरत्तिं सयित्वा मनुस्सानं चक्खुपथे तपं करोति, महासायन्हेयेव चीवरकुटिं करोति, सूरिये उग्गते पटिसंहरति, मनुस्सानं आगतभावं ञत्वा घण्डिं पहरित्वा चीवरं मत्थके ठपेत्वा चङ्कमं ओतरति, सम्मुञ्जनिं गहेत्वा विहारङ्गणं सम्मज्जति।

अत्तानन्ति अत्तनो गुणं **अदस्सयमानो**ति एत्थ अ-कारो निपातमत्तं, दस्सयमानोति अत्थो। **इदम्पि मे तपस्मि**न्ति इदम्पि कम्मं ममेव तपस्मिं, पच्चत्ते वा भुम्मं, इदम्पि मम तपोति अत्थो। सो हि असुकस्मिं ठाने अचेलको अत्थि मुत्ताचारोतिआदीनि सुत्वा अम्हाकं एस तपो, अम्हाकं सो अन्तेवासिकोतिआदीनि भणति। असुकस्मिं वा पन ठाने पंसुकूलिको भिक्खु अत्थीतिआदीनि सुत्वा अम्हाकं एस तपो, अम्हाकं सो अन्तेवासिकोतिआदीनि भणति।

किञ्चिदेवाति किञ्चि वज्जं दिट्ठिगतं वा। **पटिच्छन्नं सेवती**ति यथा अञ्ञे न जानन्ति, एवं सेवति। **अक्खममानं आह खमती**ति अरुच्चमानंयेव रुच्चति मेति वदति। अत्तना कतं अतिमहन्तम्पि वज्जं अप्पमत्तकं कत्वा पञ्ञपेति, परेन कतं दुक्कटमत्तं वीतिक्कमम्पि पाराजिकसदिसं कत्वा दस्सेति। **अनुञ्ञेय्य**न्ति अनुजानितब्बं अनुमोदितब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३. **कोधनो होति उपनाही**ति कुज्झनलक्खणेन कोधेन, वेरअप्पटिनिस्सग्गलक्खणेन उपनाहेन च समन्नागतो। **मक्खी होति पळासी**ति परगुणमक्खनलक्खणेन मक्खेन, युगग्गाहलक्खणेन पळासेन च समन्नागतो।

इस्सुकी होति मच्छरीति परसक्कारादीसु उसूयनलक्खणाय इस्साय, आवासकुललाभवण्णधम्मेसु मच्छरायनलक्खणेन पञ्चविधमच्छेरेन च समन्नागतो होति। **सठो होति मायावी**ति केराटिकलक्खणेन साठेय्येन, कतप्पटिच्छादनलक्खणाय मायाय च समन्नागतो होति। **थद्धो होति अतिमानी**ति निस्सिनेहनिक्करुणथद्धलक्खणेन थम्भेन, अतिक्कमित्वा मञ्ञनलक्खणेन अतिमानेन च समन्नागतो होति। **पापिच्छो होती**ति असन्तसम्भावनपत्थनलक्खणाय पापिच्छताय समन्नागतो होति। **पापिकानन्ति** तासंयेव लामकानं इच्छानं वसं गतो। **मिच्छादिट्ठिको**ति नत्थि दिन्नन्तिआदिनयप्पवत्ताय अयाथावदिट्ठिया उपेतो। **अन्तग्गाहिकाया**ति सायेव दिट्ठि उच्छेदन्तस्स गहितत्ता "अन्तग्गाहिका"ति वुच्चति, ताय समन्नागतोति अत्थो। **सन्दिट्ठिपरामासी**तिआदीसु सयं दिट्ठि सन्दिट्ठि, सन्दिट्ठिमेव परामसति गहेत्वा वदतीति **सन्दिट्ठिपरामासी**। आधानं वुच्चति दळ्हं सुट्ठु ठपितं, तथा कत्वा गण्हातीति **आधानग्गाही**। अरिट्ठो विय न सक्का होति पटिनिस्सज्जापेतुन्ति **दुप्पटिनिस्सग्गी**। **यदिमे**ति यदि इमे।

परिसुद्धपपटिकप्पत्तकथावण्णना

६४. **इध, निग्रोध, तपस्सी**ति एवं भगवा अञ्ञतित्थियेहि गहितलद्धिं तेसं रक्खितं तपं सब्बमेव संकिलिट्ठन्ति उपक्किलेसपाळिं दस्सेत्वा इदानि परिसुद्धपाळिदस्सनत्थं देसनमारभन्तो **इध, निग्रोधा**तिआदिमाह। तत्थ "न अत्तमनो"तिआदीनि वुत्तविपक्खवसेनेव वेदितब्बानि। सब्बवारेसु च लूखतपस्सिनो चेव धुतङ्गधरस्स च वसेन योजना वेदितब्बा। **एवं सो तस्मिं ठाने परिसुद्धो होती**ति एवं सो तेन न अत्तमनता न परिपुण्णसङ्कप्पभावसङ्खातेन कारणेन परिसुद्धो निरुपक्किलेसो होति, उत्तरि वायममानो कम्मट्ठानसुद्धिको हुत्वा अरहत्तं पापुणाति। इमिना नयेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो।

६९. **अद्धा खो, भन्ते**ति भन्ते एवं सन्ते एकंसेनेव वीरियेन पापजिगुच्छनवादो परिसुद्धो होतीति अनुजानाति। इतो परञ्च अग्गभावं वा सारभावं वा अजानन्तो **अग्गप्पत्ता सारप्पत्ता चा**ति आह। अथस्स भगवा सारप्पत्तभावं पटिसेधेन्तो **न खो**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निग्रोधातिआदिमाह। **पपटिकप्पत्ता होती**ति सारवतो रुक्खस्स सारं फेग्गुं तचञ्च अतिक्कम्म बहिपपटिकसदिसा होतीति दस्सेति।

परिसुद्धतचप्पत्तादिकथावण्णना

७०. **अग्गं पापेतू**ति देसनावसेन अग्गं पापेत्वा देसेतु, सारं पापेत्वा देसेतूति दसबलं याचति। **चातुयामसंवरसंवुतो**ति चतुब्बिधेन संवरेन पिहितो। **न पाणं अतिपातेती**ति पाणं न हनति। **न भावितमासीसती**ति भावितं नाम तेसं सञ्ञाय पञ्च कामगुणा, ते न आसीसति न सेवतीति अत्थो।

अदुं चस्स होतीति एतञ्चस्स इदानि वुच्चमानं "सो अभिहरती"तिआदिलक्खणं। **तपस्सिताया**ति तपस्सिभावेन होति। तत्थ **सो अभिहरती**ति सो तं सीलं अभिहरति, उपरूपरि वड्ढेति। सीलं मे परिपुण्णं, तपो आरद्धो, अलमेत्तावताति न वीरियं विस्सज्जेति। **नो हीनायावत्तती**ति हीनाय गिहिभावत्थाय न आवत्तति। सीलतो उत्तरि विसेसाधिगमत्थाय वीरियं करोतियेव, एवं करोन्तो सो विवित्तं सेनासनं भजति। "अरञ्ञ"न्तिआदीनि सामञ्ञफले (दी० नि० अट्ठ० १.२१६) वित्थारितानेव। "मेत्तासहगतेना"तिआदीनि विसुद्धिमग्गे वण्णितानि। **तचप्पत्ता**ति पपटिकतो अब्भन्तरं तचं पत्ता। **फेग्गुप्पत्ता**ति तचतो अब्भन्तरं फेग्गुं पत्ता, फेग्गुसदिसा होतीति अत्थो।

७४. "एत्तावता, खो निग्रोध, तपोजिगुच्छा अग्गप्पत्ता च होति सारप्पत्ता चा"ति इदं भगवा तित्थियानं वसेनाह। तित्थियानञ्हि लाभसक्कारो रुक्खस्स साखापलाससदिसो। पञ्चसीलमत्तकं पपटिकसदिसं। अट्ठसमापत्तिमत्तं तचसदिसं। पुब्बेनिवासञाणावसाना अभिञ्ञा फेग्गुसदिसा। दिब्बचक्खुं पनेते अरहत्तन्ति गहेत्वा विचरन्ति। तेन नेसं तं रुक्खस्स सारसदिसं। सासने पन लाभसक्कारो साखापलाससदिसो। सीलसम्पदा पपटिकसदिसा। झानसमापत्तियो तचसदिसा। लोकियाभिञ्ञा फेग्गुसदिसा। मग्गफलं सारो। इति भगवता अत्तनो सासनं ओनतविनतफलभारभरितरुक्खूपमाय उपमितं। सो देसनाकुसलताय ततो तचसारसम्पत्तितो मम सासनं उत्तरितरञ्चेव पणीततरञ्च, तं तुवं कदा जानिस्ससीति अत्तनोदेसनाय विसेसभावं दस्सेतुं "इति खो निग्रोधा"ति देसनं आरभि। **ते परिब्बाजका**ति ते तस्स परिवारा तिंससतसङ्ख्या परिब्बाजका। **एत्थ मयं अनस्सामा**ति एत्थ अचेलकपाळिआदीसु, इदं वुत्तं होति "अम्हाकं अचेलकपाळिमत्तम्पि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नत्थि, कुतो परिसुद्धपाळि। अम्हाकं परिसुद्धपाळिमत्तम्पि नत्थि, कुतो चातुयामसंवरादीनि। चातुयामसंवरोपि नत्थि, कुतो अरञ्ञवासादीनि। अरञ्ञवासोपि नत्थि, कुतो नीवरणप्पहानादीनि। नीवरणप्पहानम्पि नत्थि, कुतो ब्रह्मविहारादीनि। ब्रह्मविहारमत्तम्पि नत्थि, कुतो पुब्बेनिवासादीनि। पुब्बेनिवासञाणमत्तम्पि नत्थि, कुतो अम्हाकं दिब्बचक्खु। एत्थ मयं सआचरियका नट्ठा''ति। **इतो भिय्यो उत्तरितर**न्ति इतो दिब्बचक्खुञाणाधिगमतो भिय्यो अञ्ञं उत्तरितरं विसेसाधिगमं मयं सुतिवसेनापि न जानामाति वदन्ति।

निग्रोधस्सपज्झायनवण्णना

७५. **अथ निग्रोधं परिब्बाजक**न्ति एवं किरस्स अहोसि ''इमे परिब्बाजका इदानि भगवतो भासितं सुस्सूसन्ति, इमिना च निग्रोधेन भगवतो परम्मुखा कक्खळं दुरासदवचनं वुत्तं, इदानि अयम्पि सोतुकामो जातो, कालो दानि मे इमस्स मानद्धजं निपातेत्वा भगवतो सासनं उक्खिपितु''न्ति। अथ निग्रोधं परिब्बाजकं एतदवोच। अपरम्पिस्स अहोसि ''अयं मयि अक्कधेन्ते सत्थारं न खमापेस्सति, तदस्स अनागते अहिताय दुक्खाय संवत्तिस्सति, मया पन कथिते खमापेस्सति, तदस्स भविस्सति दीघरत्तं हिताय सुखाया''ति। अथ निग्रोधं परिब्बाजकं एतदवोच। **अपरिसावचरं पन नं करोथा**ति एत्थ **पना**ति निपातो, अथ नं अपरिसावचरं करोथाति अत्थो। ''अपरिसावचरेत''न्तिपि पाठो, अपरिसावचरं वा एतं करोथ, गोकाणादीनं वा अञ्ञतरन्ति अत्थो।

गोकाणन्ति एत्थापि गोकाणं परियन्तचारिनिं विय करोथाति अत्थो। **तुण्हीभूतो**ति तुण्हीभावं उपगतो। **मङ्कुभूतो**ति नित्तेजतं आपन्नो। **पत्तक्खन्धो**ति ओनतगीवो। **अधोमुखो**ति हेट्ठामुखो।

७६. **बुद्धो सो भगवा बोधाया**ति सयं बुद्धो सत्तानम्पि चतुसच्चबोधत्थाय धम्मं देसेति। **दन्तो**ति चक्खुतोपि दन्तो...पे०... मनतोपि दन्तो। **दमथाया**ति अञ्ञेसम्पि दमनत्थाय एव, न वादत्थाय। **सन्तो**ति रागसन्तताय सन्तो, दोसमोहसन्तताय सब्ब अकुसलसब्बाभिसङ्खारसन्तताय सन्तो। **समथाया**ति महाजनस्स रागादिसमनत्थाय धम्मं देसेति। **तिण्णो**ति चत्तारो ओघे तिण्णो। **तरणाया**ति महाजनस्स ओघनित्थरणत्थाय। **परिनिब्बुतो**ति किलेसपरिनिब्बानेन परिनिब्बुतो। **परिनिब्बानाया**ति महाजनस्सापि सब्बकिलेसपरिनिब्बानत्थाय धम्मं देसेति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्रह्मचरियपरियोसानादिवण्णना

७७. **अच्चयो**तिआदीनि सामञ्ञफले (दी० नि० अट्ठ० १.२५०) वुत्तानि। **उजुजातिको**ति कायवङ्कादिविरहितो उजुसभावो। **अहमनुसासामी**ति अहं तादिसं पुग्गलं अनुसासामि, धम्मं अस्स देसेमि। **सत्ताह**न्ति सत्तदिवसानि, इदं सब्बम्पि भगवा दन्धपञ्ञं पुग्गलं सन्धायाह असठो पन अमायावी उजुजातिको तंमुहुत्तेनेव अरहत्तं पत्तुं सक्खिस्सति। इति भगवा "असठ"न्तिआदिवचनेन सठो हि वङ्कवङ्को, मयापि न सक्का अनुसासितुन्ति दीपेन्तो परिब्बाजकं पादेसु गहेत्वा महामेरुपादतले विय खिपित्थ। कस्मा? अयञ्हि अतिसठो, कुटिलचित्तो सत्थरि एवं कथेन्तेपि बुद्धधम्मसङ्घेसु नाधिमुच्चति, अधिमुच्चनत्थाय सोतं न ओदहति, कोहञ्ञे ठितो सत्थारं खमापेति। तस्मा भगवा तस्सज्झासयं विदित्वा "एतु विञ्ञू पुरिसो असठो"तिआदिमाह। सठं पनाहं अनुसासितुं न सक्कोमीति।

७८. **अन्तेवासिकम्यता**ति अन्तेवासिकम्यताय, अम्हे अन्तेवासिके इच्छन्तो। **एवमाहा**ति "एतु विञ्ञुपुरिसो"तिआदिमाह। **यो एव वो आचरियो**ति यो एव तुम्हाकं पकतिया आचरियो। **उद्देसा नो चावेतुकामो**ति अत्तनो अनुसासनिं गाहापेत्वा अम्हे अम्हाकं उद्देसतो चावेतुकामो। **सो एव वो उद्देसो होतू**ति यो तुम्हाकं पकतिया उद्देसो, सो तुम्हाकंयेव होतु, न मयं तुम्हाकं उद्देसेन अत्थिका। **आजीवा**ति आजीवतो। **अकुसलसङ्खाता**ति अकुसलाति कोट्ठासं पत्ता। **अकुसला धम्मा**ति द्वादस अकुसलचित्तुप्पादधम्मा तण्हायेव वा विसेसेन। सा हि पुनब्भवकरणतो "पोनोब्भविका"ति वुत्ता। **सदरथा**ति किलेसदरथसम्पयुत्ता। **जातिजरामरणिया**ति जातिजरामरणानं पच्चयभूता। **संकिलेसिका धम्मा**ति द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा। **वोदानिया**ति, समथविपस्सना धम्मा। ते हि सत्ते वोदापेन्ति, तस्मा "वोदानिया"ति वुच्चन्ति। **पञ्ञापारिपूरि**न्ति मग्गपञ्ञापारिपूरिं। **वेपुल्लत्तञ्चा**ति फलपञ्ञावेपुल्लतं, उभोपि वा एतानि अञ्ञमञ्ञवेवचनानेव। इदं वुत्तं होति "ततो तुम्हे मग्गपञ्ञञ्चेव फलपञ्ञञ्च दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरिस्सथा"ति। एवं भगवा परिब्बाजके आरब्भ अत्तनो ओवादानुसासनिया फलं दस्सेन्तो अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठपेसि।

७९. **यथा तं मारेना**ति यथा मारेन परियुट्ठितचित्ता निसीदन्ति एवमेव तुण्हीभूता...पे०... अप्पटिभाना निसिन्ना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मारो किर सत्था अतिविय गज्जन्तो बुद्धबलं दीपेत्वा इमेसं परिब्बाजकानं धम्मं देसेति, कदाचि धम्माभिसमयो भवेय्य, हन्दाहं परियुट्ठामीति सो तेसं चित्तानि परियुट्ठासि। अप्पहीनविपल्लासानञ्हि चित्तं मारस्स यथाकामकरणीयं होति। तेपि मारेन परियुट्ठितचित्ता थद्धङ्गपच्चङ्गा विय तुण्ही अप्पटिभाना निसीदिंसु। अथ सत्था इमे परिब्बाजका अतिविय निरवा हुत्वा निसिन्ना, किं नु खोति आवज्जन्तो मारेन परियुट्ठितभावं अञ्ञासि। सचे पन तेसं मग्गफलुप्पत्तिहेतु भवेय्य, मारं पटिबाहित्वापि भगवा धम्मं देसेय्य, सो पन तेसं नत्थि। "सब्बेपि मे तुच्छपुरिसा"ति अञ्ञासि। तेन वुत्तं "अथ खो भगवतो एतदहोसि सब्बेपि मे मोघपुरिसा"तिआदि।

तत्थ **फुट्ठा पापिमता**ति पापिमता मारेन फुट्ठा। **यत्र हि नामा**ति येसु नाम। **अञ्ञाणत्थम्पी**ति जाननत्थम्पि। **किं करिस्सति सत्ताहो**ति समणेन गोतमेन परिच्छिन्नसत्ताहो अम्हाकं किं करिस्सति। इदं वुत्तं होति "समणेन गोतमेन 'सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरिस्सति सत्ताह'न्ति वुत्तं, सो सत्ताहो अम्हाकं किं अप्फासुकं करिस्सति। हन्द मयं सत्ताहब्भन्तरे एतं धम्मं सच्छिकातुं सक्का, न सक्काति अञ्ञाणत्थम्पि ब्रह्मचरियं चरिस्सामा"ति। अथ वा जानाम तावस्स धम्मन्ति एकदिवसे एकवारं अञ्ञाणत्थम्पि एतेसं चित्तं नुप्पन्नं, सत्ताहो पन एतेसं कुसीतानं किं करिस्सति, किं सक्खिस्सन्ति ते सत्ताहं पूरेतुन्ति अयमेत्थ अधिप्पायो। **सीहनाद**न्ति परवादभिन्दनं सकवादसमुस्सापनञ्च अभीतनादं नदित्वा। **पच्चुपट्ठासी**ति पतिट्ठितो। **तावदेवा**ति तस्मिञ्ञेव खणे। **राजगहं पाविसी**ति राजगहमेव पविट्ठो। तेसं पन परिब्बाजकानं किञ्चापि इदं सुत्तन्तं सुत्वा विसेसो न निब्बत्तो, आयतिं पन नेसं वासनाय पच्चयो भविस्सतीति। सेसं सब्बत्थ उत्तानमेवाति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

उदुम्बरिकसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. चक्कवत्तिसुत्तवण्णना

अत्तदीपसरणतावण्णना

८०. **एवं मे सुतन्ति** चक्कवत्तिसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना– **मातुलायन्ति** एवंनामके नगरे। तं नगरं गोचरगामं कत्वा अविदूरे वनसण्डे विहरति। "तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसी"ति एत्थ अयमनुपुब्बिकथा–

भगवा किर इमस्स सुत्तस्स समुट्ठानसमये पच्चूसकाले महाकरुणासमापत्तितो वुट्ठाय लोकं वोलोकेन्तो इमाय अनागतवंसदीपिकाय सुत्तन्तकथाय मातुलनगरवासीनं चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयं दिस्वा पातोव वीसतिभिक्खुसहस्सपरिवारो मातुलनगरं सम्पत्तो। मातुलनगरवासिनो खत्तिया "भगवा आगतो"ति सुत्वा पच्चुग्गम्म दसबलं निमन्तेत्वा महासक्कारेन नगरं पवेसेत्वा निसज्जट्ठानं संविधाय भगवन्तं महारहे पल्लङ्के निसीदापेत्वा बुद्धप्पमुखस्स भिक्खुसङ्घस्स महादानं अदंसु। भगवा भत्तकिच्चं निट्ठापेत्वा चिन्तेसि– "सचाहं इमस्मिं ठाने इमेसं मनुस्सानं धम्मं देसेस्सामि, अयं पदेसो सम्बाधो, मनुस्सानं ठातुं वा निसीदितुं वा ओकासो न भविस्सति, महता खो पन समागमेन भवितब्ब"न्ति।

अथ राजकुलानं भत्तानुमोदनं अकत्वाव पत्तं गहेत्वा नगरतो निक्खमि। मनुस्सा चिन्तयिंसु– "सत्था अम्हाकं अनुमोदनम्पि अकत्वा गच्छति, अद्धा भत्तग्गं अमनापं अहोसि, बुद्धानं नाम न सक्का चित्तं गहेतुं, बुद्धेहि सद्धिं विस्सासकरणं नाम समुस्सितफणं आसीविसं गीवाय गहणसदिसं होति; एथ भो, तथागतं खमापेस्सामा"ति। सकलनगरवासिनो भगवता सहेव निक्खन्ता। भगवा गच्छन्तोव मगधक्खेत्ते ठितं साखाविटपसम्पन्नं सन्दच्छायं करीसमत्तभूमिपत्थटं एकं मातुलरुक्खं दिस्वा इमस्मिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुक्खमूले निसीदित्वा धम्मे देसियमाने "महाजनस्स ठाननिसज्जनोकासो भविस्सती"ति। निवत्तित्वा मग्गा ओक्कम्म रुक्खमूलं उपसङ्कमित्वा धम्मभण्डागारिकं आनन्दत्थेरं ओलोकेसि। थेरो ओलोकितसञ्ञाय एव "सत्था निसीदितुकामो"ति ञत्वा सुगतमहाचीवरं पञ्ञपेत्वा अदासि। निसीदि भगवा पञ्ञत्ते आसने। अथस्स पुरतो मनुस्सा निसीदिंसु। उभोसु पस्सेसु पच्छतो च भिक्खुसङ्घो, आकासे देवता अट्ठंसु, एवं महापरिसमज्झगतो तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि।

ते भिक्खूति तत्र उपविट्ठा धम्मप्पटिग्गाहका भिक्खू। **अत्तदीपा**ति अत्तानं दीपं ताणं लेणं गतिं परायणं पतिट्ठं कत्वा विहरथाति अत्थो। **अत्तसरणा**ति इदं तस्सेव वेवचनं। **अनञ्ञसरणा**ति इदं अञ्ञसरणपटिक्खेपवचनं। न हि अञ्ञो अञ्ञस्स सरणं होति, अञ्ञस्स वायामेन अञ्ञस्स असुज्झनतो। वुत्तम्पि चेतं "अत्ता हि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परो सिया"ति (ध० प० १६०)। तेनाह "अनञ्ञसरणा"ति। को पनेत्थ अत्ता नाम, लोकियलोकुत्तरो धम्मो। तेनाह– "धम्मदीपा धम्मसरणा अनञ्ञसरणा"ति। "काये कायानुपस्सी"तिआदीनि महासतिपट्ठाने वित्थारितानि।

गोचरेति चरितुं युत्तट्ठाने। **सके**ति अत्तनो सन्तके। **पेत्तिके विसये**ति पितितो आगतविसये। **चरत**न्ति चरन्तानं। "चरन्तं" तिपि पाठो, अयमेवत्थो। **न लच्छती**ति न लभिस्सति न पस्सिस्सति। **मारो**ति देवपुत्तमारोपि, मच्चुमारोपि, किलेसमारोपि। **ओतार**न्ति रन्धं छिद्दं विवरं। अयं पनत्थो लेड्डुट्ठानतो निक्खम्म तोरणे निसीदित्वा बालातपं तपन्तं लापं सकुणं गहेत्वा। पक्खन्दसेनसकुणवत्थुना दीपेतब्बो। वुत्तञ्हेतं–

> "भूतपुब्बं, भिक्खवे, सकुणग्घि लापं सकुणं सहसा अज्झप्पत्ता अग्गहेसि। अथ खो, भिक्खवे, लापो सकुणो सकुणग्घिया हरियमानो एवं परिदेवसि 'मयमेवम्ह अलक्खिका, मयं अप्पपुञ्ञा, ये मयं अगोचरे चरिम्ह परविसये, सचेज्ज मयं गोचरे चरेय्याम सके पेत्तिके विसये, न म्यायं सकुणग्घि अलं अभविस्स यदिदं युद्धाया'ति। को पन ते लाप गोचरो सको पेत्तिको विसयोति ? यदिदं नङ्गलकट्ठकरणं लेड्डुट्ठानन्ति। अथ खो, भिक्खवे, सकुणग्घि सके बले अपत्थद्धा सके बले असंवदमाना लापं सकुणं पमुञ्चि गच्छ खो त्वं लाप, तत्रपि गन्त्वा न मोक्खसीति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ खो, भिक्खवे, लापो सकुणो नङ्गलकट्ठकरणं लेड्डुट्ठानं गन्त्वा महन्तं लेड्डुं अभिरुहित्वा सकुणग्घिं वदमानो अट्ठासि "एहि खो दानि मे सकुणग्घि, एहि खो दानि मे सकुणग्घी"ति। अथ खो सा, भिक्खवे, सकुणग्घि सके बले अपत्थद्धा सके बले असंवदमाना उभो पक्खे सन्नय्ह लापं सकुणं सहसा अज्झप्पत्ता। यदा खो, भिक्खवे, अञ्ञासि लापो सकुणो बहुआगता खो म्यायं सकुणग्घीति, अथ खो तस्सेव लेड्डुस्स अन्तरं पच्चुपादि। अथ खो, भिक्खवे, सकुणग्घि तत्थेव उरं पच्चताळेसि। एवञ्हि तं, भिक्खवे, होति यो अगोचरे चरति परविसये।

तस्मातिह, भिक्खवे, मा अगोचरे चरित्थ परविसये, अगोचरे, भिक्खवे, चरतं परविसये लच्छति मारो ओतारं, लच्छति मारो आरम्मणं। को च, भिक्खवे, भिक्खुनो अगोचरो परविसयो, यदिदं पञ्च कामगुणा। कतमे पञ्च? चक्खुविञ्ञेय्या रूपा इट्ठा कन्ता मनापा पियरूपा कामूपसंहिता रजनीया, सोतविञ्ञेय्या सद्दा इट्ठा कन्ता मनापा पियरूपा कामूपसंहिता रजनीया, घानविञ्ञेय्या गन्धा इट्ठा कन्ता मनापा पियरूपा कामूपसंहिता रजनीया, जिव्हाविञ्ञेय्या रसा इट्ठा कन्ता मनापा पियरूपा कामूपसंहिता रजनीया, कायविञ्ञेय्या फोट्ठब्बा इट्ठा कन्ता मनापा पियरूपा कामूपसंहिता रजनीया। अयं, भिक्खवे, भिक्खुनो अगोचरो परविसयो।

गोचरे, भिक्खवे, चरथ...पे०... न लच्छति मारो आरम्मणं। को च, भिक्खवे, भिक्खुनो गोचरो सको पेत्तिको विसयो, यदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना। कतमे चत्तारो? इध भिक्खवे, भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरति आतापी सम्पजानो सतिमा, विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं; वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति आतापी सम्पजानो सतिमा, विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं; चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति आतापी सम्पजानो सतिमा, विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं; धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति आतापी सम्पजानो सतिमा, विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं– अयं, भिक्खवे, भिक्खुनो गोचरो सको पेत्तिको विसयोति (सं० नि० ३.५.३७१)।

कुसलानन्ति अनवज्जलक्खणानं। **समादानहेतूति** समादाय वत्तनहेतु। **एवमिदं पुञ्ञं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवड्ढतीति एवं इदं लोकियलोकुत्तरं पुञ्ञफलं वड्ढति, पुञ्ञफलन्ति च उपरूपरि पुञ्ञम्पि पुञ्ञविपाकोपि वेदितब्बो।

दळ्हनेमिचक्कवत्तिराजकथावण्णना

८१. तत्थ **दुविधं कुसलं** वट्टगामी च विवट्टगामी च। तत्थ वट्टगामिकुसलं नाम मातापितूनं पुत्तधीतासु पुत्तधीतानञ्च मातापितूसु सिनेहवसेन मुदुमद्दवचित्तं। विवट्टगामिकुसलं नाम "चत्तारो सतिपट्ठाना"तिआदिभेदा सत्ततिंस बोधिपक्खियधम्मा।तेसु वट्टगामिपुञ्ञस्स परियोसानं मनुस्सलोके चक्कवत्तिसिरीविभवो। विवट्टगामिकुसलस्स मग्गफलनिब्बानसम्पत्ति। तत्थ विवट्टगामिकुसलस्स विपाकं सुत्तपरियोसाने दस्सेस्सति।

इध पन वट्टगामिकुसलस्स विपाकदस्सनत्थं, भिक्खवे, यदा पुत्तधीतरो मातापितूनं ओवादे न अट्ठंसु, तदा आयुनापि वण्णेनापि इस्सरियेनापि परिहायिंसु। यदा पन अट्ठंसु, तदा वड्ढिंसूति वत्वा वट्टगामिकुसलानुसन्धिवसेन "भूतपुब्बं, भिक्खवे"ति देसनं आरभि। तत्थ चक्कवत्तीतिआदीनि महापदाने (दी० नि० अट्ठ० २.३३) वित्थारितानेव।

८२. **ओसक्कित**न्ति ईसकम्पि अवसक्कितं। **ठाना चुत**न्ति सब्बसो ठाना अपगतं। तं किर चक्करतनं अन्तेपुरद्वारे अक्खाहतं विय वेहासं अट्ठासि। अथस्स उभोसु पस्सेसु द्वे खदिरत्थम्भे निखणित्वा चक्करतनमत्थके नेमिअभिमुखं एकं सुत्तकं बन्धिंसु। अधोभागेपि नेमिअभिमुखं एकं बन्धिंसु। तेसु उपरिमसुत्ततो अप्पमत्तकम्पि ओगतं चक्करतनं ओसक्कितं नाम होति, हेट्ठा सुत्तस्स ठानं उपरिमकोटिया अतिक्कन्तगतं ठाना चुतं नाम होति, तदेतं अतिबलवदोसे सति एवं होति। सुत्तमत्तम्पि एकङ्गुलद्वङ्गुलमत्तं वा भट्ठं ठाना चुतमेव होति। तं सन्धायेतं वुत्तं "ओसक्कितं ठाना चुत"न्ति।

अथ मे आरोचेय्यासीति तात, त्वं अज्ज आदिं कत्वा दिवसस्स तिक्खत्तुं चक्करतनस्स उपट्ठानं गच्छ, एवं गच्छन्तो यदा चक्करतनं ईसकम्पि ओसक्कितं ठाना चुतं पस्ससि, अथ मय्हं आचिक्खेय्यासि। जीवितञ्हि मे तव हत्थे निक्खित्तन्ति। **अद्दसा**ति अप्पमत्तो दिवसस्स तिक्खत्तुं गन्त्वा ओलोकेन्तो एकदिवसं अद्दस।

८३. **अथ खो, भिक्खवे**ति भिक्खवे, अथ राजा दळ्हनेमि "चक्करतनं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओसक्कित''न्ति सुत्वा उप्पन्नबलवदोमनस्सो ''न दानि मया चिरं जीवितब्बं भविस्सति, अप्पावसेसं मे आयु, न मे दानि कामे परिभुञ्जनकालो, पब्बज्जाकालो मे इदानी''ति रोदित्वा परिदेवित्वा जेट्ठपुत्तं कुमारं आमन्तापेत्वा एतदवोच। **समुद्दपरियन्त**न्ति परिक्खित्तएकसमुद्दपरियन्तमेव। इदं हिस्स कुलसन्तकं। चक्कवाळपरियन्तं पन पुञ्ञिद्धिवसेन निब्बत्तं, न तं सक्का दातुं। कुलसन्तकं पन निय्यातेन्तो ''समुद्दपरियन्त''न्ति आह। **केसमस्सु**न्ति तापसपब्बज्जं पब्बजन्तापि हि पठमं केसमस्सुं ओहारेन्ति। ततो पट्ठाय परूळ्हकेसे बन्धित्वा विचरन्ति। तेन वुत्तं– ''केसमस्सुं ओहारेत्वा''ति।

कासायानीति कसायरसपीतानि। आदितो एवं कत्वा पच्छा वक्कलानिपि धारेन्ति। **पब्बजी**ति पब्बजितो। पब्बजित्वा च अत्तनो मङ्गलवनुय्यानेयेव वसि। **राजिसिम्ही**ति राजईसिम्हि। ब्राह्मणपब्बजिता हि ''ब्राह्मणिसयो''ति वुच्चन्ति। सेतच्छत्तं पन पहाय राजपब्बजिता राजिसयोति। **अन्तरधायी**ति अन्तरहितं निब्बुतदीपसिखा विय अभावं उपगतं। **पटिसंवेदेसी**ति कन्दन्तो परिदेवन्तो जानापेसि। **पेत्तिक**न्ति पितितो आगतं दायज्जं न होति, न सक्का कुसीतेन हीनवीरियेन दस अकुसलकम्मपथे समादाय वत्तन्तेन पापुणितुं। अत्तनो पन सुकतं कम्मं निस्साय दसविधं द्वादसविधं वा चक्कवत्तिवत्तं पूरेन्तेनेवेतं पत्तब्बन्ति दीपेति। अथ नं वत्तपटिपत्तियं चोदेन्तो ''इङ्घ त्व''न्तिआदिमाह। तत्थ **अरिये**ति निद्दोसे। **चक्कवत्तिवत्ते**ति चक्कवत्तीनं वत्ते।

चक्कवत्तिअरियवत्तवण्णना

८४. **धम्म**न्ति दसकुसलकम्मपथधम्मं। **निस्साया**ति तदधिट्ठानेन चेतसा तमेव निस्सयं कत्वा। **धम्मं सक्करोन्तो**ति यथा कतो सो धम्मो सुट्ठु कतो होति, एवमेतं करोन्तो। **धम्मं गरुं करोन्तो**ति तस्मिं गारवुप्पत्तिया तं गरुं करोन्तो। **धम्मं मानेन्तो**ति तमेव धम्मं पियञ्च भावनीयञ्च कत्वा विहरन्तो। **धम्मं पूजेन्तो**ति तं अपदिसित्वा गन्धमालादिपूजनेनस्स पूजं करोन्तो। **धम्मं अपचयमानो**ति तस्सेव धम्मस्स अञ्जलिकरणादीहि नीचवुत्तितं करोन्तो। **धम्मद्धजो धम्मकेतू**ति तं धम्मं धजमिव पुरक्खत्वा केतुमिव च उक्खिपित्वा पवत्तिया धम्मद्धजो धम्मकेतु च हुत्वाति अत्थो। **धम्माधिपतेय्यो**ति धम्माधिपतिभूतो आगतभावेन धम्मवसेनेव सब्बकिरियानं करणेन धम्माधिपतेय्यो हुत्वा। **धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहस्सू**ति धम्मो अस्सा अत्थीति धम्मिका, रक्खा च आवरणञ्च गुत्ति च

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

रक्खावरणगुत्ति। तत्थ "परं रक्खन्तो अत्तानं रक्खती"ति (सं० नि० ३.५.३८५) वचनतो खन्तिआदयो रक्खा। वुत्तञ्हेतं "कथञ्च, भिक्खवे, परं रक्खन्तो अत्तानं रक्खति। खन्तिया अविहिंसाय मेत्तचित्तता अनुद्दयता"ति (सं० नि० ३.५.३८५)। निवासनपारुपनगेहादीनं निवारणा आवरणं, चोरादिउपद्दवनिवारणत्थं गोपायना गुत्ति, तं सब्बम्पि सुट्ठु संविदहस्सु पवत्तय ठपेहीति अत्थो। इदानि यत्थ सा संविदहितब्बा, तं दस्सेन्तो **अन्तोजनस्मि**न्तिआदिमाह।

तत्रायं सङ्खेपत्थो– अन्तोजनसङ्खातं तव पुत्तदारं सीलसंवरे पतिट्ठपेहि, वत्थगन्धमालादीनि चस्स देहि, सब्बोपद्दवे चस्स निवारेहि। **बलकाया**दीसुपि एसेव नयो। अयं पन विसेसो– बलकायो कालं अनतिक्कमित्वा भत्तवेतनसम्पदानेनपि अनुग्गहेतब्बो। अभिसित्तखत्तिया भद्रस्साजानेय्यादिरतनसम्पदानेनपि उपसङ्गण्हितब्बा। अनुयन्तखत्तिया तेसं अनुरूपयानवाहनसम्पदानेनपि परितोसेतब्बा। ब्राह्मणा अन्नपानवत्थादिना देय्यधम्मेन। गहपतिका भत्तबीजनङ्गलफालबलिबद्दादिसम्पदानेन। तथा निगमवासिनो नेगमा, जनपदवासिनो च जानपदा। समितपापबाहितपापा समणब्राह्मणा समणपरिक्खारसम्पदानेन सक्कातब्बा। मिगपक्खिनो अभयदानेन समस्सासेतब्बा।

विजितेति अत्तनो आणापवत्तिट्ठाने। **अधम्मकारो**ति अधम्मकिरिया। **मा पवत्तित्था**ति यथा नप्पवत्तति, तथा नं पटिपादेहीति अत्थो। **समणब्राह्मणा**ति समितपापबाहितपापा। **मदप्पमादा पटिविरता**ति नवविधा मानमदा, पञ्चसु कामगुणेसु चित्तवोस्सज्जनसङ्खाता पमादा च पटिविरता। **खन्तिसोरच्चे निविट्ठा**ति अधिवासनखन्तियञ्च सुरतभावे च पतिट्ठिता। **एकमत्तानन्ति** अत्तनो रागादीनं दमनादीहि एकमत्तानं दमेन्ति समेन्ति परिनिब्बापेन्तीति वुच्चन्ति। **कालेन कालन्ति** काले काले। **अभिनिवज्जेय्यासी**ति गूथं विय विसं विय अग्गिं विय च सुट्ठु वज्जेय्यासि। **समादाया**ति सुरभिकुसुमदामं विय अमतं विय च सम्मा आदाय पवत्तेय्यासि।

इध ठत्वा वत्तं समानेतब्बं। अन्तोजनस्मिं बलकायेपि एकं, खत्तियेसु एकं, अनुयन्तेसु एकं, ब्राह्मणगहपतिकेसु एकं, नेगमजानपदेसु एकं, समणब्राह्मणेसु एकं, मिगपक्खीसु एकं, अधम्मकारप्पटिक्खेपो एकं, अधनानं धनानुप्पदानं एकं समणब्राह्मणे उपसङ्कमित्वा पञ्हपुच्छनं एकन्ति एवमेतं दसविधं होति। गहपतिके पन पक्खिजाते च विसुं कत्वा गणेन्तस्स द्वादसविधं होति। पुब्बे अवुत्तं वा गणेन्तेन अधम्मरागस्स च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसमलोभस्स च पहानवसेन द्वादसविधं वेदितब्बं। **इदं खो तात तन्ति** इदं दसविधं द्वादसविधञ्च अरियचक्कवत्तिवत्तं नाम। **वत्तमानस्साति** पूरेत्वा वत्तमानस्स। **तदहुपोसथे**तिआदि महासुदस्सने वुत्तं।

९०. **समतेनाति** अत्तनो मतिया। **सुदन्ति** निपातमत्तं। **पसासतीति** अनुसासति। इदं वुत्तं होति – पोराणकं राजवंसं राजपवेणिं राजधम्मं पहाय अत्तनो मतिमत्ते ठत्वा जनपदं अनुसासतीति। एवमयं मघदेववंसस्स कळारजनको विय दळ्हनेमिवंसस्स उपच्छेदको अन्तिमपुरिसो हुत्वा उप्पन्नो। **पुब्बेनापरन्ति** पुब्बकालेन सदिसा हुत्वा अपरकालं। **जनपदा न पब्बन्तीति** न वड्ढन्ति। **यथा तं पुब्बकानन्ति** यथा पुब्बकानं राजूनं पुब्बे च पच्छा च सदिसायेव हुत्वा पब्बिंसु, तथा न पब्बन्ति। कत्थचि सुञ्ञा होन्ति हतविलुत्ता, तेलमधुफाणितादीसु चेव यागुभत्तादीसु च ओजापि परिहायित्थाति अत्थो।

अमच्चा पारिसज्जाति अमच्चा चेव परिसावचरा च। **गणकमहामत्ताति** अच्छिद्दकादिपाठगणका चेव महाअमच्चा च। **अनीकट्ठाति** हत्थिआचरियादयो। **दोवारिकाति** द्वाररक्खिनो। **मन्तस्साजीविनोति** मन्ता वुच्चति पञ्ञा, तं निस्सयं कत्वा ये जीवन्ति पण्डिता महामत्ता, तेसं एतं नामं।

आयुवण्णादिपरिहानिकथावण्णना

९१. **नो च खो अधनानन्ति** बलवलोभत्ता पन अधनानं दलिद्दमनुस्सानं धनं नानुप्पदासि। **नानुप्पदियमानेति** अननुप्पदियमाने, अयमेव वा पाठो। **दालिद्दियन्ति** दलिद्दभावो। **अत्तना च जीवाहीति** सयञ्च जीवं यापेहीति अत्थो। **उद्धग्गिकन्ति**आदीसु उपरूपरिभूमीसु फलदानवसेन उद्धमग्गमस्साति उद्धग्गिका। सग्गस्स हिता तत्रुपपत्तिजननतोति सोवग्गिका। निब्बत्तट्ठाने सुखो विपाको अस्साति सुखविपाका। सुट्ठु अग्गानं दिब्बवण्णादीनं दसन्नं विसेसानं निब्बत्तनतो सग्गसंवत्तनिका। एवरूपं दक्खिणं दानं पतिट्ठपेतीति अत्थो।

९२. **पवड्ढिस्सतीति** वड्ढिस्सति बहुं भविस्सति। **सुनिसेधं निसेधेय्यन्ति** सुट्ठु निसिद्धं निसेधेय्यं। **मूलघच्चन्ति** मूलहतं। **खरस्सरेनाति** फरुससद्देन। **पणवेनाति** वज्झभेरिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९३. **सीसानि नेसं छिन्दिस्सामा**ति येसं अन्तमसो मूलकमुट्ठिम्पि हरिस्साम, तेसं तथेव सीसानि छिन्दिस्साम, यथा कोचि हटभावम्पि न जानिस्सति, अम्हाकं दानि किमेत्थ राजापि एवं उट्ठाय परं मारेतीति अयं नेसं अधिप्पायो। **उपक्कमिंसू**ति आरभिंसु। **पन्थदुहनन्ति** पन्थघातं, पन्थे ठत्वा चोरकम्मं।

९४. **न हि, देवा**ति सो किर चिन्तेसि– "अयं राजा सच्चं देवाति मुखपटिञ्ञाय दिन्नाय मारापेति, हन्दाहं मुसावादं करोमी"ति, मरणभया "न हि देवा"ति अवोच।

९६. **एकिदन्ति** एत्थ **इदन्ति** निपातमत्तं, एके सत्ताति अत्थो। **चारित्तन्ति** मिच्छाचारं। **अभिज्झाब्यापादा**ति अभिज्झा च ब्यापादो च। **मिच्छादिट्ठी**ति नत्थि दिन्नन्तिआदिका अन्तग्गाहिका पच्चनीकदिट्ठि।

१०१. **अधम्मरागो**ति माता मातुच्छा पितुच्छा मातुलानीतिआदिके अयुत्तट्ठाने रागो। **विसमलोभो**ति परिभोगयुत्तेसुपि ठानेसु अतिबलवलोभो। **मिच्छाधम्मो**ति पुरिसानं पुरिसेसु इत्थीनञ्च इत्थीसु छन्दरागो।

अमत्तेय्यतातिआदीसु मातु हितो मत्तेय्यो, तस्स भावो मत्तेय्यता, मातरि सम्मा पटिपत्तिया एतं नामं। तस्सा अभावो चेव तप्पटिपक्खता च अमत्तेय्यता। **अपेत्तेय्यता**दीसुपि एसेव नयो। **न कुले जेट्ठापचायिता**ति कुले जेट्ठानं अपचितिया नीचवुत्तिया अकरणभावो।

दसवस्सायुकसमयवण्णना

१०३. **यं इमेसन्ति** यस्मिं समये इमेसं। **अलंपतेय्या**ति पतिनो दातुं युत्ता। **इमानि रसानी**ति इमानि लोके अग्गरसानि। **अतिब्यादिप्पिस्सन्ती**ति अतिविय दिप्पिस्सन्ति, अयमेव वा पाठो। **कुसलन्तिपि न भविस्सती**ति कुसलन्ति नामम्पि न भविस्सति, पञ्ञत्तिमत्तम्पि न पञ्ञायिस्सतीति अत्थो। **पुज्जा च भविस्सन्ति पासंसा चा**ति पूजारहा च भविस्सन्ति पसंसारहा च। तदा किर मनुस्सा "असुकेन नाम माता पहता, पिता पहतो, समणब्राह्मणा जीविता वोरोपिता, कुले जेट्ठानं अत्थिभावम्पि न जानाति, अहो पुरिसो"ति तमेव पूजेस्सन्ति चेव पसंसिस्सन्ति च।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न भविस्सति मातातिं वाति अयं मय्हं मातातिं गरुचित्तं न भविस्सति। गेहे मातुगामं विय नानाविधं असब्भिकथं कथयमाना अगारवुपचारेन उपसङ्कमिस्सन्ति। **मातुच्छा**दीसुपि एसेव नयो। एत्थ च **मातुच्छा**ति मातुभगिनी। **मातुलानी**ति मातुलभरिया। **आचरियभरिया**ति सिप्पायतनानि सिक्खापकस्स आचरियस्स भरिया। **गरूनं दारा**ति चूळपितुमहापितुआदीनं भरिया। **सम्भेद**न्ति मिस्सीभावं, मरियादभेदं वा।

तिब्बो आघातो पच्चुपट्ठितो भविस्सतीति बलवकोपो पुनप्पुनं उप्पत्तिवसेन पच्चुपट्ठितो भविस्सति। अपरानि द्वे एतस्सेव वेवचनानि। कोपो हि चित्तं आघातेतीति **आघातो।** अत्तनो च परस्स च हितसुखं ब्यापादेतीति **ब्यापादो।** मनोपदूसनतो **मनोपदोसो**ति वुच्चति। **तिब्बं वधकचित्त**न्ति पियमानस्सापि परं मारणत्थाय वधकचित्तं। तस्स वत्थुं दस्सेतुं **मातुपि पुत्तम्ही**तिआदि वुत्तं। **मागविकस्सा**ति मिगलुद्दकस्स।

१०४. सत्थन्तरकप्पोति सत्थेन अन्तरकप्पो। संवट्टकप्पं अप्पत्वा अन्तराव लोकविनासो। अन्तरकप्पो च नामेस दुब्भिक्खन्तरकप्पो रोगन्तरकप्पो सत्थन्तरकप्पोति तिविधो। तत्थ लोभुस्सदाय पजाय दुब्भिक्खन्तरकप्पो होति। मोहुस्सदाय रोगन्तरकप्पो। दोसुस्सदाय सत्थन्तरकप्पो। तत्थ दुब्भिक्खन्तरकप्पेन नट्ठा येभुय्येन पेत्तिविसये उपपज्जन्ति। कस्मा ? आहारनिकन्तिया बलवत्ता। रोगन्तरकप्पेन नट्ठा येभुय्येन सग्गे निब्बत्तन्ति कस्मा ? तेसञ्हि "अहो वतञ्ञेसं सत्तानं एवरूपो रोगो न भवेय्या"ति मेत्तचित्तं उप्पज्जतीति। सत्थन्तरकप्पेन नट्ठा येभुय्येन निरये उपपज्जन्ति। कस्मा ? अञ्ञमञ्ञं बलवाघातताय।

मिगसञ्ञन्ति "अयं मिगो, अयं मिगो"ति सञ्ञं। **तिण्हानि सत्थानि हत्थेसु पातुभविस्सन्ती**ति तेसं किर हत्थेन फुट्ठमत्तं यंकिञ्चि अन्तमसो तिणपण्णं उपादाय आवुधमेव भविस्सति। **मा च मयं कञ्ची**ति मयं कञ्चि एकपुरिसम्पि जीविता मा वोरोपयिम्ह। **मा च अम्हे कोची**ति अम्हेपि कोचि एकपुरिसो जीविता मा वोरोपयित्थ। **यंनून मय**न्ति अयं लोकविनासो पच्चुपट्ठितो, न सक्का द्वीहि एकट्ठाने ठितेहि जीवितं लद्धुन्ति मञ्ञमाना एवं चिन्तयिंसु। **वनगहन**न्ति वनसङ्घातेहि तिणगुम्बलतादीहि गहनं दुप्पवेसट्ठानं। **रुक्खगहन**न्ति रुक्खेहि गहनं दुप्पवेसट्ठानं। **नदीविदुग्ग**न्ति नदीनं अन्तरदीपादीसु दुग्गमनट्ठानं। **पब्बतविसम**न्ति पब्बतेहि विसमं, पब्बतेसुपि वा विसमट्ठानं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सभागायिस्सन्तीति यथा अहं जीवामि दिट्ठा भो सत्ता, त्वम्पि तथा जीवसीति एवं सम्मोदनकथाय अत्तना सभागे करिस्सन्ति।

आयुवण्णादिवड्ढनकथावण्णना

१०५. आयतन्ति महन्तं। **पाणातिपाता विरमेय्यामा**ति पाणातिपाततो ओसक्केय्याम। पाणातिपातं विरमेय्यामातिपि सज्झायन्ति, तत्थ पाणातिपातं पजहेय्यामाति अत्थो। **वीसतिवस्सायुका**ति मातापितरो पाणातिपाता पटिविरता, पुत्ता कस्मा वीसतिवस्सायुका अहेसुन्ति खेत्तविसुद्धिया। तेसञ्हि मातापितरो सीलवन्तो जाता। इति सीलगब्भे वड्ढितत्ता इमाय खेत्तविसुद्धिया दीघायुका अहेसुं। ये पनेत्थ कालं कत्वा तत्थेव निब्बत्ता, ते अत्तनोव सीलसम्पत्तिया दीघायुका अहेसुं।

अस्सामाति भवेय्याम। **चत्तारीसवस्सायुका**तिआदयो कोट्ठासा अदिन्नादानादीहि पटिविरतानं वसेन वेदितब्बा।

सङ्खराजउप्पत्तिवण्णना

१०६. इच्छाति मय्हं भत्तं देथाति एवं उप्पज्जनकतण्हा। **अनसन**न्ति न असनं अविप्फारिकभावो कायालसियं, भत्तं भुत्तानं भत्तसम्मदपच्चया निपज्जितुकामताजनको कायदुब्बलभावोति अत्थो। **जरा**ति पाकटजरा। **कुक्कुटसम्पातिका**ति एकगामस्स छदनपिट्ठितो उप्पतित्वा इतरगामस्स छदनपिट्ठे पतनसङ्खातो कुक्कुटसम्पातो। एतासु अत्थीति कुक्कुटसम्पातिका। "कुक्कुटसम्पादिका"तिपि पाठो, गामन्तरतो गामन्तरं कुक्कुटानं पदसा गमनसङ्खातो कुक्कुटसम्पादो एतासु अत्थीति अत्थो। उभयम्पेतं घननिवासतंयेव दीपेति। **अवीचि मञ्ञे फुटो भविस्सती**ति अवीचिमहानिरयो विय निरन्तरपूरितो भविस्सति।

१०७. "असीतिवस्ससहस्सायुकेसु, भिक्खवे, मनुस्सेसु **मेत्तेय्यो** नाम भगवा लोके उप्पज्जिस्सती"ति न वड्ढमानकवसेन वुत्तं। न हि बुद्धा वड्ढमाने आयुम्हि निब्बत्तन्ति, हायमाने पन निब्बत्तन्ति। तस्मा यदा तं आयु वड्ढित्वा असङ्खेय्यतं पत्वा पुन हायमानं असीतिवस्ससहस्सकाले ठस्सति, तदा उप्पज्जिस्सतीति अत्थो। **परिहरिस्सती**ति इदं पन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिवारेत्वा विचरन्तानं वसेन वुत्तं। **यूपोति** पासादो। **रञ्ञा महापनादेन कारापितोति** रञ्ञा हेतुभूतेन तस्सत्थाय सक्केन देवराजेन विस्सकम्मदेवपुत्तं पेसेत्वा कारापितो। पुब्बे किर द्वे पितापुत्ता नळकारा पच्चेकबुद्धस्स नळेहि च उदुम्बरेहि च पण्णसालं कारापेत्वा तं तत्थ वासापेत्वा चतूहि पच्चयेहि उपट्ठहिंसु। ते कालं कत्वा देवलोके निब्बत्ता। तेसु पिता देवलोकेयेव अट्ठासि। पुत्तो देवलोका चवित्वा सुरुचिस्स रञ्ञो देविया सुमेधाय कुच्छिस्मिं निब्बत्तो। महापनादो नाम कुमारो अहोसि। सो अपरभागे छत्तं उस्सापेत्वा महापनादो नाम राजा जातो। अथस्स पुञ्ञानुभावेन सक्को देवराजा विस्सकम्मदेवपुत्तं रञ्ञो पासादं करोहीति पहिणि सो तस्स पासादं निम्मिनि पञ्चवीसतियोजनुब्बेधं सत्तरतनमयं सतभूमकं। यं सन्धाय जातके वुत्तं–

"पनादो नाम सो राजा, यस्स यूपो सुवण्णयो।
तिरियं सोळसुब्बेधो, उद्धमाहु सहस्सधा।।

सहस्सकण्डो सतगेण्डु, धजालु हरितामयो।
अनच्चुं तत्थ गन्धब्बा, छ सहस्सानि सत्तधा।।

एवमेतं तदा आसि, यथा भाससि भद्दजि।
सक्को अहं तदा आसिं, वेय्यावच्चकरो तवा"ति।। (जा० ५.३.४२)

सो राजा तत्थ यावतायुकं वसित्वा कालं कत्वा देवलोके निब्बत्ति। तस्मिं देवलोके निब्बत्ते सो पासादो महागङ्गाय अनुसोतं पति। तस्स धुरसोपानसम्मुखट्ठाने पयागपतिट्ठानं नाम नगरं मापितं। थुपिकासम्मुखट्ठाने कोटिगामो नाम। अपरभागे अम्हाकं भगवतो काले सो नळकारदेवपुत्तो देवलोकतो चवित्वा मनुस्सपथे भद्दजिसेट्ठि नाम हुत्वा सत्थु सन्तिके पब्बजित्वा अरहत्तं पापुणि। सो नावाय गङ्गातरणदिवसे भिक्खुसङ्घस्स तं पासादं दस्सेतीति वत्थु वित्थारेतब्बं। कस्मा पनेस पासादो न अन्तरहितोति? इतरस्स आनुभावा। तेन सद्धिं पुञ्ञं कत्वा देवलोके निब्बत्तकुलपुत्तो अनागते सङ्खो नाम राजा भविस्सति। तस्स परिभोगत्थाय सो पासादो उट्ठहिस्सति, तस्मा न अन्तरहितोति।

१०८. **उस्सापेत्वाति** तं पासादं उट्ठापेत्वा। **अज्झावसित्वाति** तत्थ वसित्वा। **तं दत्वा विस्सज्जित्वाति** तं पासादं दानवसेन दत्वा निरपेक्खो परिच्चागवसेन च विस्सज्जित्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कस्स च एवं दत्वाति ? समणादीनं। तेनाह– "समणब्राह्मणकपणद्धिकवनिब्बकयाचकानं दानं दत्वा"ति। कथं पन सो एकं पासादं बहूनं दस्सतीति ? एवं किरस्स चित्तं उप्पज्जिस्सति "अयं पासादो विप्पकिरियतू"ति। सो खण्डखण्डसो विप्पकिरिस्सति। सो तं अलग्गमानोव हुत्वा "यो यत्तकं इच्छति, सो तत्तकं गण्हतू"ति दानवसेन विस्सज्जिस्सति। तेन वुत्तं– "दानं दत्वा मेत्तेय्यस्स भगवतो...पे०... विहरिस्सती"ति। एत्तकेन भगवा वट्टगामिकुसलस्स अनुसन्धिं दस्सेति।

१०९. इदानि विवट्टगामिकुसलस्स अनुसन्धिं दस्सेन्तो पुन **अत्तदीपा, भिक्खवे, विहरथा**तिआदिमाह।

भिक्खुनो आयुवण्णादिवड्ढनकथावण्णना

११०. इदं खो, भिक्खवे, भिक्खुनो आयुस्मिन्ति भिक्खवे यं वो अहं आयुनापि वड्ढिस्सथाति अवोचं, तत्थ इदं भिक्खुनो आयुस्मिं इदं आयुकारणन्ति अत्थो। तस्मा तुम्हेहि आयुना वड्ढितुकामेहि इमे चत्तारो इद्धिपादा भावेतब्बाति दस्सेति।

वण्णस्मिन्ति यं वो अहं वण्णेनपि वड्ढिस्सथाति अवोचं, इदं तत्थ वण्णकारणं। सीलवतो हि अविप्पटिसारादीनं वसेन सरीरवण्णोपि कित्तिवसेन गुणवण्णोपि वड्ढति। तस्मा तुम्हेहि वण्णेन वड्ढितुकामेहि सीलसम्पन्नेहि भवितब्बन्ति दस्सेति।

सुखस्मिन्ति यं वो अहं सुखेनपि वड्ढिस्सथाति अवोचं, इदं तत्थ विवेकजं पीतिसुखादिनानप्पकारकं झानसुखं। तस्मा तुम्हेहि सुखेन वड्ढितुकामेहि इमानि चत्तारि झानानि भावेतब्बानि।

भोगस्मिन्ति यं वो अहं भोगेनपि वड्ढिस्सथाति अवोचं, अयं सो अप्पमाणानं सत्तानं अप्पटिकूलतावहो सुखसयनादि एकादसानिसंसो सब्बदिसाविप्फारितब्रह्मविहारभोगो। तस्मा तुम्हेहि भोगेन वड्ढितुकामेहि इमे ब्रह्मविहारा भावेतब्बा।

बलस्मिन्ति यं वो अहं बलेनपि वड्ढिस्सथाति अवोचं, इदं आसवक्खयपरियोसाने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पन्नं अरहत्तफलसङ्खातं बलं। तस्मा तुम्हेहि बलेन वड्ढितुकामेहि अरहत्तप्पत्तिया योगो करणीयो।

यथयिदं, भिक्खवे, मारबलन्ति यथा इदं देवपुत्तमारमच्चुमारकिलेसमारानं बलं दुप्पसहं दुरभिसम्भवं, एवं अञ्ञं लोके एकबलम्पि न समनुपस्सामि। तम्पि बलं इदमेव अरहत्तफलं पसहति अभिभवति अज्झोत्थरति। तस्मा एत्थेव योगो करणीयोति दस्सेति।

एवमिदं पुञ्ञन्ति एवं इदं लोकुत्तरपुञ्ञम्पि याव आसवक्खया पवड्ढतीति विवट्टगामिकुसलानुसन्धिं निट्ठपेन्तो अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठपेसि। सुत्तपरियोसाने वीसति भिक्खुसहस्सानि अरहत्तं पापुणिंसु। चतुरासीति पाणसहस्सानि अमतपानं पिविंसूति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

चक्कवत्तिसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. अग्गञ्ञसुत्तवण्णना

वासेट्ठभारद्वाजवण्णना

१११. **एवं मे सुतन्ति** अग्गञ्ञसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना – **पुब्बारामे मिगारमातुपासादे**ति एत्थ अयं अनुपुब्बिकथा। अतीते सतसहस्सकप्पमत्थके एका उपासिका पदुमुत्तरं भगवन्तं निमन्तेत्वा बुद्धप्पमुखस्स भिक्खुसतसहस्सस्स दानं दत्वा भगवतो पादमूले निपज्जित्वा "अनागते तुम्हादिसस्स बुद्धस्स अग्गुपट्ठायिका होमी"ति पत्थनं अकासि। सा कप्पसतसहस्सं देवेसु चेव मनुस्सेसु च संसरित्वा अम्हाकं भगवतो काले भद्दियनगरे मेण्डकसेट्ठिपुत्तस्स धनञ्चयसेट्ठिनो गेहे सुमनदेविया कुच्छिम्हि पटिसन्धिं गण्हि। जातकाले तस्सा विसाखाति नामं अकंसु। सा यदा भगवा भद्दियनगरं आगमासि, तदा पञ्चदासिसतेहि सद्धिं भगवतो पच्चुग्गमनं कत्वा पठमदस्सनम्हियेव सोतापन्ना अहोसि।

अपरभागे सावत्थियं मिगारसेट्ठिपुत्तस्स पुण्णवड्ढनकुमारस्स गेहं गता। तत्थ नं मिगारसेट्ठि मातुट्ठाने ठपेसि। तस्मा मिगारमाताति वुच्चति। पतिकुलं गच्छन्तिया चस्सा पिता महालतापिळन्धनं नाम कारापेसि। तस्मिं पिळन्धने चतस्सो वजिरनाळियो उपयोगं अगमंसु, मुत्तानं एकादस नाळियो, पवाळस्स द्वावीसति नाळियो, मणीनं तेत्तिंस नाळियो। इति एतेहि च अञ्ञेहि च सत्तहि रतनेहि निट्ठानं अगमासि। तं सीसे पटिमुक्कं याव पादपिट्ठिया भस्सति। पञ्चन्नं हत्थीनं बलं धारयमानाव नं इत्थी धारेतुं सक्कोति। सा अपरभागे दसबलस्स अग्गुपट्ठायिका हुत्वा तं पसाधनं विस्सज्जेत्वा नवहि कोटीहि भगवतो विहारं कारयमाना करीसमत्ते भूमिभागे पासादं कारेसि। तस्स उपरिभूमियं पञ्च गब्भसतानि होन्ति, हेट्ठिमभूमियं पञ्चाति गब्भसहस्सप्पटिमण्डितो अहोसि। सा "सुद्धपासादोव न सोभती"ति तं परिवारेत्वा पञ्च दुवड्ढगेहसतानि, पञ्च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चूळपासादसतानि, पञ्च दीघसालसतानि च कारापेसि। विहारमहो चतूहि मासेहि निट्ठानं अगमासि।

मातुगामत्तभावे ठिताय विसाखाय विय अञ्ञिस्सा बुद्धसासने धनपरिच्चागो नाम नत्थि, पुरिसत्तभावे ठितस्स अनाथपिण्डिकस्स विय अञ्ञस्साति। सो हि चतुपण्णासकोटियो विस्सज्जेत्वा सावत्थिया दक्खिणभागे अनुराधपुरस्स महाविहारसदिसे ठाने जेतवनमहाविहारं नाम कारेसि। विसाखा सावत्थिया पाचीनभागे उत्तरदेविया विहारसदिसे ठाने पुब्बारामं नाम कारेसि। भगवा इमेसं द्विन्नं कुलानं अनुकम्पाय सावत्थिं निस्साय विहरन्तो इमेसु द्वीसु विहारेसु निबद्धवासं वसि। एकं अन्तोवस्सं जेतवने वसति, एकं पुब्बारामे। तस्मिं समये पन भगवा पुब्बारामे विहरति। तेन वुत्तं "पुब्बारामे मिगारमातुपासादे"ति।

वासेट्ठभारद्वाजाति वासेट्ठो च सामणेरो भारद्वाजो च। **भिक्खूसु परिवसन्ती**ति ते नेव तित्थियपरिवासं वसन्ति, न आपत्तिपरिवासं। अपरिपुण्णवस्सत्ता पन भिक्खुभावं पत्थयमाना वसन्ति। तेनेवाह "भिक्खुभावं आकङ्खमाना"ति। उभोपि हेते उदिच्चब्राह्मणमहासालकुले निब्बत्ता, चत्तालीस चत्तालीस कोटिविभवा तिण्णं वेदानं पारगू मज्झिमनिकाये **वासेट्ठसुत्तं** सुत्वा सरणं गता, **तेविज्जसुत्तं** सुत्वा पब्बजित्वा इमस्मिं काले भिक्खुभावं आकङ्खमाना परिवसन्ति। **अब्भोकासे चङ्कमती**ति उत्तरदक्खिणेन आयतस्स पासादस्स पुरत्थिमदिसाभागे पासादच्छायायं यन्तरज्जूहि आकड्ढियमानं रतनसतुब्बेधं सुवण्णअग्घिकं विय अनिलपथे विधावन्तीहि छब्बण्णाहि बुद्धरस्मीहि सोभमानो अपरापरं चङ्कमति।

११३. अनुचङ्कमिंसूति अञ्जलिं पग्गय्ह ओनतसरीरा हुत्वा अनुवत्तमाना चङ्कमिंसु। **वासेट्ठं आमन्तेसी**ति सो तेसं पण्डिततरो गहेतब्बं विस्सज्जेतब्बञ्च जानाति, तस्मा तं आमन्तेसि। **तुम्हे ख्वत्था**ति तुम्हे खो अत्थ। **ब्राह्मणजच्चा**ति, ब्राह्मणजातिका। **ब्राह्मणकुलीना**ति ब्राह्मणेसु कुलीना कुलसम्पन्ना। **ब्राह्मणकुला**ति ब्राह्मणकुलतो, भोगादिसम्पन्नं ब्राह्मणकुलं पहायाति अत्थो। **न अक्कोसन्ती**ति दसविधेन अक्कोसवत्थुना न अक्कोसन्ति। **न परिभासन्ती**ति नानाविधाय परिभवकथाय न परिभासन्तीति अत्थो। इति भगवा "ब्राह्मणा इमे सामणेरे अक्कोसन्ति परिभासन्ती"ति जानमानोव पुच्छति। कस्मा? इमे मया अपुच्छिता पठमतरं न कथेस्सन्ति, अकथिते कथा न समुट्ठातीति कथासमुट्ठापनत्थाय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तग्घाति एकंसवचने निपातो, एकंसेनेव नो, भन्ते, ब्राह्मणा अक्कोसन्ति परिभासन्तीति वुत्तं होति। **अत्तरूपायाति** अत्तनो अनुरूपाय। **परिपुण्णायाति** यथारुचि पदब्यञ्जनानि आरोपेत्वा आरोपेत्वा परिपूरिताय। **नो अपरिपुण्णायाति** अन्तरा अट्ठपिताय निरन्तरं पवत्ताय।

कस्मा पन ब्राह्मणा इमे सामणेरे अक्कोसन्तीति? अप्पतिट्ठताय। इमे हि सामणेरा अग्गब्राह्मणानं पुत्ता तिण्णं वेदानं पारगू जम्बुदीपे ब्राह्मणानं अन्तरे पाकटा सम्भाविता तेसं पब्बजितत्ता अञ्ञे ब्राह्मणपुत्ता पब्बजिंसु। अथ खो ब्राह्मणा "अपतिट्ठा मयं जाता"ति इमाय अप्पतिट्ठताय गामद्वारेपि अन्तोगामेपि ते दिस्वा "तुम्हेहि ब्राह्मणसमयो भिन्नो, मुण्डसमणकस्स पच्छतो पच्छतो रसगिद्धा हुत्वा विचरथा"तिआदीनि चेव पाळियं आगतानि "ब्राह्मणोव सेट्ठो वण्णो"तिआदीनि च वत्वा अक्कोसन्ति। सामणेरा तेसु अक्कोसन्तेसुपि कोपं वा आघातं वा अकत्वा केवलं भगवता पुट्ठा "तग्घ नो, भन्ते, ब्राह्मणा अक्कोसन्ति परिभासन्ती"ति आरोचेसुं। अथ ने भगवा अक्कोसनाकारं पुच्छन्तो **यथा कथं पन वोति** पुच्छति। ते आचिक्खन्ता **ब्राह्मणा भन्तेति**आदिमाहंसु।

तत्थ **सेट्ठो वण्णोति** जातिगोत्तादीनं पञ्ञापनट्ठाने ब्राह्मणोव सेट्ठोति दस्सेन्ति। **हीना अञ्ञे वण्णाति** इतरे तयो वण्णा हीना लामकाति वदन्ति। **सुक्कोति** पण्डरो। **कण्होति** काळको। **सुज्झन्तीति** जातिगोत्तादीनं पञ्ञापनट्ठाने सुज्झन्ति। **ब्रह्मुनो पुत्ताति** महाब्रह्मुनो पुत्ता। **ओरसा मुखतो जाताति** उरे वसित्वा मुखतो निक्खन्ता, उरे कत्वा संवड्ढिताति वा ओरसा। **ब्रह्मजाति** ब्रह्मतो निब्बत्ता। **ब्रह्मनिम्मिताति** ब्रह्मुना निम्मिता। **ब्रह्मदायादाति** ब्रह्मुनो दायादा। **हीनमत्थ वण्णं अज्झुपगताति** हीनं वण्णं अज्झुपगता अत्थ। **मुण्डके समणकेति** निन्दन्ता जिगुच्छन्ता वदन्ति, न मुण्डकमत्तञ्चेव समणमत्तञ्च सन्धाय। **इब्भेति** गहपतिके। **कण्हेति** काळके। **बन्धूति** मारस्स बन्धुभूते मारपक्खिके। **पादापच्चेति** महाब्रह्मुनो पादानं अपच्चभूते पादतो जातेति अधिप्पायो।

११४. "तग्घ वो, वासेट्ठ, ब्राह्मणा पोराणं अस्सरन्ता एवमाहंसू"ति एत्थ **वोति** निपातमत्तं, सामिवचनं वा, तुम्हाकं ब्राह्मणाति अत्थो। **पोराणन्ति** पोराणकं अग्गञ्ञं लोकुप्पत्तिचरियवंसं। **अस्सरन्ताति** अस्सरमाना। इदं वुत्तं होति, एकंसेन वो, वासेट्ठ, ब्राह्मणा पोराणं लोकुप्पत्तिं अननुस्सरन्ता अजानन्ता एवं वदन्तीति। "दिस्सन्ति खो पना"ति एवमादि तेसं लद्धिभिन्दनत्थाय वुत्तं। तत्थ **ब्राह्मणियोति** ब्राह्मणानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्तप्पटिलाभत्थाय आवाहविवाहवसेन कुलं आनीता ब्राह्मणियो दिस्सन्ति। ता खो पनेता अपरेन समयेन उतुनियोपि होन्ति, सञ्जातपुप्फाति अत्थो। **गब्भिनियो**ति सञ्जातगब्भा। **विजायमाना**ति पुत्तधीतरो जनयमाना। **पायमाना**ति दारके थञ्ञं पायन्तियो। **योनिजाव समाना**ति ब्राह्मणीनं पस्सावमग्गेन जाता समाना। **एवमाहंसू**ति एवं वदन्ति। कथं? "ब्राह्मणोव सेट्ठो वण्णो...पे०... ब्रह्मदायादा"ति। यदि पन नेसं तं सच्चवचनं सिया, ब्राह्मणीनं कुच्छि महाब्रह्मस्स उरो भवेय्य, ब्राह्मणीनं पस्सावमग्गो महाब्रह्मुनो मुखं भवेय्य, न खो पनेतं एवं दट्ठब्बं। तेनाह "ते च ब्रह्मूनञ्चेव अब्भाचिक्खन्ती"तिआदि।

चतुवण्णसुद्धिवण्णना

एत्तावता "मयं महाब्रह्मुनो उरे वसित्वा मुखतो निक्खन्ताति वत्तुं मा लभन्तू"ति इमं मुखच्छेदकवादं वत्वा पुन चत्तारोपि वण्णा कुसले धम्मे समादाय वत्तन्ताव सुज्झन्तीति दस्सनत्थं **चत्तारोमे, वासेट्ठ, वण्णा**तिआदिमाह। **अकुसलसङ्खाता**ति अकुसलाति सङ्खाता अकुसलकोट्ठासभूता वा। एस नयो सब्बत्थ। **न अलमरिया**ति अरियभावे असमत्था। **कण्हा**ति पकतिकाळका। **कण्हविपाका**ति विपाकोपि नेसं कण्हो दुक्खोति अत्थो। **खत्तियेपि ते**ति खत्तियम्हिपि ते। **एकच्चे**ति एकस्मिं। एस नयो सब्बत्थ।

सुक्काति निक्किलेसभावेन पण्डरा। **सुक्कविपाका**ति विपाकोपि नेसं सुक्को सुखोति अत्थो।

११६. उभयवोकिण्णेसु वत्तमानेसूति उभयेसु वोकिण्णेसु मिस्सीभूतेसु हुत्वा वत्तमानेसु। कतमेसु उभयेसूति? कण्हसुक्केसु धम्मेसु विञ्ञुगरहितेसु चेव विञ्ञुप्पसत्थेसु च। **यदेत्थ ब्राह्मणा एवमाहंसू**ति एत्थ एतेसु कण्हसुक्कधम्मेसु वत्तमानापि ब्राह्मणा यदेतं एवं वदन्ति "ब्राह्मणोव सेट्ठो वण्णो"तिआदि। **तं नेसं विञ्ञू नानुजानन्ती**ति ये लोके पण्डिता, ते नानुमोदन्ति, न पसंसन्तीति अत्थो। **तं किस्स हेतु? इमेसञ्हि वासेट्ठा**तिआदिम्हि अयं सङ्खेपत्थो। यं वुत्तं नानुजानन्तीति, तं कस्माति चे? यस्मा इमेसं *चतुन्नं वण्णानं यो भिक्खु अरहं...पे०... सम्मदञ्ञा विमुत्तो, सो तेसं अग्गमक्खायति,* ते च न एवरूपा। तस्मा नेसं विञ्ञू नानुजानन्ति।

अरहन्तिआदिपदेसु चेत्थ किलेसानं आरकत्तादीहि कारणेहि **अरहं**। आसवानं खीणत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खीणासवो। सत्त सेक्खा पुथुज्जनकल्याणका च ब्रह्मचरियवासं वसन्ति नाम। अयं पन वुत्थवासोति **वुसितवा**। चतूहि मग्गेहि चतूसु सच्चेसु परिजाननादिकरणीयं कतं अस्साति **कतकरणीयो**। किलेसभारो च खन्धभारो च ओहितो अस्साति **ओहितभारो**। ओहितोति ओहारितो। सुन्दरो अत्थो, सको वा अत्थो सदत्थो, अनुप्पत्तो सदत्थो एतेनाति **अनुप्पत्तसदत्थो**। भवसंयोजनं वुच्चति तण्हा, सा परिक्खीणा अस्साति **परिक्खीणभवसंयोजनो**। **सम्मदञ्ञा विमुत्तो**ति सम्मा हेतुना कारणेन जानित्वा विमुत्तो। **जनेतस्मिन्ति** जने एतस्मिं, इमस्मिं लोकेति अत्थो। **दिट्ठे चेव धम्मे अभिसम्परायञ्चा**ति इधत्तभावे च परत्तभावे।

११७. **अनन्तरा**ति अन्तरविरहिता, अत्तनो कुलेन सदिसाति अत्थो। **अनुयुत्ता**ति वसवत्तिनो। **निपच्चकार**न्ति महल्लकतरा निपच्चकारं दस्सेन्ति। दहरतरा अभिवादनादीनि करोन्ति। तत्थ **सामीचिकम्म**न्ति तंतंवत्तकरणादि अनुच्छविककम्मं।

११८. **निविट्ठा**ति अभिनिविट्ठा अचलट्ठिता। कस्स पन एवरूपा सद्धा होतीति? सोतापन्नस्स। सो हि निविट्ठसद्धो असिना सीसे छेज्जमानेपि बुद्धो अबुद्धोति वा, धम्मो अधम्मोति वा, सङ्घो असङ्घोति वा न वदति। पतिट्ठितसद्धो होति सूरम्बट्ठो विय।

सो किर सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा सोतापन्नो हुत्वा गेहं अगमासि। अथ मारो द्वत्तिंसवरलक्खणप्पटिमण्डितं बुद्धरूपं मापेत्वा तस्स घरद्वारे ठत्वा "सत्था आगतो"ति सासनं पहिणि। सूरम्बट्ठो चिन्तेसि "अहं इदानेव सत्थु सन्तिके धम्मं सुत्वा आगतो, किं नु खो भविस्सती"ति उपसङ्कमित्वा सत्थुसञ्ञाय वन्दित्वा अट्ठासि। मारो आह– "अम्बट्ठ, यं ते मया 'रूपं अनिच्चं...पे०... विञ्ञाणं अनिच्चन्ति कथितं, तं दुक्कथितं। अनुपधारेत्वाव हि मया एवं वुत्तं। तस्मा त्वं 'रूपं निच्चं...पे०... विञ्ञाणं निच्च'न्ति गण्हाही"ति। सो चिन्तेसि– "अट्ठानमेतं यं बुद्धा अनुपधारेत्वा अपच्चक्खं कत्वा किञ्चि कथेय्युं, अद्धा अयं मय्हं विच्छिन्दजननत्थं मारो आगतो"ति। ततो नं "त्वं मारोसी"ति आह। सो मुसावादं कातुं नासक्खि। "आम मारोस्मी"ति पटिजानाति। "कस्मा आगतोसी"ति? तव सद्धाचालनत्थन्ति आह। "कण्ह पापिम, त्वं ताव एको तिट्ठ, तादिसानं मारानं सतम्पि सहस्सम्पि सतसहस्सम्पि मम सद्धं चालेतुं असमत्थं, मग्गेन आगतसद्धा नाम थिरा सिलापथवियं पतिट्ठितसिनेरु विय अचला होति, किं त्वं एत्था"ति अच्छरं पहरि। सो ठातुं असक्कोन्तो तत्थेव अन्तरधायि। एवरूपं सद्धं सन्धायेतं वुत्तं "निविट्ठा"ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूलजाता पतिट्ठिताति मग्गमूलस्स सञ्जातत्ता तेन मग्गमूलेन पतिट्ठिता। **दळ्हाति** थिरा। **असंहारियाति** सुनिखातइन्दखीलो विय केनचि चालेतुं असक्कुणेय्या। **तस्सेतं कल्लं वचनायाति** तस्स अरियसावकस्स युत्तमेतं वत्तुं। किन्ति? "भगवतोम्हि पुत्तो ओरसो"ति एवमादि। सो हि भगवन्तं निस्साय अरियभूमियं जातोति **भगवतो पुत्तो**। उरे वसित्वा मुखतो निक्खन्तधम्मघोसवसेन मग्गफलेसु पतिट्ठितत्ता **ओरसो मुखतो जातो**। अरियधम्मतो जातत्ता अरियधम्मेन च निम्मितत्ता **धम्मजो धम्मनिम्मितो**। नवलोकुत्तरधम्मदायज्जं अरहतीति **धम्मदायादो**। **तं किस्स हेतूति** यदेतं "भगवतोम्हि पुत्तो"ति वत्वा "धम्मजो धम्मनिम्मितो"ति वुत्तं, तं कस्माति चे? इदानिस्स अत्थं दस्सेन्तो **तथागतस्स हेतन्ति**आदिमाह। तत्थ "धम्मकायो इतिपी"ति कस्मा तथागतो "धम्मकायो"ति वुत्तो? तथागतो हि तेपिटकं बुद्धवचनं हदयेन चिन्तेत्वा वाचाय अभिनीहरि। तेनस्स कायो धम्ममयत्ता धम्मोव। इति धम्मो कायो अस्साति **धम्मकायो**। धम्मकायत्ता एव **ब्रह्मकायो**। धम्मो हि सेट्ठत्थेन ब्रह्माति वुच्चति। **धम्मभूतोति** धम्मसभावो। धम्मभूतत्ता एव **ब्रह्मभूतो**।

११९. एत्तावता भगवा सेट्ठच्छेदकवादं दस्सेत्वा इदानि अपरेनपि नयेन सेट्ठच्छेदकवादमेव दस्सेतुं **होति खो सो, वासेट्ठ, समयोति**आदिमाह। तत्थ संवट्टविवट्टकथा **ब्रह्मजाले** वित्थारिताव। **इत्थत्तं आगच्छन्तीति** इत्थभावं मनुस्सत्तं आगच्छन्ति। **तेध होन्ति मनोमयाति** ते इध मनुस्सलोके निब्बत्तमानापि ओपपातिका हुत्वा मनेनेव निब्बत्ताति मनोमया। ब्रह्मलोके विय इधापि नेसं पीतियेव आहारकिच्चं साधेतीति **पीतिभक्खा**। एतेनेव नयेन **सयंपभादीनिपि** वेदितब्बानीति।

रसपथविपातुभाववण्णना

१२०. एकोदकीभूतन्ति सब्बं चक्कवाळं एकोदकमेव भूतं। **अन्धकारोति** तमो। **अन्धकारतिमिसाति** चक्खुविञ्ञाणुप्पत्तिनिवारणेन अन्धभावकरणं बहलतमं। **समतनीति** पतिट्ठहि समन्ततो पत्थरि। **पयसो तत्तस्साति** तत्तस्स खीरस्स। **वण्णसम्पन्नाति** वण्णेन सम्पन्ना। कणिकारपुप्फसदिसो हिस्सा वण्णो अहोसि। **गन्धसम्पन्नाति** गन्धेन सम्पन्ना दिब्बगन्धं वायति। **रससम्पन्नाति** रसेन सम्पन्ना पक्खित्तदिब्बोजा विय होति। **खुद्दमधुन्ति** खुद्दकमक्खिकाहि कतमधुं। **अनेळकन्ति** निद्दोसं मक्खिकण्डकविरहितं। **लोलजातिकोति** लोलसभावो। अतीतानन्तरेपि कप्पे लोलोयेव। **अम्भोति** अच्छरियजातो आह। **किमेविदं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविस्सतीति वण्णोपिस्सा मनापो गन्धोपि, रसो पनस्सा कीदिसो भविस्सतीति अत्थो। यो तत्थ उप्पन्नलोभो, सो रसपथविं अङ्गुलिया सायि, अङ्गुलिया गहेत्वा जिव्हग्गे ठपेसि।

अच्छादेसीति जिव्हग्गे ठपितमत्ता सत्त रसहरणीसहस्सानि फरित्वा मनापा हुत्वा तिट्ठति। **तण्हा चस्स ओक्कमीति** तत्थ चस्स तण्हा उप्पज्जि।

चन्दिमसूरियादिपातुभाववण्णना

१२१. आलुप्पकारकं उपक्कमिंसु परिभुञ्जितुन्ति आलेपं कत्वा पिण्डे पिण्डे छिन्दित्वा परिभुञ्जितुं आरभिंसु। **चन्दिमसूरियाति** चन्दिमा च सूरियो च। **पातुरहेसुन्ति** पातुभविंसु।

को पन तेसं पठमं पातुभवि, को कस्मिं वसति, कस्स किं पमाणं, को उपरि, को सीघं गच्छति, कति नेसं वीथियो, कथं चरन्ति, कित्तके ठाने आलोकं करोन्तीति? उभो एकतो पातुभवन्ति। सूरियो पठमतरं पञ्ञायति। तेसञ्हि सत्तानं सयंपभाय अन्तरहिताय अन्धकारो अहोसि। ते भीततसिता "भद्दकं वतस्स सचे आलोको पातुभवेय्या"ति चिन्तयिंसु। ततो महाजनस्स सूरभावं जनयमानं सूरियमण्डलं उट्ठहि। तेनेवस्स सूरियोति नामं अहोसि। तस्मिं दिवसं आलोकं कत्वा अत्थङ्गते पुन अन्धकारो अहोसि। ते "भद्दकं वतस्स सचे अञ्ञो आलोको उप्पज्जेय्या"ति चिन्तयिंसु। अथ नेसं छन्दं ञत्वाव चन्दमण्डलं उट्ठहि। तेनेवस्स चन्दोति नामं अहोसि।

तेसु चन्दो अन्तोमणिविमाने वसति। तं बहि रजतेन परिक्खित्तं। उभयम्पि सीतलमेव अहोसि। सूरियो अन्तोकनकविमाने वसति। तं बाहिरं फलिकपरिक्खित्तं होति। उभयम्पि उण्हमेव।

पमाणतो चन्दो उजुकं एकूनपञ्ञासयोजनो। परिमण्डलतो तीहि योजनेहि ऊनदियड्ढसतयोजनो। सूरियो उजुकं पञ्ञासयोजनो, परिमण्डलतो दियड्ढसतयोजनो।

चन्दो हेट्ठा, सूरियो उपरि, अन्तरा नेसं योजनं होति। चन्दस्स हेट्ठिमन्ततो सूरियस्स उपरिमन्ततो योजनसतं होति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चन्दो उजुकं सणिकं गच्छति, तिरियं सीघं। द्वीसु पस्सेसु नक्खत्ततारका गच्छन्ति। चन्दो धेनु विय वच्छं तं तं नक्खत्तं उपसङ्कमति। नक्खत्तानि पन अत्तनो ठानं न विजहन्ति। सूरियस्स उजुकं गमनं सीघं, तिरियं गमनं दन्धं। सो काळपक्खउपोसथतो पाटिपददिवसे योजनानं सतसहस्सं चन्दमण्डलं ओहाय गच्छति। अथ चन्दो लेखा विय पञ्ञायति। पक्खस्स दुतियाय सतसहस्सन्ति एवं याव उपोसथदिवसा सतसहस्सं सतसहस्सं ओहाय गच्छति। अथ चन्दो अनुक्कमेन वड्ढित्वा उपोसथदिवसे परिपुण्णो होति। पुन पाटिपददिवसे योजनानं सतसहस्सं धावित्वा गण्हाति। दुतियाय सतसहस्सन्ति एवं याव उपोसथदिवसा सतसहस्सं सतसहस्सं धावित्वा गण्हाति। अथ चन्दो अनुक्कमेन हायित्वा उपोसथदिवसे सब्बसो न पञ्ञायति। चन्दं हेट्ठा कत्वा सूरियो उपरि होति। महतिया पातिया खुद्दकभाजनं विय चन्दमण्डलं पिधीयति। मज्झन्हिके गेहच्छाया विय चन्दस्स छाया न पञ्ञायति। सो छायाय अपञ्ञायमानाय दूरे ठितानं दिवा पदीपो विय सयम्पि न पञ्ञायति।

कति नेसं वीथियोति एत्थ पन अजवीथि, नागवीथि, गोवीथीति तिस्सो वीथियो होन्ति। तत्थ अजानं उदकं पटिकूलं होति, हत्थिनागानं मनापं। गुन्नं सीतुण्हसमताय फासु होति। तस्मा यं कालं चन्दिमसूरिया अजवीथिं आरुहन्ति, तदा देवो एकबिन्दुम्पि न वस्सति। यदा नागवीथिं आरोहन्ति, तदा भिन्नं विय नभं पग्घरति। यदा गोवीथिं आरोहन्ति, तदा उतुसमता सम्पज्जति। चन्दिमसूरिया छमासे सिनेरुतो बहि निक्खमन्ति, छमासे अन्तो विचरन्ति। ते हि आसाळ्हमासे सिनेरुसमीपेन विचरन्ति। ततो परे द्वे मासे निक्खमित्वा बहि विचरन्ता पठमकत्तिकमासे मज्झेन गच्छन्ति। ततो चक्कवाळाभिमुखा गन्त्वा तयो मासे चक्कवाळसमीपेन चरित्वा पुन निक्खमित्वा चित्रमासे मज्झेन गन्त्वा ततो द्वे मासे सिनेरुभिमुखा पक्खन्दित्वा पुन आसाळ्हे सिनेरुसमीपेन चरन्ति।

कित्तके ठाने आलोकं करोन्तीति? एकप्पहारेन तीसु दीपेसु आलोकं करोन्ति। कथं? इमस्मिञ्हि दीपे सूरियुग्गमनकालो पुब्बविदेहे मज्झन्हिको होति, उत्तरकुरूसु अत्थङ्गमनकालो, अपरगोयाने मज्झिमयामो। पुब्बविदेहम्हि उग्गमनकालो उत्तरकुरूसु मज्झन्हिको, अपरगोयाने अत्थङ्गमनकालो, इध मज्झिमयामो। उत्तरकुरूसु उग्गमनकालो अपरगोयाने मज्झन्हिको, इध अत्थङ्गमनकालो, पुब्बविदेहे मज्झिमयामो। अपरगोयानदीपे उग्गमनकालो इध मज्झन्हिको, पुब्बविदेहे अत्थङ्गमनकालो, उत्तरकुरूसु मज्झिमयामोति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नक्खत्तानि तारकरूपानीति कत्तिकादिनक्खत्तानि चेव सेसतारकरूपानि च चन्दिमसूरियेहि सद्धिंयेव पातुरहेसुं। **रत्तिन्दिवा**ति ततो सूरियत्थङ्गमनतो याव अरुणुग्गमना रत्ति, अरुणुग्गमनतो याव सूरियत्थङ्गमना दिवाति एवं रत्तिन्दिवा पञ्ञायिंसु। अथ पञ्चदस रत्तियो अड्ढमासो, द्वे अड्ढमासा मासोति एवं मासड्ढमासा पञ्ञायिंसु। अथ चत्तारो मासा उतु, तयो उतू संवच्छरोति एवं उतुसंवच्छरा पञ्ञायिंसु।

१२२. **वण्णवेवण्णता चा**ति वण्णस्स विवण्णभावो। **तेसं वण्णातिमानपच्चया**ति तेसं वण्णं आरब्भ उप्पन्नअतिमानपच्चया। **मानातिमानजातिकान**न्ति पुनप्पुनं उप्पज्जमानातिमानसभावानं। **रसाय पथविया**ति सम्पन्नरसत्ता रसाति लद्धनामाय पथविया। **अनुत्थुनिंसू**ति अनुभासिंसु। **अहो रस**न्ति अहो अम्हाकं मधुररसं अन्तरहितं। **अग्गञ्ञं अक्खर**न्ति लोकुप्पत्तिवंसकथं। **अनुसरन्ती**ति अनुगच्छन्ति।

भूमिपप्पटकपातुभावादिवण्णना

१२३. **एवमेव पातुरहोसी**ति एदिसो हुत्वा उट्ठहि, अन्तोवापियं उदके छिन्ने सुक्खकललपटलं विय च उट्ठहि।

१२४. **पदालता**ति एका मधुररसा भद्दालता। **कलम्बुका**ति नाळिका। **अहु वत नो**ति मधुररसा वत नो पदालता अहोसि। **अहायि वत नो**ति सा नो एतरहि अन्तरहिताति।

१२५. **अकट्ठपाको**ति अकट्ठेयेव भूमिभागे उप्पन्नो। **अकणो**ति निक्कुण्डको। **अथुसो**ति नित्थुसो। **सुगन्धो**ति दिब्बगन्धं वायति। **तण्डुलप्फलो**ति सुपरिसुद्धं पण्डरं तण्डुलमेव फलति। **पक्कं पटिविरूळ्ह**न्ति सायं गहितट्ठानं पातो पक्कं होति, पुन विरूळ्हं पटिपाकतिकमेव गहितट्ठानं न पञ्ञायति। **नापदानं पञ्ञायती**ति अलायितं हुत्वा अनूनमेव पञ्ञायति।

इत्थिपुरिसलिङ्गादिपातुभाववण्णना

१२६. **इत्थिया चा**ति या पुब्बे मनुस्सकाले इत्थी, तस्स इत्थिलिङ्गं पातुभवति, पुब्बे पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं। मातुगामो नाम हि पुरिसत्तभावं लभन्तो अनुपुब्बेन पुरिसत्तपच्चये

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मे पूरेत्वा लभति। पुरिसो इत्थत्तभावं लभन्तो कामेसुमिच्छाचारं निस्साय लभति। तदा पन पकतिया मातुगामस्स इत्थिलिङ्गं, पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं पातुरहोसि। **उपनिज्झायत**न्ति उपनिज्झायन्तानं ओलोकेन्तानं। **परिळाहो**ति रागपरिळाहो। **सेट्ठि**न्ति छारिकं। **निब्बुय्हमानाया**ति निय्यमानाय।

१२७. **अधम्मसम्मत**न्ति तं पंसुखिपनादि अधम्मोति सम्मतं। **तदेतरहि धम्मसम्मत**न्ति तं इदानि धम्मोति सम्मतं, धम्मोति तं गहेत्वा विचरन्ति। तथा हि एकच्चेसु जानपदेसु कलहं कुरुमाना इत्थियो "त्वं कस्मा कथेसि ? या गोमयपिण्डमत्तम्पि नालत्था"ति वदन्ति। **पातब्यत**न्ति सेवितब्बतं। **सन्निधिकारक**न्ति सन्निधिं कत्वा। **अपदानं पञ्ञायित्था**ति छिन्नट्ठानं ऊनमेव हुत्वा पञ्ञायित्थ। **सण्डसण्डा**ति एकेकस्मिं ठाने कलापबन्धा विय गुम्बगुम्बा हुत्वा।

१२८. **मरियादं ठपेय्यामा**ति सीमं ठपेय्याम। **यत्र हि नामा**ति यो हि नाम। **पाणिना पहरिंसू**ति तयो वारे वचनं अगण्हन्तं पाणिना पहरिंसु। **तदग्गे खो**ति तं अग्गं कत्वा।

महासम्मतराजवण्णना

१३०. **खीयितब्बं खीयेय्या**ति पकासेतब्बं पकासेय्य खिपितब्बं खिपेय्य, हारेतब्बं हारेय्याति वुत्तं होति। **यो नेसं सत्तो**ति यो तेसं सत्तो। को पन सोति ? अम्हाकं बोधिसत्तो। **सालीनं भागं अनुपदस्सामा**ति मयं एकेकस्स खेत्ततो अम्बणम्बणं आहरित्वा तुय्हं सालिभागं दस्साम, तया किञ्चि कम्मं न कातब्बं, त्वं अम्हाकं जेट्ठकट्ठाने तिट्ठाति।

१३१. **अक्खरं उपनिब्बत्त**न्ति सञ्ञा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो उप्पन्नो। **खत्तियो खत्तियोत्वेव दुतियं अक्खर**न्ति न केवलं अक्खरमेव, ते पनस्स खेत्तसामिनो तीहि सङ्केहि अभिसेकम्पि अकंसु। **रञ्जेती**ति सुखेति पिनेति। **अग्गञ्ञेना**ति अग्गन्ति ञातेन, अग्गे वा ञातेन लोकुप्पत्तिसमये उप्पन्नेन अभिनिब्बत्ति अहोसीति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्राह्मणमण्डलादिवण्णना

१३२. **वीतङ्गारा वीतधूमा**ति पचित्वा खादितब्बाभावतो विगतधूमङ्गारा। **पन्नमुसला**ति कोट्टेत्वा पचितब्बाभावतो पतितमुसला। **घासमेसमाना**ति भिक्खाचरियवसेन यागुभत्तं परियेसन्ता। **तमेनं मनुस्सा दिस्वा**ति ते एते मनुस्सा पस्सित्वा। **अनभिसम्भुणमाना**ति असहमाना असक्कोन्ता। **गन्थे करोन्ता**ति तयो वेदे अभिसङ्खरोन्ता चेव वाचेन्ता च। **अच्छन्ती**ति वसन्ति, "अच्छेन्ती"तिपि पाठो। एसेवत्थो। **हीनसम्मत**न्ति "मन्ते धारेन्ति मन्ते वाचेन्ती"ति खो, वासेट्ठ, इदं तेन समयेन हीनसम्मतं। **तदेतरहि सेट्ठसम्मत**न्ति तं इदानि "एत्तके मन्ते धारेन्ति एत्तके मन्ते वाचेन्ती"ति सेट्ठसम्मतं जातं। **ब्राह्मणमण्डलस्सा**ति ब्राह्मणगणस्स।

१३३. **मेथुनं धम्मं समादाया**ति मेथुनधम्मं समादियित्वा। **विसुकम्मन्ते पयोजेसु**न्ति गोरक्ख वाणिजकम्मादिके विस्सुते उग्गते कम्मन्ते पयोजेसुं।

१३४. **सुद्दा सुद्दा**ति तेन लुद्दाचारकम्मखुद्दाचारकम्मुना सुद्दं सुद्दं लहुं लहुं कुच्छितं गच्छन्ति, विनस्सन्तीति अत्थो। **अहु खो**ति होति खो।

१३५. **सकं धम्मं गरहमानो**ति न सेतच्छत्तं उस्सापनमत्तेन सुज्झितुं सक्काति एवं अत्तनो खत्तियधम्मं निन्दमानो। एस नयो सब्बत्थ। "इमेहि खो, वासेट्ठ, चतूहि मण्डलेही"ति इमिना इमं दस्सेति "समणमण्डलं नाम विसुं नत्थि, यस्मा पन न सक्का जातिया सुज्झितुं, अत्तनो अत्तनो सम्मापटिपत्तिया विसुद्धि होति। तस्मा इमेहि चतूहि मण्डलेहि समणमण्डलस्स अभिनिब्बत्ति होति। इमानि मण्डलानि समणमण्डलं अनुवत्तन्ति, अनुवत्तन्तानि च धम्मेनेव अनुवत्तन्ति, नो अधम्मेन। समणमण्डलम्हि आगम्म सम्मापटिपत्तिं पूरेत्वा सुद्धिं पापुणन्ती"ति।

दुच्चरितादिकथावण्णना

१३६. इदानि यथाजातिया न सक्का सुज्झितुं, सम्मापटिपत्तियाव सुज्झन्ति, तमत्थं पाकटं करोन्तो **खत्तियोपि खो, वासेट्ठा**ति देसनं आरभि। तत्थ **मिच्छादिट्ठिकम्मसमादानहेतू**ति मिच्छादिट्ठिवसेन समादिन्नकम्महेतु, मिच्छादिट्ठिकम्मस्स वा समादानहेतु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३७. **द्वयकारी**ति कालेन कुसलं करोति, कालेन अकुसलन्ति एवं उभयकारी। **सुखदुक्खप्पटिसंवेदी होती**ति एकक्खणे उभयविपाकदानट्ठानं नाम नत्थि। येन पन अकुसलं बहुं कतं होति, कुसलं मन्दं, सो तं कुसलं निस्साय खत्तियकुले वा ब्राह्मणकुले वा निब्बत्तति। अथ नं अकुसलकम्मं काणम्पि करोति खुज्जम्पि पीठसप्पिम्पि। सो रज्जस्स वा अनरहो होति, अभिसित्तकाले वा एवंभूतो भोगे परिभुञ्जितुं न सक्कोति। अपरस्स मरणकाले द्वे बलवमल्ला विय ते द्वेपि कुसलाकुसलकम्मानि उपट्ठहन्ति। तेसु अकुसलं बलवतरं होति, तं कुसलं पटिबाहित्वा तिरच्छानयोनियं निब्बत्तापेति। कुसलकम्मम्पि पवत्तिवेदनीयं होति। तमेनं मङ्गलहत्थिं वा करोन्ति मङ्गलअस्सं वा मङ्गलउसभं वा। सो सम्पत्तिं अनुभवति। इदं सन्धाय वुत्तं "सुखदुक्खप्पटिसंवेदी होती"ति।

बोधिपक्खियभावनावण्णना

१३८. **सत्तन्नं बोधिपक्खियानन्ति** "चत्तारो सतिपट्ठाना"ति आदिकोट्ठासवसेन सत्तन्नं, पटिपाटिया पन सत्ततिंसाय बोधिपक्खियानं धम्मानं। **भावनमन्वाया**ति भावनं अनुगन्त्वा, पटिपज्जित्वाति अत्थो। **परिनिब्बायती**ति किलेसपरिनिब्बानेन परिनिब्बायति। इति भगवा चत्तारो वण्णे दस्सेत्वा विनिवत्तेत्वा पटिविद्धचतुसच्चं खीणासवमेव देवमनुस्सेसु सेट्ठं कत्वा दस्सेसि।

१४०. इदानि तमेवत्थं लोकसम्मतस्स ब्रह्मुनोपि वचनदस्सनानुसारेन दळ्हं कत्वा दस्सेन्तो **इमेसञ्हि वासेट्ठ चतुन्नं वण्णान**न्तिआदिमाह। "ब्रह्मुनापेसा"तिआदि अम्बट्ठसुत्ते वित्थारितं। इति भगवा एत्तकेन इमिना कथामग्गेन सेट्ठच्छेदकवादमेव दस्सेत्वा सुत्तन्तं विनिवत्तेत्वा अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठापेसि। **अत्तमना वासेट्ठभारद्वाजा**ति वासेट्ठभारद्वाज सामणेरापि हि सकमना तुट्ठमना "साधु, साधू"ति भगवतो भासितं अभिनन्दिंसु। इदमेव सुत्तन्तं आवज्जन्ता अनुमज्जन्ता सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणिंसूति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

अग्गञ्ञसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. सम्पसादनीयसुत्तवण्णना

सारिपुत्तसीहनादवण्णना

१४१. एवं मे सुतन्ति सम्पसादनीयसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना– **नाळन्दाय**न्ति नाळन्दाति एवंनामके नगरे, तं नगरं गोचरगामं कत्वा। **पावारिकम्बवने**ति दुस्सपावारिकसेट्ठिनो अम्बवने। तं किर तस्स उय्यानं अहोसि। सो भगवतो धम्मदेसनं सुत्वा भगवति पसन्नो तस्मिं उय्याने कुटिलेणमण्डपादिपटिमण्डितं भगवतो विहारं कत्वा निय्यातेसि। सो विहारो जीवकम्बवनं विय "पावारिकम्बवन"न्त्वेव सङ्ख्यं गतो, तस्मिं पावारिकम्बवने विहरतीति अत्थो। भगवन्तं एतदवोच– "एवंपसन्नो अहं, भन्ते, भगवती"ति। कस्मा एवं अवोच ? अत्तनो उप्पन्नसोमनस्सपवेदनत्थं।

तत्रायमनुपुब्बिकथा– थेरो किर तंदिवसं कालस्सेव सरीरप्पटिजग्गनं कत्वा सुनिवत्थनिवासनो पत्तचीवरमादाय पासादिकेहि अभिक्कन्तादीहि देवमनुस्सानं पसादं आवहन्तो नाळन्दवासीनं हितसुखमनुब्रूहयन्तो पिण्डाय पविसित्वा पच्छाभत्तं पिण्डपातपटिक्कन्तो विहारं गन्त्वा सत्थु वत्तं दस्सेत्वा सत्थरि गन्धकुटिं पविट्ठे सत्थारं वन्दित्वा अत्तनो दिवाट्ठानं अगमासि। तत्थ सद्धिविहारिकन्तेवासिकेसु वत्तं दस्सेत्वा पटिक्कन्तेसु दिवाट्ठानं सम्मज्जित्वा चम्मक्खण्डं पञ्ञपेत्वा उदकतुम्बतो उदकेन हत्थपादे सीतले कत्वा तिसन्धिपल्लङ्कं आभुजित्वा कालपरिच्छेदं कत्वा फलसमापत्तिं समापज्जि।

सो यथापरिच्छिन्नकालवसेन समापत्तितो वुट्ठाय अत्तनो गुणे अनुस्सरितुमारद्धो। अथस्स गुणे अनुस्सरतो सीलं आपाथमागतं। ततो पटिपाटियाव समाधि पञ्ञा विमुत्ति विमुत्तिञाणदस्सनं पठमं झानं दुतियं झानं ततियं झानं चतुत्थं झानं आकासानञ्चायतनसमापत्ति विञ्ञाणञ्चायतनसमापत्ति आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्ति विपस्सनाञाणं मनोमयिद्धिञाणं इद्धिविधञाणं दिब्बसोतञाणं चेतोपरियञाणं पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणं दिब्बचक्खुञाणं...पे०... सोतापत्तिमग्गो सोतापत्तिफलं...पे०... अरहत्तमग्गो अरहत्तफलं अत्थपटिसम्भिदा धम्मपटिसम्भिदा निरुत्तिपटिसम्भिदा पटिभानपटिसम्भिदा सावकपारमीञाणं। इतो पट्ठाय कप्पसतसहस्साधिकस्स असङ्ख्येय्यस्स उपरि अनोमदस्सीबुद्धस्स पादमूले कतं अभिनीहारं आदिं कत्वा अत्तनो गुणे अनुस्सरतो याव निसिन्नपल्लङ्का गुणा उपट्ठहिंसु।

एवं थेरो अत्तनो गुणे अनुस्सरमानो गुणानं पमाणं वा परिच्छेदं वा दट्ठुं नासक्खि। सो चिन्तेसि– "मय्हं ताव पदेसञाणे ठितस्स सावकस्स गुणानं पमाणं वा परिच्छेदो वा नत्थि। अहं पन यं सत्थारं उद्दिस्स पब्बजितो, कीदिसा नु खो तस्स गुणा"ति दसबलस्स गुणे अनुस्सरितुं आरद्धो। सो भगवतो सीलं निस्साय, समाधिं पञ्ञं विमुत्तिं विमुत्तिञाणदस्सनं निस्साय, चत्तारो सतिपट्ठाने निस्साय, चत्तारो सम्मप्पधाने चत्तारो इद्धिपादे चत्तारो मग्गे चत्तारि फलानि चतस्सो पटिसम्भिदा चतुयोनिपरिच्छेदकञाणं चत्तारो अरियवंसे निस्साय दसबलस्स गुणे अनुस्सरितुमारद्धो।

तथा पञ्च पधानियङ्गानि, पञ्चङ्गिकंसम्मासमाधिं, पञ्चिन्द्रियानि, पञ्च बलानि, पञ्च निस्सरणिया धातुयो, पञ्च विमुत्तायतनानि, पञ्च विमुत्तिपरिपाचनिया पञ्ञा, छ सारणीये धम्मे, छ अनुस्सतिट्ठानानि, छ गारवे, छ निस्सरणिया धातुयो, छ सततविहारे, छ अनुत्तरियानि, छ निब्बेधभागिया पञ्ञा, छ अभिञ्ञा, छ असाधारणञाणानि, सत्त अपरिहानिये धम्मे, सत्त अरियधनानि, सत्त बोज्झङ्गे, सत्त सप्पुरिसधम्मे, सत्त निज्जरवत्थूनि, सत्त पञ्ञा, सत्त दक्खिणेय्यपुग्गले, सत्त खीणासवबलानि, अट्ठ पञ्ञापटिलाभहेतू, अट्ठ सम्मत्तानि, अट्ठ लोकधम्मातिक्कमे, अट्ठ आरम्भवत्थूनि, अट्ठ अक्खणदेसना, अट्ठ महापुरिसवितक्के, अट्ठ अभिभायतनानि, अट्ठ विमोक्खे, नव योनिसोमनसिकारमूलके धम्मे, नव पारिसुद्धिपधानियङ्गानि, नव सत्तावासदेसना, नव आघातप्पटिविनये, नव पञ्ञा, नव नानत्तानि, नव अनुपुब्बविहारे, दस नाथकरणे धम्मे, दस कसिणायतनानि, दस कुसलकम्मपथे, दस तथागतबलानि, दस सम्मत्तानि, दस अरियवासे, दस असेक्खधम्मे, एकादस मेत्तानिसंसे, द्वादस धम्मचक्काकारे, तेरस धुतङ्गगुणे, चुद्दस बुद्धञाणानि, पञ्चदस विमुत्तिपरिपाचनिये धम्मे, सोळसविधं आनापानस्सतिं, अट्ठारस बुद्धधम्मे, एकूनवीसति पच्चवेक्खणञाणानि, चतुचत्तालीस ञाणवत्थूनि, परोपण्णास कुसलधम्मे, सत्तसत्तति ञाणवत्थूनि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुवीसतिकोटिसतसहस्ससमापत्तिसञ्चरमहावजिरञाणं निस्साय दसबलस्स गुणे अनुस्सरितुं आरभि।

तस्मिंयेव च दिवाट्ठाने निसिन्नोयेव उपरि "अपरं पन, भन्ते, एतदानुत्तरिय"न्ति आगमिस्सन्ति सोळस अपरम्परियधम्मा, तेपि निस्साय अनुस्सरितुं आरभि। सो "कुसलपञ्ञत्तियं अनुत्तरो मय्हं सत्था, आयतनपञ्ञत्तियं अनुत्तरो, गब्भावक्कन्तियं अनुत्तरो, आदेसनाविधासु अनुत्तरो, दस्सनसमापत्तियं अनुत्तरो, पुग्गलपञ्ञत्तियं अनुत्तरो, पधाने अनुत्तरो, पटिपदासु अनुत्तरो, भस्ससमाचारे अनुत्तरो, पुरिससीलसमाचारे अनुत्तरो, अनुसासनीविधासु अनुत्तरो, परपुग्गलविमुत्तिञाणे अनुत्तरो, सस्सतवादेसु अनुत्तरो, पुब्बेनिवासञाणे अनुत्तरो, दिब्बचक्खुञाणे अनुत्तरो, इद्धिविधे अनुत्तरो, इमिना च इमिना च अनुत्तरो"ति एवं दसबलस्स गुणे अनुस्सरन्तो भगवतो गुणानं नेव अन्तं, न पमाणं पस्सि। थेरो अत्तनोपि ताव गुणानं अन्तं वा पमाणं वा नाद्दस, भगवतो गुणानं किं पस्सिस्सति? यस्स यस्स हि पञ्ञा महती ञाणं विसदं, सो सो बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति। लोकियमहाजनो उक्कासित्वापि खिपित्वापि "नमो बुद्धान"न्ति अत्तनो अत्तनो उपनिस्सये ठत्वा बुद्धानं गुणे अनुस्सरति। सब्बलोकियमहाजनतो एको सोतापन्नो बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति। सोतापन्नानं सततोपि सहस्सतोपि एको सकदागामी। सकदागामीनं सततोपि सहस्सतोपि एको अनागामी। अनागामीनं सततोपि सहस्सतोपि एको अरहा बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति। अवसेसअरहन्तेहि असीति महाथेरा बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहन्ति। असीतिमहाथेरेहि चत्तारो महाथेरा। चतूहि महाथेरेहि द्वे अग्गसावका। तेसुपि सारिपुत्तत्थेरो, सारिपुत्तत्थेरतोपि एको पच्चेकबुद्धो बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति। सचे पन सकलचक्कवाळगब्भे सङ्घाटिकण्णेन सङ्घाटिकण्णं पहरियमाना निसिन्ना पच्चेकबुद्धा बुद्धगुणे अनुस्सरेय्युं, तेहि सब्बेहिपि एको सब्बञ्ञुबुद्धोव बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति।

सेय्यथापि नाम महाजनो "महासमुद्दो गम्भीरो उत्तानो"ति जाननत्थं योत्तानि वट्टेय्य, तत्थ कोचि ब्यामप्पमाणं योत्तं वट्टेय्य, कोचि द्वे ब्यामं, कोचि दसब्यामं, कोचि वीसतिब्यामं, कोचि तिंसब्यामं, कोचि चत्तालीसब्यामं, कोचि पञ्ञासब्यामं, कोचि सतब्यामं, कोचि सहस्सब्यामं, कोचि चतुरासीतिब्यामसहस्सं। ते नावं आरुय्ह, समुद्दमज्झे उग्गतपब्बतादिम्हि वा ठत्वा अत्तनो अत्तनो योत्तं ओतारेय्युं, तेसु यस्स योत्तं ब्याममत्तं, सो ब्याममत्तट्ठानेयेव उदकं जानाति...पे०... यस्स चतुरासीतिब्यामसहस्सं, सो चतुरासीतिब्यामसहस्सट्ठानेयेव उदकं जानाति। परतो उदकं एत्तकन्ति न जानाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महासमुद्दे पन न तत्तकंयेव उदकं, अथ खो अनन्तमपरिमाणं। चतुरासीतियोजनसहस्सं गम्भीरो हि महासमुद्दो, एवमेव एकब्यामयोत्ततो पट्ठाय नवब्यामयोत्तेन ञातउदकं विय लोकियमहाजनेन दिट्ठबुद्धगुणा वेदितब्बा। दसब्यामयोत्तेन दसब्यामट्ठाने ञातउदकं विय सोतापन्नेन दिट्ठबुद्धगुणा। वीसतिब्यामयोत्तेन वीसतिब्यामट्ठाने ञातउदकं विय सकदागामिना दिट्ठबुद्धगुणा। तिंसब्यामयोत्तेन तिंसब्यामट्ठाने ञातउदकं विय अनागामिना दिट्ठबुद्धगुणा। चत्तालीसब्यामयोत्तेन चत्तालीसब्यामट्ठाने ञातउदकं विय अरहता दिट्ठबुद्धगुणा। पञ्ञासब्यामयोत्तेन पञ्ञासब्यामट्ठाने ञातउदकं विय असीतिमहाथेरेहि दिट्ठबुद्धगुणा। सतब्यामयोत्तेन सतब्यामट्ठाने ञातउदकं विय चतूहि महाथेरेहि दिट्ठबुद्धगुणा। सहस्सब्यामयोत्तेन सहस्सब्यामट्ठाने ञातउदकं विय महामोग्गल्लानत्थेरेन दिट्ठबुद्धगुणा। चतुरासीतिब्यामसहस्सयोत्तेन चतुरासीतिब्यामसहस्सट्ठाने ञातउदकं विय धम्मसेनापतिना सारिपुत्तत्थेरेन दिट्ठबुद्धगुणा। तत्थ यथा सो पुरिसो महासमुद्दे उदकं नाम न एत्तकंयेव, अनन्तमपरिमाणन्ति गण्हाति, एवमेव आयस्मा सारिपुत्तो धम्मन्वयेन अन्वयबुद्धिया अनुमानेन नयग्गाहेन सावकपारमीञाणे ठत्वा दसबलस्स गुणे अनुस्सरन्तो "बुद्धगुणा अनन्ता अपरिमाणा"ति सद्दहि।

थेरेन हि दिट्ठबुद्धगुणेहि धम्मन्वयेन गहेतब्बबुद्धगुणायेव बहुतरा। यथा कथं विय? यथा इतो नव इतो नवाति अट्ठारस योजनानि अवत्थरित्वा गच्छन्तिया चन्दभागाय महानदिया पुरिसो सूचिपासेन उदकं गण्हेय्य, सूचिपासेन गहितउदकतो अग्गहितमेव बहु होति। यथा वा पन पुरिसो महापथवितो अङ्गुलिया पंसुं गण्हेय्य, अङ्गुलिया गहितपंसुतो अवसेसपंसुयेव बहु होति। यथा वा पन पुरिसो महासमुद्दाभिमुखिं अङ्गुलिं करेय्य, अङ्गुलिअभिमुखउदकतो अवसेसं उदकंयेव बहु होति। यथा च पुरिसो आकासाभिमुखिं अङ्गुलिं करेय्य, अङ्गुलिअभिमुखआकासतो सेसआकासप्पदेसोव बहु होति। एवं थेरेन दिट्ठबुद्धगुणेहि अदिट्ठा गुणाव बहूति वेदितब्बा। वुत्तम्पि चेतं-

"बुद्धोपि बुद्धस्स भणेय्य वण्णं,
कप्पम्पि चे अञ्ञमभासमानो।
खीयेथ कप्पो चिरदीघमन्तरे,
वण्णो न खीयेथ तथागतस्सा"ति।।

एवं थेरस्स अत्तनो च सत्थु च गुणे अनुस्सरतो यमकमहानदीमहोघो विय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भन्तरे पीतिसोमनस्सं अवत्थरमानं वातो विय भस्तं, उब्भिज्जित्वा उग्गतउदकं विय महारहदं सकलसरीरं पूरेति। ततो थेरस्स "सुपत्थिता वत मे पत्थना, सुलद्धा मे पब्बज्जा, य्वाहं एवंविधस्स सत्थु सन्तिके पब्बजितो"ति आवज्जन्तस्स बलवतरं पीतिसोमनस्सं उप्पज्जि।

अथ थेरो "कस्साहं इमं पीतिसोमनस्सं आरोचेय्य"न्ति चिन्तेन्तो अञ्ञो कोचि समणो वा ब्राह्मणो वा देवो वा मारो वा ब्रह्मा वा मम इमं पसादं अनुच्छविकं कत्वा पटिग्गहेतुं न सक्खिस्सति, अहं इमं सोमनस्सं सत्थुनोयेव पवेदेय्यामि, सत्थाव मे पटिग्गण्हितुं सक्खिस्सति, सो हि तिट्ठतु मम पीतिसोमनस्सं, मादिसस्स समणसतस्स वा समणसहस्सस्स वा समणसतसहस्सस्स वा सोमनस्सं पवेदेन्तस्स सब्बेसं मनं गण्हन्तो पटिग्गहेतुं सक्कोति। सेय्यथापि नाम अट्ठारस योजनानि अवत्थरमानं गच्छन्तिं चन्दभागमहानदिं कुसुम्भा वा कन्दरा वा सम्पटिच्छितुं न सक्कोन्ति, महासमुद्दोव तं सम्पटिच्छति। महासमुद्दो हि तिट्ठतु चन्दभागा, एवरूपानं नदीनं सतम्पि सहस्सम्पि सतसहस्सम्पि सम्पटिच्छति, न चस्स तेन ऊनत्तं वा पूरत्तं वा पञ्ञायति, एवमेव सत्था मादिसस्स समणसतस्स समणसहस्सस्स समणसतसहस्सस्स वा पीतिसोमनस्सं पवेदेन्तस्स सब्बेसं मनं गण्हन्तो पटिग्गहेतुं सक्कोति। सेसा समणब्राह्मणादयो चन्दभागं कुसुम्भकन्दरा विय मम सोमनस्सं सम्पटिच्छितुं न सक्कोन्ति। हन्दाहं मम पीतिसोमनस्सं सत्थुनोव आरोचेमीति पल्लङ्कं विनिब्भुजित्वा चम्मक्खण्डं पप्फोटेत्वा आदाय सायन्हसमये पुप्फानं वण्टतो छिज्जित्वा पग्घरणकाले सत्थारं उपसङ्कमित्वा अत्तनो सोमनस्सं पवेदेन्तो **एवंपसन्नो अहं, भन्ते**तिआदिमाह। तत्थ **एवंपसन्नो**ति एवं उप्पन्नसद्धो, एवं सद्दहामीति अत्थो। **भिय्योभिञ्ञतरो**ति भिय्यतरो अभिञ्ञातो, भिय्यतराभिञ्ञो वा, उत्तरितरञाणोति अत्थो। **सम्बोधियन्ति** सब्बञ्ञुतञ्ञाणे अरहत्तमग्गञाणे वा, अरहत्तमग्गेनेव हि बुद्धगुणा निप्पदेसा गहिता होन्ति। द्वे हि अग्गसावका अरहत्तमग्गेनेव सावकपारमीञाणं पटिलभन्ति। पच्चेकबुद्धा पच्चेकबोधिञाणं। बुद्धा सब्बञ्ञुतञ्ञाणञ्चेव सकले च बुद्धगुणे। सब्बञ्हि नेसं अरहत्तमग्गेनेव इज्झति। तस्मा अरहत्तमग्गञाणं सम्बोधि नाम होति। तेन उत्तरितरो भगवता नत्थि। तेनाह "भगवता भिय्योभिञ्ञतरो यदिदं सम्बोधिय"न्ति।

१४२. उळाराति सेट्ठा। अयञ्हि उळारसद्दो "उळारानि खादनीयानि खादन्ती"तिआदीसु (म० नि० १.३६६) मधुरे आगच्छति। "उळाराय खलु भवं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वच्छायनो, समणं गोतमं पसंसाय पसंसती''तिआदीसु (म० नि० ३.२८०) सेट्ठे। ''अप्पमाणो उळारो ओभासो''तिआदीसु (दी० नि० २.३२) विपुले। स्वायमिध सेट्ठे आगतो। तेन वुत्तं– ''उळाराति सेट्ठा''ति। **आसभी**ति उसभस्स वाचासदिसी अचला असम्पवेधी। **एकंसो गहितो**ति अनुस्सवेन वा आचरियपरम्पराय वा इतिकिराय वा पिटकसम्पदानेन वा आकारपरिवितक्केन वा दिट्ठिनिज्झानक्खन्तिया वा तक्कहेतु वा नयहेतु वा अकथेत्वा पच्चक्खतो ञाणेन पटिविज्झित्वा विय एकंसो गहितो, सन्निट्ठानकथाव कथिताति अत्थो।

सीहनादोति सेट्ठनादो, नेव दन्धायन्तेन न गग्गरायन्तेन सीहेन विय उत्तमनादो नदितोति अत्थो। **किं ते सारिपुत्ता**ति इमं देसनं कस्मा आरभीति? अनुयोगदापनत्थं। एकच्चो हि सीहनादं नदित्वा अत्तनो सीहनादे अनुयोगं दातुं न सक्कोति, निघंसनं नक्खमति, लेपे पतितमक्कटो विय होति। यथा धममानं अपरिसुद्धलोहं झायित्वा झामअङ्गारो होति, एवं झामङ्गारो विय होति। एको सीहनादे अनुयोगं दापियमानो दातुं सक्कोति, निघंसनं खमति, धममानं निद्दोसजातरूपं विय अधिकतरं सोभति, तादिसो थेरो। तेन नं भगवा ''अनुयोगक्खमो अय''न्ति ञत्वा सीहनादे अनुयोगदापनत्थं इमम्पि देसनं आरभि।

तत्थ **सब्बे ते**ति सब्बे ते तया। **एवंसीला**तिआदीसु लोकियलोकुत्तरवसेन सीलादीनि पुच्छति। तेसं वित्थारकथा महापदाने कथिताव।

किं पन ते, सारिपुत्त, ये ते भविस्सन्तीति अतीता च ताव निरुद्धा, अपण्णत्तिकभावं गता दीपसिखा विय निब्बुता, एवं निरुद्धे अपण्णत्तिकभावं गते त्वं कथं जानिस्ससि, अनागतबुद्धानं पन गुणा किन्ति तया अत्तनो चित्तेन परिच्छिन्दित्वा विदिताति पुच्छन्तो एवमाह। **किं पन ते, सारिपुत्त, अहं एतरही**ति अनागतापि बुद्धा अजाता अनिब्बत्ता अनुप्पन्ना, तेपि कथं त्वं जानिस्ससि? तेसञ्हि जाननं अपदे आकासे पददस्सनं विय होति। इदानि मया सद्धिं एकविहारे वससि, एकतो भिक्खाय चरसि, धम्मदेसनाकाले दक्खिणपस्से निसीदसि, किं पन मय्हं गुणा अत्तनो चेतसा परिच्छिन्दित्वा विदिता तयाति अनुयुञ्जन्तो एवमाह।

थेरो पन पुच्छिते पुच्छिते ''नो हेतं, भन्ते''ति पटिक्खिपति। थेरस्स च विदितम्पि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थि अविदितम्पि अत्थि, किं सो अत्तनो विदितट्ठाने पटिक्खेपं करोति, अविदितट्ठानेति ? विदितट्ठाने न करोति, अविदितट्ठानेयेव करोतीति। थेरो किर अनुयोगे आरद्धेयेव अञ्ञासि। न अयं अनुयोगो सावकपारमीञाणे, सब्बञ्ञुतञ्ञाणे अयं अनुयोगोति अत्तनो सावकपारमीञाणे पटिक्खेपं अकत्वा अविदितट्ठाने सब्बञ्ञुतञ्ञाणे पटिक्खेपं करोति। तेन इदम्पि दीपेति "भगवा मय्हं अतीतानागतपच्चुप्पन्नानं बुद्धानं सीलसमाधिपञ्ञाविमुत्तिकारणजाननसमत्थं सब्बञ्ञुतञ्ञाणं नत्थी"ति।

एत्थाति एतेसु अतीतादिभेदेसु बुद्धेसु। **अथ किञ्चरहीति** अथ कस्मा एवं ञाणे असति तया एवं कथितन्ति वदति।

१४३. **धम्मन्वयोति** धम्मस्स पच्चक्खतो ञाणस्स अनुयोगं अनुगन्त्वा उप्पन्नं अनुमानञाणं नयग्गाहो विदितो। सावकपारमीञाणे ठत्वाव इमिनाव आकारेन जानामि भगवाति वदति। थेरस्स हि नयग्गाहो अप्पमाणो अपरियन्तो। यथा सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स पमाणं वा परियन्तो वा नत्थि, एवं धम्मसेनापतिनो नयग्गाहस्स। तेन सो "इमिना एवंविधो, इमिना अनुत्तरो सत्था"ति जानाति। थेरस्स हि नयग्गाहो सब्बञ्ञुतञ्ञाणगतिको एव। इदानि तं नयग्गाहं पाकटं कातुं उपमाय दस्सेन्तो **सेय्यथापि, भन्तेति**आदिमाह। तत्थ यस्मा मज्झिमपदेसे नगरस्स उद्धापपाकारादीनि थिरानि वा होन्तु, दुब्बलानि वा, सब्बसो वा पन मा होन्तु, चोरासङ्का न होति, तस्मा तं अग्गहेत्वा पच्चन्तिमनगरन्ति आह। **दळ्हुद्धापन्ति** थिरपाकारपादं। **दळ्हपाकारतोरणन्ति** थिरपाकारञ्चेव थिरपिट्ठसङ्घाटञ्च। **एकद्वारन्ति** कस्मा आह ? बहुद्वारे हि नगरे बहूहि पण्डितदोवारिकेहि भवितब्बं। एकद्वारे एकोव वट्टति। थेरस्स च पञ्ञाय सदिसो अञ्ञो नत्थि। तस्मा अत्तनो पण्डितभावस्स ओपम्मत्थं एकंयेव दोवारिकं दस्सेतुं एकद्वार"न्ति आह। **पण्डितोति** पण्डिच्चेन समन्नागतो। **ब्यत्तोति** वेय्यत्तियेन समन्नागतो विसदञाणो। **मेधावीति** ठानुप्पत्तिकपञ्ञासङ्खाताय मेधाय समन्नागतो। **अनुपरियायपथन्ति** अनुपरियायनामकं पाकारमग्गं। **पाकारसन्धिन्ति** छिन्नं इट्ठकानं अपगतट्ठानं। **पाकारविवरन्ति** पाकारस्स छिन्नट्ठानं।

चेतसो उपक्किलेसेति पञ्च नीवरणानि चित्तं उपक्किलेसेन्ति किलिट्ठं करोन्ति उपतापेन्ति विबाधेन्ति, तस्मा "चेतसो उपक्किलेसा"ति वुच्चन्ति। **पञ्ञाय दुब्बलीकरणेति** नीवरणा उप्पज्जमाना अनुप्पन्नाय पञ्ञाय उप्पज्जितुं न देन्ति, उप्पन्नाय पञ्ञाय वड्ढितुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न देन्ति, तस्मा "पञ्ञाय दुब्बलीकरणा"ति वुच्चन्ति। **सुप्पतिट्ठितचित्ता**ति चतूसु सतिपट्ठानेसु सुट्ठु ठपितचित्ता हुत्वा। **सत्त बोज्झङ्गे यथाभूत**न्ति सत्त बोज्झङ्गे यथासभावेन भावेत्वा। **अनुत्तरं सम्मासम्बोधि**न्ति अरहत्तं सब्बञ्ञुतञ्ञाणं वा पटिविज्झिंसूति दस्सेति।

अपिचेत्थ सतिपट्ठानाति विपस्सना। सम्बोज्झङ्गा मग्गो। अनुत्तरासम्मासम्बोधि अरहत्तं। सतिपट्ठानाति वा मग्गाति वा बोज्झङ्गमिस्सका। सम्मासम्बोधि अरहत्तमेव। दीघभाणकमहासीवत्थेरो पनाह "सतिपट्ठाने विपस्सनाति गहेत्वा बोज्झङ्गे मग्गो च सब्बञ्ञुतञ्ञाणञ्चाति गहिते सुन्दरो पञ्हो भवेय्य, न पनेवं गहित"न्ति। इति थेरो सब्बञ्ञुबुद्धानं नीवरणप्पहाने सतिपट्ठानभावनाय सम्बोधियञ्च मज्झे भिन्नसुवण्णरजतानं विय नानत्ताभावं दस्सेति।

इध ठत्वा उपमा संसन्देतब्बा– आयस्मा हि सारिपुत्तो पच्चन्तनगरं दस्सेसि, पाकारं दस्सेसि, परियायपथं दस्सेसि, द्वारं दस्सेसि, पण्डितदोवारिकं दस्सेसि, नगरं पवेसनकनिक्खमनके ओळारिके पाणे दस्सेसि, पण्डितदोवारिकस्स तेसं पाणानं पाकटभावञ्च दस्सेसि। तत्थ किं केन सदिसन्ति चे। नगरं विय हि निब्बानं, पाकारो विय सीलं, परियायपथो विय हिरी, द्वारं विय अरियमग्गो, पण्डितदोवारिको विय धम्मसेनापति, नगरप्पविसनकनिक्खमनकओळारिकपाणा विय अतीतानागतपच्चुप्पन्ना बुद्धा, दोवारिकस्स तेसं पाणानं पाकटभावो विय आयस्मतो सारिपुत्तस्स अतीतानागतपच्चुप्पन्नबुद्धानं सीलसमथादीहि पाकटभावो। एत्तावता थेरेन भगवा एवमहं सावकपारमीञाणे ठत्वा धम्मन्वयेन नयग्गाहेन जानामीति अत्तनो सीहनादस्स अनुयोगो दिन्नो होति।

१४४. इधाहं, भन्ते, येन भगवाति इमं देसनं कस्मा आरभि? सावकपारमीञाणस्स निप्फत्तिदस्सनत्थं। अयञ्हेत्थ अधिप्पायो, भगवा अहं सावकपारमीञाणं पटिलभन्तो पञ्चनवुतिपासण्डे न अञ्ञं एकम्पि समणं वा ब्राह्मणं वा उपसङ्कमित्वा सावकपारमीञाणम्पि पटिलभिं, तुम्हेयेव उपसङ्कमित्वा तुम्हे पयिरुपासन्तो पटिलभिन्ति। तत्थ **इधा**ति निपातमत्तं। **उपसङ्कमिं धम्मसवनाया**ति तुम्हे उपसङ्कमन्तो पनाहं न चीवरादिहेतु उपसङ्कमन्तो, धम्मसवनत्थाय उपसङ्कमन्तो। एवं उपसङ्कमित्वा सावकपारमीञाणं पटिलभिं। कदा पन थेरो धम्मसवनत्थाय उपसङ्कमन्तोति। सूकरखतलेणे भागिनेय्यदीघनखपरिब्बाजकस्स वेदनापरिग्गहसुत्तन्तकथनदिवसे (म० नि० २.२०५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपसङ्कमन्तो, तदायेव सावकपारमीञाणं पटिलभीति। तंदिवसञ्हि थेरो तालवण्टं गहेत्वा भगवन्तं बीजमानो ठितो तं देसनं सुत्वा तत्थेव सावकपारमीञाणं हत्थगतं अकासि। **उत्तरुत्तरं पणीतपणीत**न्ति उत्तरुत्तरञ्चेव पणीतपणीतञ्च कत्वा देसेसि। **कण्हसुक्कसप्पटिभाग**न्ति कण्हञ्चेव सुक्कञ्च। तञ्च खो सप्पटिभागं सविपक्खं कत्वा। कण्हं पटिबाहित्वा सुक्कं, सुक्कं पटिबाहित्वा कण्हन्ति एवं सप्पटिभागं कत्वा कण्हसुक्कं देसेसि, कण्हं देसेन्तोपि च सउस्साहं सविपाकं देसेसि, सुक्कं देसेन्तोपि सउस्साहं सविपाकं देसेसि।

तस्मिं धम्मे अभिञ्ञा इधेकच्चं धम्मं धम्मेसु निट्ठमगमन्ति तस्मिं देसिते धम्मे एकच्चं धम्मं नाम सावकपारमीञाणं सञ्जानित्वा धम्मेसु निट्ठमगमं। कतमेसु धम्मेसूति? चतुसच्चधम्मेसु। एत्थायं थेरसल्लापो, काळवल्लवासी सुमत्थेरो ताव वदति "चतुसच्चधम्मेसु इदानि निट्ठगमनकारणं नत्थि। अस्सजिमहासावकस्स हि दिट्ठदिवसेयेव सो पठममग्गेन चतुसच्चधम्मेसु निट्ठं गतो, अपरभागे सूकरखतलेणद्वारे उपरि तीहि मग्गेहि चतुसच्चधम्मेसु निट्ठं गतो, इमस्मिं पन ठाने 'धम्मेसू'ति बुद्धगुणेसु निट्ठं गतो"ति। लोकन्तरवासी चूळसीवत्थेरो पन "सब्बं तथेव वत्वा इमस्मिं पन ठाने 'धम्मेसू'ति अरहत्ते निट्ठं गतो"ति आह। दीघभाणकतिपिटकमहासीवत्थेरो पन "तथेव पुरिमवादं वत्वा इमस्मिं पन ठाने 'धम्मेसू'ति सावकपारमीञाणे निट्ठं गतो"ति वत्वा "बुद्धगुणा पन नयतो आगता"ति आह।

सत्थरि पसीदिन्ति एवं सावकपारमीञाणधम्मेसु निट्ठं गन्त्वा भिय्योसोमत्ताय "सम्मासम्बुद्धो वत सो भगवा"ति सत्थरि पसीदिं। **स्वाक्खातो भगवता धम्मो**ति सुट्ठु अक्खातो सुकथितो निय्यानिको मग्गो फलत्थाय निय्याति रागदोसमोहनिम्मदनसमत्थो।

सुप्पटिपन्नो सङ्घोति बुद्धस्स भगवतो सावकसङ्घोपि वङ्कादिदोसविरहितं सम्मापटिपदं पटिपन्नत्ता सुप्पटिपन्नोति पसन्नोम्हि भगवतीति दस्सेति।

कुसलधम्मदेसनावण्णना

१४५. इदानि दिवाट्ठाने निसीदित्वा समापज्जिते सोळस अपरापरियधम्मे दस्सेतुं **अपरं पन भन्ते एतदानुत्तरिय**न्ति देसनं आरभि। तत्थ **अनुत्तरिय**न्ति अनुत्तरभावो। **यथा**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवा धम्मं देसेतीति यथा येनाकारेन याय देसनाय भगवा धम्मं देसेति, सा तुम्हाकं देसना अनुत्तराति वदति। **कुसलेसु धम्मेसू**ति ताय देसनाय देसितेसु कुसलेसु धम्मेसुपि भगवाव अनुत्तरोति दीपेति। या वा सा देसना, तस्सा भूमिं दस्सेन्तोपि "कुसलेसु धम्मेसू"ति आह। **तत्रिमे कुसला धम्मा**ति तत्र कुसलेसु धम्मेसूति वुत्तपदे इमे कुसला धम्मा नामाति वेदितब्बा। तत्थ आरोग्यट्ठेन, अनवज्जट्ठेन, कोसल्लसम्भूतट्ठेन, निद्दरथट्ठेन, सुखविपाकट्ठेनाति पञ्चधा कुसलं वेदितब्बं। तेसु जातकपरियायं पत्वा आरोग्यट्ठेन कुसलं वट्टति। सुत्तन्तपरियायं पत्वा अनवज्जट्ठेन। अभिधम्मपरियायं पत्वा कोसल्लसम्भूतनिद्दरथसुखविपाकट्ठेन। इमस्मिं पन ठाने बाहितिकसुत्तन्तपरियायेन (म० नि० २.३५८) अनवज्जट्ठेन कुसलं दट्ठब्बं।

चत्तारो सतिपट्ठानाति चुद्दसविधेन कायानुपस्सनासतिपट्ठानं, नवविधेन वेदनानुपस्सनासतिपट्ठानं, सोळसविधेन चित्तानुपस्सनासतिपट्ठानं, पञ्चविधेन धम्मानुपस्सनासतिपट्ठानन्ति एवं नानानयेहि विभजित्वा समथविपस्सनामग्गवसेन लोकियलोकुत्तरमिस्सका चत्तारो सतिपट्ठाना देसिता। फलसतिपट्ठानं पन इध अनधिप्पेतं। **चत्तारो सम्मप्पधाना**ति पग्गहट्ठेन एकलक्खणा, किच्चवसेन नानाकिच्चा। "इध भिक्खु अनुप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाया"तिआदिना नयेन समथविपस्सनामग्गवसेन लोकियलोकुत्तरमिस्सकाव चत्तारो सम्मप्पधाना देसिता। **चत्तारो इद्धिपादा**ति इज्झनट्ठेन एकसङ्गहा, छन्दादिवसेन नानासभावा। "इध भिक्खु छन्दसमाधिपधानसङ्खारसमन्नागतं इद्धिपादं भावेती"तिआदिना नयेन समथविपस्सनामग्गवसेन लोकियलोकुत्तरमिस्सकाव चत्तारो इद्धिपादा देसिता।

पञ्चिन्द्रियानीति आधिपतेय्यट्ठेन एकलक्खणानि, अधिमोक्खादिसभाववसेन नानासभावानि। समथविपस्सनामग्गवसेनेव च लोकियलोकुत्तरमिस्सकानि सद्धादीनि पञ्चिन्द्रियानि देसितानि। **पञ्च बलानी**ति उपत्थम्भनट्ठेन अकम्पियट्ठेन वा एकसङ्गहानि, सलक्खणेन नानासभावानि। समथविपस्सनामग्गवसेनेव लोकियलोकुत्तरमिस्सकानि सद्धादीनि पञ्च बलानि देसितानि। **सत्त बोज्झङ्गा**ति निय्यानट्ठेन एकसङ्गहा, उपट्ठानादिना सलक्खणेन नानासभावा। समथविपस्सना मग्गवसेनेव लोकियलोकुत्तरमिस्सका सत्त बोज्झङ्गा देसिता।

अरियो अट्ठङ्गिको मग्गोति हेतुट्ठेन एकसङ्गहो, दस्सनादिना सलक्खणेन नानासभावो।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

समथविपस्सनामग्गवसेनेव लोकियलोकुत्तरमिस्सको अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो देसितोति अत्थो।

इध, भन्ते, भिक्खु आसवानं खयाति इदं किमत्थं आरद्धं? सासनस्स परियोसानदस्सनत्थं। सासनस्स हि न केवलं मग्गेनेव परियोसानं होति, अरहत्तफलेन पन होति। तस्मा तं दस्सेतुं इदमारद्धन्ति वेदितब्बं। **एतदानुत्तरियं, भन्ते, कुसलेसु धम्मेसू**ति भन्ते या अयं कुसलेसु धम्मेसु एवंदेसना, एतदानुत्तरियं। **तं भगवा**ति तं देसनं भगवा असेसं सकलं अभिजानाति। **तं भगवतो**ति तं देसनं भगवतो असेसं अभिजानतो। **उत्तरि अभिञ्ञेय्यं नत्थी**ति तदुत्तरि अभिजानितब्बं नत्थि, अयं नाम इतो अञ्ञो धम्मो वा पुग्गलो वा यं भगवा न जानातीति इदं नत्थि। **यदभिजानं अञ्ञो समणो वा**ति यं तुम्हेहि अनभिञ्ञातं, तं अञ्ञो समणो वा ब्राह्मणो वा अभिजानन्तो भगवता भिय्योभिञ्ञतरो अस्स, अधिकतरपञ्ञो भवेय्य। **यदिदं कुसलेसु धम्मेसू**ति एत्थ **यदिदन्ति** निपातमत्तं, कुसलेसु धम्मेसु भगवता उत्तरितरो नत्थीति अयमेत्थत्थो। इति भगवाव कुसलेसु धम्मेसु अनुत्तरोति दस्सेन्तो ''इमिनापि कारणेन एवंपसन्नो अहं, भन्ते, भगवती''ति दीपेति। इतो परेसु **अपरं पना**तिआदीसु विसेसमत्तमेव वण्णयिस्साम। पुरिमवारसदिसं पन वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

आयतनपण्णत्तिदेसनावण्णना

१४६. **आयतनपण्णत्तीसू**ति आयतनपञ्ञापनासु। इदानि ता आयतनपञ्ञत्तियो दस्सेन्तो **छयिमानि, भन्ते**तिआदिमाह। आयतनकथा पनेसा विसुद्धिमग्गे वित्थारेन कथिता, तेन न तं वित्थारयिस्साम, तस्मा तत्थ वुत्तनयेनेव सा वित्थारतो वेदितब्बा।

एतदानुत्तरियं, भन्ते, आयतनपण्णत्तीसूति यायं आयतनपण्णत्तीसु अज्झत्तिकबाहिरववत्थानादिवसेन एवं देसना, एतदानुत्तरियं। सेसं वुत्तनयमेव।

गब्भावक्कन्तिदेसनावण्णना

१४७. **गब्भावक्कन्तीसू**ति गब्भोक्कमनेसु। ता गब्भावक्कन्तियो दस्सेन्तो **चतस्सो इमा, भन्ते**तिआदिमाह। तत्थ **असम्पजानो**ति अजानन्तो सम्मूळ्हो हुत्वा। **मातुकुच्छिं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओक्कमतीति पटिसन्धिवसेन पविसति। **ठातीति** वसति। **निक्खमतीति** निक्खमन्तोपि असम्पजानो सम्मूळ्होव निक्खमति। **अयं पठमाति** अयं पकतिलोकियमनुस्सानं पठमा गब्भावक्कन्ति।

सम्पजानो मातुकुच्छिं ओक्कमतीति ओक्कमन्तो सम्पजानो असम्मूळ्हो हुत्वा ओक्कमति।

अयं दुतियाति अयं असीतिमहाथेरानं सावकानं दुतिया गब्भावक्कन्ति। ते हि पविसन्ताव जानन्ति, वसन्ता च निक्खमन्ता च न जानन्ति।

अयं ततियाति अयं द्विन्नञ्च अग्गसावकानं पच्चेकबोधिसत्तानञ्च ततिया गब्भावक्कन्ति। ते किर कम्मजेहि वातेहि अधोसिरा उद्धंपादा अनेकसतपोरिसे पपाते विय योनिमुखे खित्ता ताळच्छिग्गळेन हत्थी विय सम्बाधेन योनिमुखेन निक्खममाना अनन्तं दुक्खं पापुणन्ति। तेन नेसं "मयं निक्खमम्हा"ति सम्पजानता न होति। एवं पूरितपारमीनम्पि च सत्तानं एवरूपे ठाने महन्तं दुक्खं उप्पज्जतीति अलमेव गब्भावासे निब्बिन्दितुं अलं विरज्जितुं।

अयं चतुत्थाति अयं सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं वसेन चतुत्था गब्भावक्कन्ति। सब्बञ्ञुबोधिसत्ता हि मातुकुच्छिस्मिं पटिसन्धिं गण्हन्तापि जानन्ति, तत्थ वसन्तापि जानन्ति, निक्खमन्तापि जानन्ति, निक्खमनकालेपि च ते कम्मजवाता उद्धंपादे अधोसिरे कत्वा खिपितुं न सक्कोन्ति, द्वे हत्थे पसारेत्वा अक्खीनि उम्मीलेत्वा ठितकाव निक्खमन्ति। भवग्गं उपादाय अवीचिअन्तरे अञ्ञो तीसु कालेसु सम्पजानो नाम नत्थि ठपेत्वा सब्बञ्ञुबोधिसत्ते। तेनेव नेसं मातुकुच्छिं ओक्कमनकाले च निक्खमनकाले च दससहस्सिलोकधातु कम्पतीति। सेसमेत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

आदेसनविधादेसनावण्णना

१४८. **आदेसनविधासूति** आदेसनकोट्ठासेसु। इदानि ता आदेसनविधा दस्सेन्तो **चतस्सो इमाति**आदिमाह। **निमित्तेन आदिसतीति** आगतनिमित्तेन गतनिमित्तेन ठितनिमित्तेन वा इदं नाम भविस्सतीति कथेति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्रिदं वत्थु– एको राजा तिस्सो मुत्ता गहेत्वा पुरोहितं पुच्छि "किं मे, आचरिय, हत्थे"ति ? सो इतो चितो च ओलोकेसि। तेन च समयेन एका सरबू "मक्खिकं गहेस्सामी"ति पक्खन्दि, गहणकाले मक्खिका पलाता, सो मक्खिकाय मुत्तत्ता "मुत्ता महाराजा"ति आह। मुत्ता ताव होतु, कति मुत्ताति ? सो पुन निमित्तं ओलोकेसि। अथ अविदूरे कुक्कुटो तिक्खत्तुं सद्दं निच्छारेसि। ब्राह्मणो "तिस्सो महाराजा"ति आह। एवं एकच्चो आगतनिमित्तेन कथेति। एतेनुपायेन गतठितनि मित्तेहिपि कथनं वेदितब्बं।

अमनुस्सानन्ति यक्खपिसाचादीनं। **देवतान**न्ति चातुमहाराजिकादीनं। **सद्दं सुत्वा**ति अञ्ञस्स चित्तं ञत्वा कथेन्तानं सद्दं सुत्वा। **वितक्कविप्फारसद्द**न्ति वितक्कविप्फारवसेन उप्पन्नं विप्पलपन्तानं सुत्तपमत्तादीनं सद्दं। **सुत्वा**ति तं सद्दं सुत्वा। यं वितक्कयतो तस्स सो सद्दो उप्पन्नो, तस्स वसेन "एवम्पि ते मनो"ति आदिसति। **मनोसङ्खारा पणिहिता**ति चित्तसङ्खारा सुट्ठपिता। **वितक्केस्सती**ति वितक्कयिस्सति पवत्तेस्सतीति पजानाति। जानन्तो च आगमनेन जानाति, पुब्बभागेन जानाति, अन्तोसमापत्तियं चित्तं ओलोकेत्वा जानाति। **आगमनेन जानाति** नाम कसिणपरिकम्मकालेयेव येनाकारेन एस कसिणभावनं आरद्धो पठमज्झानं वा...पे०... चतुत्थज्झानं वा अट्ठसमापत्तियो वा निब्बत्तेस्सतीति जानाति। **पुब्बभागेन जानाति** नाम समथविपस्सनाय आरद्धायेव जानाति, येनाकारेन एस विपस्सनं आरद्धो सोतापत्तिमग्गं वा निब्बत्तेस्सति, सकदागामिमग्गं वा निब्बत्तेस्सति, अनागामिमग्गं वा निब्बत्तेस्सति, अरहत्तमग्गं वा निब्बत्तेस्सतीति जानाति। **अन्तोसमापत्तियं चित्तं ओलोकेत्वा जानाति** नाम येनाकारेन इमस्स मनोसङ्खारा सुट्ठपिता, इमस्स नाम चित्तस्स अनन्तरा इमं नाम वितक्कं वितक्केस्सति। इतो वुट्ठितस्स एतस्स हानभागियो वा समाधि भविस्सति, ठितिभागियो वा विसेसभागियो वा निब्बेधभागियो वा अभिञ्ञायो वा निब्बत्तेस्सतीति जानाति।

तत्थ पुथुज्जनो चेतोपरियञाणलाभी पुथुज्जनानंयेव चित्तं जानाति, न अरियानं। अरियेसुपि हेट्ठिमो हेट्ठिमो उपरिमस्स उपरिमस्स चित्तं न जानाति, उपरिमो पन हेट्ठिमस्स जानाति। एतेसु च सोतापन्नो सोतापत्तिफलसमापत्तिं समापज्जति। सकदागामी, अनागामी, अरहा, अरहत्तफलसमापत्तिं समापज्जति। उपरिमो हेट्ठिमं न समापज्जति। तेसञ्हि हेट्ठिमा हेट्ठिमा समापत्ति तन्नुपपत्तियेव होति। **तथेव तं होती**ति इदं एकंसेन तथेव होति। चेतोपरियञाणवसेन ञातञ्हि अञ्ञथाभावी नाम नत्थि। सेसं पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस्सनसमापत्तिदेसनावण्णना

१४९. **आतप्पमन्वाया**तिआदि ब्रह्मजाले वित्थारितमेव। अयं पनेत्थ सङ्खेपो, **आतप्प**न्ति वीरियं। तदेव पदहितब्बतो **पधानं**। अनुयुञ्जितब्बतो **अनुयोगो**। **अप्पमाद**न्ति सतिअविप्पवासं। **सम्मामनसिकार**न्ति अनिच्चे अनिच्चन्तिआदिवसेन पवत्तं उपायमनसिकारं। **चेतोसमाधि**न्ति पठमज्झानसमाधिं। **अयं पठमा दस्सनसमापत्ती**ति अयं द्वत्तिं साकारं पटिकूलतो मनसिकत्वा पटिकूलदस्सनवसेन उप्पादिता पठमज्झानसमापत्ति पठमा दस्सनसमापत्ति नाम, सचे पन तं झानं पादकं कत्वा सोतापन्नो होति, अयं निप्परियायेनेव पठमा दस्सनसमापत्ति।

अतिक्कम्म चाति अतिक्कमित्वा च। **छविमंसलोहित**न्ति छविञ्च मंसञ्च लोहितञ्च। **अट्ठिं पच्चवेक्खती**ति अट्ठि अट्ठीति पच्चवेक्खति। अट्ठि अट्ठीति पच्चवेक्खित्वा उप्पादिता अट्ठिआरम्मणा दिब्बचक्खुपादकज्झानसमापत्ति दुतिया दस्सनसमापत्ति नाम। सचे पन तं झानं पादकं कत्वा सकदागामिमग्गं निब्बत्तेति। अयं निप्परियायेन दुतिया दस्सनसमापत्ति। काळवल्लवासी सुमत्थेरो पन "याव ततियमग्गा वट्टती"ति आह।

विञ्ञाणसोतन्ति विञ्ञाणमेव। **उभयतो अब्बोच्छिन्न**न्ति द्वीहिपि भागेहि अच्छिन्नं। **इध लोके पतिट्ठितञ्चा**ति छन्दरागवसेन इमस्मिञ्च लोके पतिट्ठितं। दुतियपदेपि एसेव नयो। कम्मं वा कम्मतो उपगच्छन्तं इध लोके पतिट्ठितं नाम। कम्मभवं आकड्ढन्तं परलोके पतिट्ठितं नाम। इमिना किं कथितं? सेक्खपुथुज्जनानं चेतोपरियञाणं कथितं। सेक्खपुथुज्जनानञ्हि चेतोपरियञाणं ततिया दस्सनसमापत्ति नाम।

इध लोके अप्पतिट्ठितञ्चाति निच्छन्दरागत्ता इधलोके च अप्पतिट्ठितं। दुतियपदेपि एसेव नयो। कम्मं वा कम्मतो न उपगच्छन्तं इध लोके अप्पतिट्ठितं नाम। कम्मभवं अनाकड्ढन्तं परलोके अप्पतिट्ठितं नाम। इमिना किं कथितं? खीणासवस्स चेतोपरियञाणं कथितं। खीणासवस्स हि चेतोपरियञाणं चतुत्था दस्सनसमापत्ति नाम।

अपिच द्वत्तिंसाकारे आरद्धविपस्सनापि पठमा दस्सनसमापत्ति। अट्ठिआरम्मणे आरद्धविपस्सना दुतिया दस्सनसमापत्ति। सेक्खपुथुज्जनानं चेतोपरियञाणं खीणासवस्स चेतोपरियञाणन्ति इदं पदद्वयं निच्चलमेव। अपरो नयो पठमज्झानं पठमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस्सनसमापत्ति। दुतियज्झानं दुतिया। ततियज्झानं ततिया। चतुत्थज्झानं चतुत्था दस्सनसमापत्ति। तथा पठममग्गो पठमा दस्सनसमापत्ति। दुतियमग्गो दुतिया। ततियमग्गो ततिया। चतुत्थमग्गो चतुत्था दस्सनसमापत्तीति। सेसमेत्थ पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

पुग्गलपण्णत्तिदेसनावण्णना

१५०. पुग्गलपण्णत्तीसूति लोकवोहारवसेन "सत्तो पुग्गलो नरो पोसो"ति एवं पञ्ञापेतब्बासु लोकपञ्ञत्तीसु। बुद्धानञ्हि द्वे कथा सम्मुतिकथा, परमत्थकथाति पोट्ठपादसुत्ते (दी० नि० अट्ठ० १.४३९-४४३) वित्थारिता।

तत्थ पुग्गलपण्णत्तीसूति अयं सम्मुतिकथा। इदानि ये पुग्गले पञ्ञपेन्तो पुग्गलपण्णत्तीसु भगवा अनुत्तरो होति, ते दस्सेन्तो **सत्तिमे भन्ते पुग्गला। उभतोभागविमुत्तो**तिआदिमाह। तत्थ **उभतोभागविमुत्तो**ति द्वीहि भागेहि विमुत्तो, अरूपसमापत्तिया रूपकायतो विमुत्तो, मग्गेन नामकायतो। सो चतुन्नं अरूपसमापत्तीनं एकेकतो वुट्ठाय सङ्खारे सम्मसित्वा अरहत्तप्पत्तानं, चतुन्नं, निरोधा वुट्ठाय अरहत्तप्पत्तअनागामिनो च वसेन पञ्चविधो होति।

पाळि पनेत्थ "कतमो च पुग्गलो उभतोभागविमुत्तो? इधेकच्चो पुग्गलो अट्ठविमोक्खे कायेन फुसित्वा विहरति, पञ्ञाय चस्स दिस्वा आसवा परिक्खीणा होन्ती"ति (धातु० २४) एवं अट्ठविमोक्खलाभिनो वसेन आगता। पञ्ञाय विमुत्तोति **पञ्ञाविमुत्तो**। सो सुक्खविपस्सको च, चतूहि झानेहि वुट्ठाय अरहत्तं पत्ता चत्तारो चाति इमेसं वसेन पञ्चविधोव होति।

पाळि पनेत्थ अट्ठविमोक्खपटिक्खेपवसेनेव आगता। यथाह "न हेव खो अट्ठ विमोक्खे कायेन फुसित्वा विहरति। पञ्ञाय चस्स दिस्वा आसवा परिक्खीणा होन्ति। अयं वुच्चति पुग्गलो पञ्ञाविमुत्तो"ति (धातु० २५)।

फुट्ठन्तं सच्छि करोतीति **कायसक्खि**। सो झानफस्सं पठमं फुसति, पच्छा निरोधं निब्बानं सच्छिकरोति, सो सोतापत्तिफलट्ठं आदिं कत्वा याव अरहत्तमग्गट्ठा छब्बिधो होतीति वेदितब्बो। तेनेवाह "इधेकच्चो पुग्गलो अट्ठ विमोक्खे कायेन फुसित्वा विहरति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्ञाय चस्स दिस्वा एकच्चे आसवा परिक्खीणा होन्ति। अयं वुच्चति पुग्गलो कायसक्खी''ति (धातु० २६)।

दिट्ठन्तं पत्तोति **दिट्ठिप्पत्तो।** तत्रिदं सङ्खेपलक्खणं, दुक्खा सङ्खारा सुखो निरोधोति ञातं होति दिट्ठं विदितं सच्छिकतं पस्सितं पञ्ञायाति **दिट्ठिप्पत्तो।** वित्थारतो पनेसोपि कायसक्खि विय छब्बिधो होति। तेनेवाह– ''इधेकच्चो पुग्गलो इदं दुक्खन्ति यथाभूतं पजानाति...पे०... अयं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदाति यथाभूतं पजानाति, तथागतप्पवेदिता चस्स धम्मा पञ्ञाय वोदिट्ठा होन्ति वोचरिता, पञ्ञाय चस्स दिस्वा एकच्चे आसवा परिक्खीणा होन्ति। अयं वुच्चति पुग्गलो दिट्ठिप्पत्तो''ति (धातु० २७)।

सद्धाय विमुत्तोति **सद्धाविमुत्तो।** सोपि वुत्तनयेनेव छब्बिधो होति। तेनेवाह– ''इधेकच्चो पुग्गलो इदं दुक्खन्ति यथाभूतं पजानाति, अयं दुक्खसमुदयोति यथाभूतं पजानाति, अयं दुक्खनिरोधोति यथाभूतं पजानाति, अयं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदाति यथाभूतं पजानाति, तथागतप्पवेदिता चस्स धम्मा पञ्ञाय वोदिट्ठा होन्ति वोचरिता, पञ्ञाय चस्स दिस्वा एकच्चे आसवा परिक्खीणा होन्ति नो च खो यथा दिट्ठिप्पत्तस्स। अयं वुच्चति पुग्गलो सद्धाविमुत्तो''ति (धातु० २८)। एतेसु हि सद्धाविमुत्तस्स पुब्बभागमग्गक्खणे सद्दहन्तस्स विय, ओकप्पेन्तस्स विय, अधिमुच्चन्तस्स विय च किलेसक्खयो होति। दिट्ठिप्पत्तस्स पुब्बभागमग्गक्खणे किलेसच्छेदकं ञाणं अदन्धं तिखिणं सूरं हुत्वा वहति। तस्मा यथा नाम नातितिखिणेन असिना कदलिं छिन्दन्तस्स छिन्नट्ठानं न मट्ठं होति, असि न सीघं वहति, सद्दो सुय्यति, बलवतरो वायामो कातब्बो होति, एवरूपा सद्धाविमुत्तस्स पुब्बभागमग्गभावना। यथा पन अतिनिसितेन असिना कदलिं छिन्दन्तस्स छिन्नट्ठानं मट्ठं होति, असि सीघं वहति, सद्दो न सुय्यति, बलवतरं वायामकिच्चं न होति, एवरूपा पञ्ञाविमुत्तस्स पुब्बभागमग्गभावना वेदितब्बा।

धम्मं अनुस्सरतीति **धम्मानुसारी। धम्मोति** पञ्ञा, पञ्ञापुब्बङ्गमं मग्गं भावेतीति अत्थो। **सद्धानुसारिम्हिपि** एसेव नयो, उभोपेते सोतापत्तिमग्गट्ठायेव। वुत्तम्पि चेतं ''यस्स पुग्गलस्स सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्नस्स पञ्ञिन्द्रियं अधिमत्तं होति, पञ्ञावाहिं पञ्ञापुब्बङ्गमं अरियमग्गं भावेति। अयं वुच्चति पुग्गलो धम्मानुसारी''ति।

तथा ''यस्स पुग्गलस्स सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्नस्स सद्धिन्द्रियं अधिमत्तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होति, सद्धावाहिं सद्धापुब्बङ्गमं अरियमग्गं भावेति। अयं वुच्चति पुग्गलो सद्धानुसारी''ति। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारतो पनेसा उभतोभागविमुत्तादिकथा विसुद्धिमग्गे पञ्ञाभावनाधिकारे वुत्ता। तस्मा तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

पधानदेसनावण्णना

१५१. पधानेसूति इध पदहनवसेन ''सत्त बोज्झङ्गा पधाना''ति वुत्ता। तेसं वित्थारकथा महासतिपट्ठाने वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

पटिपदादेसनावण्णना

१५२. दुक्खपटिपदादीसु अयं वित्थारनयो – ''तत्थ कतमा दुक्खपटिपदा दन्धाभिञ्ञा पञ्ञा ? दुक्खेन कसिरेन समाधिं उप्पादेन्तस्स दन्धं तं ठानं अभिजानन्तस्स या पञ्ञा पजानना...पे०... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि, अयं वुच्चति दुक्खपटिपदा दन्धाभिञ्ञा पञ्ञा। तत्थ कतमा दुक्खपटिपदा खिप्पाभिञ्ञा पञ्ञा ? दुक्खेन कसिरेन समाधिं उप्पादेन्तस्स खिप्पं तं ठानं अभिजानन्तस्स या पञ्ञा पजानना...पे०... सम्मादिट्ठि, अयं वुच्चति दुक्खपटिपदा खिप्पाभिञ्ञा पञ्ञा। तत्थ कतमा सुखपटिपदा दन्धाभिञ्ञा पञ्ञा ? अकिच्छेन अकसिरेन समाधिं उप्पादेन्तस्स दन्धं तं ठानं अभिजानन्तस्स या पञ्ञा पजानना...पे०... सम्मादिट्ठि, अयं वुच्चति सुखपटिपदा दन्धाभिञ्ञा पञ्ञा। तत्थ कतमा सुखपटिपदा खिप्पाभिञ्ञा पञ्ञा ? अकिच्छेन अकसिरेन समाधिं उप्पादेन्तस्स खिप्पं तं ठानं अभिजानन्तस्स या पञ्ञा पजानना...पे०... सम्मादिट्ठि, अयं वुच्चति सुखपटिपदा खिप्पाभिञ्ञा पञ्ञा''ति (विभं० ८०१)। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन विसुद्धिमग्गे वुत्तो। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

भस्ससमाचारादिवण्णना

१५३. न चेव मुसावादूपसञ्हितन्ति भस्ससमाचारे ठितोपि कथामग्गं अनुपच्छिन्दित्वा कथेन्तोपि इधेकच्चो भिक्खु न चेव मुसावादूपसञ्हितं भासति। अट्ठ अनरियवोहारे वज्जेत्वा अट्ठ अरियवोहारयुत्तमेव भासति। **न च वेभूतिय**न्ति भस्ससमाचारे ठितोपि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भेदकरवाचं न भासति। **न च पेसुणियन्ति** तस्सायेवेतं वेवचनं। वेभूतियवाचा हि पियभावस्स सुञ्ञकरणतो "पेसुणिय"न्ति वुच्चति। नाममेवस्सा एतन्ति महासीवत्थेरो अवोच। **न च सारम्भजन्ति** सारम्भजा च या वाचा, तञ्च न भासति। "त्वं दुस्सीलो"ति वुत्ते, "त्वं दुस्सीलो तवाचरियो दुस्सीलो"ति वा, "तुम्हं आपत्ती"ति वुत्ते, "अहं पिण्डाय चरित्वा पाटलिपुत्तं गतो"तिआदिना नयेन बहिद्धा विक्खेपकथापवत्तं वा करणुत्तरियवाचं न भासति। **जयापेक्खो**ति जयपुरेक्खारो हुत्वा, यथा हत्थको सक्यपुत्तो तित्थिया नाम धम्मेनपि अधम्मेनपि जेतब्बाति सच्चालिकं यंकिञ्चि भासति, एवं जयापेक्खो जयपुरेक्खारो हुत्वा न भासतीति अत्थो। **मन्ता मन्ता च वाचं भासती**ति एत्थ मन्ताति वुच्चति पञ्ञा, मन्ताय पञ्ञाय। पुन मन्ताति उपपरिक्खित्वा। इदं वुत्तं होति, भस्ससमाचारे ठितो दिवसभागम्पि कथेन्तो पञ्ञाय उपपरिक्खित्वा युत्तकथमेव कथेतीति। **निधानवति**न्ति हदयेपि निदहितब्बयुत्तं। **कालेना**ति युत्तपत्तकालेन।

एवं भासिता हि वाचा अमुसा चेव होति अपिसुणा च अफरुसा च असठा च असम्फप्पलापा च। एवरूपा च अयं वाचा चतुसच्चनिस्सितातिपि सिक्खत्तयनिस्सितातिपि दसकथावत्थुनिस्सितातिपि तेरसधुतङ्गनिस्सितातिपि सत्ततिंसबोधिपक्खियधम्मनिस्सितातिपि मग्गनिस्सितातिपि वुच्चति। तेनाह **एतदानुत्तरियं, भन्ते, भस्ससमाचारे**ति तं पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

सच्चो चस्स सद्धो चाति सीलाचारे ठितो भिक्खु सच्चो च भवेय्य सच्चकथो सद्धो च सद्धासम्पन्नो। ननु हेट्ठा सच्चं कथितमेव, इध कस्मा पुन वुत्तन्ति? हेट्ठा वाचासच्चं कथितं। सीलाचारे ठितो पन भिक्खु अन्तमसो हसनकथायपि मुसावादं न करोतीति दस्सेतुं इध वुत्तं। इदानि सो धम्मेन समेन जीवितं कप्पेतीति दस्सनत्थं **न च कुहको**तिआदि वुत्तं। तत्थ "कुहको"तिआदीनि **ब्रह्मजाले** वित्थारितानि।

इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो, भोजने मत्तञ्ञूति छसु इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो भोजनेपि पमाणञ्ञू। **समकारी**ति समचारी, कायेन वाचाय मनसा च कायवङ्कादीनि पहाय समं चरतीति अत्थो। **जागरियानुयोगमनुयुत्तो**ति रत्तिन्दिवं छ कोट्ठासे कत्वा "दिवसं चङ्कमेन निसज्जाया"ति वुत्तनयेनेव जागरियानुयोगं युत्तप्पयुत्तो विहरति। **अतन्दितो**ति नित्तन्दी कायालसियविरहितो। **आरद्धवीरियो**ति कायिकवीरियेनापि आरद्धवीरियो होति, गणसङ्गणिकं विनोदेत्वा चतूसु इरियापथेसु अट्ठआरब्भवत्थुवसेन एकविहारी। चेतसिकवीरियेनापि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरद्धवीरियो होति, किलेससङ्गणिकं पहाय विनोदेत्वा अट्ठसमापत्तिवसेन एकविहारी। अपि च यथा तथा किलेसुप्पत्तिं निवारेन्तो चेतसिकवीरियेन आरद्धवीरियो होति। **झायी**ति आरम्मणलक्खणूपनिज्झानवसेन झायी। **सतिमा**ति चिरकतादिअनुस्सरणसमत्थाय सतिया समन्नागतो।

कल्याणपटिभानोति वाक्करणसम्पन्नो चेव होति पटिभानसम्पन्नो च। युत्तपटिभानो खो पन होति नो मुत्तपटिभानो। सीलसमाचारस्मिञ्हि ठितभिक्खु मुत्तपटिभानो न होति, युत्तपटिभानो पन होति वङ्गीसत्थेरो विय। **गतिमा**ति गमनसमत्थाय पञ्ञाय समन्नागतो। **धितिमा**ति धारणसमत्थाय पञ्ञाय समन्नागतो। **मतिमा**ति एत्थ पन मतीति पञ्ञाय नाममेव, तस्मा पञ्ञवाति अत्थो। इति तीहिपि इमेहि पदेहि पञ्ञाव कथिता। तत्थ हेट्ठा समणधम्मकरणवीरियं कथितं, इध बुद्धवचनगण्हनवीरियं। तथा हेट्ठा विपस्सनापञ्ञा कथिता, इध बुद्धवचनगण्हनपञ्ञा। **न च कामेसु गिद्धो**ति वत्थुकामकिलेसकामेसु अगिद्धो। **सतो च निपको चा**ति अभिक्कन्तपटिक्कन्तादीसु सत्तसु ठानेसु सतिया चेव ञाणेन च समन्नागतो चरतीति अत्थो। नेपक्कन्ति पञ्ञा, ताय समन्नागतत्ता निपकोति वुत्तो। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

अनुसासनविधादिवण्णना

१५४. **पच्चत्तं योनिसो मनसिकारा**ति अत्तनो उपायमनसिकारेन। **यथानुसिट्ठं तथा पटिपज्जमानो**ति यथा मया अनुसिट्ठं अनुसासनी दिन्ना, तथा पटिपज्जमानो। **तिण्णं संयोजनानं परिक्खया**तिआदि वुत्तत्थमेव। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

१५५. **परपुग्गलविमुत्तिञाणे**ति सोतापन्नादीनं परपुग्गलानं तेन तेन मग्गेन किलेसविमुत्तिञाणे। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

१५६. **अमुत्रासिं एवंनामो**ति एको पुब्बेनिवासं अनुस्सरन्तो नामगोत्तं परियादियमानो गच्छति। एको सुद्धखन्धेयेव अनुस्सरति, एको हि सक्कोति, एको न सक्कोति। तत्थ यो सक्कोति, तस्स वसेन अग्गहेत्वा असक्कोन्तस्स वसेन गहितं। असक्कोन्तो पन किं करोति? सुद्धखन्धेयेव अनुस्सरन्तो गन्त्वा अनेकजातिसतसहस्समत्थके ठत्वा नामगोत्तं परियादियमानो ओतरति। तं दस्सेन्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवंनामोतिआदिमाह। **सो एवमाहा**ति सो दिट्ठिगतिको एवमाह। तत्थ किञ्चापि सस्सतोति वत्वा "ते च सत्ता संसरन्ती"ति वदन्तस्स वचनं पुब्बापरविरुद्धं होति। दिट्ठिगतिकत्ता पनेस एतं न सल्लक्खेसि। दिट्ठिगतिकस्स हि ठानं वा नियमो वा नत्थि। इमं गहेत्वा इमं विस्सज्जेति, इमं विस्सज्जेत्वा इमं गण्हातीति ब्रह्मजाले वित्थारितमेवेतं। **अयं ततियो सस्सतवादो**ति थेरो लाभिस्सेव वसेन तयो सस्सतवादे आह। भगवता पन तक्कीवादम्पि गहेत्वा ब्रह्मजाले चत्तारो वुत्ता। एतेसं पन तिण्णं वादानं वित्थारकथा ब्रह्मजाले (दी० नि० अट्ठ० १.३०) वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव वित्थारेतब्बं।

१५७. **गणनाय वा**ति पिण्डगणनाय। **सङ्खानेना**ति अच्छिद्दकवसेन मनोगणनाय। उभयथापि पिण्डगणनमेव दस्सेति। इदं वुत्तं होति, वस्सानं सतवसेन सहस्सवसेन सतसहस्सवसेन कोटिवसेन पिण्डं कत्वापि एत्तकानि वस्ससतानीति वा एत्तका वस्सकोटियोति वा एवं सङ्खातुं न सक्का। तुम्हे पन अत्तनो दसन्नं पारमीनं पूरितत्ता सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स सुप्पटिविद्धत्ता यस्मा वो अनावरणञाणं सूरं वहति। तस्मा देसनाञाणकुसलतं पुरक्खत्वा वस्सगणनायपि परियन्तिकं कत्वा कप्पगणनायपि परिच्छिन्दित्वा एत्तकन्ति दस्सेथाति दीपेति। पाळियत्थो पनेत्थ वुत्तनयोयेव। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

१५८. **एतदानुत्तरियं, भन्ते, सत्तानं चुतूपपातञाणे**ति भन्ते यापि अयं सत्तानं चुतिपटिसन्धिवसेन ञाणदेसना, सापि तुम्हाकंयेव अनुत्तरा। अतीतबुद्धापि एवमेव देसेसुं। अनागतापि एवमेव देसेस्सन्ति। तुम्हे तेसं अतीतानागतबुद्धानं ञाणेन संसन्दित्वाव देसयित्थ। "इमिनापि कारणेन एवंपसन्नो अहं भन्ते भगवती"ति दीपेति। पाळियत्थो पनेत्थ वित्थारितोयेव।

१५९. **सासवा सउपधिका**ति सदोसा सउपारम्भा। **नो अरियाति वुच्चती**ति अरियिद्धीति न वुच्चति। **अनासवा अनुपधिका**ति निद्दोसा अनुपारम्भा। **अरियाति वुच्चती**ति अरियिद्धीति वुच्चति। **अप्पटिकूलसञ्ञी तत्थ विहरती**ति कथं अप्पटिकूलसञ्ञी तत्थ विहरतीति ? पटिकूले सत्ते मेत्तं फरति, सङ्खारे धातुसञ्ञं उपसंहरति। यथाह "कथं पटिकूले अप्पटिकूलसञ्ञी विहरति (पटि० म० ३.१७) ? अनिट्ठस्मिं वत्थुस्मिं मेत्ताय वा फरति, धातुतो वा उपसंहरती"ति। **पटिकूलसञ्ञी तत्थ विहरती**ति अप्पटिकूले सत्ते असुभसञ्ञं फरति, सङ्खारे अनिच्चसञ्ञं उपसंहरति। यथाह "कथं अप्पटिकूले

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पटिकूलसञ्ञी विहरति ? इट्ठस्मिं वत्थुस्मिं असुभाय वा फरति, अनिच्चतो वा उपसंहरती''ति। एवं सेसपदेसुपि अत्थो वेदितब्बो।

उपेक्खको तत्थ विहरतीति इट्ठे अरज्जन्तो अनिट्ठे अदुस्सन्तो यथा अञ्ञे असमपेक्खनेन मोहं उप्पादेन्ति, एवं अनुप्पादेन्तो छसु आरम्मणेसु छळङ्गुपेक्खाय उपेक्खको विहरति। **एतदानुत्तरियं, भन्ते, इद्धिविधासू**ति, भन्ते, या अयं द्वीसु इद्धीसु एवंदेसना, एतदानुत्तरियं। **तं भगवा**ति तं देसनं भगवा असेसं सकलं अभिजानाति। **तं भगवतो**ति तं देसनं भगवतो असेसं अभिजानतो। **उत्तरि अभिञ्ञेय्यं नत्थी**ति उत्तरि अभिजानितब्बं नत्थि। अयं नाम इतो अञ्ञो धम्मो वा पुग्गलो वा यं भगवा न जानाति इदं नत्थि। **यदभिजानं अञ्ञो समणो वा ब्राह्मणो वा**ति यं तुम्हेहि अनभिञ्ञातं अञ्ञो समणो वा ब्राह्मणो वा अभिजानन्तो भगवता भिय्योभिञ्ञतरो अस्स, अधिकतरपञ्ञो भवेय्य। **यदिदं इद्धिविधासू**ति एत्थ **यदिद**न्ति निपातमत्तं। इद्धिविधासु भगवता उत्तरितरो नत्थि। अतीतबुद्धापि हि इमा द्वे इद्धियो देसेसुं, अनागतापि इमाव देसेस्सन्ति। तुम्हेपि तेसं ञाणेन संसन्दित्वा इमाव देसयित्थ। इति भगवा इद्धिविधासु अनुत्तरोति दस्सेन्तो ''इमिनापि कारणेन एवंपसन्नो अहं, भन्ते, भगवती''ति दीपेति। एत्तावता ये धम्मसेनापति दिवाट्ठाने निसीदित्वा सोळस अपरम्परियधम्मे सम्मसि, तेव दस्सिता होन्ति।

अञ्ञथासत्थुगुणदस्सनादिवण्णना

१६०. इदानि अपरेनपि आकारेन भगवतो गुणे दस्सेन्तो **यं तं भन्ते**तिआदिमाह। तत्थ **सद्धेन कुलपुत्तेना**ति सद्धा कुलपुत्ता नाम अतीतानागतपच्चुप्पन्ना बोधिसत्ता। तस्मा यं सब्बञ्ञुबोधिसत्तेन पत्तब्बन्ति वुत्तं होति। किं पन तेन पत्तब्बं ? नव लोकुत्तरधम्मा। **आरद्धवीरियेना**तिआदीसु ''वीरियं थामो''तिआदीनि सब्बानेव वीरियवेवचनानि। तत्थ **आरद्धवीरियेना**ति पग्गहितवीरियेन। **थामवता**ति थामसम्पन्नेन थिरवीरियेन। **पुरिसथामेना**ति तेन थामवता यं पुरिसथामेन पत्तब्बन्ति वुत्तं होति। अनन्तरपदद्वयेपि एसेव नयो। **पुरिसधोरय्हेना**ति या असमधुरेहि बुद्धेहि वहितब्बा धुरा, तं धुरं वहनसमत्थेन महापुरिसेन। **अनुप्पत्तं तं भगवता**ति तं सब्बं अतीतानागतबुद्धेहि पत्तब्बं, सब्बमेव अनुप्पत्तं, भगवतो एकगुणोपि ऊनो नत्थीति दस्सेति। **कामेसु कामसुखल्लिकानुयोग**न्ति वत्थुकामेसु कामसुखल्लिकानुयोगं। यथा अञ्ञे केणियजटिलादयो समणब्राह्मणा ''को जानाति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परलोकं। सुखो इमिस्सा परिब्बाजिकाय मुदुकाय लोमसाय बाहाय सम्फस्सो''ति मोळिबन्धाहि परिब्बाजिकाहि परिचारेन्ति सम्पत्तं सम्पत्तं रूपादिआरम्मणं अनुभवमाना कामसुखमनुयुत्ता, न एवमनुयुत्तोति दस्सेति।

हीनन्ति लामकं। **गम्म**न्ति गामवासीनं धम्मं। **पोथुज्जनिक**न्ति पुथुज्जनेहि सेवितब्बं। **अनरिय**न्ति न निद्दोसं। न वा अरियेहि सेवितब्बं। **अनत्थसञ्हित**न्ति अनत्थसंयुत्तं। **अत्तकिलमथानुयोग**न्ति अत्तनो आतापनपरितापनानुयोगं। **दुक्ख**न्ति दुक्खयुत्तं, दुक्खमं वा। यथा एके समणब्राह्मणा कामसुखल्लिकानुयोगं परिवज्जेस्सामाति कायकिलमथं अनुधावन्ति, ततो मुञ्चिस्सामाति कामसुखं अनुधावन्ति, न एवं भगवा। भगवा पन उभो एते अन्ते वज्जेत्वा या सा ''अत्थि, भिक्खवे, मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा चक्खुकरणी''ति एवं वुत्ता सम्मापटिपत्ति, तमेव पटिपन्नो। तस्मा ''न च अत्तकिलमथानुयोग''न्तिआदिमाह।

आभिचेतसिकानन्ति अभिचेतसिकानं, कामावचरचित्तानि अतिक्कमित्वा ठितानन्ति अत्थो। **दिट्ठधम्मसुखविहारान**न्ति इमस्मिंयेव अत्तभावे सुखविहारानं। **पोट्ठपादसुत्तन्त**स्मिञ्हि सप्पीतिकदुतियज्झानफलसमापत्ति कथिता (दी० नि० १.४३२)। **पासादिकसुत्तन्ते** सह मग्गेन विपस्सनापादकज्झानं। दसुत्तरसुत्तन्ते चतुत्थज्झानिकफलसमापत्ति। इमस्मिं सम्पसादनीये दिट्ठधम्मसुखविहारज्झानानि कथितानि। **निकामलाभी**ति यथाकामलाभी। **अकिच्छलाभी**ति अदुक्खलाभी। **अकसिरलाभी**ति विपुललाभी।

अनुयोगदानप्पकारवण्णना

१६१. एकिस्सा लोकधातुयाति दससहस्सिलोकधातुया। तीणि हि खेत्तानि– जातिखेत्तं आणाखेत्तं विसयखेत्तं। तत्थ **जातिखेत्तं** नाम दससहस्सी लोकधातु। सा हि तथागतस्स मातुकुच्छिं ओक्कमनकाले निक्खमनकाले सम्बोधिकाले धम्मचक्कप्पवत्तने आयुसङ्खारोस्सज्जने परिनिब्बाने च कम्पति। कोटिसतसहस्सचक्कवाळं पन **आणाखेत्तं** नाम। आटानाटियमोरपरित्तधजग्गपरित्तरतनपरित्तादीनञ्हि एत्थ आणा वत्तति। **विसयखेत्तस्स** पन परिमाणं नत्थि, बुद्धानञ्हि ''यावतकं ञाणं, तावतकं ञेय्यं, यावतकं ञेय्यं तावतकं ञाणं, ञाणपरियन्तिकं ञेय्यं, ञेय्यपरियन्तिकं ञाण''न्ति (महानि० ५५) वचनतो अविसयो नाम नत्थि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमेसु पन तीसु खेत्तेसु ठपेत्वा इमं चक्कवाळं अञ्ञस्मिं चक्कवाळे बुद्धा उप्पज्जन्तीति सुत्तं नत्थि, नुप्पज्जन्तीति पन अत्थि। तीणि पिटकानि विनयपिटकं, सुत्तन्तपिटकं अभिधम्मपिटकं। तिस्सो सङ्गीतियो महाकस्सपत्थेरस्स सङ्गीति, यसत्थेरस्स सङ्गीति, मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरस्स सङ्गीतीति। इमा तिस्सो सङ्गीतियो आरुळ्हे तेपिटके बुद्धवचने "इमं चक्कवाळं मुञ्चित्वा अञ्ञत्थ बुद्धा उप्पज्जन्ती"ति सुत्तं नत्थि, नुप्पज्जन्तीति पन अत्थि।

अपुब्बं अचरिमन्ति अपुरे अपच्छा एकतो नुप्पज्जन्ति, पुरे वा पच्छा वा उप्पज्जन्तीति वुत्तं होति। तत्थ बोधिपल्लङ्के "बोधिं अपत्वा न उट्ठहिस्सामी"ति निसिन्नकालतो पट्ठाय याव मातुकुच्छिस्मिं पटिसन्धिग्गहणं, ताव पुब्बेति न वेदितब्बं। बोधिसत्तस्स हि पटिसन्धिग्गहणे दससहस्सचक्कवाळकम्पनेनेव खेत्तपरिग्गहो कतो। अञ्ञस्स बुद्धस्स उप्पत्तिपि निवारिता होति। परिनिब्बानतो पट्ठाय च याव सासपमत्तापि धातुयो तिट्ठन्ति, ताव पच्छाति न वेदितब्बं। धातूसु हि ठितासु बुद्धापि ठिताव होन्ति। तस्मा एत्थन्तरे अञ्ञस्स बुद्धस्स उप्पत्ति निवारिताव होति। धातुपरिनिब्बाने पन जाते अञ्ञस्स बुद्धस्स उप्पत्ति न निवारिता।

तिपिटकअन्तरधानकथा

तीणि अन्तरधानानि नाम परियत्तिअन्तरधानं, पटिवेधअन्तरधानं, पटिपत्तिअन्तरधानन्ति। तत्थ **परियत्तीति** तीणि पिटकानि। **पटिवेधोति** सच्चप्पटिवेधो। **पटिपत्तीति** पटिपदा। तत्थ पटिवेधो च पटिपत्ति च होतिपि न होतिपि। एकस्मिञ्हि काले पटिवेधकरा भिक्खू बहू होन्ति, एस भिक्खु पुथुज्जनोति अङ्गुलिं पसारेत्वा दस्सेतब्बो होति। इमस्मिंयेव दीपे एकवारं पुथुज्जनभिक्खु नाम नाहोसि। पटिपत्तिपूरकापि कदाचि बहू होन्ति, कदाचि अप्पा। इति पटिवेधो च पटिपत्ति च होतिपि न होतिपि। सासनट्ठितिया पन परियत्ति पमाणं। पण्डितो हि तेपिटकं सुत्वा द्वेपि पूरेति।

यथा अम्हाकं बोधिसत्तो आळारस्स सन्तिके पञ्चाभिञ्ञा सत्त च समापत्तियो निब्बत्तेत्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्तिया परिकम्मं पुच्छि, सो न जानामीति आह। ततो उदकस्स सन्तिकं गन्त्वा अधिगतविसेसं संसन्दित्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनस्स परिकम्मं पुच्छि, सो आचिक्खि, तस्स वचनसमनन्तरमेव महासत्तो तं झानं सम्पादेसि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवमेव पञ्ञवा भिक्खु परियत्तिं सुत्वा द्वेपि पूरेति। तस्मा परियत्तिया ठिताय सासनं ठितं होति। यदा पन सा अन्तरधायति, तदा पठमं अभिधम्मपिटकं नस्सति। तत्थ पट्ठानं सब्बपठमं अन्तरधायति। अनुक्कमेन पच्छा धम्मसङ्गहो, तस्मिं अन्तरहिते इतरेसु द्वीसु पिटकेसु ठितेसुपि सासनं ठितमेव होति।

तत्थ सुत्तन्तपिटके अन्तरधायमाने पठमं अङ्गुत्तरनिकायो एकादसकतो पट्ठाय याव एकका अन्तरधायति, तदनन्तरं संयुत्तनिकायो चक्कपेय्यालतो पट्ठाय याव ओघतरणा अन्तरधायति। तदनन्तरं मज्झिमनिकायो इन्द्रियभावनतो पट्ठाय याव मूलपरियाया अन्तरधायति। तदनन्तरं दीघनिकायो दसुत्तरतो पट्ठाय याव ब्रह्मजाला अन्तरधायति। एकिस्सापि द्विन्नम्पि गाथानं पुच्छा अद्धानं गच्छति, सासनं धारेतुं न सक्कोति, सभियपुच्छा आळवकपुच्छा विय च। एता किर कस्सपबुद्धकालिका अन्तरा सासनं धारेतुं नासक्खिंसु।

द्वीसु पन पिटकेसु अन्तरहितेसुपि विनयपिटके ठिते सासनं तिट्ठति। परिवारक्खन्धकेसु अन्तरहितेसु उभतोविभङ्गे ठिते ठितमेव होति। उभतोविभङ्गे अन्तरहिते मातिकायपि ठिताय ठितमेव होति। मातिकाय अन्तरहिताय पातिमोक्खपब्बज्जाउपसम्पदासु ठितासु सासनं तिट्ठति। लिङ्गं अद्धानं गच्छति। सेतवत्थसमणवंसो पन कस्सपबुद्धकालतो पट्ठाय सासनं धारेतुं नासक्खि। **पटिसम्भिदापत्तेहि** वस्ससहस्सं अट्ठासि। **छळभिञ्ञेहि** वस्ससहस्सं। **तेविज्जेहि** वस्ससहस्सं। **सुक्खविपस्सकेहि** वस्ससहस्सं। **पातिमोक्खेहि** वस्ससहस्सं अट्ठासि। पच्छिमकस्स पन सच्चप्पटिवेधतो पच्छिमकस्स सीलभेदतो पट्ठाय सासनं ओसक्कितं नाम होति। ततो पट्ठाय अञ्ञस्स बुद्धस्स उप्पत्ति न निवारिता।

सासनअन्तरहितवण्णना

तीणि परिनिब्बानानि नाम किलेसपरिनिब्बानं खन्धपरिनिब्बानं धातुपरिनिब्बानन्ति। तत्थ किलेसपरिनिब्बानं बोधिपल्लङ्के अहोसि। खन्धपरिनिब्बानं कुसिनारायं। धातुपरिनिब्बानं अनागते भविस्सति। सासनस्स किर ओसक्कनकाले इमस्मिं तम्बपण्णिदीपे धातुयो सन्निपतित्वा महाचेतियं गमिस्सन्ति। महाचेतियतो नागदीपे राजायतनचेतियं। ततो महाबोधिपल्लङ्कं गमिस्सन्ति। नागभवनतोपि देवलोकतोपि ब्रह्मलोकतोपि धातुयो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाबोधिपल्लङ्कमेव गमिस्सन्ति। सासपमत्तापि धातुयो न अन्तरा नस्सिस्सन्ति। सब्बधातुयो महाबोधिपल्लङ्के रासिभूता सुवण्णक्खन्धो विय एकग्घना हुत्वा छब्बण्णरस्मियो विस्सज्जेस्सन्ति।

ता दससहस्सिलोकधातुं फरिस्सन्ति, ततो दससहस्सचक्कवाळदेवता सन्निपतित्वा "अज्ज सत्था परिनिब्बाति, अज्ज सासनं ओसक्कति, पच्छिमदस्सनं दानि इदं अम्हाक"न्ति दसबलस्स परिनिब्बुतदिवसतो महन्ततरं कारुञ्ञं करिस्सन्ति। ठपेत्वा अनागामिखीणासवे अवसेसा सकभावेन सन्धारेतुं न सक्खिस्सन्ति। धातूसु तेजोधातु उट्ठहित्वा याव ब्रह्मलोका उग्गच्छिस्सति। सासपमत्तायपि धातुया सति एकजाला भविस्सति। धातूसु परियादानं गतासु उपच्छिज्जिस्सति। एवं महन्तं आनुभावं दस्सेत्वा धातूसु अन्तरहितासु सासनं अन्तरहितं नाम होति।

याव न एवं अन्तरधायति, ताव अचरिमं नाम होति। एवं अपुब्बं अचरिमं उप्पज्जेय्युं, नेतं ठानं विज्जति। कस्मा पन अपुब्बं अचरिमं नुप्पज्जन्तीति? अनच्छरियत्ता। बुद्धा हि अच्छरियमनुस्सा। यथाह– "एकपुग्गलो, भिक्खवे, लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति अच्छरियमनुस्सो। कतमो एकपुग्गलो? तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो"ति (अ० नि० १.१.१७२)। यदि च द्वे वा चत्तारो वा अट्ठ वा सोळस वा एकतो उप्पज्जेय्युं, अनच्छरिया भवेय्युं। एकस्मिञ्हि विहारे द्विन्नं चेतियानम्पि लाभसक्कारो उळारो न होति। भिक्खूपि बहुताय न अच्छरिया जाता, एवं बुद्धापि भवेय्युं, तस्मा नुप्पज्जन्ति। देसनाय च विसेसाभावतो। यञ्हि सतिपट्ठानादिभेदं धम्मं एको देसेति। अञ्ञेन उप्पज्जित्वापि सोव देसेतब्बो सिया, ततो अनच्छरियो सिया। एकस्मिं पन धम्मं देसेन्ते देसनापि अच्छरिया होति, विवादभावतो च। बहूसु हि बुद्धेसु उप्पन्नेसु बहूनं आचरियानं अन्तेवासिका विय अम्हाकं बुद्धो पासादिको, अम्हाकं बुद्धो मधुरस्सरो लाभी पुञ्ञवाति विवदेय्युं। तस्मापि एवं नुप्पज्जन्ति। अपि चेतं कारणं मिलिन्दरञ्ञापि पुट्ठेन नागसेनत्थेरेन वित्थारितमेव। वुत्तञ्हि तत्थ –

भन्ते, नागसेन, भासितम्पि हेतं भगवता "अट्ठानमेतं, भिक्खवे, अनवकासो, यं एकिस्सा लोकधातुया द्वे अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा अपुब्बं अचरिमं उप्पज्जेय्युं, नेतं ठानं विज्जती"ति। देसयन्ता च, भन्ते नागसेन, सब्बेपि तथागता सत्ततिंस बोधिपक्खिये धम्मे देसेन्ति, कथयमाना च चत्तारि अरियसच्चानि कथेन्ति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिक्खापेन्ता च तीसु सिक्खासु सिक्खापेन्ति, अनुसासमाना च अप्पमादप्पटिपत्तियं अनुसासन्ति। यदि, भन्ते नागसेन, सब्बेसम्पि तथागतानं एका देसना एका कथा एकसिक्खा एकानुसासनी, केन कारणेन द्वे तथागता एकक्खणे नुप्पज्जन्ति। एकेनपि ताव बुद्धुप्पादेन अयं लोको ओभासजातो, यदि दुतियो बुद्धो भवेय्य, द्विन्नं पभाय अयं लोको भिय्योसोमत्ताय ओभासजातो भवेय्य, ओवदमाना च द्वे तथागता सुखं ओवदेय्युं, अनुसासमाना च सुखं अनुसासेय्युं, तत्थ मे कारणं देसेहि, यथाहं निस्संसयो भवेय्य''न्ति।

अयं, महाराज, दससहस्सी लोकधातु एकबुद्धधारणी, एकस्सेव तथागतस्स गुणं धारेति, यदि दुतियो बुद्धो उप्पज्जेय्य, नायं दससहस्सी लोकधातु धारेय्य, चलेय्य, कम्पेय्य, नमेय्य, ओणमेय्य, विनमेय्य, विकिरेय्य, विधमेय्य, विद्धंसेय्य, न ठानमुपगच्छेय्य।

यथा, महाराज, नावा एकपुरिससन्धारणी भवेय्य, एकपुरिसे अभिरूळ्हे सा नावा समुपादिका भवेय्य, अथ दुतियो पुरिसो आगच्छेय्य तादिसो आयुना वण्णेन वयेन पमाणेन किसथूलेन सब्बङ्गपच्चङ्गेन, सो तं नावं अभिरूहेय्य, अपि नु सा, महाराज, नावा द्विन्नम्पि धारेय्याति? न हि, भन्ते, चलेय्य, कम्पेय्य, नमेय्य, ओणमेय्य, विनमेय्य, विकिरेय्य, विधमेय्य, विद्धंसेय्य, न ठानमुपगच्छेय्य ओसीदेय्य उदकेति। एवमेव खो, महाराज, अयं दससहस्सी लोकधातु एकबुद्धधारणी, एकस्सेव तथागतस्स गुणं धारेति, यदि दुतियो बुद्धो उप्पज्जेय्य, नायं दससहस्सी लोकधातु धारेय्य...पे०... न ठानमुपगच्छेय्य।

यथा वा पन, महाराज, पुरिसो यावदत्थं भोजनं भुञ्जेय्य छादेन्तं याव कण्ठमभिपूरयित्वा, सो धातो पीणितो परिपुण्णो निरन्तरो तन्दीकतो अनोणमितदण्डजातो पुनदेव तावतकं भोजनं भुञ्जेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, पुरिसो सुखितो भवेय्याति? न हि, भन्ते, सकिं भुत्तोव मरेय्याति; एवमेव खो, महाराज, अयं दससहस्सी लोकधातु एकबुद्धधारणी...पे०... न ठानमुपगच्छेय्याति।

किं नु खो, भन्ते नागसेन, अतिधम्मभारेन पथवी चलतीति? इध, महाराज,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वे सकटा रतनपूरिता भवेय्युं याव मुखसमा, एकस्मा सकटतो रतनं गहेत्वा एकस्मिं सकटे आकिरेय्युं, अपि नु खो तं, महाराज, सकटं द्विन्नम्पि सकटानं रतनं धारेय्याति ? न हि, भन्ते, नाभिपि तस्स फलेय्य, अरापि तस्स भिज्जेय्युं, नेमिपि तस्स ओपतेय्य, अक्खोपि तस्स भिज्जेय्याति। किं नु खो, महाराज, अतिरतनभारेन सकटं भिज्जतीति ? आम, भन्ते,ति। एवमेव खो, महाराज, अतिधम्मभारेन पथवी चलति।

अपिच, महाराज, इमं कारणं बुद्धबलपरिदीपनाय ओसारितं अञ्ञम्पि तत्थ अतिरूपं कारणं सुणोहि, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे नुप्पज्जन्ति। यदि, महाराज, द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे उप्पज्जेय्युं, तेसं परिसाय विवादो उप्पज्जेय्य "तुम्हाकं बुद्धो अम्हाकं बुद्धो"ति, उभतो पक्खजाता भवेय्युं। यथा, महाराज, द्विन्नं बलवामच्चानं परिसाय विवादो उप्पज्जेय्य "तुम्हाकं अमच्चो अम्हाकं अमच्चो"ति, उभतो पक्खजाता होन्ति; एवमेव खो, महाराज, यदि द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे उप्पज्जेय्युं, तेसं परिसाय विवादो उप्पज्जेय्य "तुम्हाकं बुद्धो, अम्हाकं बुद्धो"ति, उभतो पक्खजाता भवेय्युं, इदं ताव, महाराज, एकं कारणं, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे नुप्पज्जन्ति।

अपरम्पि, महाराज, उत्तरिं कारणं सुणोहि, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे नुप्पज्जन्ति। यदि, महाराज, द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे उप्पज्जेय्युं, "अग्गो बुद्धो"ति यं वचनं, तं मिच्छा भवेय्य, "जेट्ठो बुद्धो"ति, सेट्ठो बुद्धोति, विसिट्ठो बुद्धोति, उत्तमो बुद्धोति, पवरो बुद्धोति, असमो बुद्धोति, असमसमो बुद्धोति, अप्पटिमो बुद्धोति, अप्पटिभागो बुद्धोति, अप्पटिपुग्गलो बुद्धोति यं वचनं, तं मिच्छा भवेय्य। इमम्पि खो त्वं, महाराज, कारणं अत्थतो सम्पटिच्छ, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे नुप्पज्जन्ति।

अपिच खो, महाराज, बुद्धानं भगवन्तानं सभावपकति एसा, यं एकोयेव बुद्धो लोके उप्पज्जति। कस्मा कारणा ? महन्तताय सब्बञ्ञुबुद्धगुणानं, यं अञ्ञम्पि, महाराज, महन्तं होति, तं एकंयेव होति। पथवी, महाराज, महन्ती, सा एकायेव। सागरो महन्तो, सो एकोयेव। सिनेरु गिरिराजा महन्तो, सो एकोयेव। आकासो महन्तो, सो एकोयेव। सक्को महन्तो, सो एकोयेव। मारो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महन्तो, सो एकोयेव। महाब्रह्मा महन्तो, सो एकोयेव। तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो महन्तो, सो एकोयेव लोकस्मिं। यत्थ ते उप्पज्जन्ति, तत्थ अञ्ञेसं ओकासो न होति। तस्मा, महाराज, तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो एकोयेव लोके उप्पज्जतीति। सुकथितो, भन्ते नागसेन, पञ्हो ओपम्मेहि कारणेहीति (मि० प० ५.१.१)।

धम्मस्स चानुधम्मन्ति नवविधस्स लोकुत्तरधम्मस्स अनुधम्मं पुब्बभागप्पटिपदं। **सहधम्मिको**ति सकारणो। **वादानुवादो**ति वादोयेव।

अच्छरियअब्भुतवण्णना

१६२. आयस्मा उदायीति तयो थेरा उदायी नाम– लाळुदायी, काळुदायी, महाउदायीति। इध महाउदायी अधिप्पेतो। तस्स किर इमं सुत्तं आदितो पट्ठाय याव परियोसाना सुणन्तस्स अब्भन्तरे पञ्चवण्णा पीति उप्पज्जित्वा पादपिट्ठितो सीसमत्थकं गच्छति, सीसमत्थकतो पादपिट्ठिं आगच्छति, उभतो पट्ठाय मज्झं ओतरति, मज्झतो पट्ठाय उभतो गच्छति। सो निरन्तरं पीतिया फुटसरीरो बलवसोमनस्सेन दसबलस्स गुणं कथेन्तो **अच्छरियं भन्ते**तिआदिमाह। **अप्पिच्छता**ति नित्तण्हता। **सन्तुट्ठिता**ति चतूसु पच्चयेसु तीहाकारेहि सन्तोसो। **सल्लेखता**ति सब्बकिलेसानं सल्लिखितभावो। **यत्र हि नामा**ति यो नाम। **न अत्तानं पातुकरिस्सती**ति अत्तनो गुणे न आवि करिस्सति। **पटाकं परिहरेय्यु**न्ति "को अम्हेहि सदिसो अत्थी"ति वदन्ता पटाकं उक्खिपित्वा नाळन्दं विचरेय्युं।

पस्स खो त्वं, उदायि, तथागतस्स अप्पिच्छताति पस्स उदायि यादिसी तथागतस्स अप्पिच्छताति थेरस्स वचनं सम्पटिच्छन्तो आह। किं पन भगवा नेव अत्तानं पातुकरोति, न अत्तनो गुणं कथेतीति चे ? न, न कथेति। अप्पिच्छतादीहि कथेतब्बं, चीवरादिहेतुं न कथेति। तेनेवाह– "पस्स खो त्वं, उदायि, तथागतस्स अप्पिच्छता"तिआदि। बुज्झनकसत्तं पन आगम्म वेनेय्यवसेन कथेति। यथाह–

"न मे आचरियो अत्थि, सदिसो मे न विज्जति।
सदेवकस्मिं लोकस्मिं, नत्थि मे पटिपुग्गलो"ति।। (महाव० ११)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं तथागतस्स गुणदीपिका बहू गाथापि सुत्तन्तापि वित्थारेतब्बा।

१६३. अभिक्खणं भासेय्यासीति पुनप्पुनं भासेय्यासि। पुब्बण्हसमये मे कथितन्ति मा मज्झन्हिकादीसु न कथयित्थ। अज्ज वा मे कथितन्ति मा परदिवसादीसु न कथयित्थाति अत्थो। **पवेदेसी**ति कथेसि। **इमस्स वेय्याकरणस्सा**ति निग्गाथकत्ता इदं सुत्तं "वेय्याकरण"न्ति वुत्तं। **अधिवचन**न्ति नामं। इदं पन "इति हिद"न्ति पदं सङ्गीतिकारेहि ठपितं। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवाति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

सम्पसादनीयसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. पासादिकसुत्तवण्णना

निगण्ठनाटपुत्तकालङ्किरियवण्णना

१६४. **एवं मे सुतन्ति** पासादिकसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना – **वेधञ्ञा नाम सक्याति** धनुम्हि कतसिक्खा वेधञ्ञनामका एके सक्या। **तेसं अम्बवने पासादेति** तेसं अम्बवने सिप्पं उग्गण्हत्थाय कतो दीघपासादो अत्थि, तत्थ विहरति। **अधुना कालङ्कतोति** सम्पति कालङ्कतो। **द्वेधिकजाताति** द्वेज्झजाता, द्वेभागा जाता। **भण्डनादीसु** भण्डनं पुब्बभागकलहो, तं दण्डादानादिवसेन पण्णत्तिवीतिक्कमवसेन च वड्ढितं **कलहो**। "न त्वं इमं धम्मविनयं आजानासी"तिआदिना नयेन विरुद्धवचनं **विवादो। वितुदन्ताति** विज्झन्ता। **सहितं मेति** मम वचनं अत्थसञ्हितं। **अधिचिण्णं ते विपरावत्तन्ति** यं तव अधिचिण्णं चिरकालासेवनवसेन पगुणं, तं मम वादं आगम्म निवत्तं। **आरोपितो ते वादोति** तुय्हं उपरि मया दोसो आरोपितो। **चर वादप्पमोक्खायाति** भत्तपुटं आदाय तं तं उपसङ्कमित्वा वादप्पमोक्खत्थाय उत्तरि परियेसमानो विचर। **निब्बेठेहि वाति** अथ वा मया आरोपितदोसतो अत्तानं मोचेहि। **सचे पहोसीति** सचे सक्कोसि। **वधोयेवाति** मरणमेव। **नाटपुत्तियेसूति** नाटपुत्तस्स अन्तेवासिकेसु। **निब्बिन्नरूपाति** उक्कण्ठितसभावा अभिवादनादीनिपि न करोन्ति। **विरत्तरूपाति** विगतपेमा। **पटिवानरूपाति** तेसं सक्कच्चकिरियतो निवत्तनसभावा। **यथा तन्ति** यथा दुरक्खातादिसभावे धम्मविनये निब्बिन्नविरत्तप्पटिवानरूपेहि भवितब्बं, तथेव जाताति अत्थो। **दुरक्खातेति** दुक्कथिते। **दुप्पवेदितेति** दुविञ्ञापिते। **अनुपसमसंवत्तनिकेति** रागादीनं उपसमं कातुं असमत्थे। **भिन्नथूपेति** भिन्दप्पतिट्ठे। एत्थ हि नाटपुत्तोव नेसं पतिट्ठट्ठेन थूपो। सो पन भिन्नो मतो। तेन वुत्तं "भिन्नथूपे"ति। **अप्पटिसरणेति** तस्सेव अभावेन पटिसरणविरहिते।

ननु चायं नाटपुत्तो नाळन्दवासिको, सो कस्मा पावायं कालङ्कतोति? सो किर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपालिना गहपतिना पटिविद्धसच्चेन दसहि गाथाहि भासिते बुद्धगुणे सुत्वा उण्हं लोहितं छड्डेसि। अथ नं अफासुकं गहेत्वा पावं अगमंसु। सो तत्थ कालमकासि। कालं कुरुमानो च चिन्तेसि– "मम लद्धि अनिय्यानिका सारविरहिता, मयं ताव नट्ठा, अवसेसजनोपि मा अपायपूरको अहोसि, सचे पनाहं 'मम सासनं अनिय्यानिक'न्ति वक्खामि, न सद्दहिस्सन्ति, यंनूनाहं द्वेपि जने न एकनीहारेन उग्गण्हापेय्यं, ते ममच्चयेन अञ्ञमञ्ञं विवदिस्सन्ति, सत्था तं विवादं पटिच्च एकं धम्मकथं कथेस्सति, ततो ते सासनस्स महन्तभावं जानिस्सन्ती"ति।

अथ नं एको अन्तेवासिको उपसङ्कमित्वा आह– "भन्ते तुम्हे दुब्बला, मय्हम्पि इमस्मिं धम्मे सारं आचिक्खथ, आचरियप्पमाण"न्ति। "आवुसो, त्वं ममच्चयेन सस्सतन्ति गण्हेय्यासी"ति। अपरोपि उपसङ्कमि, तं उच्छेदं गण्हापेसि। एवं द्वेपि जने एकलद्धिके अकत्वा बहू नानानीहारेन उग्गण्हापेत्वा कालमकासि। ते तस्स सरीरकिच्चं कत्वा सन्निपतित्वा अञ्ञमञ्ञं पुच्छिंसु– "कस्सावुसो, आचरियो सारं आचिक्खी"ति? एको उट्ठहित्वा मय्हन्ति आह। किं आचिक्खीति? सस्सतन्ति। अपरो तं पटिबाहित्वा "मय्हं सारं आचिक्खी"ति आह। एवं सब्बे "मय्हं सारं आचिक्खि, अहं जेट्ठको"ति अञ्ञमञ्ञं विवादं वड्ढेत्वा अक्कोसे चेव परिभासे च हत्थपादप्पहारादीनि च पवत्तेत्वा एकमग्गेन द्वे अगच्छन्ता नानादिसासु पक्कमिंसु।

१६५. अथ खो चुन्दो समणुद्देसोति अयं थेरो धम्मसेनापतिस्स कनिट्ठभातिको। तं भिक्खू अनुपसम्पन्नकाले "चुन्दो समणुद्देसो"ति समुदाचरित्वा थेरकालेपि तथेव समुदाचरिंसु। तेन वुत्तं– "चुन्दो समणुद्देसो"ति।

"पावायं वस्संवुट्ठो येन सामगामो, येनायस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमी"ति कस्मा उपसङ्कमि? नाटपुत्ते किर कालङ्कते जम्बुदीपे मनुस्सा तत्थ तत्थ कथं पवत्तयिंसु "निगण्ठो नाटपुत्तो एको सत्थाति पञ्ञायित्थ, तस्स कालङ्किरियाय सावकानं एवरूपो विवादो जातो। समणो पन गोतमो जम्बुदीपे चन्दो विय सूरियो विय च पाकटो, सावकापिस्स पाकटायेव। कीदिसो नु खो समणे गोतमे परिनिब्बुते सावकानं विवादो भविस्सती"ति। थेरो तं कथं सुत्वा चिन्तेसि– "इमं कथं गहेत्वा दसबलस्स आरोचेस्सामि, सत्था एतं अट्ठुप्पत्तिं कत्वा एकं देसनं कथेस्सती"ति। सो निक्खमित्वा येन सामगामो, येनायस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामगामोति सामाकानं उस्सन्नत्ता तस्स गामस्स नामं। **येनायस्मा आनन्दो**ति उजुमेव भगवतो सन्तिकं अगन्त्वा येनस्स उपज्झायो आयस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमि।

बुद्धकाले किर सारिपुत्तत्थेरो च आनन्दत्थेरो च अञ्ञमञ्ञं ममायिंसु। सारिपुत्तत्थेरो "मया कातब्बं सत्थु उपट्ठानं करोती"ति आनन्दत्थेरं ममायि। आनन्दत्थेरो "भगवतो सावकानं अग्गो"ति सारिपुत्तत्थेरं ममायि। कुलदारके च पब्बाजेत्वा सारिपुत्तत्थेरस्स सन्तिके उपज्झं गण्हापेसि। सारिपुत्तत्थेरोपि तथेव अकासि। एवं एकमेकेन अत्तनो पत्तचीवरं दत्वा पब्बाजेत्वा उपज्झं गण्हापितानि पञ्च पञ्च भिक्खुसतानि अहेसुं। आयस्मा आनन्दो पणीतानि चीवरादीनिपि लभित्वा थेरस्स अदासि।

धम्मरतनपूजा

एको किर ब्राह्मणो चिन्तेसि– "बुद्धरतनस्स च सङ्घरतनस्स च पूजा पञ्ञायति, कथं नु खो धम्मरतनं पूजितं होती"ति? सो भगवन्तं उपसङ्कमित्वा एतमत्थं पुच्छि। भगवा आह– "सचेपि ब्राह्मण धम्मरतनं पूजेतुकामो, एकं बहुस्सुतं पूजेही"ति। बहुस्सुतं, भन्ते, आचिक्खथाति। भिक्खुसङ्घं पुच्छाति। सो भिक्खुसङ्घं उपसङ्कमित्वा "बहुस्सुतं, भन्ते, आचिक्खथा"ति आह। आनन्दत्थेरो ब्राह्मणाति। ब्राह्मणो थेरं सहस्सग्घनिकेन तिचीवरेन पूजेसि। थेरो तं गहेत्वा भगवतो सन्तिकं अगमासि। भगवा "कुतो, आनन्द, लद्ध"न्ति आह? एकेन, भन्ते, ब्राह्मणेन दिन्नं, इदं पनाहं आयस्मतो सारिपुत्तस्स दातुकामोति। देहि, आनन्दाति। चारिकं पक्कन्तो भन्तेति। आगतकाले देहीति, सिक्खापदं भन्ते, पञ्ञत्तन्ति। कदा पन सारिपुत्तो आगमिस्सतीति? दसाहमत्तेन भन्तेति। "अनुजानामि, आनन्द, दसाहपरमं अतिरेकचीवरं निक्खिपितु"न्ति सिक्खापदं पञ्ञापेसि।

सारिपुत्तत्थेरोपि तथेव यंकिञ्चि मनापं लभति, तं आनन्दत्थेरस्स देति। सो इमम्पि अत्तनो कनिट्ठभातिकं थेरस्सेव सद्धिविहारिकं अदासि। तेन वुत्तं– "येनस्स उपज्झायो आयस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमी"ति। एवं किरस्स अहोसि– "उपज्झायो मे महापञ्ञो, सो इमं कथं सत्थु आरोचेस्सति, अथ सत्था तदनुरूपं धम्मं देसेस्सती"ति। **कथापाभत**न्ति कथाय मूलं। मूलञ्हि "पाभत"न्ति वुच्चति। यथाह–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"अप्पकेनापि मेधावी, पाभतेन विचक्खणो।
समुट्ठापेति अत्तानं, अणुं अग्गिंव सन्धम"न्ति।। (जा० १.१.४)

भगवन्तं दस्सनायाति भगवन्तं दस्सनत्थाय। किं पनानेन भगवा न दिट्ठपुब्बोति? नो न दिट्ठपुब्बो। अयञ्हि आयस्मा दिवा नव वारे, रत्तिं नव वारेति एकाहं अट्ठारस वारे उपट्ठानमेव गच्छति। दिवसस्स पन सतवारं वा सहस्सवारं वा गन्तुकामो समानोपि न अकारणा गच्छति, एकं पञ्हुद्धारं गहेत्वाव गच्छति। सो तं दिवसं तेन कथापाभतेन गन्तुकामो एवमाह।

असम्मासम्बुद्धप्पवेदितधम्मविनयवण्णना

१६६. एवञ्हेतं, चुन्द, होतीति भगवा आनन्दत्थेरेन आरोचितेपि यस्मा न आनन्दत्थेरो इमिस्सा कथाय सामिको, चुन्दत्थेरो पन सामिको। सोव तस्सा आदिमज्झपरियोसानं जानाति। तस्मा भगवा तेन सद्धिं कथेन्तो "एवञ्हेतं, चुन्द, होती"तिआदिमाह। तस्सत्थो – चुन्द एवञ्हेतं होति दुरक्खातादिसभावे धम्मविनये सावका द्वेधिकजाता भण्डनादीनि कत्वा मुखसत्तीहि वितुदन्ता विहरन्ति।

इदानि यस्मा अनिय्यानिकसासनेनेव निय्यानिकसासनं पाकटं होति, तस्मा आदितो अनिय्यानिकसासनमेव दस्सेन्तो **इध चुन्द सत्था च होति असम्मासम्बुद्धो**तिआदिमाह। तत्थ **वोक्कम्म च तम्हा धम्मा वत्तती**ति न निरन्तरं पूरेति, ओक्कमित्वा ओक्कमित्वा अन्तरन्तरं कत्वा वत्ततीति अत्थो। **तस्स ते, आवुसो, लाभा**ति तस्स तुय्हं एते धम्मानुधम्मप्पटिपत्तिआदयो लाभा। **सुलद्ध**न्ति मनुस्सत्तम्पि ते सुलद्धं। **तथा पटिपज्जतू**ति एवं पटिपज्जतु। **यथा ते सत्थारा धम्मो देसितो**ति येन ते आकारेन सत्थारा धम्मो कथितो। **यो च समादपेती**ति यो च आचरियो समादपेति। **यञ्च समादपेती**ति यं अन्तेवासिं समादपेति। **यो च समादपितो**ति यो च एवं समादपितो अन्तेवासिको। यथा आचरियेन समादपितं, तथत्थाय पटिपज्जति। **सब्बे ते**ति तयोपि ते। एत्थ हि आचरियो समादपितत्ता अपुञ्ञं पसवति, समादिन्नन्तेवासिको समादिन्नत्ता, पटिपन्नको पटिपन्नत्ता। तेन वुत्तं – "सब्बे ते बहुं अपुञ्ञं पसवन्ती"ति। एतेनुपायेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६७. अपिचेत्थ **ञायप्पटिपन्नो**ति कारणप्पटिपन्नो। **ञायमाराधेस्सतीति** कारणं निप्फादेस्सति। **वीरियं आरभतीति** अत्तनो दुक्खनिब्बत्तकं वीरियं करोति। वुत्तञ्हेतं "दुरक्खाते, भिक्खवे, धम्मविनये यो आरद्धवीरियो, सो दुक्खं विहरति। यो कुसीतो, सो सुखं विहरती"ति (अ० नि० १.१.३१८)।

सम्मासम्बुद्धप्पवेदितधम्मविनयादिवण्णना

१६८. एवं अनिय्यानिकसासनं दस्सेत्वा इदानि निय्यानिकसासनं दस्सेन्तो **इध पन, चुन्द, सत्था च होति सम्मासम्बुद्धो**तिआदिमाह। तत्थ **निय्यानिको**ति मग्गत्थाय फलत्थाय च निय्याति।

१६९. वीरियं आरभतीति अत्तनो सुखनिप्फादकं वीरियं आरभति। वुत्तञ्हेतं "स्वाक्खाते, भिक्खवे, धम्मविनये यो कुसीतो, सो दुक्खं विहरति। यो आरद्धवीरियो, सो सुखं विहरती"ति (अ० नि० १.१.३१९)।

१७०. इति भगवा निय्यानिकसासने सम्मापटिपन्नस्स कुलपुत्तस्स पसंसं दस्सेत्वा पुन देसनं वड्ढेन्तो **इध, चुन्द, सत्था च लोके उदपादी**तिआदिमाह। तत्थ **अविञ्ञापितत्था**ति अबोधितत्था। **सब्बसङ्गाहपदकत**न्ति सब्बसङ्गहपदेहि कतं, सब्बसङ्गाहिकं कतं न होतीति अत्थो। "सब्बसङ्गाहपदगत"न्तिपि पाठो, न सब्बसङ्गाहपदेसु गतं, न एकसङ्गहजातन्ति अत्थो। **सप्पाटिहीरकत**न्ति निय्यानिकं। **याव देवमनुस्सेही**ति देवलोकतो याव मनुस्सलोका सुप्पकासितं। **अनुतप्पो होतीति** अनुतापकरो होति। **सत्था च नो लोके**ति इदं तेसं अनुतापकारदस्सनत्थं वुत्तं। **नानुतप्पो होतीति** सत्थारं आगम्म सावकेहि यं पत्तब्बं, तस्स पत्तत्ता अनुतापकरो न होति।

१७२. थेरोति थिरो थेरकारकेहि धम्मेहि समन्नागतो। "रत्तञ्ञू"तिआदीनि वुत्तत्थानेव। **एतेहि चे पी**ति एतेहि हेट्ठा वुत्तेहि।

१७३. पत्तयोगक्खेमाति चतूहि योगेहि खेमत्ता अरहत्तं इध योगक्खेमं नाम, तं पत्ताति अत्थो। **अलं समक्खातुं सद्धम्मस्सा**ति सम्मुखा गहितत्ता अस्स सद्धम्मं सम्मा आचिक्खितुं समत्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७४. **ब्रह्मचारिनोति** ब्रह्मचरियवासं वसमाना अरियसावका। **कामभोगिनोति** गिहिसोतापन्ना। "इद्धञ्चेवा"तिआदीनि महापरिनिब्बाने वित्थारितानेव। **लाभग्गयसग्गपत्तन्ति** लाभग्गञ्चेव यसग्गञ्च पत्तं।

१७५. **सन्ति खो पन मे, चुन्द, एतरहि थेरा भिक्खू सावकाति** सारिपुत्तमोग्गल्लानादयो थेरा। **भिक्खुनियोति** खेमाथेरीउप्पलवण्णथेरीआदयो। **उपासका सावका गिही ओदातवत्थवसना ब्रह्मचारिनोति** चित्तगहपतिहत्थकआळवकादयो। **कामभोगिनोति** चूळअनाथपिण्डिकमहाअनाथपिण्डिकादयो। **ब्रह्मचारिनियोति** नन्दमातादयो। **कामभोगिनियोति** खुज्जुत्तरादयो।

१७६. **सब्बाकारसम्पन्नन्ति** सब्बकारणसम्पन्नं। **इदमेव तन्ति** इदमेव ब्रह्मचरियं, इममेव धम्मं सम्मा हेतुना नयेन वदमानो वदेय्य। **उदकास्सुदन्ति उदको सुदं। पस्सं न पस्सतीति** पस्सन्तो न पस्सति। सो किर इमं पञ्हं महाजनं पुच्छि। तेहि "न जानाम, आचरिय, कथेहि नो"ति वुत्तो सो आह– "गम्भीरो अयं पञ्हो आहारसप्पाये सति थोकं चिन्तेत्वा सक्का कथेतु"न्ति। ततो तेहि चत्तारो मासे महासक्कारे कते तं पञ्हं कथेन्तो **किञ्च पस्सं न पस्सतीति**आदिमाह। तत्थ **साधुनिसितस्साति** सुट्ठुनिसितस्स तिखिणस्स, सुनिसितखुरस्स किर तलं पञ्ञायति, धारा न पञ्ञायतीति अयमेत्थ अत्थो।

सङ्गायितब्बधम्मादिवण्णना

१७७. **सङ्गम्म समागम्माति** सङ्गन्त्वा समागन्त्वा। **अत्थेन अत्थं, ब्यञ्जनेन ब्यञ्जनन्ति** अत्थेन सह अत्थं, ब्यञ्जनेनपि सह ब्यञ्जनं समानेन्तेहीति अत्थो। **सङ्गायितब्बन्ति** वाचेतब्बं सज्झायितब्बं। **यथयिदं ब्रह्मचरियन्ति** यथा इदं सकलं सासनब्रह्मचरियं।

१७८. **तत्र चेति** तत्र सङ्घमज्झे, तस्स वा भासिते। **अत्थञ्चेव मिच्छा गण्हाति, ब्यञ्जनानि च मिच्छा रोपेतीति** "चत्तारो सतिपट्ठाना"ति एत्थ आरम्मणं "सतिपट्ठान"न्ति अत्थं गण्हाति। "सतिपट्ठानानी"ति ब्यञ्जनं रोपेति। **इमस्स नु खो, आवुसो, अत्थस्साति** "सतियेव सतिपट्ठान"न्ति। अत्थस्स "चत्तारो सतिपट्ठाना"ति किं नु खो इमानि ब्यञ्जनानि, उदाहु चत्तारि सतिपट्ठानानी"ति एतानि वा ब्यञ्जनानि। **कतमानि ओपायिकतरानीति** इमस्स अत्थस्स कतमानि ब्यञ्जनानि उपपन्नतरानि अल्लीनतरानि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमेसञ्च ब्यञ्जनानन्ति "चत्तारो सतिपट्ठाना"ति ब्यञ्जनानं "सतियेव सतिपट्ठान"न्ति किं नु खो अयं अत्थो, उदाहु "आरम्मणं सतिपट्ठान"न्ति एसो अत्थोति? **इमस्स खो, आवुसो, अत्थस्सा**ति "आरम्मणं सतिपट्ठान"न्ति इमस्स अत्थस्स। **या चेव एतानी**ति यानि चेव एतानि मया वुत्तानि। **या चेव एसो**ति यो चेव एस मया वुत्तो। **सो नेव उस्सादेतब्बो**ति तुम्हेहि ताव सम्मा अत्थे च सम्मा ब्यञ्जने च ठातब्बं। सो पन नेव उस्सादेतब्बो, न अपसादेतब्बो। **सञ्ञापेतब्बो**ति जानापेतब्बो। **तस्स च अत्थस्सा**ति "सतियेव सतिपट्ठान"न्ति अत्थस्स च। **तेसञ्च ब्यञ्जनान**न्ति "सतिपट्ठाना"ति ब्यञ्जनानं। **निसन्तिया**ति निसामनत्थं धारणत्थं। इमिना नयेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो।

१८१. **तादिस**न्ति तुम्हादिसं। **अत्थुपेत**न्ति अत्थेन उपेतं अत्थस्स विञ्ञातारं। **ब्यञ्जनुपेत**न्ति ब्यञ्जनेहि उपेतं ब्यञ्जनानं विञ्ञातारं। एवं एतं भिक्खुं पसंसथ। एसो हि भिक्खु न तुम्हाकं सावको नाम, बुद्धो नाम एस चुन्दाति। इति भगवा बहुस्सुतं भिक्खुं अत्तनो ठाने ठपेसि।

पच्चयानुञ्ञातकारणादिवण्णना

१८२. इदानि ततोपि उत्तरितरं देसनं वड्ढेन्तो **न वो अहं, चुन्दा**तिआदिमाह। तत्थ दिट्ठधम्मिका आसवा नाम इधलोके पच्चयहेतु उप्पज्जनका आसवा। सम्परायिका आसवा नाम परलोके भण्डनहेतु उप्पज्जनका आसवा। **संवराया**ति यथा ते न पविसन्ति, एवं पिदहनाय। **पटिघाताया**ति मूलघातेन पटिहननाय। **अलं वो तं यावदेव सीतस्स पटिघाताया**ति तं तुम्हाकं सीतस्स पटिघाताय समत्थं। इदं वुत्तं होति, यं वो मया चीवरं अनुञ्ञातं, तं पारुपित्वा दप्पं वा मानं वा कुरुमाना विहरिस्सथाति न अनुञ्ञातं, तं पन पारुपित्वा सीतप्पटिघातादीनि कत्वा सुखं समणधम्मं योनिसो मनसिकारं करिस्सथाति अनुञ्ञातं। यथा च चीवरं, एवं पिण्डपातादयोपि। अनुपदसंवण्णना पनेत्थ विसुद्धिमग्गे वुत्तनयेनेव वेदितब्बा।

सुखल्लिकानुयोगादिवण्णना

१८३. **सुखल्लिकानुयोग**न्ति सुखल्लियनानुयोगं, सुखसेवनाधिमुत्तन्ति अत्थो। **सुखेती**ति सुखितं करोति। **पीणेती**ति पीणितं थूलं करोति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८६. **अट्ठितधम्माति** नट्ठितसभावा। जिव्हा नो अत्थीति यं यं इच्छन्ति, तं तं कथेन्ति, कदाचि मग्गं कथेन्ति, कदाचि फलं कदाचि निब्बानन्ति अधिप्पायो। **जानताति** सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन जानन्तेन। **पस्सताति** पञ्चहि चक्खूहि पस्सन्तेन। **गम्भीरनेमोति** गम्भीरभूमिं अनुपविट्ठो। **सुनिखातोति** सुट्ठु निखातो। **एवमेव खो, आवुसोति** एवं खीणासवो अभब्बो नव ठानानि अज्झाचरितुं। तस्मिं अनज्झाचारो अचलो असम्पवेधी। तत्थ सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपनादीसु सोतापन्नादयोपि अभब्बा। **सन्निधिकारकं कामे परिभुञ्जितुन्ति** वत्थुकामे च किलेसकामे च सन्निधिं कत्वा परिभुञ्जितुं। **सेय्यथापि पुब्बे अगारिकभूतोति** यथा पुब्बे गिहिभूतो परिभुञ्जति, एवं परिभुञ्जितुं अभब्बो।

पञ्हब्याकरणवण्णना

१८७. अगारमज्झे वसन्ता हि सोतापन्नादयो यावजीवं गिहिब्यञ्जनेन तिट्ठन्ति। खीणासवो पन अरहत्तं पत्वाव मनुस्सभूतो परिनिब्बाति वा पब्बजति वा। चातुमहाराजिकादीसु कामावचरदेवेसु मुहुत्तम्पि न तिट्ठति। कस्मा? विवेकट्ठानस्स अभावा। भुम्मदेवत्तभावे पन ठितो अरहत्तं पत्वापि तिट्ठति। तस्स वसेन अयं पञ्हो आगतो। भिन्नदोसत्ता पनस्स भिक्खुभावो वेदितब्बो। **अतीरकन्ति** अतीरं अपरिच्छेदं महन्तं। **नो च खो अनागतन्ति** अनागतं पन अद्धानं आरब्भ एवं न पञ्ञपेति, अतीतमेव मञ्ञे समणो गोतमो जानाति, न अनागतं। तथा हिस्स अतीते अट्ठछट्ठसतजातकानुस्सरणं पञ्ञायति। अनागते एवं बहुं अनुस्सरणं न पञ्ञायतीति इममत्थं मञ्ञमाना एवं वदेय्युं। **तयिदं किं सूति** अनागते अपञ्ञापनं किं नु खो? **कथंसूति** केन नु खो कारणेन अजानन्तोयेव नु खो अनागतं नानुस्सरति, अननुस्सरितुकामताय नानुस्सरतीति। **अञ्ञविहितकेन ञाणदस्सनेनाति** पच्चक्खं विय कत्वा दस्सनसमत्थताय दस्सनभूतेन ञाणेन अञ्ञत्थविहितकेन ञाणेन अञ्ञं आरब्भ पवत्तेन, अञ्ञविहितकं अञ्ञं आरब्भ पवत्तमानं ञाणदस्सनं सञ्ञाहेतब्बं पञ्ञापेतब्बं मञ्ञन्ति। ते हि चरतो च तिट्ठतो च सुत्तस्स च जागरस्स च सततं समितं ञाणदस्सनं पच्चुपट्ठितं मञ्ञन्ति, तादिसञ्च ञाणं नाम नत्थि। तस्मा यथरिव बाला अब्यत्ता, एवं मञ्ञन्तीति वेदितब्बो।

सतानुसारीति पुब्बेनिवासानुस्सतिसम्पयुत्तकं। **यावतकं आकङ्खतीति** यत्तकं ञातुं इच्छति, तत्तकं जानिस्सामीति ञाणं पेसेसि। अथस्स दुब्बलपत्तपुटे पक्खन्दनाराचो विय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पटिहतं अनिवारितं ञाणं गच्छति, तेन यावतकं आकङ्खति तावतकं अनुस्सरति। **बोधिज**न्ति बोधिमूले जातं। **ञाणं उप्पज्जती**ति चतुमग्गञाणं उप्पज्जति। **अयमन्तिमा जाती**ति तेन ञाणेन जातिमूलस्स पहीनत्ता पुन अयमन्तिमा जाति। **नत्थिदानि पुनब्भवो**ति अपरम्पि ञाणं उप्पज्जति। **अनत्थसंहित**न्ति न इधलोकत्थं वा परलोकत्थं वा निस्सितं। **न तं तथागतो ब्याकरोती**ति तं भारतयुद्धसीताहरणसदिसं अनिय्यानिककथं तथागतो न कथेति। **भूतं तच्छं अनत्थसंहित**न्ति राजकथादिदितिरच्छानकथं। **कालञ्ञू तथागतो होती**ति कालं जानाति। सहेतुकं सकारणं कत्वा युत्तपत्तकालेयेव कथेति।

१८८. **तस्मा तथागतोति वुच्चती**ति यथा यथा गदितब्बं, तथा तथेव गदनतो दकारस्स तकारं कत्वा तथागतोति वुच्चतीति अत्थो। **दिट्ठ**न्ति रूपायतनं। **सुत**न्ति सद्दायतनं। **मुत**न्ति मुत्वा पत्वा गहेतब्बतो गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं। **विञ्ञात**न्ति सुखदुक्खादिधम्मायतनं। **पत्त**न्ति परियेसित्वा वा अपरियेसित्वा वा पत्तं। **परियेसित**न्ति पत्तं वा अपत्तं वा परियेसितं। **अनुविचरितं मनसा**ति चित्तेन अनुसञ्चरितं। "तथागतेन अभिसम्बुद्ध"न्ति इमिना एतं दस्सेति, यञ्हि अपरिमाणासु लोकधातूसु इमस्स सदेवकस्स लोकस्स नीलं पीतकन्तिआदि रूपारम्मणं चक्खुद्वारे आपाथमागच्छति, "अयं सत्तो इमस्मिं खणे इमं नाम रूपारम्मणं दिस्वा सुमनो वा दुम्मनो वा मज्झत्तो वा जातो"ति सब्बं तं तथागतस्स एवं अभिसम्बुद्धं। तथा यं अपरिमाणासु लोकधातूसु इमस्स सदेवकस्स लोकस्स भेरिसद्दो मुदिङ्गसद्दोतिआदि सद्दारम्मणं सोतद्वारे आपाथमागच्छति। मूलगन्धो तचगन्धोतिआदि गन्धारम्मणं घानद्वारे आपाथमागच्छति। मूलरसो खन्धरसोतिआदि रसारम्मणं जिव्हाद्वारे आपाथमागच्छति। कक्खळं मुदुकन्तिआदि पथवीधातुतेजोधातुवायोधातुभेदं फोट्ठब्बारम्मणं कायद्वारे आपाथमागच्छति। "अयं सत्तो इमस्मिं खणे इमं नाम फोट्ठब्बारम्मणं फुसित्वा सुमनो वा दुम्मनो वा मज्झत्तो वा जातो"ति सब्बं तं तथागतस्स एवं अभिसम्बुद्धं। तथा यं अपरिमाणासु लोकधातूसु इमस्स सदेवकस्स लोकस्स सुखदुक्खादिभेदं धम्मारम्मणं मनोद्वारस्स आपाथमागच्छति, "अयं सत्तो इमस्मिं खणे इदं नाम धम्मारम्मणं विजानित्वा सुमनो वा दुम्मनो वा मज्झत्तो वा जातो"ति सब्बं तं तथागतस्स एवं अभिसम्बुद्धं।

यञ्हि, चुन्द, इमेसं सत्तानं दिट्ठं सुतं मुतं विञ्ञातं तत्थ तथागतेन अदिट्ठं वा असुतं वा अमुतं वा अविञ्ञातं वा नत्थि। इमस्स महाजनस्स परियेसित्वा पत्तम्पि अत्थि, परियेसित्वा अप्पत्तम्पि अत्थि। अपरियेसित्वा पत्तम्पि अत्थि, अपरियेसित्वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पत्तम्पि अत्थि। सब्बम्पि तं तथागतस्स अप्पत्तं नाम नत्थि, ञाणेन असच्छिकतं नाम। "तस्मा तथागतोति वुच्चती"ति। यं यथा लोकेन गतं तस्स तथेव गतत्ता "तथागतो"ति वुच्चति। पाळियं पन अभिसम्बुद्धन्ति वुत्तं, तं गतसद्देन एकत्थं। इमिना नयेन सब्बवारेसु "तथागतो"ति निगमनस्स अत्थो वेदितब्बो, तस्स युत्ति **ब्रह्मजाले** तथागतसद्दवित्थारे वुत्तायेव।

अब्याकतट्ठानवण्णना

१८९. एवं अत्तनो असमतं अनुत्तरतं सब्बञ्ञुतं धम्मराजभावं कथेत्वा इदानि "पुथुसमणब्राह्मणानं लद्धीसु मया अञ्ञातं अदिट्ठं नाम नत्थि, सब्बं मम ञाणस्स अन्तोयेव परिवत्तती"ति सीहनादं नदन्तो **ठानं खो पनेतं, चुन्द, विज्जती**तिआदिमाह। तत्थ **तथागतो**ति सत्तो। **न हेतं, आवुसो, अत्थसंहितन्**ति इधलोकपरलोकअत्थसंहितं न होति। **न च धम्मसंहितन्**ति नवलोकुत्तरधम्मनिस्सितं न होति। **न आदिब्रह्मचरियकन्**ति सिक्खत्तयसङ्गहितस्स सकलसासनब्रह्मचरियस्स आदिभूतं न होति।

१९०. इदं दुक्खन्ति खोतिआदीसु तण्हं ठपेत्वा अवसेसा तेभुम्मका धम्मा इदं दुक्खन्ति ब्याकतं। तस्सेव दुक्खस्स पभाविका जनिका तण्हा **दुक्खसमुदयो**ति ब्याकतं। उभिन्नं अप्पवत्ति **दुक्खनिरोधो**ति ब्याकतं। दुक्खपरिजाननो समुदयपजहनो निरोधसच्छिकरणो अरियमग्गो **दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा**ति ब्याकतं। "एतञ्हि, आवुसो, अत्थसंहित"न्तिआदीसु एतं इधलोकपरलोकअत्थनिस्सितं नवलोकुत्तरधम्मनिस्सितं सकलसासनब्रह्मचरियस्स आदि पधानं पुब्बङ्गमन्ति अयमत्थो।

पुब्बन्तसहगतदिट्ठिनिस्सयवण्णना

१९१. इदानि यं तं मया न ब्याकतं, तं अजानन्तेन न ब्याकतन्ति मा एवं सञ्ञमकंसु। जानन्तोव अहं एवं "एतस्मिं ब्याकतेपि अत्थो नत्थी"ति न ब्याकरिं। यं पन यथा ब्याकातब्बं, तं मया ब्याकतमेवाति सीहनादं नदन्तो पुन **येपि ते, चुन्दा**तिआदिमाह। तत्थ दिट्ठियोव **दिट्ठिनिस्सया,** दिट्ठिनिस्सितका दिट्ठिगतिकाति अत्थो। **इदमेव सच्चन्**ति इदमेव दस्सनं सच्चं। **मोघमञ्ञन्**ति अञ्ञेसं वचनं मोघं। **असयंकारो**ति असयं कतो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९२. **तत्राति** तेसु समणब्राह्मणेसु। **अत्थि नु खो इदं आवुसो वुच्चतीति**, आवुसो, यं तुम्हेहि सस्सतो अत्ता च लोको चाति वुच्चति, इदमत्थि नु खो उदाहु नत्थीति एवमहं ते पुच्छामीति अत्थो। **यञ्च खो ते एवमाहंसूति** यं पन ते "इदमेव सच्चं मोघमञ्ञ"न्ति वदन्ति, तं तेसं नानुजानामि। **पञ्ञत्तियाति** दिट्ठिपञ्ञत्तिया। **समसमन्ति** समेन ञाणेन समं। **यदिदं अधिपञ्ञत्तीति** या अयं अधिपञ्ञत्ति नाम। एत्थ अहमेव भिय्यो उत्तरितरो न मया समो अत्थि। तत्थ यञ्च वुत्तं "पञ्ञत्तियाति यञ्च अधिपञ्ञत्ती"ति उभयमेतं अत्थतो एकं। भेदतो हि पञ्ञत्ति अधिपञ्ञत्तीति द्वयं होति। तत्थ पञ्ञत्ति नाम दिट्ठिपञ्ञत्ति। अधिपञ्ञत्ति नाम खन्धपञ्ञत्ति धातुपञ्ञत्ति आयतनपञ्ञत्ति इन्द्रियपञ्ञत्ति सच्चपञ्ञत्ति पुग्गलपञ्ञत्तीति एवं वुत्ता छ पञ्ञत्तियो। इध पन पञ्ञत्तियाति एत्थापि पञ्ञत्ति चेव अधिपञ्ञत्ति च अधिप्पेता, अधिपञ्ञत्तीति एत्थापि। भगवा हि पञ्ञत्तियापि अनुत्तरो, अधिपञ्ञत्तियापि अनुत्तरो। तेनाह– "अहमेव तत्थ भिय्यो यदिदं अधिपञ्ञत्ती"ति।

१९६. **पहानायाति** पजहनत्थं। **समतिक्कमायाति** तस्सेव वेवचनं। **देसिताति** कथिता। **पञ्ञत्ताति** ठपिता। सतिपट्ठानभावनाय हि घनविनिब्भोगं कत्वा सब्बधम्मेसु याथावतो दिट्ठेसु "सुद्धसङ्खारपुञ्जोयं नयिध सत्तूपलब्भती"ति सन्निट्ठानतो सब्बदिट्ठिनिस्सयानं पहानं होतीति। तेन वुत्तं। दिट्ठिनिस्सयानं पहानाय समतिक्कमाय एवं मया इमे चत्तारो सतिपट्ठाना देसिता पञ्ञत्ता"ति। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवाति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

पासादिकसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. लक्खणसुत्तवण्णना

द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणवण्णना

१९९. एवं मे सुतन्ति लक्खणसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना। **द्वत्तिंसिमानी**ति द्वत्तिंस इमानि। **महापुरिसलक्खणानी**ति महापुरिसब्यञ्जनानि महापुरिसनिमित्तानि "अयं महापुरिसो"ति सञ्जाननकारणानि। "येहि समन्नागतस्स महापुरिसस्सा"तिआदि महापदाने वित्थारितनयेनेव वेदितब्बं।

"बाहिरकापि इसयो धारेन्ति, नो च खो जानन्ति 'इमस्स कम्मस्स कतत्ता इमं लक्खणं पटिलभती'ति" कस्मा आह? अट्ठुप्पत्तिया अनुरूपत्ता। इदञ्हि सुत्तं सअट्ठुप्पत्तिकं। सा पनस्स अट्ठुप्पत्ति कत्थ समुट्ठिता? अन्तोगामे मनुस्सानं अन्तरे। तदा किर सावत्थिवासिनो अत्तनो अत्तनो गेहेसु च गेहद्वारेसु च सन्थागारादीसु च निसीदित्वा कथं समुट्ठापेसुं– "भगवतो असीतिअनुब्यञ्जनानि ब्यामप्पभा द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि, येहि च भगवतो कायो, सब्बफालिफुल्लो विय पारिच्छत्तको, विकसितमिव कमलवनं, नानारतनविचित्तं विय सुवण्णतोरणं, तारामरिचिविरोचमिव गगनतलं, इतो चितो च विधावमाना विप्फन्दमाना छब्बण्णरस्मियो मुञ्चन्तो अतिविय सोभति। भगवतो च इमिना नाम कम्मेन इदं लक्खणं निब्बत्तन्ति कथितं नत्थि, यागुउळुङ्कमत्तम्पि पन कटच्छुभत्तमत्तं वा पुब्बे दिन्नपच्चया एवं उप्पज्जतीति भगवता वुत्तं। किं नु खो सत्था कम्मं अकासि, येनस्स इमानि लक्खणानि निब्बत्तन्ती"ति।

अथायस्मा आनन्दो अन्तोगामे चरन्तो इमं कथासल्लापं सुत्वा कतभत्तकिच्चो विहारं आगन्त्वा सत्थु वत्तं कत्वा वन्दित्वा ठितो "मया, भन्ते, अन्तोगामे एका कथा सुता"ति आह। ततो भगवता "किं ते, आनन्द, सुत"न्ति वुत्ते सब्बं आरोचेसि। सत्था थेरस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वचनं सुत्वा परिवारेत्वा निसिन्ने भिक्खू आमन्तेत्वा "द्वत्तिंसिमानि, भिक्खवे, महापुरिसस्स महापुरिसलक्खणानी"ति पटिपाटिया लक्खणानि दस्सेत्वा येन कम्मेन यं निब्बत्तं, तस्स दस्सनत्थं एवमाह।

सुप्पतिट्ठितपादतालक्खणवण्णना

२०१. **पुरिमं जातिन्ति**आदीसु पुब्बे निवुत्थक्खन्धा जातवसेन "जाती"ति वुत्ता। तथा भवनवसेन "भवो"ति, निवुत्थवसेन आलयट्ठेन वा "निकेतो"ति। तिण्णम्पि पदानं पुब्बे निवुत्थक्खन्धसन्ताने ठितोति अत्थो। इदानि यस्मा तं खन्धसन्तानं देवलोकादीसुपि वत्तति। लक्खणनिब्बत्तनसमत्थं पन कुसलकम्मं तत्थ न सुकरं, मनुस्सभूतस्सेव सुकरं। तस्मा यथाभूतेन यं कम्मं कतं, तं दस्सेन्तो **पुब्बे मनुस्सभूतो समानो**ति आह। अकारणं वा एतं। हत्थिअस्समिगमहिंसवानरादिभूतोपि महापुरिसो पारमियो पूरेतियेव। यस्मा पन एवरूपे अत्तभावे ठितेन कतकम्मं न सक्का सुखेन दीपेतुं, मनुस्सभावे ठितेन कतकम्मं पन सक्का सुखेन दीपेतुं। तस्मा "पुब्बे मनुस्सभूतो समानो"ति आह।

दळ्हसमादानोति थिरगहणो। **कुसलेसु धम्मेसू**ति दसकुसलकम्मपथेसु। **अवत्थितसमादानो**ति निच्चलगहणो अनिवत्तितगहणो। महासत्तस्स हि अकुसलकम्मतो अग्गिं पत्वा कुक्कुटपत्तं विय चित्तं पटिकुटति, कुसलं पत्वा वितानं विय पसारियति। तस्मा दळ्हसमादानो होति अवत्थितसमादानो। न सक्का केनचि समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा कुसलसमादानं विस्सज्जापेतुं।

तत्रिमानि वत्थूनि– पुब्बे किर महापुरिसो कलन्दकयोनियं निब्बत्ति। अथ देवे वुट्ठे ओघो आगन्त्वा कुलावकं गहेत्वा समुद्दमेव पवेसेसि। महापुरिसो "पुत्तके नीहरिस्सामी"ति नङ्गुट्ठं तेमेत्वा तेमेत्वा समुद्दतो उदकं बहि खिपि। सत्तमे दिवसे सक्को आवज्जित्वा तत्थ आगम्म "किं करोसी"ति पुच्छि? सो तस्स आरोचेसि। सक्को महासमुद्दतो उदकस्स दुन्नीहरणीयभावं कथेसि। बोधिसत्तो तादिसेन कुसीतेन सद्धिं कथेतुम्पि न वट्टति। "मा इध तिट्ठा"ति अपसारेसि। सक्को "अनोमपुरिसेन गहितगहणं न सक्का विस्सज्जापेतु"न्ति तुट्ठो तस्स पुत्तके आनेत्वा अदासि। महाजनककालेपि महासमुद्दं तरमानो "कस्मा महासमुद्दं तरसी"ति देवताय पुट्ठो "पारं गन्त्वा कुलसन्तके रट्ठे रज्जं गहेत्वा दानं दातुं तरामी"ति आह। ततो देवताय– "अयं महासमुद्दो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गम्भीरो चेव पुथुलो च, कदा नं तरिस्सती''ति वुत्ते सो आह ''तवेसो महासमुद्दसदिसो, मय्हं पन अज्झासयं आगम्म खुद्दकमातिका विय खायति। त्वंयेव मं दक्खिस्ससि समुद्दं तरित्वा समुद्दपारतो धनं आहरित्वा कुलसन्तकं रज्जं गहेत्वा दानं ददमान''न्ति। देवता ''अनोमपुरिसेन गहितगहणं न सक्का विस्सज्जापेतु''न्ति बोधिसत्तं आलिङ्गेत्वा हरित्वा उय्याने निपज्जापेसि। सो छत्तं उस्सापेत्वा दिवसे दिवसे पञ्चसतसहस्सपरिच्चागं कत्वा अपरभागे निक्खम्म पब्बजितो। एवं महासत्तो न सक्का केनचि समणेन वा...पे०... ब्रह्मुना वा कुसलसमादानं विस्सज्जापेतुं। तेन वुत्तं– ''दळ्हसमादानो अहोसि कुसलेसु धम्मेसु अवत्थितसमादानो''ति।

इदानि येसु कुसलेसु धम्मेसु अवत्थितसमादानो अहोसि, ते दस्सेतुं **कायसुचरिते**तिआदिमाह। **दानसंविभागे**ति एत्थ च दानमेव दिय्यनवसेन दानं, संविभागकरणवसेन संविभागो। **सीलसमादाने**ति पञ्चसीलदससीलचतुपारिसुद्धि-सीलपूरणकाले। **उपोसथूपवासे**ति चातुद्दसिकादिभेदस्स उपोसथस्स उपवसनकाले। **मत्तेय्यताया**ति मातुकातब्बवत्ते। सेसपदेसुपि एसेव नयो। **अञ्ञतरञ्ञतरेसु चा**ति अञ्ञेसु च एवरूपेसु। **अधिकुसलेसू**ति एत्थ अत्थि कुसला, अत्थि अधिकुसला। सब्बेपि कामावचरा कुसला कुसला नाम, रूपावचरा अधिकुसला। उभोपि ते कुसला नाम, अरूपावचरा अधिकुसला। सब्बेपि ते कुसला नाम, सावकपारमीपटिलाभपच्चया कुसला अधिकुसला नाम। तेपि कुसला नाम, पच्चेकबोधिपटिलाभपच्चया कुसला अधिकुसला। तेपि कुसला नाम, सब्बञ्ञुतञ्ञाणप्पटिलाभपच्चया पन कुसला इध ''अधिकुसला''ति अधिप्पेता। तेसु अधिकुसलेसु धम्मेसु दळ्हसमादानो अहोसि अवत्थितसमादानो।

कटत्ता उपचितत्ताति एत्थ सकिम्पि कतं कतमेव, अभिण्हकरणेन पन उपचितं होति। **उस्सन्नत्ता**ति पिण्डीकतं रासीकतं कम्मं उस्सन्नन्ति वुच्चति। तस्मा ''उस्सन्नत्ता''ति वदन्तो मया कतकम्मस्स चक्कवाळं अतिसम्बाधं, भवग्गं अतिनीचं, एवं मे उस्सन्नं कम्मन्ति दस्सेति। **विपुलत्ता**ति अप्पमाणत्ता। इमिना ''अनन्तं अपरिमाणं मया कतं कम्म''न्ति दस्सेति। **अधिग्गण्हाती**ति अधिभवति, अञ्ञेहि देवेहि अतिरेकं लभतीति अत्थो। **पटिलभती**ति अधिगच्छति।

सब्बावन्तेहि पादतलेहीति इदं ''समं पादं भूमियं निक्खिपती''ति एतस्स वित्थारवचनं। तत्थ सब्बावन्तेहीति सब्बपदेसवन्तेहि, न एकेन पदेसेन पठमं फुसति, न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकेन पच्छा, सब्बेहेव पादतलेहि समं फुसति, समं उद्धरति। सचेपि हि तथागतो "अनेकसतपोरिसं नरकं अक्कमिस्सामी"ति पादं अभिनीहरति। तावदेव निन्नट्ठानं वातपूरिता विय कम्मारभस्ता उन्नमित्वा पथविसमं होति। उन्नतट्ठानम्पि अन्तो पविसति। "दूरे अक्कमिस्सामी"ति अभिनीहरन्तस्स सिनेरुप्पमाणोपि पब्बतो सुसेदितवेत्तङ्कुरो विय ओनमित्वा पादसमीपं आगच्छति। तथा हिस्स यमकपाटिहारियं कत्वा "युगन्धरपब्बतं अक्कमिस्सामी"ति पादे अभिनीहटे पब्बतो ओनमित्वा पादसमीपं आगतो। सोपि तं अक्कमित्वा दुतियपादेन तावतिंसभवनं अक्कमि। न हि **चक्कलक्खणेन** पतिट्ठातब्बट्ठानं विसमं भवितुं सक्कोति। खाणु वा कण्टको वा सक्खरा वा कथला वा उच्चारपस्सावखेळसिङ्घाणिकादीनि वा पुरिमतरं वा अपगच्छन्ति, तत्थ तत्थेव वा पथविं पविसन्ति। तथागतस्स हि सीलतेजेन पुञ्ञतेजेन धम्मतेजेन दसन्नं पारमीनं आनुभावेन अयं महापथवी सम्मा मुदुपुप्फाभिकिण्णा होति।

२०२. **सागरपरियन्त**न्ति सागरसीमं। न हि तस्स रज्जं करोन्तस्स अन्तरा रुक्खो वा पब्बतो वा नदी वा सीमा होति महासमुद्दोव सीमा। तेन वुत्तं "सागरपरियन्त"न्ति। **अखिलमनिमित्तमकण्टक**न्ति निच्चोरं। चोरा हि खरसम्फस्सट्ठेन खिला, उपद्दवपच्चयट्ठेन निमित्ता, विज्झनट्ठेन कण्टकाति वुच्चन्ति। **इद्ध**न्ति समिद्धं। **फीत**न्ति सब्बसम्पत्तिफालिफुल्लं। **खेम**न्ति निब्भयं। **सिव**न्ति निरुपद्दवं। **निरब्बुद**न्ति अब्बुदविरहितं, गुम्बं गुम्बं हुत्वा चरन्तेहि चोरेहि विरहितन्ति अत्थो। **अक्खम्भियो**ति अविक्खम्भनीयो। न नं कोचि ठानतो चालेतुं सक्कोति। **पच्चत्थिकेना**ति पटिपक्खं इच्छन्तेन। **पच्चामित्तेना**ति पटिविरुद्धेन अमित्तेन। उभयम्पेतं सपत्तवेवचनं। **अब्भन्तरेही**ति अन्तो उट्ठितेहि रागादीहि।

बाहिरेहीति समणादीहि। तथा हि नं बाहिरा देवदत्तकोकालिकादयो समणापि सोणदण्डकूटदण्डादयो ब्राह्मणापि सक्कसदिसा देवतापि सत्त वस्सानि अनुबन्धमानो मारोपि बकादयो ब्रह्मानोपि विक्खम्भेतुं नासक्खिंसु।

एत्तावता भगवता कम्मञ्च कम्मसरिक्खकञ्च लक्खणञ्च लक्खणानिसंसो च वुत्तो होति। **कम्मं** नाम सतसहस्सकप्पाधिकानि चत्तारि असङ्ख्येय्यानि दळ्हवीरियेन हुत्वा कतं कम्मं। **कम्मसरिक्खकं** नाम दळ्हेन हुत्वा कतभावं सदेवको लोको जानातूति सुप्पतिट्ठितपादमहापुरिसलक्खणं। **लक्खणं** नाम सुप्पतिट्ठितपादता। **लक्खणानिसंसो** नाम पच्चत्थिकेहि अविक्खम्भनीयता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०३. **तत्थेतं वुच्चतीति** तत्थ वुत्ते कम्मादिभेदे अपरम्पि इदं वुच्चति, गाथाबन्धं सन्धाय वुत्तं। एता पन गाथा पोराणकत्थेरा "आनन्दत्थेरेन ठपिता वण्णनागाथा"ति वत्वा गता। अपरभागे थेरा "एकपदिको अत्थुद्धारो"ति आहंसु।

तत्थ **सच्चेति** वचीसच्चे। **धम्मेति** दसकुसलकम्मपथधम्मे। **दमेति** इन्द्रियदमने। **संयमेति** सीलसंयमे। **"सोचेय्यसीलालयुपोसथेसु चा"**ति एत्थ कायसोचेय्यादि तिविधं **सोचेय्यं**। आलयभूतं सीलमेव **सीलालयो**। उपोसथकम्मं **उपोसथो**। **अहिंसायाति** अविहिंसाय। **समत्तमाचरीति** सकलं अचरि।

अन्वभीति अनुभवि। **वेय्यञ्जनिकाति** लक्खणपाठका। **पराभिभूति** परे अभिभवनसमत्थो। **सत्तुभीति** सपत्तेहि अक्खम्भियो होति।

न सो गच्छति जातु खम्भनन्ति सो एकंसेनेव अग्गपुग्गलो विक्खम्भेतब्बतं न गच्छति। **एसा हि तस्स धम्मताति** तस्स हि एसा धम्मता अयं सभावो।

पादतलचक्कलक्खणवण्णना

२०४. **उब्बेगउत्तासभयन्ति** उब्बेगभयञ्चेव उत्तासभयञ्च। तत्थ चोरतो वा राजतो वा पच्चत्थिकतो वा विलोपनबन्धनादिनिस्सयं भयं **उब्बेगो** नाम, तंमुहुत्तिकं चण्डहत्थिअस्सादीनि वा अहियक्खादयो वा पटिच्च लोमहंसनकरं भयं **उत्तासभयं** नाम। तं सब्बं अपनुदिता वूपसमेता। **संविधाताति** संविदहिता। कथं संविदहति? अटवियं सासङ्कट्ठानेसु दानसालं कारेत्वा तत्थ आगते भोजेत्वा मनुस्से दत्वा अतिवाहेति, तं ठानं पविसितुं असक्कोन्तानं मनुस्से पेसेत्वा पवेसेति। नगरादीसुपि तेसु तेसु ठानेसु आरक्खं ठपेति, एवं संविदहति। **सपरिवारञ्च दानं अदासीति** अन्नं पानन्ति दसविधं दानवत्थुं।

तत्थ **अन्नन्ति** यागुभत्तं। तं ददन्तो न द्वारे ठपेत्वा अदासि, अथ खो अन्तोनिवेसने हरितुपलित्तट्ठाने लाजा चेव पुप्फानि च विकिरित्वा आसनं पञ्ञपेत्वा वितानं बन्धित्वा गन्धधूमादीहि सक्कारं कत्वा भिक्खुसङ्घं निसीदापेत्वा यागुं अदासि। यागुं देन्तो च सब्यञ्जनं अदासि। यागुपानावसाने पादे धोवित्वा तेलेन मक्खेत्वा नानप्पकारकं अनन्तं खज्जकं दत्वा परियोसाने अनेकसूपं अनेकब्यञ्जनं पणीतभोजनं अदासि। पानं देन्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अम्बपानादिअट्ठविधं पानं अदासि, तम्पि यागुभत्तं दत्वा। वत्थं देन्तो न सुद्धवत्थमेव अदासि, एकपट्टदुपट्टादिपहोनकं पन दत्वा सुचिम्पि अदासि, सुत्तम्पि अदासि, सुत्तं वट्टेसि, सूचिकम्मकरणट्ठाने भिक्खूनं आसनानि, यागुभत्तं, पादमक्खनं, पिट्ठिमक्खनं, रजनं, पण्डुपलासं, रजनदोणिकं, अन्तमसो चीवररजनकं कप्पियकारकम्पि अदासि।

यानन्ति उपाहनं। तं ददन्तोपि उपाहनत्थविकं उपाहनदण्डकं मक्खनतेलं हेट्ठा वुत्तानि च अन्नादीनि तस्सेव परिवारं कत्वा अदासि। **मालं** देन्तोपि न सुद्धमालमेव अदासि, अथ खो नं गन्धेहि मिस्सेत्वा हेट्ठिमानि चत्तारि तस्सेव परिवारं कत्वा अदासि। बोधिचेतियआसनपोत्थकादिपूजनत्थाय चेव चेतियघरधूपनत्थाय च **गन्धं** देन्तोपि न सुद्धगन्धमेव अदासि, गन्धपिसनकनिसदाय चेव पक्खिपनकभाजनेन च सद्धिं हेट्ठिमानि पञ्च तस्स परिवारं कत्वा अदासि। चेतियपूजादीनं अत्थाय हरितालमनोसिलाचीनपिट्ठादि**विलेपनं** देन्तोपि न सुद्धविलेपनमेव अदासि, विलेपनभाजनेन सद्धिं हेट्ठिमानि छ तस्स परिवारं कत्वा अदासि। **सेय्याति** मञ्चपीठं। तं देन्तोपि न सुद्धकमेव अदासि, कोजवकम्बलपच्चत्थरणमञ्चप्पटिपादकेहि सद्धिं अन्तमसो मङ्गुलसोधनदण्डकं हेट्ठिमानि च सत्त तस्स परिवारं कत्वा अदासि। **आवसथं** देन्तोपि न गेहमत्तमेव अदासि, अथ खो नं मालाकम्मलताकम्मपटिमण्डितं सुपञ्ञत्तं मञ्चपीठं कारेत्वा हेट्ठिमानि अट्ठ तस्स परिवारं कत्वा अदासि। **पदीपेय्यन्ति** पदीपतेलं। तं देन्तो चेतियङ्गणे बोधियङ्गणे धम्मस्सवनग्गे वसनगेहे पोत्थकवाचनट्ठाने इमिना दीपं जालापेथाति न सुद्धतेलमेव अदासि, वट्टि कपल्लकतेलभाजनादीहि सद्धिं हेट्ठिमानि नव तस्स परिवारं कत्वा अदासि। **सुविभत्तन्तरानी**ति सुविभत्तअन्तरानि।

राजानोति अभिसित्ता। **भोगियाति** भोजका **कुमाराति** राजकुमारा। इध **कम्मं** नाम सपरिवारं दानं। **कम्मसरिक्खकं** नाम सपरिवारं कत्वा दानं अदासीति इमिना कारणेन सदेवको लोको जानातूति निब्बत्तं चक्कलक्खणं। **लक्खणं** नाम तदेव चक्कलक्खणं। **आनिसंसो** महापरिवारता।

२०५. **तत्थेतं वुच्चतीति** इमा तदत्थपरिदीपना गाथा वुच्चन्ति। दुविधा हि गाथा होन्ति– तदत्थपरिदीपना च विसेसत्थपरिदीपना च। तत्थ पाळिआगतमेव अत्थं परिदीपना **तदत्थपरिदीपना** नाम। पाळियं अनागतं परिदीपना **विसेसत्थपरिदीपना** नाम। इमा पन तदत्थपरिदीपना। तत्थ **पुरेति** पुब्बे। **पुरत्थाति** तस्सेव वेवचनं। **पुरिमासु जातीसूति** इमिस्सा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जातिया पुब्बेकतकम्मपटिक्खेपदीपनं। **उब्बेगउत्तासभयापनूदनो**ति उब्बेगभयस्स च उत्तासभयस्स च अपनूदनो। **उस्सुको**ति अधिमुत्तो।

सतपुञ्ञलक्खणन्ति सतेन सतेन पुञ्ञकम्मेन निब्बत्तं एकेकं लक्खणं। एवं सन्ते यो कोचि बुद्धो भवेय्याति न रोचयिंसु, अनन्तेसु पन चक्कवाळेसु सब्बे सत्ता एकेकं कम्मं सतक्खत्तुं करेय्युं, एत्तकेहि जनेहि कतं कम्मं बोधिसत्तो एकोव एकेकं सतगुणं कत्वा निब्बत्तो। तस्मा "सतपुञ्ञलक्खणो"ति इममत्थं रोचयिंसु। **मनुस्सासुरसक्करक्खसा**ति मनुस्सा च असुरा च सक्का च रक्खसा च।

आयतपण्हितादितिलक्खणवण्णना

२०६. **अन्तरा**ति पटिसन्धितो सरसचुतिया अन्तरे। इध **कम्मं** नाम पाणातिपाता विरति। **कम्मसरिक्खकं** नाम पाणातिपातं करोन्तो पदसद्दसवनभया अग्गग्गपादेहि अक्कमन्ता गन्त्वा परं पातेन्ति। अथ ते इमिना कारणेन तेसं तं कम्मं जनो जानातूति अन्तोवङ्कपादा वा बहिवङ्कपादा वा उक्कुटिकपादा वा अग्गकोण्डा वा पण्हिकोण्डा वा भवन्ति। अग्गपादेहि गन्त्वा परस्स अमारितभावं पन तथागतस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति **आयतपण्हि** महापुरिसलक्खणं निब्बत्तति। तथा परं घातेन्ता उन्नतकायेन गच्छन्ता अञ्ञे पस्सिस्सन्तीति ओनता गन्त्वा परं घातेन्ति। अथ ते एवमिमे गन्त्वा परं घातयिंसूति नेसं तं कम्मं इमिना कारणेन परो जानातूति खुज्जा वा वामना वा पीठसप्पि वा भवन्ति। तथागतस्स पन एवं गन्त्वा परेसं अघातितभावं इमिना कारणेन सदेवको लोको जानातूति **ब्रह्मुजुगत्त**महापुरिसलक्खणं निब्बत्तति। तथा परं घातेन्ता आवुधं वा मुग्गरं वा गण्हित्वा मुट्ठिकतहत्था परं घातेन्ति। ते एवं तेसं परस्स घातितभावं इमिना कारणेन जनो जानातूति रस्सङ्गुली वा रस्सहत्था वा वङ्कङ्गुली वा फणहत्थका वा भवन्ति। तथागतस्स पन एवं परेसं अघातितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति **दीघङ्गुलि**महापुरिसलक्खणं निब्बत्तति। इदमेत्थ **कम्मसरिक्खकं**। इदमेव पन लक्खणत्तयं **लक्खणं** नाम। दीघायुकभावो **लक्खणानिसंसो**।

२०७. **मरणवधभयत्तनो**ति एत्थ मरणसङ्खातो वधो मरणवधो, मरणवधतो भयं **मरणवधभयं**, तं अत्तनो जानित्वा। **पटिविरतो परंमारणाया**ति यथा मय्हं मरणतो भयं मम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवितं पियं, एवं परेसम्पीति ञत्वा परं मारणतो पटिविरतो अहोसि। **सुचरितेना**ति सुचिण्णेन। **सग्गमगमा**ति सग्गं गतो।

चविय पुनरिधागतोति चवित्वा पुन इधागतो। **दीघपासण्हिको**ति दीघपण्हिको। **ब्रह्माव सुजू**ति ब्रह्मा विय सुट्ठु उजु।

सुभुजोति सुन्दरभुजो। **सुसू**ति महल्लककालेपि तरुणरूपो। **सुसण्ठितो**ति सुसण्ठानसम्पन्नो। **मुदुतलुनङ्गुलियस्सा**ति मुदू च तलुना च अङ्गुलियो अस्स। **तीभी**ति तीहि। **पुरिसवरग्गलक्खणेही**ति पुरिसवरस्स अग्गलक्खणेहि। **चिरयपनाया**ति चिरं यापनाय, दीघायुकभावाय।

चिरं यपेतीति चिरं यापेति। **चिरतरं पब्बजति यदि ततो**ति ततो चिरतरं यापेति, यदि पब्बजतीति अत्थो। **यापयति च वसिद्धिभावनाया**ति वसिप्पत्तो हुत्वा इद्धिभावनाय यापेति।

सत्तुस्सदतालक्खणवण्णना

२०८. **रसितानन्ति** रससम्पन्नानं। "खादनीयान"न्तिआदीसु **खादनीयानि** नाम पिट्ठखज्जकादीनि। **भोजनीयानी**ति पञ्च भोजनानि। **सायनीयानी**ति सायितब्बानि सप्पिनवनीतादीनि। **लेहनीयानी**ति निल्लेहितब्बानि पिट्ठपायासादीनि। **पानानी**ति अट्ठ पानकानि।

इध **कम्मं** नाम कप्पसतसहस्साधिकानि चत्तारि असङ्ख्येय्यानि दिन्नं इदं पणीतभोजनदानं। **कम्मसरिक्खकं** नाम लूखभोजने कुच्छिगते लोहितं सुस्सति, मंसं मिलायति। तस्मा लूखदायका सत्ता इमिना कारणेन नेसं लूखभोजनस्स दिन्नभावं जनो जानातूति अप्पमंसा अप्पलोहिता मनुस्सपेता विय दुल्लभन्नपाना भवन्ति। पणीतभोजने पन कुच्छिगते मंसलोहितं वड्ढति, परिपुण्णकाया पासादिका अभिरूपदस्सना होन्ति। तस्मा तथागतस्स दीघरत्तं पणीतभोजनदायकत्तं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति सत्तुस्सदमहापुरिसलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम सत्तुस्सदलक्खणमेव। पणीतलाभिता **आनिसंसो।**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०९. **खज्जभोज्जमथलेय्यसायित**न्ति खज्जकञ्च भोजनञ्च लेहनीयञ्च सायनीयञ्च। **उत्तमग्गरसदायको**ति उत्तमो अग्गरसदायको, उत्तमानं वा अग्गरसानं दायको।

सत्त चुस्सदेति सत्त च उस्सदे। **तदत्थजोतक**न्ति खज्जभोज्जादिजोतकं, तेसं लाभसंवत्तनिकन्ति अत्थो। **पब्बजम्पि चा**ति पब्बजमानोपि च। **तदाधिगच्छती**ति तं अधिगच्छति। **लाभिरुत्तम**न्ति लाभि उत्तमं।

करचरणादिलक्खणवण्णना

२१०. **दानेना**तिआदीसु एकच्चो दानेनेव सङ्गण्हितब्बो होति, तं दानेन सङ्गहेसि। पब्बजितानं पब्बजितपरिक्खारं, गिहीनं गिहिपरिक्खारं अदासि।

पेय्यवज्जेनाति एकच्चो हि "अयं दातब्बं नाम देति, एकेन पन वचनेन सब्बं मक्खेत्वा नासेति, किं एतस्स दान"न्ति वत्ता होति। एकच्चो "अयं किञ्चापि दानं न देति, कथेन्तो पन तेलेन विय मक्खेति। एसो देतु वा मा वा, वचनमेव तस्स सहस्सं अग्घती"ति वत्ता होति। एवरूपो पुग्गलो दानं न पच्चासीसति, पियवचनमेव पच्चासीसति। तं पियवचनेन सङ्गहेसि।

अत्थचरियायाति अत्थसंवड्ढनकथाय। एकच्चो हि नेव दानं, न पियवचनं पच्चासीसति। अत्तनो हितकथं वड्ढितकथमेव पच्चासीसति। एवरूपं पुग्गलं "इदं ते कातब्बं, इदं ते न कातब्बं। एवरूपो पुग्गलो सेवितब्बो, एवरूपो पुग्गलो न सेवितब्बो"ति एवं अत्थचरियाय सङ्गहेसि।

समानत्ततायाति समानसुखदुक्खभावेन। एकच्चो हि दानादीसु एकम्पि न पच्चासीसति, एकासने निसज्जं, एकपल्लङ्के सयनं, एकतो भोजनन्ति एवं समानसुखदुक्खतं पच्चासीसति। तत्थ जातिया हीनो भोगेन अधिको दुस्सङ्गहो होति। न हि सक्का तेन सद्धिं एकपरिभोगो कातुं, तथा अकरियमाने च सो कुज्झति। भोगेन हीनो जातिया अधिकोपि दुस्सङ्गहो होति। सो हि "अहं जातिमा"ति भोगसम्पन्नेन सद्धिं एकपरिभोगं न इच्छति, तस्मिं अकरियमाने कुज्झति। उभोहिपि हीनो पन सुसङ्गहो होति। न हि सो इतरेन सद्धिं एकपरिभोगं इच्छति, न अकरियमाने च कुज्झति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उभोहि सदिसोपि सुसङ्गहोयेव। भिक्खूसु दुस्सीलो दुस्सङ्गहो होति। न हि सक्का तेन सद्धिं एकपरिभोगो कातुं, तथा अकरियमाने च कुज्झति। सीलवा सुसङ्गहो होति। सीलवा हि अदीयमानेपि अकरियमानेपि न कुज्झति। अञ्ञं अत्तना सद्धिं परिभोगं अकरोन्तम्पि न पापकेन चित्तेन पस्सति। परिभोगोपि तेन सद्धिं सुकरो होति। तस्मा एवरूपं पुग्गलं एवं समानत्तताय सङ्गहेसि।

सुसङ्गहितास्स होन्तीति सुसङ्गहिता अस्स होन्ति। देतु वा मा वा देतु, करोतु वा मा वा करोतु, सुसङ्गहिताव होन्ति, न भिज्जन्ति। "यदास्स दातब्बं होति, तदा देति। इदानि मञ्ञे नत्थि, तेन न देति। किं मयं ददमानमेव उपट्ठहाम? अदेन्तं अकरोन्तं न उपट्ठहामा"ति एवं चिन्तेन्ति।

इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं कतं दानादिसङ्गहकम्मं। **कम्मसरिक्खकं** नाम यो एवं असङ्गाहको होति, सो इमिना कारणेनस्स असङ्गाहकभावं जनो जानातूति थद्धहत्थपादो चेव होति, विसमट्ठितावयवलक्खणो च। तथागतस्स पन दीघरत्तं सङ्गाहकभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति इमानि द्वे लक्खणानि निब्बत्तन्ति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। सुसङ्गहितपरिजनता **आनिसंसो**।

२११. करियाति करित्वा। **चरिया**ति चरित्वा। **अनवमतेना**ति अनवञ्ञातेन। "अनपमोदेना"तिपि पाठो, न अप्पमोदेन, न दीनेन न गब्भितेनाति अत्थो।

चवियाति चवित्वा। **अतिरुचिर सुवग्गु दस्सनेय्य**न्ति अतिरुचिरञ्च सुपासादिकं सुवग्गु च सुट्ठु छेकं दस्सनेय्यञ्च दट्ठब्बयुत्तं। **सुसु कुमारो**ति सुट्ठु सुकुमारो।

परिजनस्सवोति परिजनो अस्सवो वचनकरो। **विधेय्यो**ति कत्तब्बाकत्तब्बेसु यथारुचि विधातब्बो। **महिम**न्ति महिं इमं। **पियवदू हितसुखतं जिगीसमानो**ति पियवदो हुत्वा हितञ्च सुखञ्च परियेसमानो। **वचनपटिकरस्सा भिप्पसन्ना**ति वचनपटिकरा अस्स अभिप्पसन्ना। **धम्मानुधम्म**न्ति धम्मञ्च अनुधम्मञ्च।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उस्सङ्खपादादिलक्खणवण्णना

२१२. **अत्थूपसंहितन्ति** इधलोकपरलोकत्थनिस्सितं। **धम्मूपसंहितन्ति** दसकुसलकम्मपथनिस्सितं। **बहुजनं निदंसेसीति** बहुजनस्स निदंसनकथं कथेसि। **पाणीनन्ति** सत्तानं। "अग्गो"तिआदीनि सब्बानि अञ्ञमञ्ञवेवचनानि। इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं भासिता उद्धङ्गमनीया अत्थूपसंहिता वाचा। **कम्मसरिक्खकं** नाम यो एवरूपं उग्गतवाचं न भासति, सो इमिना कारणेन उग्गतवाचाय अभासनं जनो जानातूति अधोसङ्खपादो च होति अधोनतलोमो च। तथागतस्स पन दीघरत्तं एवरूपाय उग्गतवाचाय भासितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति **उस्सङ्खपादलक्खणञ्च उद्धग्गलोमलक्खणञ्च** निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। उत्तमभावो **आनिसंसो।**

२१३. **एरयन्ति** भणन्तो। **बहुजनं निदंसयीति** बहुजनस्स हितं दस्सेति। **धम्मयागन्ति** धम्मदानयञ्ञं।

उब्भमुप्पतितलोमवा ससोति सो एस उद्धग्गतलोमवा होति। **पादगण्ठिरहूति** पादगोप्फका अहेसुं। **साधुसण्ठिताति** सुट्ठु सण्ठिता। **मंसलोहिताचिताति** मंसेन च लोहितेन च आचिता। **तचोत्थताति** तचेन परियोनद्धा निगुळ्हा। **वजतीति** गच्छति। **अनोमनिक्कमोति** अनोमविहारी सेट्ठविहारी।

एणिजङ्घलक्खणवण्णना

२१४. **सिप्पं वा**तिआदीसु सिप्पं नाम द्वे सिप्पानि– हीनञ्च सिप्पं, उक्कट्ठञ्च सिप्पं। हीनं नाम सिप्पं नळकारसिप्पं, कुम्भकारसिप्पं पेसकारसिप्पं नहापितसिप्पं। उक्कट्ठं नाम सिप्पं लेखा मुद्दा गणना। **विज्जाति** अहिविज्जादिअनेकविधा। **चरणन्ति** पञ्चसीलं दससीलं पातिमोक्खसंवरसीलं। **कम्मन्ति** कम्मस्सकताजाननपञ्ञा। **किलिस्सेय्युन्ति** किलमेय्युं। अन्तेवासिकवत्तं नाम दुक्खं, तं नेसं मा चिरमहोसीति चिन्तेसि।

राजारहानीति रञ्ञो अनुरूपानि हत्थिअस्सादीनि, तानियेव रञ्ञो सेनाय अङ्गभूतत्ता **राजङ्गानीति** वुच्चन्ति। **राजूपभोगानीति** रञ्ञो उपभोगपरिभोगभण्डानि, तानि चेव सत्तरतनानि च। **राजानुच्छविकानीति** रञ्ञो अनुच्छविकानि। तेसंयेव सब्बेसं इदं गहणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणारहानीति समणानं अनुरूपानि चीवरादीनि। **समणङ्गानी**ति समणानं कोट्ठासभूता चतस्सो परिसा। **समणूपभोगानी**ति समणानं उपभोगपरिक्खारा। **समणानुच्छविकानी**ति तेसंयेव अधिवचनं।

इध पन **कम्मं** नाम दीघरत्तं सक्कच्चं सिप्पादिवाचनं। **कम्मसरिक्खकं** नाम यो एवं सक्कच्चं सिप्पं अवाचेन्तो अन्तेवासिके उक्कुटिकासनजङ्घपेसनिकादीहि किलमेति, तस्स जङ्घमंसं लिखित्वा पातितं विय होति। तथागतस्स पन सक्कच्चं वाचितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति अनुपुब्बउग्गतवट्टितं **एणिजङ्घलक्खणं** निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं। अनुच्छविकलाभिता **आनिसंसो**।

२१५. **यदूपघाताया**ति यं सिप्पं कस्सचि उपघाताय न होति। **किलिस्सतीति** किलमिस्सति। **सुखुमत्तचोत्थता**ति सुखुमत्तचेन परियोनद्धा। किं पन अञ्ञेन कम्मेन अञ्ञं लक्खणं निब्बत्ततीति? न निब्बत्तति। यं पन निब्बत्तति, तं अनुब्यञ्जनं होति, तस्मा इध वुत्तं।

सुखुमच्छविलक्खणवण्णना

२१६. **समणं वा**ति समितपापट्ठेन समणं। **ब्राह्मणं वा**ति बाहितपापट्ठेन ब्राह्मणं।

महापञ्ञोतिआदीसु महापञ्ञादीहि समन्नागतो होतीति अत्थो। तत्रिदं महापञ्ञादीनं नानत्तं।

तत्थ कतमा **महापञ्ञा**? महन्ते सीलक्खन्धे परिग्गण्हातीति **महापञ्ञा,** महन्ते समाधिक्खन्धे पञ्ञाक्खन्धे विमुत्तिक्खन्धे विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धे परिग्गण्हातीति महापञ्ञा। महन्तानि ठानाठानानि महन्ता विहारसमापत्तियो महन्तानि अरियसच्चानि महन्ते सतिपट्ठाने सम्मप्पधाने इद्धिपादे महन्तानि इन्द्रियानि बलानि महन्ते बोज्झङ्गे महन्ते अरियमग्गे महन्तानि सामञ्ञफलानि महन्ता अभिञ्ञायो महन्तं परमत्थं निब्बानं परिग्गण्हातीति महापञ्ञा।

कतमा **पुथुपञ्ञा**? पुथुनानाखन्धेसु ञाणं पवत्ततीति **पुथुपञ्ञा**। पुथुनानाधातूसु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुथुनानाआयतनेसु पुथुनानापटिच्चसमुप्पादेसु पुथुनानासुञ्ञतमनुपलब्भेसु पुथुनानाअत्थेसु धम्मेसु निरुत्तीसु पटिभानेसु। पुथुनानासीलक्खन्धेसु पुथुनानासमाधिपञ्ञाविमुत्तिविमुत्तिञाण दस्सनक्खन्धेसु पुथुनानाठानाठानेसु पुथुनानाविहारसमापत्तीसु पुथुनानाअरियसच्चेसु पुथुनानासतिपट्ठानेसु सम्मप्पधानेसु इद्धिपादेसु इन्द्रियेसु बलेसु बोज्झङ्गेसु पुथुनानाअरियमग्गेसु सामञ्ञफलेसु अभिञ्ञासु पुथुज्जनसाधारणे धम्मे समतिक्कम्म परमत्थे निब्बाने ञाणं पवत्ततीति पुथुपञ्ञा।

कतमा **हासपञ्ञा**? इधेकच्चो हासबहुलो वेदबहुलो तुट्ठिबहुलो पामोज्जबहुलो सीलं परिपूरेति इन्द्रियसंवरं परिपूरेति भोजने मत्तञ्ञुतं जागरियानुयोगं सीलक्खन्धं समाधिक्खन्धं पञ्ञाक्खन्धं विमुत्तिक्खन्धं विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धं परिपूरेतीति हासपञ्ञा। हासबहुलो...पे०... पामोज्जबहुलो ठानाठानं पटिविज्झतीति हासपञ्ञा। हासबहुलो विहारसमापत्तियो परिपूरेतीति हासपञ्ञा। हासबहुलो अरियसच्चानि पटिविज्झतीति हासपञ्ञा। सतिपट्ठाने सम्मप्पधाने इद्धिपादे इन्द्रियानि बलानि बोज्झङ्गे अरियमग्गं भावेतीति हासपञ्ञा। हासबहुलो सामञ्ञफलानि सच्छिकरोतीति हासपञ्ञा। अभिञ्ञायो पटिविज्झतीति हासपञ्ञा। हासबहुलो वेदतुट्ठिपामोज्जबहुलो परमत्थं निब्बानं सच्छिकरोतीति हासपञ्ञा।

कतमा **जवनपञ्ञा**? यंकिञ्चि रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं यं दूरे सन्तिके वा, सब्बं तं रूपं अनिच्चतो खिप्पं जवतीति जवनपञ्ञा। दुक्खतो खिप्पं अनत्ततो खिप्पं जवतीति जवनपञ्ञा। या काचि वेदना...पे०... यंकिञ्चि विञ्ञाणं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं, सब्बं तं विञ्ञाणं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो खिप्पं जवतीति जवनपञ्ञा। चक्खु...पे०... जरामरणं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो खिप्पं जवतीति जवनपञ्ञा। रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अनिच्चं खयट्ठेन दुक्खं भयट्ठेन अनत्ता असारकट्ठेनाति तुलयित्वा तीरयित्वा विभावयित्वा विभूतं कत्वा रूपनिरोधे निब्बाने खिप्पं जवतीति जवनपञ्ञा। वेदना सञ्ञा सङ्खारा विञ्ञाणं चक्खु...पे०... जरामरणं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अनिच्चं खयट्ठेन...पे०... विभूतं कत्वा जरामरणनिरोधे निब्बाने खिप्पं जवतीति जवनपञ्ञा। रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं। चक्खुं...पे०... जरामरणं अनिच्चं सङ्खतं पटिच्चसमुप्पन्नं खयधम्मं वयधम्मं विरागधम्मं निरोधधम्मन्ति तुलयित्वा तीरयित्वा विभावयित्वा विभूतं कत्वा जरामरणनिरोधे निब्बाने खिप्पं जवतीति जवनपञ्ञा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतमा **तिक्खपञ्ञा।** खिप्पं किलेसे छिन्दतीति तिक्खपञ्ञा। उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेति, उप्पन्नं ब्यापादवितक्कं, उप्पन्नं विहिंसावितक्कं, उप्पन्नुप्पन्ने पापके अकुसले धम्मे उप्पन्नं रागं दोसं मोहं कोधं उपनाहं मक्खं पळासं इस्सं मच्छरियं मायं साठेय्यं थम्भं सारम्भं मानं अतिमानं मदं पमादं सब्बे किलेसे सब्बे दुच्चरिते सब्बे अभिसङ्खारे सब्बे भवगामिकम्मे नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्ती करोति अनभावं गमेतीति तिक्खपञ्ञा। एकस्मिं आसने चत्तारो अरियमग्गा चत्तारि सामञ्ञफलानि चतस्सो पटिसम्भिदायो छ अभिञ्ञायो अधिगता होन्ति सच्छिकता फस्सिता पञ्ञायाति तिक्खपञ्ञा।

कतमा **निब्बेधिकपञ्ञा।** इधेकच्चो सब्बसङ्खारेसु उब्बेगबहुलो होति उत्तासबहुलो उक्कण्ठनबहुलो अरतिबहुलो अनभिरतिबहुलो बहिमुखो न रमति सब्बसङ्खारेसु, अनिब्बिद्धपुब्बं अपदालितपुब्बं लोभक्खन्धं निब्बिज्झति पदालेतीति निब्बेधिकपञ्ञा। अनिब्बिद्धपुब्बं अपदालितपुब्बं दोसक्खन्धं मोहक्खन्धं कोधं उपनाहं...पे०... सब्बे भवगामिकम्मे निब्बिज्झति पदालेतीति निब्बेधिकपञ्ञाति (पटि० म० ३.३)।

२१७. **पब्बजितं उपासिता**ति पण्डितं पब्बजितं उपसङ्कमित्वा पयिरुपासिता। **अत्थन्तरो**ति यथा एके रन्धगवेसिनो उपारम्भचित्तताय दोसं अब्भन्तरं करित्वा निसामयन्ति, एवं अनिसामेत्वा अत्थं अब्भन्तरं कत्वा अत्थयुत्तं कथं निसामयि उपधारयि।

पटिलाभगतेनाति पटिलाभत्थाय गतेन। **उप्पादनिमित्तकोविदा**ति उप्पादे च निमित्ते च छेका। **अवेच्च दक्खिती**ति ञत्वा पस्सिस्सति।

अत्थानुसिट्ठीसु परिग्गहेसु चाति ये अत्थानुसासनेसु परिग्गहा अत्थानत्थं परिग्गाहकानि ञाणानि, तेसूति अत्थो।

सुवण्णवण्णलक्खणवण्णना

२१८. **अक्कोधनो**ति न अनागामिमग्गेन कोधस्स पहीनत्ता, अथ खो सचेपि मे कोधो उप्पज्जेय्य, खिप्पमेव नं पटिविनोदेय्यन्ति एवं अक्कोधवसिकत्ता। **नाभिसज्जी**ति कुटिलकण्टको विय तत्थ तत्थ मम्मं तुदन्तो विय न लग्गि। **न कुप्पि न**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्यापज्जीतिआदीसु पुब्बुप्पत्तिको **कोपो**। ततो बलवतरो **ब्यापादो**। ततो बलवतरा **पतित्थियना**। तं सब्बं अकरोन्तो न कुप्पि न ब्यापज्जि न पतित्थियि। **अप्पच्चयन्ति** दोमनस्सं। **न पात्वाकासी**ति न कायविकारेन वा वचीविकारेन वा पाकटमकासि।

इध कम्मं नाम दीघरत्तं अक्कोधनता चेव सुखुमत्थरणादिदानञ्च। **कम्मसरिक्खकं** नाम कोधनस्स छविवण्णो आविलो होति मुखं दुद्दसियं वत्थच्छादनसदिसञ्च मण्डनं नाम नत्थि। तस्मा यो कोधनो चेव वत्थच्छादनानञ्च अदाता, सो इमिना कारणेनस्स जनो कोधनादिभावं जानातूति दुब्बण्णो होति दुस्सण्ठानो। अक्कोधनस्स पन मुखं विरोचति, छविवण्णो विप्पसीदति। सत्ता हि चतूहि कारणेहि पासादिका होन्ति आमिसदानेन वा वत्थदानेन वा सम्मज्जनेन वा अक्कोधनताय वा। इमानि चत्तारिपि कारणानि दीघरत्तं तथागतेन कतानेव। तेनस्स इमेसं कतभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति सुवण्णवण्णं महापुरिसलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं। सुखुमत्थरणादिलाभिता **आनिसंसो**।

२१९. **अभिविस्सजी**ति अभिविस्सज्जेसि। **महिमिव सुरो अभिवस्स**न्ति सुरो वुच्चति देवो, महापथविं अभिवस्सन्तो देवो विय।

सुरवरतरोरिव इन्दोति सुरानं वरतरो इन्दो विय।

अपब्बज्जमिच्छन्ति अपब्बज्जं गिहिभावं इच्छन्तो। **महतिमहि**न्ति महन्तिं पथविं।

अच्छादनवत्थमोक्खपावुरणानन्ति अच्छादनानञ्चेव वत्थानञ्च उत्तमपावुरणानञ्च। **पनासो**ति विनासो।

कोसोहितवत्थगुय्हलक्खणवण्णना

२२०. **मातरम्पि पुत्तेन समानेता अहोसी**ति इमं कम्मं रज्जे पतिट्ठितेन सक्का कातुं। तस्मा बोधिसत्तोपि रज्जं कारयमानो अन्तोनगरे चतुक्कादीसु चतूसु नगरद्वारेसु बहिनगरे चतूसु दिसासु इमं कम्मं करोथाति मनुस्से ठपेसि। ते मातरं कुहिं मे पुत्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्तं न पस्सामीति विलपन्तिं परियेसमानं दिस्वा एहि, अम्म, पुत्तं दक्खसीति तं आदाय गन्त्वा नहापेत्वा भोजेत्वा पुत्तमस्सा परियेसित्वा दस्सेन्ति। एस नयो सब्बत्थ।

इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं ञातीनं समङ्गिभावकरणं। **कम्मसरिक्खकं** नाम ञातयो हि समङ्गीभूता अञ्ञमञ्ञस्स वज्जं पटिच्छादेन्ति। किञ्चापि हि ते कलहकाले कलहं करोन्ति, एकस्स पन दोसे उप्पन्ने अञ्ञं जानापेतुं न इच्छन्ति। अयं नाम एतस्स दोसोति वुत्ते सब्बे उट्ठहित्वा केन दिट्ठं केन सुतं, अम्हाकं ञातीसु एवरूपं कत्ता नाम नत्थीति। तथागतेन च तं ञातिसङ्गहं करोन्तेन दीघरत्तं इदं वज्जप्पटिच्छादनकम्मं नाम कतं होति। अथस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन एवरूपस्स कम्मस्स कतभावं जानातूति कोसोहितवत्थगुय्हलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं। पहूतपुत्तता **आनिसंसो**।

२२१. **वत्थछादियन्ति** वत्थेन छादेतब्बं वत्थगुय्हं।

अमित्ततापनाति अमित्तानं पतापना। **गिहिस्स पीतिं जनना**ति गिहिभूतस्स सतो पीतिजनना।

परिमण्डलादिलक्खणवण्णना

२२२. **समं जानाती**ति "अयं तारुक्खसमो अयं पोक्खरसातिसमो"ति एवं तेन तेन समं जानाति। **सामं जानाती**ति सयं जानाति। **पुरिसं जानाती**ति "अयं सेट्ठसम्मतो"ति पुरिसं जानाति। **पुरिसविसेसं जानाती**ति मुग्गं मासेन समं अकत्वा गुणविसिट्ठस्स विसेसं जानाति। **अयमिदमरहती**ति अयं पुरिसो इदं नाम दानसक्कारं अरहति। **पुरिसविसेसकरो अहोसी**ति पुरिसविसेसं ञत्वा कारको अहोसि। यो यं अरहति, तस्सेव तं अदासि। यो हि कहापणारहस्स अड्ढं देति, सो परस्स अड्ढं नासेति। यो द्वे कहापणे देति, सो अत्तनो कहापणं नासेति। तस्मा इदं उभयम्पि अकत्वा यो यं अरहति, तस्स तदेव अदासि। **सद्धाधन**न्तिआदीसु सम्पत्तिपटिलाभट्ठेन सद्धादीनं धनभावो वेदितब्बो।

इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं पुरिसविसेसं ञत्वा कतं समसङ्गहकम्मं। **कम्मसरिक्खकं** नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदस्स कम्मं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति इमानि द्वे लक्खणानि निब्बत्तन्ति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। धनसम्पत्ति **आनिसंसो**।

२२३. **तुलियाति** तुलयित्वा। **पटिविचयाति** पटिविचिनित्वा। **महाजनसङ्गाहकन्ति** महाजनसङ्गहणं। **समेक्खमानोति** समं पेक्खमानो। **अतिनिपुणा मनुजाति** अतिनिपुणा सुखुमपञ्ञा लक्खणपाठकमनुस्सा। **बहुविविधा गिहीनं अरहानीति** बहू विविधानि गिहीनं अनुच्छविकानि पटिलभति। **दहरो सुसु कुमारो** "अयं दहरो कुमारो पटिलभिस्सती"ति ब्याकंसु **महीपतिस्साति** रञ्ञो।

सीहपुब्बद्धकायादिलक्खणवण्णना

२२४. **योगक्खेमकामोति** योगतो खेमकामो। **पञ्ञायाति** कम्मस्सकतपञ्ञाय। इध **कम्मं** नाम महाजनस्स अत्थकामता। **कम्मसरिक्खकं** नाम तं महाजनस्स अत्थकामताय वड्ढिमेव पच्चासीसितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति इमानि समन्तपरिपूरानि अपरिहीनानि तीणि लक्खणानि निब्बत्तन्ति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणत्तयं। धनादीहि चेव सद्धादीहि च अपरिहानि **आनिसंसो**।

२२५. **सद्धायाति** ओकप्पनसद्धाय पसादसद्धाय। **सीलेनाति** पञ्चसीलेन दससीलेन। **सुतेनाति** परियत्तिसवनेन। **बुद्धियाति** एतेसं बुद्धिया, "किन्ति एतेहि वड्ढेय्यु"न्ति एवं चिन्तेसीति अत्थो। **धम्मेनाति** लोकियधम्मेन। **बहूहि साधूहीति** अञ्ञेहिपि बहूहि उत्तमगुणेहि। **असहानधम्मतन्ति** अपरिहीनधम्मं।

रसग्गसग्गितालक्खणवण्णना

२२६. **समाभिवाहिनियोति** यथा तिलफलमत्तम्पि जिव्हग्गे ठपितं सब्बत्थ फरति, एवं समा हुत्वा वहन्ति। इध **कम्मं** नाम अविहेठनकम्मं। **कम्मसरिक्खकं** नाम पाणिआदीहि पहारं लद्धस्स तत्थ तत्थ लोहितं सण्ठाति, गण्ठि गण्ठि हुत्वा अन्तोव पुब्बं गण्हाति, अन्तोव भिज्जति, एवं सो बहुरोगो होति। तथागतेन पन दीघरत्तं इमं आरोग्यकरणकम्मं कतं। तदस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति आरोग्यकरं रसग्गसग्गिलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं। अप्पाबाधता **आनिसंसो**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२७. **मरणवधेनाति** "एतं मारेथ एतं घातेथा"ति एवं आणत्तेन मरणवधेन। **उब्बाधनायाति** बन्धनागारप्पवेसनेन।

अभिनीलनेत्तादिलक्खणवण्णना

२२८. **न च विसटन्ति** कक्कटको विय अक्खीनि नीहरित्वा न कोधवसेन पेक्खिता अहोसि। **न च विसाचीति** वङ्कक्खिकोटिया पेक्खितापि नाहोसि। **न च पन विचेय्य पेक्खिताति** विचेय्य पेक्खिता नाम यो कुज्झित्वा यदा नं परो ओलोकेति, तदा निम्मीलेति न ओलोकेति, पुन गच्छन्तं कुज्झित्वा ओलोकेति, एवरूपो नाहोसि। "विनेय्यपेक्खिता"तिपि पाठो, अयमेवत्थो। **उजुं तथा पसटमुजुमनोति** उजुमनो हुत्वा उजु पेक्खिता होति, यथा च उजुं, तथा पसटं विपुलं वित्थतं पेक्खिता होति। **पियदस्सनोति** पियायमानेहि पस्सितब्बो।

इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं महाजनस्स पियचक्खुना ओलोकनकम्मं। **कम्मसरिक्खकं** नाम कुज्झित्वा ओलोकेन्तो काणो विय काकक्खि विय होति, वङ्कक्खि पन आविलक्खि च होतियेव। पसन्नचित्तस्स पन ओलोकयतो अक्खीनं पञ्चवण्णो पसादो पञ्ञायति। तथागतो च तथा ओलोकेसि। अथस्स तं दीघरत्तं पियचक्खुना ओलोकितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति इमानि नेत्तसम्पत्तिकरानि द्वे महापुरिसलक्खणानि निब्बत्तन्ति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। पियदस्सनता **आनिसंसो। अभियोगिनोति** लक्खणसत्थे युत्ता।

उण्हीससीसलक्खणवण्णना

२३०. **बहुजनपुब्बङ्गमो अहोसीति** बहुजनस्स पुब्बङ्गमो अहोसि गणजेट्ठको। तस्स दिट्ठानुगतिं अञ्ञे आपज्जिंसु। इध **कम्मं** नाम पुब्बङ्गमता। **कम्मसरिक्खकं** नाम यो पुब्बङ्गमो हुत्वा दानादीनि कुसलकम्मानि करोति, सो अमङ्कुभूतो सीसं उक्खिपित्वा पीतिपामोज्जेन परिपुण्णसीसो विचरति, महापुरिसो च होति। तथागतो च तथा अकासि। अथस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन इदं पुब्बङ्गमकम्मं जानातूति उण्हीससीसलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं। महाजनानुवत्तनता **आनिसंसो**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३१. **बहुजनं हेस्सतीति** बहुजनस्स भविस्सति। **पटिभोगियाति** वेय्यावच्चकरा, एतस्स बहू वेय्यावच्चकरा भविस्सन्तीति अत्थो। **अभिहरन्ति तदाति** दहरकालेयेव तदा एवं ब्याकरोन्ति। **पटिहारकन्ति** वेय्यावच्चकरभावं। **विसवीति** चिण्णवसी।

एकेकलोमतादिलक्खणवण्णना

२३२. **उपवत्ततीति** अज्झासयं अनुवत्तति, इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं सच्चकथनं। **कम्मसरिक्खकं** नाम दीघरत्तं अद्वेज्झकथाय परिसुद्धकथाय कथितभावमस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति एकेकलोमलक्खणञ्च उण्णालक्खणञ्च निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। महाजनस्स अज्झासयानुकूलेन अनुवत्तनता **आनिसंसो। एकेकलोमूपचितङ्गवाति** एकेकेहि लोमेहि उपचितसरीरो।

चत्तालीसादिलक्खणवण्णना

२३४. **अभेज्जपरिसोति** अभिन्दितब्बपरिसो। इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं अपिसुणवाचाय कथनं। **कम्मसरिक्खकं** नाम पिसुणवाचस्स किर समग्गभावं भिन्दनतो दन्ता अपरिपुण्णा चेव होन्ति विरळा च। तथागतस्स पन दीघरत्तं अपिसुणवाचतं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति इदं लक्खणद्वयं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। अभेज्जपरिसता **आनिसंसो। चतुरो दसाति** चत्तारो दस चत्तालीसं।

पहूतजिव्हादिलक्खणवण्णना

२३६. **आदेय्यवाचो होतीति** गहेतब्बवचनो होति। इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं अफरुसवादिता। **कम्मसरिक्खकं** नाम ये फरुसवाचा होन्ति, ते इमिना कारणेन नेसं जिव्हं परिवत्तेत्वा परिवत्तेत्वा फरुसवाचाय कथितभावं जनो जानातूति बद्धजिव्हा वा होन्ति, गूळ्हजिव्हा वा द्विजिव्हा वा मम्मना वा। ये पन जिव्हं परिवत्तेत्वा परिवत्तेत्वा फरुसवाचं न वदन्ति, ते बद्धजिव्हा गूळ्हजिव्हा द्विजिव्हा न होन्ति। मुदु नेसं जिव्हा होति रत्तकम्बलवण्णा। तस्मा तथागतस्स दीघरत्तं जिव्हं परिवत्तेत्वा फरुसाय वाचाय अकथितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति पहूतजिव्हालक्खणं निब्बत्तति। फरुसवाचं कथेन्तानञ्च सद्दो भिज्जति। ते सद्दभेदं कत्वा फरुसवाचाय कथितभावं जनो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जानातूति छिन्नस्सरा वा होन्ति भिन्नस्सरा वा काकस्सरा वा। ये पन सरभेदकरं फरुसवाचं न कथेन्ति, तेसं सद्दो मधुरो च होति पेमनीयो। तस्मा तथागतस्स दीघरत्तं सरभेदकराय फरुसवाचाय अकथितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति ब्रह्मस्सरलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। आदेय्यवचनता **आनिसंसो**।

२३७. **उब्बाधिक**न्ति अक्कोसयुत्तत्ता आबाधकरिं **बहुजनप्पमद्दन**न्ति बहुजनानं पमद्दनिं **अबाळ्हं गिरं सो न भणि फरुस**न्ति एत्थ अकारो परतो भणिसद्देन योजेतब्बो। **बाळ्ह**न्ति बलवं अतिफरुसं। **बाळ्हं गिरं सो न अभणी**ति अयमेत्थ अत्थो। **सुसंहित**न्ति सुट्ठु पेमसञ्हितं। **सखिल**न्ति मुदुकं। **वाचा**ति वाचायो। **कण्णसुखा**ति कण्णसुखायो। "कण्णसुख"न्तिपि पाठो, यथा कण्णानं सुखं होति, एवं एरयतीति अत्थो। **वेदयथा**ति वेदयित्थ। **ब्रह्मस्सरत्त**न्ति ब्रह्मस्सरतं। **बहुनो बहु**न्ति बहुजनस्स बहुं। "बहूनं बहुन्ति"पि पाठो, बहुजनानं बहुन्ति अत्थो।

सीहहनुलक्खणवण्णना

२३८. **अप्पधंसिको होती**ति गुणतो वा ठानतो वा पधंसेतुं चावेतुं असक्कुणेय्यो। इध **कम्मं** नाम पलापकथाय अकथनं। **कम्मसरिक्खकं** नाम ये तं कथेन्ति, ते इमिना कारणेन नेसं हनुकं चालेत्वा चालेत्वा पलापकथाय कथितभावं जनो जानातूति अन्तोपविट्ठहनुका वा वङ्कहनुका वा पब्भारहनुका वा होन्ति। तथागतो पन तथा न कथेसिं। तेनस्स हनुकं चालेत्वा चालेत्वा दीघरत्तं पलापकथाय अकथितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति सीहहनुलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं। अप्पधंसिकता **आनिसंसो**।

२३९. **अविकिण्णवचनब्यप्पथो चा**ति अविकिण्णवचनानं विय पुरिमबोधिसत्तानं वचनपथो अस्साति अविकिण्णवचनब्यप्पथो। **द्विदुगमवरतरहनुत्तमलत्था**ति द्वीहि द्वीहि गच्छतीति द्विदुगमो, द्वीहि द्वीहीति चतूहि, चतुप्पदानं वरतरस्स सीहस्सेव हनुभावं अलत्थाति अत्थो। **मनुजाधिपती**ति मनुजानं अधिपति। **तथत्तो**ति तथसभावो।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

समदन्तादिलक्खणवण्णना

२४०. **सुचिपरिवारो**ति परिसुद्धपरिवारो। इध **कम्मं** नाम सम्माजीवता। **कम्मसरिक्खकं** नाम यो विसमेन संकिलिट्ठाजीवेन जीवितं कप्पेति, तस्स दन्तापि विसमा होन्ति दाठापि किलिट्ठा। तथागतस्स पन समेन सुद्धाजीवेन जीवितं कप्पितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातूति समदन्तलक्खणञ्च सुसुक्कदाठालक्खणञ्च निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। सुचिपरिवारता **आनिसंसो**।

२४१. **अवस्सजी**ति पहासि **तिदिवपुरवरसमो**ति तिदिवपुरवरेन सक्केन समो। **लपनज**न्ति मुखजं, दन्तन्ति अत्थो। **दिजसमसुक्कसुचिसोभनदन्तो**ति द्वे वारे जातत्ता दिजनामका सुक्का सुचि सोभना च दन्ता अस्साति दिजसमसुक्कसुचिसोभनदन्तो। **न च जनपदतुदन**न्ति यो तस्स चक्कवाळपरिच्छिन्नो जनपदो, तस्स अञ्ञेन तुदनं पीळा वा आबाधो वा नत्थि। **हितमपि च बहुजन सुखञ्च चरन्ती**ति बहुजना समानसुखदुक्खा हुत्वा तस्मिं जनपदे अञ्ञमञ्ञस्स हितञ्चेव सुखञ्च चरन्ति। **विपापो**ति विगतपापो। **विगतदरथकिलमथो**ति विगतकायिकदरथकिलमथो। **मलखिलकलिकिलेसे पनुदेही**ति रागादिमलानञ्चेव रागादिखिलानञ्च दोसकलीनञ्च सब्बकिलेसानञ्च अपनुदेहि। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवाति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

लक्खणसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. सिङ्गालसुत्तवण्णना

निदानवण्णना

२४२. **एवं मे सुतन्ति** सिङ्गालसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना– **वेळुवने कलन्दकनिवापे**ति वेळुवनन्ति तस्स उय्यानस्स नामं। तं किर वेळूहि परिक्खित्तं अहोसि अट्ठारसहत्थेन च पाकारेन गोपुरट्टालकयुत्तं नीलोभासं मनोरमं, तेन वेळुवनन्ति वुच्चति। कलन्दकानञ्चेत्थ निवापं अदंसु, तेन कलन्दकनिवापोति वुच्चति।

पुब्बे किर अञ्ञतरो राजा तत्थ उय्यानकीळनत्थं आगतो सुरामदेन मत्तो दिवा निद्दं ओक्कमि। परिजनोपिस्स "सुत्तो राजा"ति पुप्फफलादीहि पलोभियमानो इतो चितो च पक्कामि। अथ सुरागन्धेन अञ्ञतरस्मा सुसिररुक्खा कण्हसप्पो निक्खमित्वा रञ्ञो अभिमुखो आगच्छति, तं दिस्वा रुक्खदेवता "रञ्ञो जीवितं दम्मी"ति काळकवेसेन आगन्त्वा कण्णमूले सद्दमकासि। राजा पटिबुज्झि। कण्हसप्पो निवत्तो। सो तं दिस्वा "इमाय काळकाय मम जीवितं दिन्न"न्ति काळकानं तत्थ निवापं पट्ठपेसि, अभयघोसञ्च घोसापेसि। तस्मा तं ततो पभुति "कलन्दकनिवापो"ति सङ्ख्यं गतं। **कलन्दका**ति हि काळकानं एतं नामं।

तेन खो पन समयेनाति यस्मिं समये भगवा राजगहं गोचरगामं कत्वा वेळुवने कलन्दकनिवापे विहरति, तेन समयेन। **सिङ्गालको गहपतिपुत्तो**ति सिङ्गालकोति तस्स नामं। **गहपतिपुत्तो**ति गहपतिस्स पुत्तो गहपतिपुत्तो। तस्स किर पिता गहपतिमहासालो, निदहित्वा ठपिता चस्स गेहे चत्तालीस धनकोटियो अत्थि। सो भगवति निट्ठङ्गतो उपासको सोतापन्नो, भरियापिस्स सोतापन्नायेव। पुत्तो पनस्स अस्सद्धो अप्पसन्नो। अथ नं मातापितरो अभिक्खणं एवं ओवदन्ति– "तात सत्थारं उपसङ्कम, धम्मसेनापतिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महामोग्गल्लानं महाकस्सपं असीतिमहासावके उपसङ्कमा''ति। सो एवमाह– ''नत्थि मम तुम्हाकं समणानं उपसङ्कमनकिच्चं, समणानं सन्तिकं गन्त्वा वन्दितब्बं होति, ओनमित्वा वन्दन्तस्स पिट्ठि रुज्जति, जाणुकानि खरानि होन्ति, भूमियं निसीदितब्बं होति, तत्थ निसिन्नस्स वत्थानि किलिस्सन्ति जीरन्ति, समीपे निसिन्नकालतो पट्ठाय कथासल्लापो होति, तस्मिं सति विस्सासो उप्पज्जति, ततो निमन्तेत्वा चीवरपिण्डपातादीनि दातब्बानि होन्ति। एवं सन्ते अत्थो परिहायति, नत्थि मय्हं तुम्हाकं समणानं उपसङ्कमनकिच्च''न्ति। इति नं यावजीवं ओवदन्तापि मातापितरो सासने उपनेतुं नासक्खिंसु।

अथस्स पिता मरणमञ्चे निपन्नो ''मम पुत्तस्स ओवादं दातुं वट्टती''ति चिन्तेत्वा पुन चिन्तेसि– ''दिसा तात नमस्साही''ति एवमस्स ओवादं दस्सामि, सो अत्थं अजानन्तो दिसा नमस्सिस्सति, अथ नं सत्था वा सावका वा पस्सित्वा ''किं करोसी''ति पुच्छिस्सन्ति। ततो ''मय्हं पिता दिसा नमस्सनं करोहीति मं ओवदी''ति वक्खति। अथस्स ते ''न तुय्हं पिता एता दिसा नमस्सापेति, इमा पन दिसा नमस्सापेती''ति धम्मं देसेस्सन्ति। सो बुद्धसासने गुणं ञत्वा ''पुञ्ञकम्मं करिस्सती''ति। अथ नं आमन्तापेत्वा ''तात, पातोव उट्ठाय छ दिसा नमस्सेय्यासी''ति आह। मरणमञ्चे निपन्नस्स कथा नाम यावजीवं अनुस्सरणीया होति। तस्मा सो गहपतिपुत्तो तं पितुवचनं अनुस्सरन्तो तथा अकासि। तस्मा ''कालस्सेव उट्ठाय राजगहा निक्खमित्वा''तिआदि वुत्तं।

२४३. पुथुदिसाति बहुदिसा। इदानि ता दस्सेन्तो **पुरत्थिमं दिस**न्तिआदिमाह। **पाविसी**ति न ताव पविट्ठो, पविसिस्सामीति निक्खन्तत्ता पन अन्तरामग्गे वत्तमानोपि एवं वुच्चति। **अद्दसा खो भगवा**ति न इदानेव अद्दस, पच्चूससमयेपि बुद्धचक्खुना लोकं वोलोकेन्तो एतं दिसा नमस्समानं दिस्वा ''अज्ज अहं सिङ्गालस्स गहपतिपुत्तस्स गिहिविनयं सिङ्गालसुत्तन्तं कथेस्सामि, महाजनस्स सा कथा सफला भविस्सति, गन्तब्बं मया एत्था''ति। तस्मा पातोव निक्खमित्वा राजगहं पिण्डाय पाविसि, पविसन्तो च नं तथेव अद्दस। तेन वुत्तं– ''अद्दसा खो भगवा''ति। **एतदवोचा**ति सो किर अविदूरे ठितम्पि सत्थारं न पस्सति, दिसायेव नमस्सति। अथं नं भगवा सूरियरस्मिसम्फस्सेन विकसमानं महापदुमं विय मुखं विवरित्वा ''किं नु खो त्वं, गहपतिपुत्ता''तिआदिकं एतदवोच।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छदिसादिवण्णना

२४४. यथा कथं पन, भन्तेति सो किर तं भगवतो वचनं सुत्वाव चिन्तेसि "या किर मम पितरा छ दिसा नमस्सितब्बा"ति वुत्ता, न किर ता एता, अञ्ञा किर अरियसावकेन छ दिसा नमस्सितब्बा। हन्दाहं अरियसावकेन नमस्सितब्बा दिसायेव पुच्छित्वा नमस्सामीति। सो ता पुच्छन्तो **यथा कथं पन, भन्ते**तिआदिमाह। तत्थ **यथा**ति निपातमत्तं। **कथं पना**ति इदमेव पुच्छापदं। **कम्मकिलेसा**ति तेहि कम्मेहि सत्ता किलिस्सन्ति, तस्मा कम्मकिलेसाति वुच्चन्ति। **ठानेही**ति कारणेहि। **अपायमुखानी**ति विनासमुखानि। **सो**ति सो सोतापन्नो अरियसावको। **चुद्दस पापकापगतो**ति एतेहि चुद्दसहि पापकेहि लामकेहि अपगतो। **छद्दिसापटिच्छादी**ति छ दिसा पटिच्छादेन्तो। **उभोलोकविजयाया**ति उभिन्नं इधलोकपरलोकानं विजिननत्थाय। **अयञ्चेव लोको आरद्धो होती**ति एवरूपस्स हि इध लोके पञ्च वेरानि न होन्ति, तेनस्स अयञ्चेव लोको आरद्धो होति परितोसितो चेव निप्फादितो च। परलोकेपि पञ्च वेरानि न होन्ति, तेनस्स परो च लोको आराधितो होति। तस्मा सो कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति।

२४५. इति भगवा सङ्खेपेन मातिकं ठपेत्वा इदानि तमेव वित्थारेन्तो **कतमस्स चत्तारो कम्मकिलेसा**तिआदिमाह। **कम्मकिलेसो**ति कम्मञ्च तं किलेससम्पयुत्तत्ता किलेसो चाति कम्मकिलेसो। सकिलेसोयेव हि पाणं हनति, निक्किलेसो न हनति, तस्मा पाणातिपातो "कम्मकिलेसो"ति वुत्तो। **अदिन्नादानादीसु**पि एसेव नयो। **अथापरन्ति** अपरम्पि एतदत्थपरिदीपकमेव गाथाबन्धं अवोचाति अत्थो।

चतुठानादिवण्णना

२४६. पापकम्मं करोतीति इदं भगवा यस्मा कारके दस्सिते अकारको पाकटो होति, तस्मा "पापकम्मं न करोती"ति मातिकं ठपेत्वापि देसनाकुसलताय पठमतरं कारकं दस्सेन्तो आह। तत्थ **छन्दागतिं गच्छन्तो**ति छन्देन पेमेन अगतिं गच्छन्तो अकत्तब्बं करोन्तो। परपदेसुपि एसेव नयो। तत्थ यो "अयं मे मित्तो वा सम्भत्तो वा सन्दिट्ठो वा ञातको वा लञ्जं वा पन मे देती"ति छन्दवसेन अस्सामिकं सामिकं करोति, अयं छन्दागतिं गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम। यो "अयं मे वेरी"ति पकतिवेरवसेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तङ्खणुप्पन्नकोधवसेन वा सामिकं अस्सामिकं करोति, अयं दोसागतिं गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम। यो पन मन्दत्ता मोमूहत्ता यं वा तं वा वत्वा अस्सामिकं सामिकं करोति, अयं मोहागतिं गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम। यो पन "अयं राजवल्लभो वा विसमनिस्सितो वा अनत्थम्पि मे करेय्या"ति भीतो अस्सामिकं सामिकं करोति, अयं भयागतिं गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम। यो पन यंकिञ्चि भाजेन्तो "अयं मे सन्दिट्ठो वा सम्भत्तो वा"ति पेमवसेन अतिरेकं देति, "अयं मे वेरी"ति दोसवसेन ऊनकं देति, मोमूहत्ता दिन्नादिन्नं अजानमानो कस्सचि ऊनं कस्सचि अधिकं देति, "अयं इमस्मिं अदिय्यमाने मय्हं अनत्थम्पि करेय्या"ति भीतो कस्सचि अतिरेकं देति, सो चतुब्बिधोपि यथानुक्कमेन छन्दागतिआदीनि गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम।

अरियसावको पन जीवितक्खयं पापुणन्तोपि छन्दागतिआदीनि न गच्छति। तेन वुत्तं– "इमेहि चतूहि ठानेहि पापकम्मं न करोती"ति।

निहीयति यसो तस्साति तस्स अगतिगामिनो कित्तियसोपि परिवारयसोपि निहीयति परिहायति।

छअपायमुखादिवण्णना

२४७. **सुरामेरयमज्जप्पमादट्ठानानुयोगो**ति एत्थ **सुरा**ति पिट्ठसुरा पूवसुरा ओदनसुरा किण्णपक्खित्ता सम्भारसंयुत्ताति पञ्च सुरा। **मेरय**न्ति पुप्फासवो फलासवो मध्वासवो गुळासवो सम्भारसंयुत्तोति पञ्च आसवा। तं सब्बम्पि मदकरणवसेन **मज्जं**। **पमादट्ठान**न्ति पमादकारणं। याय चेतनाय तं मज्जं पिवति, तस्स एतं अधिवचनं। **अनुयोगो**ति तस्स सुरामेरयमज्जप्पमादट्ठानस्स अनुअनुयोगो पुनप्पुनं करणं। यस्मा पनेतं अनुयुत्तस्स उप्पन्ना चेव भोगा परिहायन्ति, अनुप्पन्ना च नुप्पज्जन्ति, तस्मा "भोगानं अपायमुख"न्ति वुत्तं। **विकालविसिखाचरियानुयोगो**ति अवेलाय विसिखासु चरियानुयुत्तता।

समज्जाभिचरणन्ति नच्चादिदस्सनवसेन समज्जागमनं। **आलस्यानुयोगो**ति कायालसियताय युत्तप्पयुत्तता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरामेरयस्स छआदीनवादिवण्णना

२४८. एवं छन्नं अपायमुखानं मातिकं ठपेत्वा इदानि तानि विभजन्तो **छ खो मे, गहपतिपुत्त आदीनवा**तिआदिमाह। तत्थ **सन्दिट्ठिका**ति सामं पस्सितब्बा, इधलोकभाविनी। **धनजानी**ति धनहानि। **कलहप्पवड्ढनी**ति वाचाकलहस्स चेव हत्थपरामासादिकायकलहस्स च वड्ढनी। **रोगानं आयतन**न्ति तेसं तेसं अक्खिरोगादीनं खेत्तं। **अकित्तिसञ्जननी**ति सुरं पिवित्वा हि मातरम्पि पहरन्ति पितरम्पि, अञ्ञं बहुम्पि अवत्तब्बं वदन्ति, अकत्तब्बं करोन्ति। तेन गरहम्पि दण्डम्पि हत्थपादादिछेदम्पि पापुणन्ति, इधलोकेपि परलोकेपि अकित्तिं पापुणन्ति, इति तेसं सा सुरा अकित्तिसञ्जननी नाम होति। **कोपीननिदंसनी**ति गुय्हट्ठानञ्हि विवरियमानं हिरिं कोपेति विनासेति, तस्मा "कोपीन"न्ति वुच्चति, सुरामदमत्ता च तं तं अङ्गं विवरित्वा विचरन्ति, तेन नेसं सा सुरा कोपीनस्स निदंसनतो "कोपीननिदंसनी"ति वुच्चति। **पञ्ञाय दुब्बलिकरणी**ति सागतत्थेरस्स विय कम्मस्सकतपञ्ञं दुब्बलं करोति, तस्मा "पञ्ञाय दुब्बलिकरणी"ति वुच्चति। मग्गपञ्ञं पन दुब्बलं कातुं न सक्कोति। अधिगतमग्गानञ्हि सा अन्तोमुखमेव न पविसति। **छट्ठं पद**न्ति छट्ठं कारणं।

२४९. **अत्तापिस्स अगुत्तो अरक्खितो होती**ति अवेलाय चरन्तो हि खाणुकण्टकादीनिपि अक्कमति, अहिनापि यक्खादीहिपि समागच्छति, तं तं ठानं गच्छतीति ञत्वा वेरिनोपि नं निलीयित्वा गण्हन्ति वा हनन्ति वा। एवं अत्तापिस्स अगुत्तो होति अरक्खितो। पुत्तदारापि "अम्हाकं पिता अम्हाकं सामि रत्तिं विचरति, किमङ्गं पन मय"न्ति इतिस्स पुत्तधीतरोपि भरियापि बहि पत्थनं कत्वा रत्तिं चरन्ता अनयब्यसनं पापुणन्ति। एवं **पुत्तदारोपिस्स अगुत्तो अरक्खितो होति। सापतेय्य**न्ति तस्स पुत्तदारपरिजनस्स रत्तिं चरणकभावं ञत्वा चोरा सुञ्ञं गेहं पविसित्वा यं इच्छन्ति, तं हरन्ति। एवं **सापतेय्यम्पिस्स अगुत्तं अरक्खितं होति। सङ्कियो च होती**ति अञ्ञेहि कतपापकम्मेसुपि "इमिना कतं भविस्सती"ति सङ्कितब्बो होति। यस्स यस्स घरद्वारेन याति, तत्थ यं अञ्ञेन चोरकम्मं परदारिककम्मं वा कतं, तं "इमिना कत"न्ति वुत्ते अभूतं असन्तम्पि तस्मिं रूहति पतिट्ठाति। **बहूनञ्च दुक्खधम्मान**न्ति एत्तकं दुक्खं, एत्तकं दोमनस्सन्ति वत्तुं न सक्का, अञ्ञस्मिं पुग्गले असति सब्बं विकालचारिम्हि आहरितब्बं होति, इति सो बहूनं दुक्खधम्मानं पुरक्खतो पुरेगामी होति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५०. **क्व नच्च**न्ति "कस्मिं ठाने नटनाटकादिनच्चं अत्थी"ति पुच्छित्वा यस्मिं गामे वा निगमे वा तं अत्थि, तत्थ गन्तब्बं होति, तस्स "स्वे नच्चदस्सनं गमिस्सामी"ति अज्ज वत्थगन्धमालादीनि पटियादेन्तस्सेव सकलदिवसम्पि कम्मच्छेदो होति, नच्चदस्सनेन एकाहम्पि द्वीहम्पि तीहम्पि तत्थेव होति, अथ वुट्ठिसम्पत्तियादीनि लभित्वापि वप्पादिकाले वप्पादीनि अकरोन्तस्स अनुप्पन्ना भोगा नुप्पज्जन्ति, तस्स बहि गतभावं ञत्वा अनारक्खे गेहे चोरा यं इच्छन्ति, तं करोन्ति, तेनस्स उप्पन्नापि भोगा विनस्सन्ति। **क्व गीत**न्तिआदीसुपि एसेव नयो। तेसं नानाकरणं ब्रह्मजाले वुत्तमेव।

२५१. **जयं वेर**न्ति "जितं मया"ति परिसमज्झे परस्स साटकं वा वेठनं वा गण्हाति, सो "परिसमज्झे मे अवमानं करोसि, होतु, सिक्खापेस्सामि न"न्ति तत्थ वेरं बन्धति, एवं जिनन्तो सयं वेरं पसवति। **जिनो**ति अञ्ञेन जितो समानो यं तेन तस्स वेठनं वा साटको वा अञ्ञं वा पन हिरञ्ञसुवण्णादिवित्तं गहितं, तं अनुसोचति "अहोसि वत मे, तं तं वत मे नत्थी"ति तप्पच्चया सोचति। एवं सो जिनो वित्तं अनुसोचति। **सभागतस्स वचनं न रूहती**ति विनिच्छयट्ठाने सक्खिपुट्ठस्स सतो वचनं न रूहति, न पतिट्ठाति, "अयं अक्खसोण्डो जूतकरो, मा तस्स वचनं गण्हित्था"ति वत्तारो भवन्ति। **मित्तामच्चानं परिभूतो होती**ति तञ्हि मितामच्चा एवं वदन्ति– "सम्म, त्वम्पि नाम कुलपुत्तो जूतकरो छिन्नभिन्नको हुत्वा विचरसि, न ते इदं जातिगोत्तानं अनुरूपं, इतो पट्ठाय मा एवं करेय्यासी"ति। सो एवं वुत्तोपि तेसं वचनं न करोति। ततो तेन सद्धिं एकतो न तिट्ठन्ति न निसीदन्ति। तस्स कारणा सक्खिपुट्ठापि न कथेन्ति। एवं मित्तामच्चानं परिभूतो होति।

आवाहविवाहकानन्ति आवाहका नाम ये तस्स घरतो दारिकं गहेतुकामा। विवाहका नाम ये तस्स गेहे दारिकं दातुकामा। **अपत्थितो होती**ति अनिच्छितो होति। **नालं दारभरणाया**ति दारभरणाय न समत्थो। एतस्स गेहे दारिका दिन्नापि एतस्स गेहतो आगतापि अम्हेहि एव पोसितब्बा भविस्सतियेव।

पापमित्तताय छआदीनवादिवण्णना

२५२. **धुत्ता**ति अक्खधुत्ता। **सोण्डा**ति इत्थिसोण्डा भत्तसोण्डा पूवसोण्डा मूलकसोण्डा। **पिपासा**ति पानसोण्डा। **नेकतिका**ति पतिरूपकेन वञ्चनका। **वञ्चनिका**ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मुखावञ्चनाहि वञ्चनिका। **साहसिका**ति एकागारिकादिसाहसिककम्मकारिनो। **त्यास्स मित्ता होन्ती**ति ते अस्स मित्ता होन्ति। अञ्ञेहि सप्पुरिसेहि सद्धिं न रमति गन्धमालादीहि अलङ्करित्वा वरसयनं आरोपितसूकरो गूथकूपमिव, ते पापमित्तेयेव उपसङ्कमति। तस्मा दिट्ठे चेव धम्मे सम्परायञ्च बहुं अनत्थं निगच्छति।

२५३. **अतिसीतन्ति कम्मं न करोती**ति मनुस्सेहि कालस्सेव वुट्ठाय "एथ भो कम्मन्तं गच्छामा"ति वुत्तो "अतिसीतं ताव, अट्ठीनि भिज्जन्ति विय, गच्छथ तुम्हे पच्छा जानिस्सामी"ति अग्गिं तपन्तो निसीदति। ते गन्त्वा कम्मं करोन्ति। इतरस्स कम्मं परिहायति। **अतिउण्ह**न्तिआदीसुपि एसेव नयो।

होति पानसखा नामाति एकच्चो पानट्ठाने सुरागेहेयेव सहायो होति। "पन्नसखा"तिपि पाठो, अयमेवत्थो। **सम्मियसम्मियो**ति सम्म सम्माति वदन्तो सम्मुखेयेव सहायो होति, परम्मुखे वेरीसदिसो ओतारमेव गवेसति। **अत्थेसु जातेसू**ति तथारूपेसु किच्चेसु समुप्पन्नेसु। **वेरप्पसवो**ति वेरबहुलता। **अनत्थता**ति अनत्थकारिता। **सुकदरियता**ति सुट्ठु कदरियता थद्धमच्छरियभावो। **उदकमिव इणं विगाहती**ति पासाणो उदकं विय संसीदन्तो इणं विगाहति।

रत्तिनुट्ठानदेस्सिनाति रत्तिं अनुट्ठानसीलेन। **अतिसायमिदं अहू**ति इदं अतिसायं जातन्ति ये एवं वत्वा कम्मं न करोन्ति। **इति विस्सट्ठकम्मन्ते**ति एवं वत्वा परिच्चत्तकम्मन्ते। **अत्था अच्चेन्ति माणवे**ति एवरूपे पुग्गले अत्था अतिक्कमन्ति, तेसु न तिट्ठन्ति।

तिणा भिय्योति तिणतोपि उत्तरि। **सो सुखं न विहायती**ति सो पुरिसो सुखं न जहाति, सुखसमङ्गीयेव होति। इमिना कथामग्गेन इममत्थं दस्सेति "गिहिभूतेन सता एत्तकं कम्मं न कातब्बं, करोन्तस्स वड्ढि नाम नत्थि। इधलोके परलोके गरहमेव पापुणाती"ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मित्तपतिरूपकादिवण्णना

२५४. इदानि यो एवं करोतो अनत्थो उप्पज्जति, अञ्ञानि वा पन यानि कानिचि भयानि येकेचि उपद्दवा येकेचि उपसग्गा, सब्बे ते बालं निस्साय उप्पज्जन्ति। तस्मा "एवरूपा बाला न सेवितब्बा"ति बाले मित्तपतिरूपके अमित्ते दस्सेतुं **चत्तारोमे, गहपतिपुत्त अमित्ता**तिआदिमाह। तत्थ **अञ्ञदत्थुहरो**ति सयं तुच्छहत्थो आगन्त्वा एकंसेन यंकिञ्चि हरतियेव। **वचीपरमो**ति वचनपरमो वचनमत्तेनेव दायको कारको विय होति। **अनुप्पियभाणी**ति अनुप्पियं भणति। **अपायसहायो**ति भोगानं अपायेसु सहायो होति।

२५५. एवं चत्तारो अमित्ते दस्सेत्वा पुन तत्थ एकेकं चतूहि कारणेहि विभजन्तो **चतूहि खो, गहपतिपुत्ता**तिआदिमाह। तत्थ **अञ्ञदत्थुहरो होती**ति एकंसेन हारकोयेव होति। सहायस्स गेहं रित्तहत्थो आगन्त्वा निवत्थसाटकादीनं वण्णं भासति, सो "अतिविय त्वं सम्म इमस्स वण्णं भाससी"ति अञ्ञं निवासेत्वा तं देति। **अप्पेन बहुमिच्छती**ति यंकिञ्चि अप्पकं दत्वा तस्स सन्तिका बहुं पत्थेति। **भयस्स किच्चं करोती**ति अत्तनो भये उप्पन्ने तस्स दासो विय हुत्वा तं तं किच्चं करोति, अयं सब्बदा न करोति, भये उप्पन्ने करोति, न पेमेनाति अमित्तो नाम जातो। **सेवति अत्थकारणा**ति मित्तसन्थववसेन न सेवति, अत्तनो अत्थमेव पच्चासीसन्तो सेवति।

२५६. **अतीतेन पटिसन्थरती**ति सहाये आगते "हिय्यो वा परे वा न आगतोसि, अम्हाकं इमस्मिं वारे सस्सं अतिविय निप्फन्नं, बहूनि सालियवबीजादीनि ठपेत्वा मग्गं ओलोकेन्ता निसीदिम्ह, अज्ज पन सब्बं खीण"न्ति एवं अतीतेन सङ्गण्हाति। **अनागतेना**ति "इमस्मिं वारे अम्हाकं सस्सं मनापं भविस्सति, फलभारभरिता सालिआदयो, सस्ससङ्गहे कते तुम्हाकं सङ्गहं कातुं समत्था भविस्सामा"ति एवं अनागतेन सङ्गण्हाति। **निरत्थकेना**ति हत्थिक्खन्धे वा अस्सपिट्ठे वा निसिन्नो सहायं दिस्वा "एहि, भो, इध निसीदा"ति वदति। मनापं साटकं निवासेत्वा "सहायकस्स वत मे अनुच्छविको अञ्ञो पन मय्हं नत्थी"ति वदति, एवं निरत्थकेन सङ्गण्हाति नाम। **पच्चुप्पन्नेसु किच्चेसु ब्यसनं दस्सेती**ति "सकटेन मे अत्थो"ति वुत्ते "चक्कमस्स भिन्नं, अक्खो छिन्नो"तिआदीनि वदति।

२५७. **पापकम्मिस्स अनुजानाती**ति पाणातिपातादीसु यंकिञ्चि करोमाति वुत्ते "साधु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्म करोमा''ति अनुजानाति। कल्याणेपि एसेव नयो। **सहायो होतीति** ''असुकट्ठाने सुरं पिवन्ति, एहि तत्थ गच्छामा''ति वुत्ते साधूति गच्छति। एस नयो सब्बत्थ। **इति विञ्ञायाति** ''मित्तपतिरूपका एते''ति एवं जानित्वा।

सुहदमित्तादिवण्णना

२६०. एवं न सेवितब्बे पापमित्ते दस्सेत्वा इदानि सेवितब्बे कल्याणमित्ते दस्सेन्तो पुन **चत्तारोमे, गहपतिपुत्ता**तिआदिमाह। तत्थ **सुहदाति** सुन्दरहदया।

२६१. पमत्तं रक्खतीति मज्जं पिवित्वा गाममज्झे वा गामद्वारे वा मग्गे वा निपन्नं दिस्वा ''एवंनिपन्नस्स कोचिदेव निवासनपारुपनम्पि हरेय्या''ति समीपे निसीदित्वा पबुद्धकाले गहेत्वा गच्छति। **पमत्तस्स सापतेय्यन्ति** सहायो बहिगतो वा होति सुरं पिवित्वा वा पमत्तो, गेहं अनारक्खं ''कोचिदेव यंकिञ्चि हरेय्या''ति गेहं पविसित्वा तस्स धनं रक्खति। **भीतस्साति** किस्मिञ्चिदेव भये उप्पन्ने ''मा भायि, मादिसे सहाये ठिते किं भायसी''ति तं भयं हरन्तो पटिसरणं होति। **तद्दिगुणं भोगन्ति** किच्चकरणीये उप्पन्ने सहायं अत्तनो सन्तिकं आगतं दिस्वा वदति ''कस्मा आगतोसी''ति? राजकुले कम्मं अत्थीति। किं लद्धुं वट्टतीति? एको कहापणोति। ''नगरे कम्मं नाम न एककहापणेन निप्फज्जति, द्वे गण्हाही''ति एवं यत्तकं वदति, ततो दिगुणं देति।

२६२. गुय्हमस्स आचिक्खतीति अत्तनो गुय्हं निगूहितुं युत्तकथं अञ्ञस्स अकथेत्वा तस्सेव आचिक्खति। **गुय्हमस्स परिगूहतीति** तेन कथितं गुय्हं यथा अञ्ञो न जानाति, एवं रक्खति। **आपदासु न विजहतीति** उप्पन्ने भये न परिच्चजति। **जीवितम्पिस्स अत्थायाति** अत्तनो जीवितम्पि तस्स सहायस्स अत्थाय परिच्चत्तमेव होति, अत्तनो जीवितं अगणेत्वापि तस्स कम्मं करोतियेव।

२६३. पापा निवारेतीति अम्हेसु पस्सन्तेसु पस्सन्तेसु त्वं एवं कातुं न लभसि, पञ्च वेरानि दस अकुसलकम्मपथे मा करोहीति निवारेति। **कल्याणे निवेसेतीति** कल्याणकम्मे तीसु सरणेसु पञ्चसीलेसु दसकुसलकम्मपथेसु वत्तस्सु, दानं देहि पुञ्ञं करोहि धम्मं सुणाहीति एवं कल्याणे नियोजेति। **अस्सुतं सावेतीति** अस्सुतपुब्बं सुखुमं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निपुणं कारणं सावेति। **सग्गस्स मग्गन्ति** इदं कम्मं कत्वा सग्गे निब्बत्तन्तीति एवं सग्गस्स मग्गं आचिक्खति।

२६४. **अभवेनस्स न नन्दतीति** तस्स अभवेन अवुड्ढिया पुत्तदारस्स वा परिजनस्स वा तथारूपं पारिजुञ्ञं दिस्वा वा सुत्वा वा न नन्दति, अनत्तमनो होति। **भवेनाति** वुड्ढिया तथारूपस्स सम्पत्तिं वा इस्सरियप्पटिलाभं वा दिस्वा वा सुत्वा वा नन्दति, अत्तमनो होति। **अवण्णं भणमानं निवारेतीति** "असुको विरूपो न पासादिको दुज्जातिको दुस्सीलो"ति वा वुत्ते "एवं मा भणि, रूपवा च सो पासादिको च सुजातो च सीलसम्पन्नो चा"तिआदीहि वचनेहि परं अत्तनो सहायस्स अवण्णं भणमानं निवारेति। **वण्णं भणमानं पसंसतीति** "असुको रूपवा पासादिको सुजातो सीलसम्पन्नो"ति वुत्ते "अहो सुट्ठु वदसि, सुभासितं तया, एवमेतं, एस पुरिसो रूपवा पासादिको सुजातो सीलसम्पन्नो"ति एवं अत्तनो सहायकस्स परं वण्णं भणमानं पसंसति।

२६५. **जलं अग्गीव भासतीति** रत्तिं पब्बतमत्थके जलमानो अग्गि विय विरोचति।

भोगे संहरमानस्साति अत्तानम्पि परम्पि अपीळेत्वा धम्मेन समेन भोगे सम्पिण्डेन्तस्स रासिं करोन्तस्स। **भमरस्सेव इरीयतोति** यथा भमरो पुप्फानं वण्णगन्धं अपोथयं तुण्डेनपि पक्खेहिपि रसं आहरित्वा अनुपुब्बेन चक्कप्पमाणं मधुपटलं करोति, एवं अनुपुब्बेन महन्तं भोगरासिं करोन्तस्स। **भोगा सन्निचयं यन्तीति** तस्स भोगा निचयं गच्छन्ति। कथं? अनुपुब्बेन उपचिकाहि संवड्ढियमानो वम्मिको विय। तेनाह "वम्मिकोवुपचीयती"ति। यथा वम्मिको उपचियति, एवं निचयं यन्तीति अत्थो।

समाहत्वाति समाहरित्वा। **अलमत्थोति** युत्तसभावो समत्थो वा परियत्तरूपो घरावासं सण्ठापेतुं।

इदानि यथा वा घरावासो सण्ठपेतब्बो, तथा ओवदन्तो **चतुधा विभजे भोगेति**आदिमाह। तत्थ **स वे मित्तानि गन्थतीति** सो एवं विभजन्तो मित्तानि गन्थति नाम अभेज्जमानानि ठपेति। यस्स हि भोगा सन्ति, सो एव मित्ते ठपेतुं सक्कोति, न इतरो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकेन भोगे भुञ्जेय्याति एकेन कोट्ठासेन भोगे भुञ्जेय्य। **द्वीहि कम्मं पयोजये**ति द्वीहि कोट्ठासेहि कसिवाणिज्जादिकम्मं पयोजेय्य। **चतुत्थञ्च निधापेय्या**ति चतुत्थं कोट्ठासं निधापेत्वा ठपेय्य। **आपदासु भविस्सती**ति कुलानञ्हि न सब्बकालं एकसदिसं वत्तति, कदाचि राजादिवसेन आपदापि उप्पज्जन्ति, तस्मा एवं आपदासु उप्पन्नासु भविस्सतीति "एकं कोट्ठासं निधापेय्या"ति आह। इमेसु पन चतूसु कोट्ठासेसु कतरकोट्ठासं गहेत्वा कुसलं कातब्बन्ति? "भोगे भुञ्जेय्या"ति वुत्तकोट्ठासं। ततो गण्हित्वा भिक्खूनम्पि कपणद्धिकादीनम्पि दातब्बं, पेसकारन्हापितादीनम्पि वेतनं दातब्बं।

छद्दिसापटिच्छादनकण्डवण्णना

२६६. इति भगवा एत्तकेन कथामग्गेन एवं गहपतिपुत्तस्स अरियसावको चतूहि कारणेहि अकुसलं पहाय छहि कारणेहि भोगानं अपायमुखं वज्जेत्वा सोळस मित्तानि सेवन्तो घरावासं सण्ठपेत्वा दारभरणं करोन्तो धम्मिकेन आजीवेन जीवति, देवमनुस्सानञ्च अन्तरे अग्गिक्खन्धो विय विरोचतीति वज्जनीयधम्मवज्जनत्थं सेवितब्बधम्मसेवनत्थञ्च ओवादं दत्वा इदानि नमस्सितब्बा छ दिसा दस्सेन्तो **कथञ्च गहपतिपुत्ता**तिआदिमाह।

तत्थ **छद्दिसापटिच्छादी**ति यथा छहि दिसाहि आगमनभयं न आगच्छति, खेमं होति निब्भयं एवं विहरन्तो "छद्दिसापटिच्छादी"ति वुच्चति। "पुरत्थिमा दिसा मातापितरो वेदितब्बा"तिआदीसु **मातापितरो** पुब्बुपकारिताय **पुरत्थिमा दिसा**ति वेदितब्बा। **आचरिया** दक्खिणेय्यताय **दक्खिणा दिसा**ति। **पुत्तदारा** पिट्ठितो अनुबन्धनवसेन **पच्छिमा दिसा**ति। **मित्तामच्चा** यस्मा सो मित्तामच्चे निस्साय ते ते दुक्खविसेसे उत्तरति, तस्मा **उत्तरा दिसा**ति। **दासकम्मकरा** पादमूले पतिट्ठानवसेन **हेट्ठिमा दिसा**ति। **समणब्राह्मणा** गुणेहि उपरि ठितभावेन **उपरिमा दिसा**ति वेदितब्बा।

२६७. भतो ने भरिस्सामीति अहं मातापितूहि थञ्ञं पायेत्वा हत्थपादे वड्ढेत्वा मुखेन सिङ्घाणिकं अपनेत्वा नहापेत्वा मण्डेत्वा भतो भरितो जग्गितो, स्वाहं अज्ज ते महल्लके पादधोवनन्हापनयागुभत्तदानादीहि भरिस्सामि।

किच्चं नेसं करिस्सामीति अत्तनो कम्मं ठपेत्वा मातापितूनं राजकुलादीसु उप्पन्नं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किच्चं गन्त्वा करिस्सामि। **कुलवंसं सण्ठपेस्सामी**ति मातापितूनं सन्तकं खेत्तवत्थुहिरञ्ञसुवण्णादिं अविनासेत्वा रक्खन्तोपि कुलवंसं सण्ठपेति नाम। मातापितरो अधम्मिकवंसतो हारेत्वा धम्मिकवंसे ठपेन्तोपि, कुलवंसेन आगतानि सलाकभत्तादीनि अनुपच्छिन्दित्वा पवत्तेन्तोपि कुलवंसं सण्ठपेति नाम। इदं सन्धाय वुत्तं– "कुलवंसं सण्ठपेस्सामी"ति।

दायज्जं पटिपज्जामीति मातापितरो अत्तनो ओवादे अवत्तमाने मिच्छापटिपन्ने दारके विनिच्छयं पत्वा अपुत्ते करोन्ति, ते दायज्जारहा न होन्ति। ओवादे वत्तमाने पन कुलसन्तकस्स सामिके करोन्ति, अहं एवं वत्तिस्सामीति अधिप्पायेन "दायज्जं पटिपज्जामी"ति वुत्तं।

दक्खिणं अनुप्पदस्सामीति तेसं पत्तिदानं कत्वा ततियदिवसतो पट्ठाय दानं अनुप्पदस्सामि। **पापा निवारेन्ती**ति पाणातिपातादीनं दिट्ठधम्मिकसम्परायिकं आदीनवं वत्वा, "तात, मा एवरूपं करी"ति निवारेन्ति, कतम्पि गरहन्ति। **कल्याणे निवेसेन्ती**ति अनाथपिण्डिको विय लञ्जं दत्वापि सीलसमादानादीसु निवेसेन्ति। **सिप्पं सिक्खापेन्ती**ति अत्तनो ओवादे ठितभावं ञत्वा वंसानुगतं मुद्दागणनादिसिप्पं सिक्खापेन्ति। **पतिरूपेना**ति कुलसीलरूपादीहि अनुरूपेन।

समये दायज्जं निय्यादेन्तीति समये धनं देन्ति। तत्थ निच्चसमयो कालसमयोति द्वे समया। **निच्चसमये** देन्ति नाम "उट्ठाय समुट्ठाय इमं गण्हितब्बं गण्ह, अयं ते परिब्बयो होतु, इमिना कुसलं करोही"ति देन्ति। **कालसमये** देन्ति नाम सिखाठपनआवाहविवाहादिसमये देन्ति। अपिच पच्छिमे काले मरणमञ्चे निपन्नस्स "इमिना कुसलं करोही"ति देन्तापि समये देन्ति नाम। **पटिच्छन्ना होती**ति यं पुरत्थिमदिसतो भयं आगच्छेय्य, यथा तं नागच्छति, एवं पिहिता होति। सचे हि पुत्ता विप्पटिपन्ना, अस्सु, मातापितरो दहरकालतो पट्ठाय जग्गनादीहि सम्मा पटिपन्ना, एते दारका, मातापितूनं अप्पतिरूपाति एतं भयं आगच्छेय्य। पुत्ता सम्मा पटिपन्ना, मातापितरो विप्पटिपन्ना, मातापितरो पुत्तानं नानुरूपाति एतं भयं आगच्छेय्य। उभोसु विप्पटिपन्नेसु दुविधम्पि तं भयं होति। सम्मा पटिपन्नेसु सब्बं न होति। तेन वुत्तं– "पटिच्छन्ना होति खेमा अप्पटिभया"ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवञ्च पन वत्वा भगवा सिङ्गालकं एतदवोच– "न खो ते, गहपतिपुत्त, पिता लोकसम्मतं पुरत्थिमं दिसं नमस्सापेति। मातापितरो पन पुरत्थिमदिसासदिसे कत्वा नमस्सापेति। अयञ्हि ते पितरा पुरत्थिमा दिसा अक्खाता, नो अञ्ञा"ति।

२६८. **उट्ठानेना**ति आसना उट्ठानेन। अन्तेवासिकेन हि आचरियं दूरतोव आगच्छन्तं दिस्वा आसना वुट्ठाय पच्चुग्गमनं कत्वा हत्थतो भण्डकं गहेत्वा आसनं पञ्ञपेत्वा निसीदापेत्वा बीजनपादधोवनपादमक्खनानि कातब्बानि। तं सन्धाय वुत्तं "उट्ठानेना"ति। **उपट्ठानेना**ति दिवसस्स तिक्खत्तुं उपट्ठानगमनेन। सिप्पुग्गहणकाले पन अवस्सकमेव गन्तब्बं होति। **सुस्सूसाया**ति सद्दहित्वा सवनेन। असद्दहित्वा सुणन्तो हि विसेसं नाधिगच्छति। **पारिचरियाया**ति अवसेसखुद्दकपारिचरियाय। अन्तेवासिकेन हि आचरियस्स पातोव वुट्ठाय मुखोदकदन्तकट्ठं दत्वा भत्तकिच्चकालेपि पानीयं गहेत्वा पच्चुपट्ठानादीनि कत्वा वन्दित्वा गन्तब्बं। किलिट्ठवत्थादीनि धोवितब्बानि, सायं नहानोदकं पच्चुपट्ठपेतब्बं। अफासुकाले उपट्ठातब्बं। पब्बजितेनपि सब्बं अन्तेवासिकवत्तं कातब्बं। इदं सन्धाय वुत्तं– "पारिचरियाया"ति। **सक्कच्चं सिप्पपटिग्गहणेना**ति सक्कच्चं पटिग्गहणं नाम थोकं गहेत्वा बहुवारे सज्झायकरणं, एकपदम्पि विसुद्धमेव गहेतब्बं।

सुविनीतं विनेन्तीति "एवं ते निसीदितब्बं, एवं ठातब्बं, एवं खादितब्बं, एवं भुञ्जितब्बं, पापमित्ता वज्जेतब्बा, कल्याणमित्ता सेवितब्बा"ति एवं आचारं सिक्खापेन्ति विनेन्ति। **सुग्गहितं गाहापेन्ती**ति यथा सुग्गहितं गण्हाति, एवं अत्थञ्च ब्यञ्जनञ्च सोधेत्वा पयोगं दस्सेत्वा गण्हापेन्ति। **मित्तामच्चेसु पटियादेन्ती**ति "अयं अम्हाकं अन्तेवासिको ब्यत्तो बहुस्सुतो मया समसमो, एतं सल्लक्खेय्याथा"ति एवं गुणं कथेत्वा मित्तामच्चेसु पतिट्ठपेन्ति।

दिसासु परित्ताणं करोन्तीति सिप्पसिक्खापनेनेवस्स सब्बदिसासु रक्खं करोन्ति। उग्गहितसिप्पो हि यं यं दिसं गन्त्वा सिप्पं दस्सेति, तत्थ तत्थस्स लाभसक्कारो उप्पज्जति। सो आचरियेन कतो नाम होति, गुणं कथेन्तोपिस्स महाजनो आचरियपादे धोवित्वा वसितअन्तेवासिको वत अयन्ति पठमं आचरियस्सेव गुणं कथेन्ति, ब्रह्मलोकप्पमाणोपिस्स लाभो उप्पज्जमानो आचरियसन्तकोव होति। अपिच यं विज्जं परिजप्पित्वा गच्छन्तं अटवियं चोरा न पस्सन्ति, अमनुस्सा वा दीघजातिआदयो वा न विहेठेन्ति, तं सिक्खापेन्तापि दिसासु परित्ताणं करोन्ति। यं वा सो दिसं गतो होति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततो कङ्खं उप्पादेत्वा अत्तनो सन्तिकं आगतमनुस्से "एतिस्सं दिसायं अम्हाकं अन्तेवासिको वसति, तस्स च मय्हञ्च इमस्मिं सिप्पे नानाकरणं नत्थि, गच्छथ तमेव पुच्छथा"ति एवं अन्तेवासिकं पग्गण्हन्तापि तस्स तत्थ लाभसक्कारुप्पत्तिया परित्ताणं करोन्ति नाम, पतिट्ठं करोन्तीति अत्थो। सेसमेत्थ पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

२६९. ततियदिसावारे **सम्माननाया**ति देवमाते तिस्समातेति एवं सम्भावितकथाकथनेन। **अनवमाननाया**ति यथा दासकम्मकरादयो पोथेत्वा विहेठेत्वा कथेन्ति, एवं हीळेत्वा विमानेत्वा अकथनेन। **अनतिचरियाया**ति तं अतिक्कमित्वा बहि अञ्ञाय इत्थिया सद्धिं परिचरन्तो तं अतिचरति नाम, तथा अकरणेन। **इस्सरियवोस्सग्गेना**ति इत्थियो हि महालतासदिसम्पि आभरणं लभित्वा भत्तं विचारेतुं अलभमाना कुज्झन्ति, कटच्छुं हत्थे ठपेत्वा तव रुचिया करोहीति भत्तगेहे विस्सट्ठे सब्बं इस्सरियं विस्सट्ठं नाम होति, एवं करणेनाति अत्थो। **अलङ्कारानुप्पदानेना**ति अत्तनो विभवानुरूपेन अलङ्कारदानेन। **सुसंविहितकम्मन्ता**ति यागुभत्तपचनकालादीनि अनतिक्कमित्वा तस्स तस्स साधुकं करणेन सुट्ठु संविहितकम्मन्ता। **सङ्गहितपरिजना**ति सम्माननादीहि चेव पहेणकपेसनादीहि च सङ्गहितपरिजना। इध परिजनो नाम सामिकस्स चेव अत्तनो च ञातिजनो। **अनतिचारिनी**ति सामिकं मुञ्चित्वा अञ्ञं मनसापि न पत्थेति। **सम्भतन्ति** कसिवाणिज्जादीनि कत्वा आभतधनं। **दक्खा च होती**ति यागुभत्तसम्पादनादीसु छेका निपुणा होति। **अनलसा**ति निक्कोसज्जा। यथा अञ्ञा कुसीता निसिन्नट्ठाने निसिन्नाव होन्ति ठितट्ठाने ठिताव, एवं अहुत्वा विप्फारितेन चित्तेन सब्बकिच्चानि निप्फादेति। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

२७०. चतुत्थदिसावारे **अविसंवादनताया**ति यस्स यस्स नामं गण्हाति, तं तं अविसंवादेत्वा इदम्पि अम्हाकं गेहे अत्थि, इदम्पि अत्थि, गहेत्वा गच्छाहीति एवं अविसंवादेत्वा दानेन। **अपरपजा चस्स पटिपूजेन्ती**ति सहायस्स पुत्तधीतरो पजा नाम, तेसं पन पुत्तधीतरो च नत्तुपनत्तका च अपरपजा नाम। ते पटिपूजेन्ति केळायन्ति ममायन्ति मङ्गलकालादीसु तेसं मङ्गलादीनि करोन्ति। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव वेदितब्बं।

२७१. यथाबलं कम्मन्तसंविधानेनाति दहरेहि कातब्बं महल्लकेहि, महल्लकेहि वा कातब्बं दहरेहि, इत्थीहि कातब्बं पुरिसेहि, पुरिसेहि वा कातब्बं इत्थीहि अकारेत्वा तस्स तस्स बलानुरूपेनेव कम्मन्तसंविधानेन। **भत्तवेतनानुप्पदानेना**ति अयं खुद्दकपुत्तो, अयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकविहारीति तस्स तस्स अनुरूपं सल्लक्खेत्वा भत्तदानेन चेव परिब्बयदानेन च। **गिलानुपट्ठानेना**ति अफासुककाले कम्मं अकारेत्वा सप्पायभेसज्जादीनि दत्वा पटिजग्गनेन। **अच्छरियानं रसानं संविभागेना**ति अच्छरिये मधुररसे लभित्वा सयमेव अखादित्वा तेसम्पि ततो संविभागकरणेन। **समये वोस्सग्गेना**ति निच्चसमये च कालसमये च वोस्सज्जनेन। **निच्चसमये** वोस्सज्जनं नाम सकलदिवसं कम्मं करोन्ता किलमन्ति। तस्मा यथा न किलमन्ति, एवं वेलं ञत्वा विस्सज्जनं। **कालसमये** वोस्सग्गो नाम छणनक्खत्तकीळादीसु अलङ्कारभण्डखादनीयभोजनीयादीनि दत्वा विस्सज्जनं। **दिन्नादायिनो**ति चोरिकाय किञ्चि अगहेत्वा सामिकेहि दिन्नस्सेव आदायिनो। **सुकतकम्मकरा**ति "किं एतस्स कम्मेन कतेन, न मयं किञ्चि लभामा"ति अनुज्झायित्वा तुट्ठहदया यथा तं कम्मं सुकतं होति, एवं कारका। **कित्तिवण्णहरा**ति परिसमज्झे कथाय सम्पत्ताय "को अम्हाकं सामिकेहि सदिसो अत्थि, मयं अत्तनो दासभावम्पि न जानाम, तेसं सामिकभावम्पि न जानाम, एवं नो अनुकम्पन्ती"ति गुणकथाहारका। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

२७२. **मेत्तेन कायकम्मेना**तिआदीसु मेत्तचित्तं पच्चुपट्ठपेत्वा कतानि कायकम्मादीनि मेत्तानि नाम वुच्चन्ति। तत्थ भिक्खू निमन्तेस्सामीति विहारगमनं, धमकरणं गहेत्वा उदकपरिस्सावनं, पिट्ठिपरिकम्मपादपरिकम्मादिकरणञ्च मेत्तं **कायकम्मं** नाम। भिक्खू पिण्डाय पविट्ठे दिस्वा "सक्कच्चं यागुं देथ, भत्तं देथा"तिआदिवचनञ्चेव, साधुकारं दत्वा धम्मसवनञ्च सक्कच्चं पटिसन्थारकरणादीनि च मेत्तं **वचीकम्मं** नाम। "अम्हाकं कुलूपकत्थेरा अवेरा होन्तु अब्यापज्जा"ति एवं चिन्तनं मेत्तं **मनोकम्मं** नाम। **अनावटद्वारताया**ति अपिहितद्वारताय। तत्थ सब्बद्वारानि विवरित्वापि सीलवन्तानं अदायको अकारको पिहितद्वारोयेव। सब्बद्वारानि पन पिदहित्वापि तेसं दायको कारको विवटद्वारोयेव। इति सीलवन्तेसु गेहद्वारं आगतेसु सन्तंयेव नत्थीति अवत्वा दातब्बं। एवं अनावटद्वारता नाम होति।

आमिसानुप्पदानेनाति पुरेभत्तं परिभुञ्जितब्बकं आमिसं नाम, तस्मा सीलवन्तानं यागुभत्तसम्पदानेनाति अत्थो। **कल्याणेन मनसा अनुकम्पन्ती**ति "सब्बे सत्ता सुखिता होन्तु अवेरा अरोगा अब्यापज्जा"ति एवं हितफरणेन। अपिच उपट्ठाकानं गेहं अञ्ञे सीलवन्ते सब्रह्मचारी गहेत्वा पविसन्तापि कल्याणेन चेतसा अनुकम्पन्ति नाम। **सुतं परियोदापेन्ती**ति यं तेसं पकतिया सुतं अत्थि, तस्स अत्थं कथेत्वा कङ्खं विनोदेन्ति, तथत्ताय वा पटिपज्जापेन्ति। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७३. **अलमत्तो**ति पुत्तदारभरणं कत्वा अगारं अज्झावसनसमत्थो। **पण्डितो**ति दिसानमस्सनट्ठाने पण्डितो हुत्वा। **सण्हो**ति सुखुमत्थदस्सनेन सण्हवाचाभणनेन वा सण्हो हुत्वा। **पटिभानवा**ति दिसानमस्सनट्ठाने पटिभानवा हुत्वा **निवातवुत्ती**ति नीचवुत्ति। **अत्थद्धो**ति थम्भरहितो। **उट्ठानको**ति उट्ठानवीरियसम्पन्नो। **अनलसो**ति निक्कोसज्जो। **अच्छिन्नवुत्ती**ति निरन्तरकरणवसेन अखण्डवुत्ति। **मेधावी**ति ठानुप्पत्तिया पञ्ञाय समन्नागतो।

सङ्गाहकोति चतूहि सङ्गहवत्थूहि सङ्गहकरो। **मित्तकरो**ति मित्तगवेसनो। **वदञ्ञू**ति पुब्बकारिना, वुत्तवचनं जानाति। सहायकस्स घरं गतकाले "मय्हं सहायकस्स वेठनं देथ, साटकं देथ, मनुस्सानं भत्तवेतनं देथा"ति वुत्तवचनमनुस्सरन्तो तस्स अत्तनो गेहं आगतस्स तत्तकं वा ततो अतिरेकं वा पटिकत्ताति अत्थो। अपिच सहायकस्स घरं गन्त्वा इमं नाम गण्हिस्सामीति आगतं सहायकं लज्जाय गण्हितुं असक्कोन्तं अनिच्छारितम्पि तस्स वाचं ञत्वा येन अत्थेन सो आगतो, तं निप्फादेन्तो वदञ्ञू नाम। येन येन वा पन सहायकस्स ऊनं होति, ओलोकेत्वा तं तं देन्तोपि वदञ्ञूयेव। **नेता**ति तं तं अत्थं दस्सेन्तो पञ्ञाय नेता। विविधानि कारणानि दस्सेन्तो नेतीति **विनेता**। पुनप्पुनं नेतीति **अनुनेता**।

तत्थ तत्थाति तस्मिं तस्मिं पुग्गले। **रथस्साणीव यायतो**ति यथा आणिया सतियेव रथो याति, असति न याति, एवं इमेसु सङ्गहेसु सतियेव लोको वत्तति, असति न वत्तति। तेन वुत्तं– "एते खो सङ्गहा लोके, रथस्साणीव यायतो"ति।

न माता पुत्तकारणाति यदि माता एते सङ्गहे पुत्तस्स न करेय्य, पुत्तकारणा मानं वा पूजं वा न लभेय्य।

सङ्गहा एतेति उपयोगवचने पच्चत्तं। "सङ्गहे एते"ति वा पाठो। **सम्मपेक्खन्ती**ति सम्मा पेक्खन्ति। **पासंसा च भवन्ती**ति पसंसनीया च भवन्ति।

२७४. इति भगवा या दिसा सन्धाय ते गहपतिपुत्त पिता आह "दिसा नमस्सेय्यासी"ति, इमा ता छ दिसा। यदि त्वं पितु वचनं करोसि, इमा दिसा नमस्साति दस्सेन्तो सिङ्गालस्स पुच्छाय ठत्वा देसनं मत्थकं पापेत्वा राजगहं पिण्डाय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाविसि। सिङ्गालकोपि सरणेसु पतिट्ठाय चत्तालीसकोटिधनं बुद्धसासने विकिरित्वा पुञ्ञकम्मं कत्वा सग्गपरायणो अहोसि। इमस्मिञ्च पन सुत्ते यं गिहीहि कत्तब्बं कम्मं नाम, तं अकथितं नत्थि, **गिहिविनयो नामायं सुत्तन्तो**। तस्मा इमं सुत्वा यथानुसिट्ठं पटिपज्जमानस्स वुड्ढियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानीति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

सिङ्गालसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. आटानाटियसुत्तवण्णना

पठमभाणवारवण्णना

२७५. **एवं मे सुत**न्ति आटानाटियसुत्तं। तत्रायमपुब्बपदवण्णना– **चतुद्दिसं रक्खं ठपेत्वा**ति असुरसेनाय निवारणत्थं सक्कस्स देवानमिन्दस्स चतूसु दिसासु आरक्खं ठपेत्वा। **गुम्बं ठपेत्वा**ति बलगुम्बं ठपेत्वा। **ओवरणं ठपेत्वा**ति चतूसु दिसासु आरक्खके ठपेत्वा। एवं सक्कस्स देवानमिन्दस्स आरक्खं सुसंविहितं कत्वा आटानाटनगरे निसिन्ना सत्त बुद्धे आरब्भ इमं परित्तं बन्धित्वा "ये सत्थु धम्मआणं अम्हाकञ्च राजआणं न सुणन्ति, तेसं इदञ्चिदञ्च करिस्सामा"ति सावनं कत्वा अत्तनोपि चतूसु दिसासु महतिया च यक्खसेनायातिआदीहि चतूहि सेनाहि आरक्खं संविदहित्वा अभिक्कन्ताय रत्तिया...पे०... एकमन्तं निसीदिंसु।

अभिक्कन्ताय रत्तियाति एत्थ अभिक्कन्तसद्दो खयसुन्दराभिरूपअब्भनुमोदनादीसु दिस्सति। तत्थ "अभिक्कन्ता, भन्ते रत्ति, निक्खन्तो पठमो यामो, चिरनिसिन्नो भिक्खुसङ्घो उद्दिसतु, भन्ते, भगवा भिक्खूनं पातिमोक्ख"न्ति (अ० नि० ३.८.२०) एवमादीसु खये दिस्सति। "अयं इमेसं चतुन्नं पुग्गलानं अभिक्कन्ततरो पणीततरो चा"ति (अ० नि० १.४.१००) एवमादीसु सुन्दरे।

"को मे वन्दति पादानि, इद्धिया यससा जलं।
अभिक्कन्तेन वण्णेन, सब्बा ओभासयं दिसा"ति।। (वि० व० ८५७)

एवमादीसु अभिरूपे। "अभिक्कन्तं, भो गोतमा,ति (पारा० १५) एवमादीसु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भनुमोदने। इध पन खये। तेन अभिक्कन्ताय रत्तिया, परिक्खीणाय रत्तियाति वुत्तं होति।

अभिक्कन्तवण्णाति इध अभिक्कन्तसद्दो अभिरूपे। वण्णसद्दो पन छविथुतिकुलवग्गकारणसण्ठानपमाणरूपायतनादीसु दिस्सति। तत्थ "सुवण्णवण्णोसि भगवा"ति (म० नि० २.३९९) एवमादीसु छवियं। "कदा सञ्ञूळ्हा पन ते, गहपति, इमे समणस्स गोतमस्स वण्णा"ति (म० नि० २.७७) एवमादीसु थुतियं। "चत्तारोमे, भो गोतम, वण्णा"ति (दी० नि० १.२६६) एवमादीसु कुलवग्गे। "अथ केन नु वण्णेन गन्धथेनोति वुच्चती"तिआदीसु (सं० नि० १.२३४) कारणे। "महन्तं हत्थिराजवण्णं अभिनिम्मिनित्वा"ति (सं० नि०१.१.१३८) एवमादीसु सण्ठाने। "तयो पत्तस्स वण्णा"ति (पारा० ६०२) एवमादीसु पमाणे। "वण्णो गन्धो रसो ओजा"ति एवमादीसु रूपायतने। सो इध छवियं दट्ठब्बो। तेन "अभिक्कन्तवण्णा अभिरूपच्छवी"ति वुत्तं होति।

केवलकप्पन्ति एत्थ केवलसद्दो अनवसेसयेभुय्यअब्यामिस्सानतिरेकदळ्हत्थ-विसंयोगादिअनेकत्थो। तथा हिस्स "केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरिय"न्ति (पारा० १) एवमादीसु अनवसेसता अत्थो। "केवलकप्पा च अङ्गमागधा पहूतं खादनीयं भोजनीयं आदाय अभिक्कमितुकामा होन्ती"ति (महाव० ४३) एवमादीसु येभुय्यता। "केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होती"ति (महाव० १) एवमादीसु अब्यामिस्सता। "केवलं सद्धामत्तकं नून अयमायस्मा"ति (अ० नि० २.६.५५) एवमादीसु अनतिरेकता। "आयस्मतो, भन्ते, अनुरुद्धस्स बाहिको नाम सद्धिविहारिको केवलकप्पं सङ्घभेदाय ठितो"ति (अ० नि० १.४.२४३) एवमादीसु दळ्हत्थता। "केवली वुसितवा उत्तमपुरिसोति वुच्चती"ति (अ० नि० ३.१०.१२) एवमादीसु विसंयोगो। इध पनस्स अनवसेसत्थो अधिप्पेतो।

कप्पसद्दो पनायं अभिसद्दहनवोहारकालपञ्ञत्तिछेदनविकप्पलेससमन्तभावादिअनेकत्थो। तथा हिस्स "ओकप्पनियमेतं भोतो गोतमस्स। यथा तं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्सा"ति (म० नि० १.३८७) एवमादीसु अभिसद्दहनमत्थो। "अनुजानामि, भिक्खवे, पञ्चहि समणकप्पेहि फलं परिभुञ्जितु"न्ति (चूळव० २५०) एवमादीसु वोहारो। "येन सुदं निच्चकप्पं विहरामी"ति (म० नि० १.३८७) एवमादीसु कालो। "इच्चायस्मा कप्पो"ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(सु० नि० १०९८) एवमादीसु पञ्ञत्ति। "अलङ्कतो कप्पितकेसमस्सू"ति (वि० व० १०९४) एवमादीसु छेदनं। "कप्पति द्वङ्गुलकप्पो"ति (चूळव० ४४६) एवमादीसु विकप्पो, अत्थि कप्पो निपज्जितु"न्ति (अ० नि० ३.८.८०) एवमादीसु लेसो। "केवलकप्पं वेळुवनं ओभासेत्वा"ति (सं० नि० १.१.९४) एवमादीसु समन्तभावो। इध पन समन्तभावो अत्थो अधिप्पेतो। तस्मा "केवलकप्पं गिज्झकूट"न्ति एत्थ अनवसेसं समन्ततो गिज्झकूटन्ति एवमत्थो दट्ठब्बो।

ओभासेत्वाति वत्थमालालङ्कारसरीरसमुट्ठिताय आभाय फरित्वा, चन्दिमा विय सूरियो विय च एकोभासं एकपज्जोतं करित्वाति अत्थो। **एकमन्तं निसीदिंसू**ति देवतानं दसबलस्स सन्तिके निसिन्नट्ठानं नाम न बहु, इमस्मिं पन सुत्ते परित्तगारववसेन निसीदिंसु।

२७६. **वेस्सवणो**ति किञ्चापि चत्तारो महाराजानो आगता, वेस्सवणो पन दसबलस्स विस्सासिको कथापवत्तने ब्यत्तो सुसिक्खितो, तस्मा वेस्सवणो महाराजा भगवन्तं एतदवोच। **उळारा**ति महेसक्खानुभावसम्पन्ना। **पाणातिपाता वेरमणिया**ति पाणातिपाते दिट्ठधम्मिकसम्परायिकं आदीनवं दस्सेत्वा ततो वेरमणिया धम्मं देसेति। सेसेसुपि एसेव नयो। **तत्थ सन्ति उळारा यक्खा निवासिनो**ति तेसु सेनासनेसु सन्ति उळारा यक्खा निबद्धवासिनो। **आटानाटिय**न्ति आटानाटनगरे बद्धत्ता एवंनामं। किं पन भगवतो अपच्चक्खधम्मो नाम अत्थीति, नत्थि। अथ कस्मा वेस्सवणो "उग्गण्हातु, भन्ते, भगवा"तिआदिमाह? ओकासकरणत्थं। सो हि भगवन्तं इमं परित्तं सावेतुं ओकासं कारेन्तो एवमाह। सत्थु कथिते इमं परित्तं गरु भविस्सतीतिपि आह। **फासुविहाराया**ति गमनट्ठानादीसु चतूसु इरियापथेसु सुखविहाराय।

२७७. **चक्खुमन्तस्सा**ति न विपस्सीयेव चक्खुमा, सत्तपि बुद्धा चक्खुमन्तो, तस्मा एकेकस्स बुद्धस्स एतानि सत्त सत्त नामानि होन्ति। सब्बेपि बुद्धा चक्खुमन्तो, सब्बे सब्बभूतानुकम्पिनो, सब्बे न्हातकिलेसत्ता न्हातका। सब्बे मारसेनापमद्दिनो, सब्बे वुसितवन्तो, सब्बे विमुत्ता, सब्बे अङ्गतो रस्मीनं निक्खन्तत्ता अङ्गीरसा। न केवलञ्च बुद्धानं एतानेव सत्त नामानि असङ्ख्येय्यानि नामानि सगुणेन महेसिनोति वुत्तं।

वेस्सवणो पन अत्तनो पाकटनामवसेन एवमाह। **ते जना**ति इध खीणासवा जनाति अधिप्पेता। **अपिसुणाथा**ति देसनासीसमत्तमेतं, अमुसा अपिसुणा अफरुसा मन्तभाणिनोति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थो। **महत्ता**ति महन्तभावं पत्ता। "महन्ता"तिपि पाठो, महन्ताति अत्थो। **वीतसारदा**ति निस्सारदा विगतलोमहंसा।

हितन्ति मेत्ताफरणेन हितं। **यं नमस्सन्ती**ति एत्थ यन्ति निपातमत्तं। **महत्तन्ति** महन्तं। अयमेव वा पाठो, इदं वुत्तं होति "ये चापि लोके किलेसनिब्बानेन निब्बुता यथाभूतं विपस्सिसुं, विज्जादिगुणसम्पन्नञ्च हितं देवमनुस्सानं गोतमं नमस्सन्ति, ते जना अपिसुणा, तेसम्पि नमत्थू"ति। अट्ठकथायं पन ते जना अपिसुणाति ते बुद्धा अपिसुणाति एवं पठमगाथाय बुद्धानंयेव वण्णो कथितो, तस्मा पठमगाथा सत्तन्नं बुद्धानं वसेन वुत्ता। दुतियगाथाय "गोतम"न्ति देसनामुखमत्तमेतं। अयम्पि हि सत्तन्नंयेव वसेन वुत्ताति वेदितब्बा। अयञ्हेत्थ अत्थो– लोके पण्डिता देवमनुस्सा यं नमस्सन्ति गोतमं, तस्स च ततो पुरिमानञ्च बुद्धानं नमत्थूति।

२७८. **यतो उग्गच्छती**ति यतो ठानतो उदेति। **आदिच्चो**ति अदितिया पुत्तो, वेवचनमत्तं वा एतं सूरियसद्दस्स। महन्तं मण्डलं अस्साति **मण्डलीमहा। यस्स चुग्गच्छमानस्सा**ति यम्हि उग्गच्छमाने। **संवरीपि निरुज्झती**ति रत्ति अन्तरधायति। **यस्स चुग्गते**ति यस्मिं उग्गते।

रहदोति उदकरहदो। **तत्था**ति यतो उग्गच्छति सूरियो, तस्मिं ठाने। **समुद्दो**ति यो सो रहदोति वुत्तो, सो न अञ्ञो, अथ खो समुद्दो। **सरितोदको**ति विसटोदको, सरिता नानप्पकारा नदियो अस्स उदके पविट्ठाति वा **सरितोदको। एवं तं तत्थ जानन्ती**ति तं रहदं तत्थ एवं जानन्ति। किन्ति जानन्ति ? समुद्दो सरितोदकोति एवं जानन्ति।

इतोति सिनेरुतो वा तेसं निसिन्नट्ठानतो वा। **जनो**ति अयं महाजनो। **एकनामा**ति इन्दनामेन एकनामा। सब्बेसं किर तेसं सक्कस्स देवरञ्ञो नाममेव नाममकंसु। **असीति दस एको चा**ति एकनवुतिजना। **इन्दनामा**ति इन्दोति एवंनामा। **बुद्धं आदिच्चबन्धुनन्ति** किलेसनिद्दापगमनेनापि बुद्धं। आदिच्चेन समानगोत्ततायपि आदिच्चबन्धुनं। **कुसलेन समेक्खसी**ति अनवज्जेन निपुणेन वा सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन महाजनं ओलोकेसि। **अमनुस्सापि तं वन्दन्ती**ति अमनुस्सापि तं "सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन महाजनं ओलोकेसी"ति वत्वा वन्दन्ति। **सुतं नेतं अभिण्हसो**ति एतं अम्हेहि अभिक्खणं सुतं। **जिनं वन्दथ गोतमं, जिनं वन्दाम गोतमन्ति** अम्हेहि पुट्ठा जिनं वन्दाम गोतमन्ति वदन्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७९. **येन पेता पवुच्चन्ती**ति पेता नाम कालङ्कता, ते येन दिसाभागेन नीहरियन्तूति वुच्चन्ति। **पिसुणा पिट्ठिमंसिका**ति पिसुणावाचा चेव पिट्ठिमंसं खादन्ता विय परम्मुखा गरहका च। एते च येन नीहरियन्तूति वुच्चन्ति, सब्बेपि हेते दक्खिणद्वारेन नीहरित्वा दक्खिणतो नगरस्स डय्हन्तु वा छिज्जन्तु वा हञ्ञन्तु वाति एवं वुच्चन्ति। **इतो सा दक्खिणा दिसा**ति येन दिसाभागेन ते पेता च पिसुणादिका च नीहरियन्तूति वुच्चन्ति, इतो सा दक्खिणा दिसा। इतोति सिनेरुतो वा तेसं निसिन्नट्ठानतो वा। **कुम्भण्डान**न्ति ते किर देवा महोदरा होन्ति, रहस्सङ्गम्पि च नेसं कुम्भो विय महन्तं होति। तस्मा कुम्भण्डाति वुच्चन्ति।

२८०. **यत्थ चोग्गच्छति सूरियो**ति यस्मिं दिसाभागे सूरियो अत्थं गच्छति।

२८१. **येना**ति येन दिसाभागेन। **महानेरू**ति महासिनेरु पब्बतराजा। **सुदस्सनो**ति सोवण्णमयत्ता सुन्दरदस्सनो। सिनेरुस्स हि पाचीनपस्सं रजतमयं, दक्खिणपस्सं मणिमयं, पच्छिमपस्सं फलिकमयं, उत्तरपस्सं सोवण्णमयं, तं मनुञ्ञदस्सनं होति। तस्मा येन दिसाभागेन सिनेरु सुदस्सनोति अयमेत्थत्थो। **मनुस्सा तत्थ जायन्ती**ति तत्थ उत्तरकुरुम्हि मनुस्सा जायन्ति। **अममा**ति वत्थाभरणपानभोजनादीसुपि ममत्तविरहिता। **अपरिग्गहा**ति इत्थिपरिग्गहेन अपरिग्गहा। तेसं किर "अयं मय्हं भरिया"ति ममत्तं न होति, मातरं वा भगिनिं वा दिस्वा छन्दरागो नुप्पज्जति।

नपि नीयन्ति नङ्गलाति नङ्गलानिपि तत्थ "कसिकम्मं करिस्सामा"ति न खेत्तं नीयन्ति। **अकट्ठपाकिम**न्ति अकट्ठे भूमिभागे अरञ्ञे सयमेव जातं। **तण्डुलप्फल**न्ति तण्डुलाव तस्स फलं होति।

तुण्डिकीरे पचित्वानाति उक्खलियं आकिरित्वा निद्धुमङ्गारेन अग्गिना पचित्वा। तत्थ किर जोतिकपासाणा नाम होन्ति। अथ खो ते तयो पासाणे ठपेत्वा तं उक्खलिं आरोपेन्ति। पासाणेहि तेजो समुट्ठहित्वा तं पचति। **ततो भुञ्जन्ति भोजन**न्ति ततो उक्खलितो भोजनमेव भुञ्जन्ति, अञ्ञो सूपो वा ब्यञ्जनं वा न होति, भुञ्जन्तानं चित्तानुकूलोयेवस्स रसो होति। ते तं ठानं सम्पत्तानं देन्तियेव, मच्छरियचित्तं नाम न होति। बुद्धपच्चेकबुद्धादयोपि महिद्धिका तत्थ गन्त्वा पिण्डपातं गण्हन्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाविं एकखुरं कत्वाति गाविं गहेत्वा एकखुरं वाहनमेव कत्वा। तं अभिरुय्ह वेस्सवणस्स परिचारका यक्खा। **अनुयन्ति दिसोदिस**न्ति ताय ताय दिसाय चरन्ति। **पसुं एकखुरं कत्वा**ति ठपेत्वा गाविं अवसेसचतुप्पदजातिकं पसुं एकखुरं वाहनमेव कत्वा दिसोदिसं अनुयन्ति।

इत्थिं वा वाहनं कत्वाति येभुय्येन गब्भिनिं मातुगामं वाहनं करित्वा। तस्सा पिट्ठिया निसीदित्वा चरन्ति। तस्सा किर पिट्ठि ओनमितुं सहति। इतरा पन इत्थियो याने योजेन्ति। **पुरिसं वाहनं कत्वा**ति पुरिसे गहेत्वा याने योजेन्ति। गण्हन्ता च सम्मादिट्ठिके गहेतुं न सक्कोन्ति। येभुय्येन पच्चन्तिममिलक्खुवासिके गण्हन्ति। अञ्ञतरो किरेत्थ जानपदो एकस्स थेरस्स समीपे निसीदित्वा निद्दायति, **थेरो** "उपासक अतिविय निद्दायसी"ति पुच्छि। "अज्ज, भन्ते, सब्बरत्तिं वेस्सवणदासेहि किलमितोम्ही"ति आह।

कुमारिं वाहनं कत्वाति कुमारियो गहेत्वा एकखुरं वाहनं कत्वा रथे योजेन्ति। **कुमारवाहने**पि एसेव नयो। **पचारा तस्स राजिनो**ति तस्स रञ्ञो परिचारिका। **हत्थियानं अस्सयान**न्ति न केवलं गोयानादीनियेव, हत्थिअस्सयानादीनिपि अभिरुहित्वा विचरन्ति। **दिब्बं यान**न्ति अञ्ञम्पि नेसं बहुविधं दिब्बयानं उपट्ठितमेव होति, एतानि ताव नेसं उपकप्पनयानानि। ते पन पासादे वरसयनम्हि निपन्नापि पीठसिविकादीसु च निसिन्नापि विचरन्ति। तेन वुत्तं "पासादा सिविका चेवा"ति। **महाराजस्स यसस्सिनो**ति एवं आनुभावसम्पन्नस्स यसस्सिनो महाराजस्स एतानि यानानि निब्बत्तन्ति।

तस्स च नगरा अहु अन्तलिक्खे सुमापिताति तस्स रञ्ञो आकासे सुट्ठु मापिता एते आटानाटादिका नगरा अहेसुं, नगरानि भविंसूति अत्थो। एकस्मिस्स नगरं आटानाटा नाम आसि, एकं कुसिनाटा नाम, एकं परकुसिनाटा नाम, एकं नाटसूरिया नाम, एकं परकुसिटनाटा नाम।

उत्तरेन कसिवन्तोति तस्मिं ठत्वा उजुं उत्तरदिसाय कसिवन्तो नाम अञ्ञं नगरं। **जनोघमपरेन चा**ति एतस्स अपरभागे जनोघं नाम अञ्ञं नगरं। **नवनवतियो**ति अञ्ञम्पि नवनवतियो नाम एकं नगरं। अपरं अम्बरअम्बरवतियो नाम। **आळकमन्दा**ति अपरम्पि आळकमन्दा नाम राजधानी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्मा कुवेरो महाराजाति अयं किर अनुप्पन्ने बुद्धे कुवेरो नाम ब्राह्मणो हुत्वा उच्छुवप्पं कारेत्वा सत्त यन्तानि योजेसि। एकिस्साय यन्तसालाय उट्ठितं आयं आगतागतस्स महाजनस्स दत्वा पुञ्ञं अकासि। अवसेससालाहि तत्थेव बहुतरो आयो उट्ठासि, सो तेन पसीदित्वा अवसेससालासुपि उप्पज्जनकं गहेत्वा वीसति वस्ससहस्सानि दानं अदासि। सो कालं कत्वा चातुमहाराजिकेसु कुवेरो नाम देवपुत्तो जातो। अपरभागे विसाणाय राजधानिया रज्जं कारेसि। ततो पट्ठाय वेस्सवणोति वुच्चति।

पच्चेसन्तो पकासेन्तीति पटिएसन्तो विसुं विसुं अत्थे उपपरिक्खमाना अनुसासमाना अञ्ञे द्वादस यक्खरट्ठिका पकासेन्ति। ते किर यक्खरट्ठिका सासनं गहेत्वा द्वादसन्नं यक्खदोवारिकानं निवेदेन्ति। यक्खदोवारिका तं सासनं महाराजस्स निवेदेन्ति। इदानि तेसं यक्खरट्ठिकानं नामं दस्सेन्तो **ततोलाति**आदिमाह। तेसु किर एको ततोला नाम, एको तत्तला नाम, एको ततोतला नाम, एको ओजसि नाम, एको तेजसि नाम, एको ततोजसी नाम। **सूरो राजाति** एको सूरो नाम, एको राजा नाम, एको सूरोराजा नाम, **अरिट्ठो नेमीति** एको अरिट्ठो नाम, एको नेमि नाम, एको अरिट्ठनेमि नाम।

रहदोपि तत्थ धरणी नामाति तत्थ पनेको नामेन धरणी नाम उदकरहदो अत्थि, पण्णासयोजना महापोक्खरणी अत्थीति वुत्तं होति। **यतो मेघा पवस्सन्तीति** यतो पोक्खरणितो उदकं गहेत्वा मेघा पवस्सन्ति। **वस्सा यतो पतायन्तीति** यतो वुट्ठियो अवत्थरमाना निगच्छन्ति। मेघेसु किर उट्ठितेसु ततो पोक्खरणितो पुराणउदकं भस्सति। उपरि मेघो उट्ठहित्वा तं पोक्खरणिं नवोदकेन पूरेति। पुराणोदकं हेट्ठिमं हुत्वा निक्खमति। परिपुण्णाय पोक्खरणिया वलाहका विगच्छन्ति। **सभापीति** सभा। तस्सा किर पोक्खरणिया तीरे सालवतिया नाम लताय परिक्खित्तो द्वादसयोजनिको रतनमण्डपो अत्थि, तं सन्धायेतं वुत्तं।

पयिरुपासन्तीति निसीदन्ति। **तत्थ निच्चफला रुक्खाति** तस्मिं ठाने तं मण्डपं परिवारेत्वा सदा फलिता अम्बजम्बुआदयो रुक्खा निच्चपुप्फिता च चम्पकमालादयोति दस्सेति। **नानादिजगणायुताति** विविधपक्खिसङ्घसमाकुला। **मयूरकोञ्चाभिरुदाति** मयूरेहि कोञ्चसकुणेहि च अभिरुदा उपगीता।

जीवञ्जीवकसद्देत्थाति "जीव जीवा"ति एवं विरवन्तानं जीवञ्जीवकसकुणानम्पि एत्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दो अत्थि। **ओट्ठवचित्तका**ति "उट्ठेहि, चित्त, उट्ठेहि चित्ता"ति एवं वस्समाना उट्ठवचित्तकसकुणापि तत्थ विचरन्ति। **कुक्कुटका**ति वनकुक्कुटका। **कुळीरका**ति सुवण्णकक्कटका। **वने**ति पदुमवने। **पोक्खरसातका**ति पोक्खरसातका नाम सकुणा।

सुकसाळिकसद्देत्थाति सुकानञ्च साळिकानञ्च सद्दो एत्थ। **दण्डमाणवकानि चा**ति मनुस्समुखसकुणा। ते किर द्वीहि हत्थेहि सुवण्णदण्डं गहेत्वा एकं पोक्खरपत्तं अक्कमित्वा अनन्तरे पोक्खरपत्ते सुवण्णदण्डं निक्खिपन्ता विचरन्ति। **सोभति सब्बकालं सा**ति सा पोक्खरणी सब्बकालं सोभति। **कुवेरनळिनी**ति कुवेरस्स नळिनी पदुमसरभूता, सा धरणी नाम पोक्खरणी सदा निरन्तरं सोभति।

२८२. **यस्स कस्सची**ति इदं वेस्सवणो आटानाटियं रक्खं निट्ठपेत्वा तस्सा परिकम्मं दस्सेन्तो आह। तत्थ **सुग्गहिता**ति अत्थञ्च ब्यञ्जनञ्च परिसोधेत्वा सुट्ठु उग्गहिता। **समत्ता परियापुता**ति पदब्यञ्जनानि अहापेत्वा परिपुण्णं उग्गहिता। अत्थम्पि पाळिम्पि विसंवादेत्वा सब्बसो वा पन अप्पगुणं कत्वा भणन्तस्स हि परित्तं तेजवन्तं न होति, सब्बसो पगुणं कत्वा भणन्तस्सेव तेजवन्तं होति। लाभहेतु उग्गहेत्वा भणन्तस्सापि अत्थं न साधेति, निस्सरणपक्खे ठत्वा मेत्तं पुरेचारिकं कत्वा भणन्तस्सेव अत्थाय होतीति दस्सेति। **यक्खपचारो**ति यक्खपरिचारको।

वत्थुं वाति घरवत्थुं वा। **वासं वा**ति तत्थ निबद्धवासं वा। **समितिन्**ति समागमं। **अनावय्हन्**ति न आवाहयुत्तं। **अविवय्हन्**ति न विवाहयुत्तं। तेन सह आवाहविवाहं न करेय्युन्ति अत्थो। **अत्ताहिपि परिपुण्णाही**ति "कळारक्खि कळारदन्ता"ति एवं एतेसं अत्तभावं उपनेत्वा वुत्ताहि परिपुण्णब्यञ्जनाहि परिभासाहि परिभासेय्युं यक्खअक्कोसेहि नाम अक्कोसेय्युन्ति अत्थो। **रित्तम्पिस्स पत्तन्**ति भिक्खूनं पत्तसदिसमेव लोहपत्तं होति। तं सीसे निक्कुज्जितं याव गलवाटका भस्सति। अथ नं मज्झे अयोखीलेन आकोटेन्ति।

चण्डाति कोधना। **रुद्धा**ति विरुद्धा। **रभसा**ति करणुत्तरिया। **नेव महाराजानं आदियन्ती**ति वचनं न गण्हन्ति, आणं न करोन्ति। **महाराजानं पुरिसकानन्**ति अट्ठवीसतियक्खसेनापतीनं। **पुरिसकानन्**ति यक्खसेनापतीनं ये मनस्सा तेसं। **अवरुद्धा नामा**ति पच्चामित्ता वेरिनो। **उज्झापेतब्बन्**ति परित्तं वत्वा अमनुस्से पटिक्कमापेतुं असक्कोन्तेन एतेसं यक्खानं उज्झापेतब्बं, एते जानापेतब्बाति अत्थो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परित्तपरिकम्मकथा

इध पन ठत्वा परित्तस्स परिकम्मं कथेतब्बं। पठममेव हि आटानाटियसुत्तं न भणितब्बं, मेत्तसुत्तं धजग्गसुत्तं रतनसुत्तन्ति इमानि सत्ताहं भणितब्बानि। सचे मुञ्चति, सुन्दरं। नो चे मुञ्चति, आटानाटियसुत्तं भणितब्बं, तं भणन्तेन भिक्खुना पिट्ठं वा मंसं वा न खादितब्बं, सुसाने न वसितब्बं। कस्मा ? अमनुस्सा ओकासं लभन्ति। परित्तकरणट्ठानं हरितुपलित्तं कारेत्वा तत्थ परिसुद्धं आसनं पञ्ञपेत्वा निसीदितब्बं।

परित्तकारको भिक्खु विहारतो घरं नेन्तेहि फलकावुधेहि परिवारेत्वा नेतब्बो। अब्भोकासे निसीदित्वा न वत्तब्बं, द्वारवातपानानि पिदहित्वा निसिन्नेन आवुधहत्थेहि संपरिवारितेन मेत्तचित्तं पुरेचारिकं कत्वा वत्तब्बं। पठमं सिक्खापदानि गाहापेत्वा सीले पतिट्ठितस्स परित्तं कातब्बं। एवम्पि मोचेतुं असक्कोन्तेन विहारं आनेत्वा चेतियङ्गणे निपज्जापेत्वा आसनपूजं कारेत्वा दीपे जालापेत्वा चेतियङ्गणं सम्मज्जित्वा मङ्गलकथा वत्तब्बा। सब्बसन्निपातो घोसेतब्बो। विहारस्स उपवने जेट्ठकरुक्खो नाम होति, तत्थ भिक्खुसङ्घो तुम्हाकं आगमनं पटिमानेतीति पहिणितब्बं। सब्बसन्निपातट्ठाने अनागन्तुं नाम न लब्भति। ततो अमनुस्सगहितको "त्वं को नामा"ति पुच्छितब्बो। नामे कथिते नामेनेव आलपितब्बो। इत्थन्नाम तुय्हं मालागन्धादीसु पत्ति आसनपूजाय पत्ति पिण्डपाते पत्ति, भिक्खुसङ्घेन तुय्हं पण्णाकारत्थाय महामङ्गलकथा वुत्ता, भिक्खुसङ्घे गारवेन एतं मुञ्चाहीति मोचेतब्बो। सचे न मुञ्चति, देवतानं आरोचेतब्बं "तुम्हे जानाथ, अयं अमनुस्सो अम्हाकं वचनं न करोति, मयं बुद्धआणं करिस्सामा"ति परित्तं कातब्बं। एतं ताव गिहीनं परिकम्मं। सचे पन भिक्खु अमनुस्सेन गहितो होति, आसनानि धोवित्वा सब्बसन्निपातं घोसापेत्वा गन्धमालादीसु पत्तिं दत्वा परित्तं भणितब्बं। इदं भिक्खूनं परिकम्मं।

विक्कन्दितब्बन्ति सब्बसन्निपातं घोसापेत्वा अट्ठवीसति यक्खसेनापतयो कन्दितब्बा। **विरवितब्बन्ति** "अयं यक्खो गण्हाती"तिआदीनि भणन्तेन तेहि सद्धिं कथेतब्बं। तत्थ **गण्हातीति** सरीरे अधिमुच्चति। **आविसतीति** तस्सेव वेवचनं। अथ वा लग्गति न अपेतीति वुत्तं होति। **हेठेतीति** उप्पन्नं रोगं वड्ढेन्तो बाधति। **विहेठेतीति** तस्सेव वेवचनं। **हिंसतीति** अप्पमंसलोहितं करोन्तो दुक्खापेति। **विहिंसतीति** तस्सेव वेवचनं। **न मुञ्चतीति** अप्पमादगाहो हुत्वा मुञ्चितुं न इच्छति, एवं एतेसं विरवितब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८३. इदानि येसं एवं विरवितब्बं, ते दस्सेतुं **कतमेसं यक्खानन्ति**आदिमाह। तत्थ **इन्दो सोमो**तिआदीनि तेसं नामानि। तेसु **वेस्सामित्तो**ति वेस्सामित्तपब्बतवासी एको यक्खो। **युगन्धरोपि** युगन्धरपब्बतवासीयेव। **हिरि नेत्ति च मन्दियो**ति हिरि च नेत्ति च मन्दियो च। **मणि माणि वरो दीघो**ति मणि च माणि च वरो च दीघो च। **अथो सेरीसको सहा**ति तेहि सह अञ्ञो सेरीसको नाम। ''इमेसं यक्खानं...पे०... उज्झापेतब्ब''न्ति अयं यक्खो इमं हेठेति विहेठेति न मुञ्चतीति एवं एतेसं यक्खसेनापतीनं आरोचेतब्बं। ततो ते भिक्खुसङ्घो अत्तनो धम्मआणं करोति, मयम्पि अम्हाकं यक्खराजआणं करोमाति उस्सुक्कं करिस्सन्ति। एवं अमनुस्सानं ओकासो न भविस्सति, बुद्धसावकानं फासुविहारो च भविस्सतीति दस्सेन्तो ''अयं खो सा, मारिस, आटानाटिया रक्खा''तिआदिमाह। तं सब्बं, ततो परञ्च उत्तानत्थमेवाति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

आटानाटियसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. सङ्गीतिसुत्तवण्णना

२९६. **एवं मे सुत**न्ति सङ्गीतिसुत्तं। तत्रायमपुब्बपदवण्णना– **चारिकं चरमानो**ति निबद्धचारिकं चरमानो। तदा किर सत्था दससहस्सचक्कवाळे ञाणजालं पत्थरित्वा लोकं वोलोकयमानो पावानगरवासिनो मल्लराजानो दिस्वा इमे राजानो मय्हं सब्बञ्ञुतञ्ञाणजालस्स अन्तो पञ्ञायन्ति, किं नु खोति आवज्जन्तो "राजानो एकं सन्धागारं कारेसुं, मयि गते मङ्गलं भणापेस्सन्ति, अहं तेसं मङ्गलं वत्वा उय्योजेत्वा 'भिक्खुसङ्घस्स धम्मकथं कथेही'ति सारिपुत्तं वक्खामि, सारिपुत्तो तीहि पिटकेहि सम्मसित्वा चुद्दसपञ्हाधिकेन पञ्हसहस्सेन पटिमण्डेत्वा भिक्खुसङ्घस्स सङ्गीतिसुत्तं नाम कथेस्सति, सुत्तन्तं आवज्जेत्वा पञ्च भिक्खुसतानि सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणिस्सन्ती''ति इममत्थं दिस्वा चारिकं पक्कन्तो। तेन वुत्तं– "मल्लेसु चारिकं चरमानो''ति।

उब्भतकनवसन्धागारवण्णना

२९७. **उब्भतक**न्ति तस्स नामं, उच्चत्ता वा एवं वुत्तं। **सन्धागार**न्ति नगरमज्झे सन्धागारसाला। **समणेन वा**ति एत्थ यस्मा घरवत्थुपरिग्गहकालेयेव देवता अत्तनो वसनट्ठानं गण्हन्ति। तस्मा देवेन वाति अवत्वा "समणेन वा ब्राह्मणेन वा केनचि वा मनुस्सभूतेना''ति वुत्तं। **येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसू**ति भगवतो आगमनं सुत्वा "अम्हेहि गन्त्वापि न भगवा आनीतो, दूतं पेसेत्वापि न पक्कोसापितो, सयमेव पन महाभिक्खुसङ्घपरिवारो अम्हाकं वसनट्ठानं सम्पत्तो, अम्हेहि च सन्धागारसाला कारिता, एत्थ मयं दसबलं आनेत्वा मङ्गलं भणापेस्सामा''ति चिन्तेत्वा उपसङ्कमिंसु।

२९८. **येन सन्धागारं तेनुपसङ्कमिंसू**ति तं दिवसं किर सन्धागारे चित्तकम्मं निट्ठपेत्वा अट्टका मुत्तमत्ता होन्ति, बुद्धा च नाम अरञ्ञज्झासया अरञ्ञारामा, अन्तोगामे वसेय्युं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा नो वा। तस्मा भगवतो मनं जानित्वाव पटिजग्गिस्सामाति चिन्तेत्वा ते भगवन्तं उपसङ्कमिंसु। इदानि पन मनं लभित्वा पटिजग्गितुकामा येन सन्धागारं तेनुपसङ्कमिंसु। **सब्बसन्थरिन्ति** यथा सब्बं सन्थतं होति, एवं। **येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसूति** एत्थ पन ते मल्लराजानो सन्धागारं पटिजग्गित्वा नगरवीथियोपि सम्मज्जापेत्वा धजे उस्सापेत्वा गेहद्वारेसु पुण्णघटे च कदलियो च ठपापेत्वा सकलनगरं दीपमालादीहि विप्पकिण्णतारकं विय कत्वा खीरपायके दारके खीरं पाय्येथ, दहरे कुमारे लहुं लहुं भोजापेत्वा सयापेथ, उच्चासद्दं मा करित्थ, अज्ज एकरत्तिं सत्था अन्तोगामे वसिस्सति, बुद्धा नाम अप्पसद्दकामा होन्तीति भेरिं चरापेत्वा सयं दण्डदीपिकं आदाय येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु।

२९९. **भगवन्तंयेव पुरक्खत्वाति** भगवन्तं पुरतो कत्वा। तत्थ भगवा भिक्खूनञ्चेव उपासकानञ्च मज्झे निसिन्नो अतिविय विरोचति, समन्तपासादिको सुवण्णवण्णो अभिरूपो दस्सनीयो। पुरिमकायतो सुवण्णवण्णा रस्मि उट्ठहित्वा असीतिहत्थं ठानं गण्हाति। पच्छिमकायतो। दक्खिणहत्थतो। वामहत्थतो सुवण्णवण्णा रस्मि उट्ठहित्वा असीतिहत्थं ठानं गण्हाति। उपरि केसन्ततो पट्ठाय सब्बकेसावट्टेहि मोरगीववण्णा रस्मि उट्ठहित्वा गगनतले असीतिहत्थं ठानं गण्हाति। हेट्ठा पादतलेहि पवाळवण्णा रस्मि उट्ठहित्वा घनपथवियं असीतिहत्थं ठानं गण्हाति। एवं समन्ता असीति हत्थमत्तं ठानं छब्बण्णा बुद्धरस्मियो विज्जोतमाना विप्फन्दमाना विधावन्ति। सब्बे दिसाभागा सुवण्णचम्पकपुप्फेहि विकिरियमाना विय सुवण्णघटतो निक्खन्तसुवण्णरसधाराहि सिञ्चमाना विय पसारितसुवण्णपटपरिक्खित्ता विय वेरम्भवातसमुट्ठितकिंसुककणिकार-पुप्फचुण्णसमाकिण्णा विय च विप्पकासन्ति।

भगवतोपि असीतिअनुब्यञ्जनब्यामप्पभाद्वत्तिंसवरलक्खणसमुज्जलं सरीरं समुग्गततारकं विय गगनतलं, विकसितमिव पदुमवनं, सब्बपालिफुल्लो विय योजनसतिको पारिच्छत्तको पटिपाटिया ठपितानं द्वत्तिंसचन्दानं द्वत्तिंससूरियानं द्वत्तिंसचक्कवत्तिराजानं द्वत्तिंसदेवराजानं द्वत्तिंसमहाब्रह्मानं सिरिया सिरिं अभिभवमानं विय विरोचति। परिवारेत्वा निसिन्ना भिक्खूपि सब्बेव अप्पिच्छा सन्तुट्ठा पविवित्ता असंसट्ठा आरद्धवीरिया वत्तारो वचनक्खमा चोदका पापगरहिनो सीलसम्पन्ना समाधिसम्पन्ना पञ्ञाविमुत्ति विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्ना। तेहि परिवारितो भगवा रत्तकम्बलपरिक्खित्तो विय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुवण्णक्खन्धो, रत्तपदुमवनसण्डमज्झगता विय सुवण्णनावा, पवाळवेदिकापरिक्खित्तो विय सुवण्णपासादो विरोचित्थ।

असीतिमहाथेरापि नं मेघवण्णं पंसुकूलं पारुपित्वा मणिवम्मवम्मिता विय महानागा परिवारयिंसु वन्तरागा भिन्नकिलेसा विजटितजटा छिन्नबन्धना कुले वा गणे वा अलग्गा। इति भगवा सयं वीतरागो वीतरागेहि, वीतदोसो वीतदोसेहि, वीतमोहो वीतमोहेहि, नित्तण्हो नित्तण्हेहि, निक्किलेसो निक्किलेसेहि, सयं बुद्धो बहुस्सुतबुद्धेहि परिवारितो पत्तपरिवारितं विय केसरं, केसरपरिवारिता विय कण्णिका, अट्ठनागसहस्सपरिवारितो विय छद्दन्तो नागराजा, नवुतिहंससहस्सपरिवारितो विय धतरट्ठो हंसराजा, सेनङ्गपरिवारितो विय चक्कवत्तिराजा, मरुगणपरिवारितो विय सक्को देवराजा, ब्रह्मगणपरिवारितो विय हारितो महाब्रह्मा, असमेन बुद्धवेसेन अपरिमाणेन बुद्धविलासेन तस्सं परिसति निसिन्नो पावेय्यके मल्ले बहुदेव रत्तिं धम्मिया कथाय सन्दस्सेत्वा उय्योजेसि।

एत्थ च **धम्मिकथा** नाम सन्धागारअनुमोदनप्पटिसंयुत्ता पकिण्णककथा वेदितब्बा। तदा हि भगवा आकासगङ्गं ओतारेन्तो विय पथवोजं आकड्ढन्तो विय महाजम्बुं मत्थके गहेत्वा चालेन्तो विय योजनियमधुगण्डं चक्कयन्तेन पीळेत्वा मधुपानं पायमानो विय च पावेय्यकानं मल्लानं हितसुखावहं पकिण्णककथं कथेसि।

३००. **तुण्हीभूतं तुण्हीभूत**न्ति यं यं दिसं अनुविलोकेति, तत्थ तत्थ तुण्हीभूतमेव। **अनुविलोकेत्वा**ति मंसचक्खुना दिब्बचक्खुनाति द्वीहि चक्खूहि ततो ततो विलोकेत्वा। मंसचक्खुना हि नेसं बहिद्धा इरियापथं परिग्गहेसि। तत्थ एकभिक्खुस्सापि नेव हत्थकुक्कुच्चं न पादकुक्कुच्चं अहोसि, न कोचि सीसमुक्खिपि, न कथं कथेसि, न निद्दायन्तो निसीदि। सब्बेपि तीहि सिक्खाहि सिक्खिता निवाते पदीपसिखा विय निच्चला निसीदिंसु। इति नेसं इमं इरियापथं मंसचक्खुना परिग्गहेसि। आलोकं पन वड्ढयित्वा दिब्बचक्खुना हदयरूपं दिस्वा अब्भन्तरगतं सीलं ओलोकेसि। सो अनेकसतानं भिक्खूनं अन्तोकुम्भियं जलमानं पदीपं विय अरहत्तुपगं सीलं अद्दस। आरद्धविपस्सका हि ते भिक्खू। इति नेसं सीलं दिस्वा "इमेपि भिक्खू मय्हं अनुच्छविका, अहम्पि इमेसं अनुच्छविको"ति चक्खुतलेसु निमित्तं ठपेत्वा भिक्खुसङ्घं ओलोकेत्वा आयस्मन्तं सारिपुत्तं आमन्तेसि "पिट्ठि मे आगिलायती"ति। कस्मा आगिलायति? भगवतो हि छब्बस्सानि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महापधानं पदहन्तस्स महन्तं कायदुक्खं अहोसि। अथस्स अपरभागे महल्लककाले पिट्ठिवातो उप्पज्जि।

सङ्घाटिं पञ्ञापेत्वाति सन्धागारस्स किर एकपस्से ते राजानो कप्पियमञ्चकं पञ्ञपेसुं "अप्पेव नाम सत्था निपज्जेय्या"ति। सत्थापि चतूहि इरियापथेहि परिभुत्तं इमेसं महप्फलं भविस्सतीति तत्थ सङ्घाटिं पञ्ञापेत्वा निपज्जि।

भिन्ननिगण्ठवत्थुवण्णना

३०१. तस्स कालङ्किरियायातिआदीसु यं वत्तब्बं, तं सब्बं हेट्ठा वुत्तमेव।

३०२. आमन्तेसीति भण्डनादिवूपसमकरं स्वाख्यातं धम्मं देसेतुकामो आमन्तेसि।

एककवण्णना

३०३. तत्थाति तस्मिं धम्मे। **सङ्गायितब्ब**न्ति समग्गेहि गायितब्बं, एकवचनेहि अविरुद्धवचनेहि भणितब्बं। **न विवदितब्ब**न्ति अत्थे वा ब्यञ्जने वा विवादो न कातब्बो। **एको धम्मो**ति एककदुकतिकादिवसेन बहुधा सामग्गिरसं दस्सेतुकामो पठमं ताव "एको धम्मो"ति आह। **सब्बे सत्ता**ति कामभवादीसु सञ्ञाभवादीसु एकवोकारभवादीसु च सब्बभवेसु सब्बे सत्ता। **आहारट्ठितिका**ति आहारतो ठिति एतेसन्ति आहारट्ठितिका। इति सब्बसत्तानं ठिति हेतु आहारो नाम एको धम्मो अम्हाकं सत्थारा याथावतो ञत्वा सम्मदक्खातो आवुसोति दीपेति।

ननु च एवं सन्ते यं वुत्तं "असञ्ञसत्ता देवा अहेतुका अनाहारा अफस्सका"तिआदि, (विभं० १०१७) तं वचनं विरुज्झतीति, न विरुज्झति। तेसञ्हि झानं आहारो होति। एवं सन्तेपि "चत्तारोमे, भिक्खवे, आहारा भूतानं वा सत्तानं ठितिया सम्भवेसीनं वा अनुग्गहाय। कतमे चत्तारो? कबळीकारो आहारो ओळारिको वा सुखुमो वा, फस्सो दुतियो, मनोसञ्चेतना ततिया, विञ्ञाणं चतुत्थ"न्ति (सं० नि० १.२.११) इदम्पि विरुज्झतीति, इदम्पि न विरुज्झति। एतस्मिञ्हि सुत्ते निप्परियायेन आहारलक्खणाव धम्मा आहाराति वुत्ता। इध पन परियायेन पच्चयो आहारोति वुत्तो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सब्बधम्मानञ्हि पच्चयो लद्धुं वट्टति। सो च यं यं फलं जनेति, तं तं आहरति नाम, तस्मा आहारोति वुच्चति। तेनेवाह "अविज्जम्पाहं, भिक्खवे, साहारं वदामि, नो अनाहारं। को च, भिक्खवे, अविज्जाय आहारो? पञ्चनीवरणातिस्स वचनीयं। पञ्चनीवरणेपाहं, भिक्खवे, साहारे वदामि, नो अनाहारे। को च, भिक्खवे, पञ्चन्नं नीवरणानं आहारो? अयोनिसोमनसिकारोतिस्स वचनीय"न्ति (अ० नि० ३.१०.६१)। अयं इध अधिप्पेतो।

एतस्मिञ्हि पच्चयाहारे गहिते परियायाहारोपि निप्परियायाहारोपि सब्बो गहितोव होति। तत्थ असञ्ञभवे पच्चयाहारो लब्भति। अनुप्पन्ने हि बुद्धे तित्थायतने पब्बजिता वायोकसिणे परिकम्मं कत्वा चतुत्थज्झानं निब्बत्तेत्वा ततो वुट्ठाय धी चित्तं, धिब्बतेतं चित्तं चित्तस्स नाम अभावोयेव साधु, चित्तञ्हि निस्सायेव वधबन्धादिपच्चयं दुक्खं उप्पज्जति। चित्ते असति नत्थेतन्ति खन्तिं रुचिं उप्पादेत्वा अपरिहीनज्झाना कालङ्कत्वा असञ्ञभवे निब्बत्तन्ति। यो यस्स इरियापथो मनुस्सलोके पणिहितो अहोसि, सो तेन इरियापथेन निब्बत्तित्वा पञ्च कप्पसतानि ठितो वा निसिन्नो वा निपन्नो वा होति। एवरूपानम्पि सत्तानं पच्चयाहारो लब्भति। ते हि यं झानं भावेत्वा निब्बत्ता, तदेव नेसं पच्चयो होति। यथा जियावेगेन खित्तसरो याव जियावेगो अत्थि, ताव गच्छति, एवं याव झानपच्चयो अत्थि, ताव तिट्ठन्ति। तस्मिं निट्ठिते खीणवेगो सरो विय पतन्ति। ये पन ते नेरयिका नेव उट्ठानफलूपजीवी न पुञ्ञफलूपजीवीति वुत्ता, तेसं को आहारोति? तेसं कम्ममेव आहारो। किं पञ्च आहारा अत्थीति चे। पञ्च, न पञ्चाति इदं न वत्तब्बं। ननु पच्चयो आहारोति वुत्तमेतं। तस्मा येन कम्मेन ते निरये निब्बत्ता, तदेव तेसं ठितिपच्चयत्ता आहारो होति। यं सन्धाय इदं वुत्तं "न च ताव कालङ्करोति, याव न तं पापकम्मं ब्यन्ती होती"ति (म० नि० ३.२५०)।

कबळीकारं आहारं आरब्भ चेत्थ विवादो न कातब्बो। मुखे उप्पन्नो खेळोपि हि तेसं आहारकिच्चं साधेति। खेळोपि हि निरये दुक्खवेदनियो हुत्वा पच्चयो होति, सग्गे सुखवेदनियो। इति कामभवे निप्परियायेन चत्तारो आहारा। रूपारूपभवेसु ठपेत्वा असञ्ञं सेसानं तयो। असञ्ञानञ्चेव अवसेसानञ्च पच्चयाहारोति इमिना आहारेन "सब्बे सत्ता आहारट्ठितिका"ति एतं पञ्हं कथेत्वा "अयं खो आवुसो"ति एवं निय्यातनम्पि "अत्थि खो आवुसो"ति पुन उद्धरणम्पि अकत्वा "सब्बे सत्ता सङ्खारट्ठितिका"ति दुतियपञ्हं विस्सज्जेसि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कस्मा पन न निय्यातेसि न उद्धरित्थ ? तत्थ तत्थ निय्यातियमानेपि उद्धरियमानेपि परियापुणितुं वाचेतुं दुक्खं होति, तस्मा द्वे एकाबद्धे कत्वा विस्सज्जेसि। इमस्मिम्पि विस्सज्जने हेट्ठा वुत्तपच्चयोव अत्तनो फलस्स सङ्खरणतो सङ्खारोति वुत्तो। इति हेट्ठा आहारपच्चयो कथितो, इध सङ्खारपच्चयोति अयमेत्थ हेट्ठिमतो विसेसो। "हेट्ठा निप्परियायाहारो गहितो, इध परियायाहारोति एवं गहिते विसेसो पाकटो भवेय्य, नो च गण्हिंसू'ति महासीवत्थेरो आह। इन्द्रियबद्धस्सपि हि अनिन्द्रियबद्धस्सपि पच्चयो लद्धुं वट्टति। विना पच्चयेन धम्मो नाम नत्थि। तत्थ अनिन्द्रियबद्धस्स तिणरुक्खलतादिनो पथवीरसो आपोरसो च पच्चयो होति। देवे अवस्सन्ते हि तिणादीनि मिलायन्ति, वस्सन्ते च पन हरितानि होन्ति। इति तेसं पथवीरसो आपोरसो च पच्चयो होति। इन्द्रियबद्धस्स अविज्जा तण्हा कम्मं आहारोति एवमादयो पच्चया, इति हेट्ठा पच्चयोयेव आहारोति कथितो, इध सङ्खारोति। अयमेवेत्थ विसेसो।

अयं खो, आवुसोति आवुसो अम्हाकं सत्थारा महाबोधिमण्डे निसीदित्वा सयं सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन सच्छिकत्वा अयं एकधम्मो देसितो। तत्थ एकधम्मे तुम्हेहि सब्बेहेव सङ्गायितब्बं न विवदितब्बं। **यथयिदं ब्रह्मचरिय**न्ति यथा सङ्गायमानानं तुम्हाकं इदं सासनब्रह्मचरियं अद्धनियं अस्स। एकेन हि भिक्खुना "अत्थि, खो आवुसो, एको धम्मो सम्मदक्खातो। कतमो एको धम्मो ? सब्बे सत्ता आहारट्ठितिका। सब्बे सत्ता सङ्खारट्ठितिका"ति कथिते तस्स कथं सुत्वा अञ्ञो कथेस्सति। तस्सपि अञ्ञोति एवं परम्परकथानियमेन इदं ब्रह्मचरियं चिरं तिट्ठमानं सदेवकस्स लोकस्स अत्थाय हिताय भविस्सतीति एककवसेन धम्मसेनापति सारिपुत्तत्थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

एककवण्णना निट्ठिता।

दुकवण्णना

३०४. इति एककवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि दुकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ नामरूपदुके **नाम**न्ति चत्तारो अरूपिनो खन्धा निब्बानञ्च। तत्थ चत्तारो खन्धा नामनट्ठेन **नामं**। नामनट्ठेनाति नामकरणट्ठेन। यथा हि महाजनसम्मतत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महासम्मतस्स "महासम्मतो"ति नामं अहोसि, यथा मातापितरो "अयं तिस्सो नाम होतु, फुस्सो नाम होतू"ति एवं पुत्तस्स कित्तिमनामं करोन्ति, यथा वा "धम्मकथिको विनयधरो"ति गुणतो नामं आगच्छति, न एवं वेदनादीनं। वेदनादयो हि महापथवीआदयो विय अत्तनो नामं करोन्ताव उप्पज्जन्ति। तेसु उप्पन्नेसु तेसं नामं उप्पन्नमेव होति। न हि वेदनं उप्पन्नं "त्वं वेदना नाम होही"ति, कोचि भणति, न चस्सा येन केनचि कारणेन नामग्गहणकिच्चं अत्थि, यथा पथविया उप्पन्नाय "त्वं पथवी नाम होही"ति नामग्गहणकिच्चं नत्थि, चक्कवाळसिनेरुम्हि चन्दिमसूरियनक्खत्तेसु उप्पन्नेसु "त्वं चक्कवाळं नाम, त्वं नक्खत्तं नाम होही"ति नामग्गहणकिच्चं नत्थि, नामं उप्पन्नमेव होति, ओपपातिका पञ्ञत्ति निपतति, एवं वेदनाय उप्पन्नाय "त्वं वेदना नाम होही"ति नामग्गहणकिच्चं नत्थि, ताय उप्पन्नाय वेदनाति नामं उप्पन्नमेव होति। सञ्ञादीसुपि एसेव नयो अतीतेपि हि वेदना वेदनायेव। सञ्ञा। सङ्खारा। विञ्ञाणं विञ्ञाणमेव। अनागतेपि। पच्चुप्पन्नेपि। निब्बानं पन सदापि निब्बानमेवाति। नामनट्ठेन नामं। नमनट्ठेनापि चेत्थ चत्तारो खन्धा नामं। ते हि आरम्मणाभिमुखं नमन्ति। नामनट्ठेन सब्बम्पि नामं। चत्तारो हि खन्धा आरम्मणे अञ्ञमञ्ञं नामेन्ति, निब्बानं आरम्मणाधिपतिपच्चयताय अत्तनि अनवज्जधम्मे नामेति।

रूपन्ति चत्तारो च महाभूता चतुन्नञ्च महाभूतानं उपादाय रूपं, तं सब्बम्पि रुप्पनट्ठेन **रूपं**। तस्स वित्थारकथा विसुद्धिमग्गे वुत्तनयेनेव वेदितब्बा।

अविज्जाति दुक्खादीसु अञ्ञाणं। अयम्पि वित्थारतो विसुद्धिमग्गे कथितायेव। **भवतण्हा**ति भवपत्थना। यथाह "तत्थ कतमा भवतण्हा ? यो भवेसु भवच्छन्दो"तिआदि (ध० स० १३१९)।

भवदिट्ठीति भवो वुच्चति सस्सतं, सस्सतवसेन उप्पज्जनकदिट्ठि। सा "तत्थ कतमा भवदिट्ठि ? 'भविस्सति अत्ता च लोको चा'ति या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगत"न्तिआदिना (ध० स० १३२०) नयेन अभिधम्मे वित्थारिता। **विभवदिट्ठी**ति विभवो वुच्चति उच्छेदं, उच्छेदवसेन उप्पज्जनकदिट्ठि। सापि "तत्थ कतमा विभवदिट्ठि ? 'न भविस्सति अत्ता च लोको चा'ति (ध० स० २८५)। या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगत"न्तिआदिना (ध० स० १३२१) नयेन तत्थेव वित्थारिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिरिकन्ति "यं न हिरीयति हिरीयितब्बेना"ति (ध० स० १३२८) एवं वित्थारिता निल्लज्जता। **अनोत्तप्प**न्ति "यं न ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेना"ति (ध० स० १३२९) एवं वित्थारितो अभायनकआकारो।

हिरी च ओत्तप्पञ्चाति "यं हिरीयति हिरीयितब्बेन, ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेना"ति (ध० स० १३३०-३१) एवं वित्थारितानि हिरिओत्तप्पानि। अपि चेत्थ अज्झत्तसमुट्ठाना **हिरी,** बहिद्धासमुट्ठानं **ओत्तप्पं।** अत्ताधिपतेय्या हिरी, लोकाधिपतेय्यं ओत्तप्पं। लज्जासभावसण्ठिता हिरी, भयसभावसण्ठितं ओत्तप्पं। वित्थारकथा पनेत्थ सब्बाकारेन विसुद्धिमग्गे वुत्ता।

दोवचस्सताति दुक्खं वचो एतस्मिं विप्पटिकूलगाहिम्हि विपच्चनीकसाते अनादरे पुग्गलेति दुब्बचो, तस्स कम्मं दोवचस्सं, तस्स भावो **दोवचस्सता।** वित्थारतो पनेसा "तत्थ कतमा दोवचस्सता ? सहधम्मिके वुच्चमाने दोवचस्साय"न्ति (ध० स० १३३२) अभिधम्मे आगता। सा अत्थतो सङ्खारक्खन्धो होति। "चतुन्नञ्च खन्धानं एतेनाकारेन पवत्तानं एतं अधिवचन"न्ति वदन्ति। **पापमित्तता**ति पापा अस्सद्धादयो पुग्गला एतस्स मित्ताति पापमित्तो, तस्स भावो पापमित्तता। वित्थारतो पनेसा – "तत्थ कतमा पापमित्तता ? ये ते पुग्गला अस्सद्धा दुस्सीला अप्पस्सुता मच्छरिनो दुप्पञ्ञा। या तेसं सेवना निसेवना संसेवना भजना संभजना भत्ति संभत्ति तंसम्पवङ्कता"ति (ध० स० १३३३) एवं आगता। सापि अत्थतो दोवचस्सता विय दट्ठब्बा।

सोवचस्सता च कल्याणमित्तता च वुत्तप्पटिपक्खनयेन वेदितब्बा। उभोपि पनेता इध लोकियलोकुत्तरमिस्सका कथिता।

आपत्तिकुसलताति "पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्तियो, सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्तियो। या तासं आपत्तीनं आपत्तिकुसलता पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३३६) एवं वुत्तो आपत्तिकुसलभावो।

आपत्तिवुट्ठानकुसलताति "या ताहि आपत्तीहि वुट्ठानकुसलता पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३३७) एवं वुत्ता सह कम्मवाचाय आपत्तीहि वुट्ठानपरिच्छेदजानना पञ्ञा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समापत्तिकुसलताति "अत्थि सवितक्कसविचारा समापत्ति, अत्थि अवितक्कविचारमत्ता समापत्ति, अत्थि अवितक्कअविचारा समापत्ति। या तासं समापत्तीनं कुसलता पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३३८) एवं वुत्ता सह परिकम्मेन अप्पनापरिच्छेदजानना पञ्ञा। **समापत्तिवुट्ठानकुसलता**ति "या ताहि समापत्तीहि वुट्ठानकुसलता पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३३९) एवं वुत्ता यथापरिच्छिन्नसमयवसेनेव समापत्तितो वुट्ठानसमत्था "एत्तकं गते सूरिये उट्ठहिस्सामी"ति वुट्ठानकालपरिच्छेदका पञ्ञा।

धातुकुसलताति "अट्ठारस धातुयो चक्खुधातु...पे०... मनोविञ्ञाणधातु। या तासं धातूनं कुसलता पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३४०) एवं वुत्ता अट्ठारसन्नं धातूनं सभावपरिच्छेदका सवनधारणसम्मसनपटिवेधपञ्ञा। **मनसिकारकुसलता**ति "या तासं धातूनं मनसिकारकुसलता पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३४१) एवं वुत्ता तासंयेव धातूनं सम्मसनपटिवेधपच्चवेक्खणपञ्ञा।

आयतनकुसलताति "द्वादसायतनानि चक्खायतनं...पे०... धम्मायतनं। या तेसं आयतनानं आयतनकुसलता पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३४२) एवं वुत्ता द्वादसन्नं आयतनानं उग्गहमनसिकारपजानना पञ्ञा। अपिच धातुकुसलतापि उग्गहमनसिकारसवनसम्मसनपटिवेधपच्चवेक्खणेसु वत्तति मनसिकारकुसलतापि आयतनकुसलतापि। अयं पनेत्थ विसेसो, सवनउग्गहपच्चवेक्खणा लोकिया, पटिवेधो लोकुत्तरो, सम्मसनमनसिकारा लोकियलोकुत्तरमिस्सका। **पटिच्चसमुप्पादकुसलता**ति "अविज्जापच्चया सङ्खारा...पे०... समुदयो होतीति या तत्थ पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३४३) एवं वुत्ता द्वादसन्नं पच्चयाकारानं उग्गहादिवसेन पवत्ता पञ्ञा।

ठानकुसलताति "ये ये धम्मा येसं येसं धम्मानं हेतुपच्चया उप्पादाय तं तं ठानन्ति या तत्थ पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३४४) एवं वुत्ता "चक्खुं वत्थुं कत्वा रूपं आरम्मणं कत्वा उप्पन्नस्स चक्खुविञ्ञाणस्स चक्खुरूपं (ध० स० अट्ठ० १३४४) ठानञ्चेव कारणञ्चा"ति एवं ठानपरिच्छिन्दनसमत्था पञ्ञा। **अट्ठानकुसलता**ति "ये ये धम्मा येसं येसं धम्मानं न हेतू न पच्चया उप्पादाय तं तं अट्ठानन्ति या तत्थ पञ्ञा पजानना"ति (ध० स० १३४५) एवं वुत्ता "चक्खुं वत्थुं कत्वा रूपं आरम्मणं कत्वा सोतविञ्ञाणादीनि नुप्पज्जन्ति, तस्मा तेसं चक्खुरूपं न ठानं न कारण"न्ति एवं अट्ठानपरिच्छिन्दनसमत्था पञ्ञा अपिच एतस्मिं दुके "कित्तावता पन, भन्ते,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठानाठानकुसलो भिक्खूति अलं वचनायाति। इधानन्द, भिक्खु अट्ठानमेतं अनवकासो, यं दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो कञ्चि सङ्खारं निच्चतो उपगच्छेय्य, नेतं ठानं विज्जतीति पजानाति। ठानञ्च खो एतं विज्जति, यं पुथुज्जनो कञ्चि सङ्खारं निच्चतो उपगच्छेय्या''ति (म० नि० ३.१२७) इमिनापि सुत्तेन अत्थो वेदितब्बो।

अज्जवन्ति गोमुत्तवङ्कता चन्दवङ्कता नङ्गलकोटिवङ्कताति तयो अनज्जवा। एकच्चो हि भिक्खु पठमवये एकवीसतिया अनेसनासु छसु च अगोचरेसु चरति, मज्झिमपच्छिमवयेसु लज्जी कुक्कुच्चको सिक्खाकामो होति, अयं गोमुत्तवङ्कता नाम। एको पठमवयेपि पच्छिमवयेपि चतुपारिसुद्धिसीलं पूरेति, लज्जी कुक्कुच्चको सिक्खाकामो होति, मज्झिमवये पुरिमसदिसो, अयं चन्दवङ्कता नाम। एको पठमवयेपि मज्झिमवयेपि चतुपारिसुद्धिसीलं पूरेति, लज्जी कुक्कुच्चको सिक्खाकामो होति, पच्छिमवये पुरिमसदिसो अयं नङ्गलकोटिवङ्कता नाम। एको सब्बमेतं वङ्कतं पहाय तीसुपि वयेसु पेसलो लज्जी कुक्कुच्चको सिक्खाकामो होति। तस्स यो सो उजुभावो, इदं अज्जवं नाम। अभिधम्मेपि वुत्तं– "तत्थ कतमो अज्जवो। या अज्जवता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता, अयं वुच्चति अज्जवो''ति (ध० स० १३४६)। **लज्जव**न्ति "तत्थ कतमो लज्जवो ? यो हिरीयति हिरीयितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया। अयं वुच्चति लज्जवो''ति एवं वुत्तो लज्जीभावो।

खन्तीति "तत्थ कतमा खन्ति ? या खन्ति खमनता अधिवासनता अचण्डिक्कं अनस्सुरोपो अत्तमनता चित्तस्सा''ति (ध० स० १३४८) एवं वुत्ता अधिवासनखन्ति। **सोरच्च**न्ति "तत्थ कतमं सोरच्चं ? यो कायिको अवीतिक्कमो, वाचसिको अवीतिक्कमो, कायिकवाचसिको अवीतिक्कमो। इदं वुच्चति सोरच्चं। सब्बोपि सीलसंवरो सोरच्च''न्ति (ध० स० १३४९) एवं वुत्तो सुरतभावो।

साखल्यन्ति "तत्थ कतमं साखल्यं ? या सा वाचा अण्डका कक्कसा परकटुका पराभिसज्जनी कोधसामन्ता असमाधिसंवत्तनिका, तथारूपिं वाचं पहाय या सा वाचा नेळा कण्णसुखा पेमनीया हदयङ्गमा पोरी बहुजनकन्ता बहुजनमनापा, तथारूपिं वाचं भासिता होति। या तत्थ सण्हवाचता सखिलवाचता अफरुसवाचता। इदं वुच्चति साखल्य''न्ति (ध० स० १३५०) एवं वुत्तो सम्मोदकमुदुकभावो। **पटिसन्थारो**ति अयं लोकसन्निवासो आमिसेन धम्मेन चाति द्वीहि छिद्दो, तस्स तं छिद्दं यथा न पञ्ञायति, एवं पीठस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विय पच्चत्थरणेन आमिसेन धम्मेन च पटिसन्थरणं। अभिधम्मेपि वुत्तं "तत्थ कतमो पटिसन्थारो ? आमिसपटिसन्थारो च धम्मपटिसन्थारो च। इधेकच्चो पटिसन्थारको होति आमिसपटिसन्थारेन वा धम्मपटिसन्थारेन वा। अयं वुच्चति पटिसन्थारो"ति (ध० स० १३५१)। एत्थ च आमिसेन सङ्गहो आमिसपटिसन्थारो नाम। तं करोन्तेन मातापितूनं भिक्खुगतिकस्स वेय्यावच्चकरस्स रञ्ञो चोरानञ्च अग्गं अग्गहेत्वापि दातुं वट्टति। आमसित्वा दिन्ने हि राजानो च चोरा च अनत्थम्पि करोन्ति जीवितक्खयम्पि पापेन्ति, अनामसित्वा दिन्ने अत्तमना होन्ति। चोरनागवत्थुआदीनि चेत्थ वत्थूनि कथेतब्बानि। तानि समन्तपासादिकाय विनयट्ठकथायं (पाचि० अट्ठ० १८५-७) वित्थारितानि। सक्कच्चं उद्देसदानं पाळिवण्णना धम्मकथाकथनन्ति एवं धम्मेन सङ्गहो धम्मपटिसन्थारोनाम।

अविहिंसाति करुणापि करुणापुब्बभागोपि। वुत्तम्पि चेतं– "तत्थ कतमा अविहिंसा ? या सत्तेसु करुणा करुणायना करुणायितत्तं करुणाचेतोविमुत्ति, अयं वुच्चति अविहिंसा"ति। **सोचेय्य**न्ति मेत्ताय च मेत्तापुब्बभागस्स च वसेन सुचिभावो। वुत्तम्पि चेतं– "तत्थ कतमं सोचेय्यं ? या सत्तेसु मेत्ति मेत्तायना मेत्तायितत्तं मेत्ताचेतोविमुत्ति, इदं वुच्चति सोचेय्य"न्ति।

मुट्ठस्सच्चन्ति सतिविप्पवासो, यथाह "तत्थ कतमं मुट्ठस्सच्चं ? या असति अननुस्सति अप्पटिस्सति अस्सरणता अधारणता पिलापनता सम्मुस्सनता, इदं वुच्चति मुट्ठस्सच्चं" (ध० स० १३५६)। **असम्पजञ्ञ**न्ति, "तत्थ कतमं असम्पजञ्ञं ? यं अञ्ञाणं अदस्सनं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूल"न्ति एवं वुत्ता अविज्जायेव। **सति** सतियेव। **सम्पजञ्ञं** ञाणं।

इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारताति "तत्थ कतमा इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता ? इधेकच्चो चक्खुना रूपं दिस्वा निमित्तग्गाही होती"तिआदिना (ध० स० १३५२) नयेन वित्थारितो इन्द्रियसंवरभेदो। **भोजने अमत्तञ्ञुता**ति "तत्थ कतमा भोजने अमत्तञ्ञुता ? इधेकच्चो अप्पटिसङ्खा अयोनिसो आहारं आहारेति दवाय मदाय मण्डनाय विभूसनाय। या तत्थ असन्तुट्ठिता अमत्तञ्ञुता अप्पटिसङ्खा भोजने"ति एवं आगतो भोजने अमत्तञ्ञुभावो। अनन्तरदुको वुत्तप्पटिपक्खनयेन वेदितब्बो।

पटिसङ्खानबलन्ति "तत्थ कतमं पटिसङ्खानबलं ? या पञ्ञा पजानना"ति एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वित्थारितं अप्पटिसङ्खाय अकम्पनञाणं। **भावनाबल**न्ति भावेन्तस्स उप्पन्नं बलं। अत्थतो वीरियसम्बोज्झङ्गसीसेन सत्त बोज्झङ्गा होन्ति। वुत्तम्पि चेतं– "तत्थ कतमं भावनाबलं? या कुसलानं धम्मानं आसेवना भावना बहुलीकम्मं, इदं वुच्चति भावनाबलं। सत्तबोज्झङ्गा भावनाबल"न्ति।

सतिबलन्ति अस्सतिया अकम्पनवसेन सतियेव। **समाधिबल**न्ति उद्धच्चे अकम्पनवसेन समाधियेव। **समथो** समाधि। **विपस्सना** पञ्ञा। समथोव तं आकारं गहेत्वा पुन पवत्तेतब्बस्स समथस्स निमित्तवसेन **समथनिमित्तं पग्गाहनिमित्तेपि** एसेव नयो। **पग्गाहो** वीरियं। **अविक्खेपो** एकग्गता। इमेहि पन सति च सम्पजञ्ञञ्च पटिसङ्खानबलञ्च भावनाबलञ्च सतिबलञ्च समाधिबलञ्च समथो च विपस्सना च समथनिमित्तञ्च पग्गाहनिमित्तञ्च पग्गाहो च अविक्खेपो चाति छहि दुकेहि परतो सीलदिट्ठिसम्पदादुकेन च लोकियलोकुत्तरमिस्सका धम्मा कथिता।

सीलविपत्तीति "तत्थ कतमा सीलविपत्ति? कायिको वीतिक्कमो...पे०... सब्बम्पि दुस्सील्यं सीलविपत्ती"ति एवं वुत्तो सीलविनासको असंवरो। **दिट्ठिविपत्ती**ति "तत्थ कतमा दिट्ठिविपत्ति? नत्थि दिन्नं नत्थि यिट्ठ"न्ति एवं आगता सम्मादिट्ठिविनासिका मिच्छादिट्ठि।

सीलसम्पदाति "तत्थ कतमा सीलसम्पदा? कायिको अवीतिक्कमो"ति एवं पुब्बे वुत्तसोरच्चमेव सीलस्स सम्पादनतो परिपूरणतो "सीलसम्पदा"ति वुत्तं। एत्थ च "सब्बोपि सीलसंवरो सीलसम्पदा"ति इदं मानसिकपरियादानत्थं वुत्तं। **दिट्ठिसम्पदा**ति "तत्थ कतमा दिट्ठिसम्पदा? अत्थि दिन्नं अत्थि यिट्ठं...पे०... सच्छिकत्वा पवेदेन्तीति या एवरूपा पञ्ञा पजानना"ति एवं आगतं दिट्ठिपारिपूरिभूतं ञाणं।

सीलविसुद्धीति विसुद्धिं पापेतुं समत्थं सीलं। अभिधम्मे पनायं "तत्थ कतमा सीलविसुद्धि? कायिको अवीतिक्कमो वाचसिको अवीतिक्कमो कायिकवाचसिको अवीतिक्कमो, अयं वुच्चति सीलविसुद्धी"ति एवं विभत्ता। **दिट्ठिविसुद्धी**ति विसुद्धिं पापेतुं समत्थं दस्सनं। अभिधम्मे पनायं "तत्थ कतमा दिट्ठिविसुद्धि? कम्मस्सकतञाणं सच्चानुलोमिकञाणं मग्गसमङ्गिस्सञाणं फलसमङ्गिस्सञाण"न्ति एवं वुत्ता। एत्थ च तिविधं दुच्चरितं अत्तना कतम्पि परेन कतम्पि सकं नाम न होति अत्थभञ्जनतो। सुचरितं सकं नाम अत्थजननतोति एवं जाननं कम्मस्सकतञाणं नाम। तस्मिं ठत्वा बहुं वट्टगामिकम्मं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेनेवाह "खये ञाणन्ति मग्गसमङ्गिस्स ञाणं। अनुप्पादे ञाणन्ति फलसमङ्गिस्स ञाण"न्ति। **इमे खो, आवुसो**तिआदि एकके वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति पञ्चतिंसाय दुकानं वसेन थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

दुकवण्णना निट्ठिता।

तिकवण्णना

३०५. इति दुकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि तिकवसेन दस्सेतुं पुन आरभि। तत्थ लुब्भतीति **लोभो**। अकुसलञ्च तं मूलञ्च, अकुसलानं वा मूलन्ति **अकुसलमूलं**। दुस्सतीति **दोसो**। मुय्हतीति **मोहो**। तेसं पटिपक्खनयेन अलोभादयो वेदितब्बा।

दुट्ठु चरितानि, विरूपानि वा चरितानीति **दुच्चरितानि**। कायेन दुच्चरितं, कायतो वा पवत्तं दुच्चरितन्ति **कायदुच्चरितं**। सेसेसुपि एसेव नयो। सुट्ठु चरितानि, सुन्दरानि वा चरितानीति **सुचरितानि**। द्वेपि चेते तिका पण्णत्तिया वा कम्मपथेहि वा कथेतब्बा। पञ्ञत्तिया ताव कायद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापदस्स वीतिक्कमो **कायदुच्चरितं**। अवीतिक्कमो **कायसुचरितं**। वचीद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापदस्स वीतिक्कमो **वचीदुच्चरितं,** अवीतिक्कमो **वचीसुचरितं**। उभयत्थ पञ्ञत्तस्स सिक्खापदस्स वीतिक्कमोव **मनोदुच्चरितं,** अवीतिक्कमो **मनोसुचरितं**। अयं पण्णत्तिकथा। पाणातिपातादयो पन तिस्सो चेतना कायद्वारेपि वचीद्वारेपि उप्पन्ना **कायदुच्चरितं**। चतस्सो मुसावादादिचेतना **वचीदुच्चरितं**। अभिज्झा ब्यापादो मिच्छादिट्ठीति तयो चेतनासम्पयुत्तधम्मा **मनोदुच्चरितं**। पाणातिपातादीहि विरमन्तस्स उप्पन्ना तिस्सो चेतनापि विरतियोपि कायसुचरितं। मुसावादादीहि विरमन्तस्स चतस्सो चेतनापि विरतियोपि वचीसुचरितं। अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठीति तयो चेतनासम्पयुत्तधम्मा मनोसुचरितन्ति अयं कम्मपथकथा।

कामपटिसंयुत्तो वितक्को **कामवितक्को**। ब्यापादपटिसंयुत्तो वितक्को **ब्यापादवितक्को**। विहिंसापटिसंयुत्तो वितक्को **विहिंसावितक्को**। तेसु द्वे सत्तेसुपि सङ्खारेसुपि उप्पज्जन्ति। कामवितक्को हि पिये मनापे सत्ते वा सङ्खारे वा वितक्केन्तस्स उप्पज्जति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेनेवाह "खये ञाणन्ति मग्गसमङ्गिस्स ञाणं। अनुप्पादे ञाणन्ति फलसमङ्गिस्स ञाण"न्ति। **इमे खो, आवुसो**तिआदि एकके वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति पञ्चतिंसाय दुकानं वसेन थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

दुकवण्णना निट्ठिता।

तिकवण्णना

३०५. इति दुकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि तिकवसेन दस्सेतुं पुन आरभि। तत्थ लुब्भतीति **लोभो**। अकुसलञ्च तं मूलञ्च, अकुसलानं वा मूलन्ति **अकुसलमूलं**। दुस्सतीति **दोसो**। मुय्हतीति **मोहो**। तेसं पटिपक्खनयेन अलोभादयो वेदितब्बा।

दुट्ठु चरितानि, विरूपानि वा चरितानीति **दुच्चरितानि**। कायेन दुच्चरितं, कायतो वा पवत्तं दुच्चरितन्ति **कायदुच्चरितं**। सेसेसुपि एसेव नयो। सुट्ठु चरितानि, सुन्दरानि वा चरितानीति **सुचरितानि**। द्वेपि चेते तिका पण्णत्तिया वा कम्मपथेहि वा कथेतब्बा। पञ्ञत्तिया ताव कायद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापदस्स वीतिक्कमो **कायदुच्चरितं**। अवीतिक्कमो **कायसुचरितं**। वचीद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापदस्स वीतिक्कमो **वचीदुच्चरितं,** अवीतिक्कमो **वचीसुचरितं**। उभयत्थ पञ्ञत्तस्स सिक्खापदस्स वीतिक्कमोव **मनोदुच्चरितं,** अवीतिक्कमो **मनोसुचरितं**। अयं पण्णत्तिकथा। पाणातिपातादयो पन तिस्सो चेतना कायद्वारेपि वचीद्वारेपि उप्पन्ना **कायदुच्चरितं**। चतस्सो मुसावादादिचेतना **वचीदुच्चरितं**। अभिज्झा ब्यापादो मिच्छादिट्ठीति तयो चेतनासम्पयुत्तधम्मा **मनोदुच्चरितं**। पाणातिपातादीहि विरमन्तस्स उप्पन्ना तिस्सो चेतनापि विरतियोपि कायसुचरितं। मुसावादादीहि विरमन्तस्स चतस्सो चेतनापि विरतियोपि वचीसुचरितं। अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठीति तयो चेतनासम्पयुत्तधम्मा मनोसुचरितन्ति अयं कम्मपथकथा।

कामपटिसंयुत्तो वितक्को **कामवितक्को**। ब्यापादपटिसंयुत्तो वितक्को **ब्यापादवितक्को**। विहिंसापटिसंयुत्तो वितक्को **विहिंसावितक्को**। तेसु द्वे सत्तेसुपि सङ्खारेसुपि उप्पज्जन्ति। कामवितक्को हि पिये मनापे सत्ते वा सङ्खारे वा वितक्केन्तस्स उप्पज्जति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्यापादवितक्को अप्पिये अमनापे सत्ते वा सङ्खारे वा कुज्झित्वा ओलोकनकालतो पट्ठाय याव विनासना उप्पज्जति। विहिंसावितक्को सङ्खारेसु नुप्पज्जति। सङ्खारो हि दुक्खापेतब्बो नाम नत्थि। इमे सत्ता हञ्ञन्तु वा उच्छिज्जन्तु वा विनस्सन्तु वा मा वा अहेसुन्ति चिन्तनकाले पन सत्तेसु उप्पज्जति।

नेक्खम्मपटिसंयुत्तो वितक्को **नेक्खम्मवितक्को**। सो असुभपुब्बभागे कामावचरो होति। असुभज्झाने रूपावचरो। तं झानं पादकं कत्वा उप्पन्नमग्गफलकाले लोकुत्तरो। अब्यापादपटिसंयुत्तो वितक्को **अब्यापादवितक्को**। सो मेत्तापुब्बभागे कामावचरो होति। मेत्ताझाने रूपावचरो। तं झानं पादकं कत्वा उप्पन्नमग्गफलकाले लोकुत्तरो। अविहिंसापटिसंयुत्तो वितक्को **अविहिंसावितक्को**। सो करुणापुब्बभागे कामावचरो। करुणाझाने रूपावचरो। तं झानं पादकं कत्वा उप्पन्नमग्गफलकाले लोकुत्तरो। यदा अलोभो सीसं होति, तदा इतरे द्वे तदन्वायिका भवन्ति। यदा मेत्ता सीसं होति, तदा इतरे द्वे तदन्वायिका भवन्ति। यदा करुणा सीसं होति, तदा इतरे द्वे तदन्वायिका भवन्तीति। कामसङ्कप्पादयो वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। देसनामत्तमेव हेतं। अत्थतो पन कामवितक्कादीनञ्च कामसङ्कप्पादीनञ्च नानाकरणं नत्थि।

कामपटिसंयुत्ता सञ्ञा **कामसञ्ञा**। ब्यापादपटिसंयुत्ता सञ्ञा **ब्यापादसञ्ञा**। विहिंसापटिसंयुत्ता सञ्ञा **विहिंसासञ्ञा**। तासम्पि कामवितक्कादीनं विय उप्पज्जनाकारो वेदितब्बो। तंसम्पयुत्तायेव हि एता। **नेक्खम्मसञ्ञादयो**पि नेक्खम्मवितक्कादिसम्पयुत्तायेव। तस्मा तासम्पि तथेव कामावचरादिभावो वेदितब्बो।

कामधातुआदीसु "कामपटिसंयुत्तो तक्को वितक्को मिच्छासङ्कप्पो। अयं वुच्चति कामधातु। सब्बेपि अकुसला धम्मा कामधातू"ति अयं **कामधातु**। "ब्यापादपटिसंयुत्तो तक्को वितक्को मिच्छासङ्कप्पो। अयं वुच्चति ब्यापादधातु। दससु आघातवत्थूसु चित्तस्स आघातो पटिघातो अनत्तमनता चित्तस्सा"ति अयं **ब्यापादधातु**। "विहिंसा पटिसंयुत्तो तक्को वितक्को मिच्छासङ्कप्पो। अयं वुच्चति विहिंसाधातु। इधेकच्चो पाणिना वा लेड्डुना वा दण्डेन वा सत्थेन वा रज्जुया वा अञ्ञतरञ्ञतरेन वा सत्ते विहेठेती"ति अयं **विहिंसाधातु**। तत्थ द्वे कथा सब्बसङ्गाहिका च असम्भिन्ना च। तत्थ कामधातुया गहिताय इतरा द्वे गहिताव होन्ति, ततो पन नीहरित्वा अयं ब्यापादधातु अयं विहिंसाधातूति दस्सेतीति अयं सब्बसङ्गाहिककथा नाम। कामधातुं कथेन्तो पन भगवा ब्यापादधातुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्यापादधातुट्ठाने, विहिंसाधातुं विहिंसाधातुट्ठाने ठपेत्वा अवसेसं कामधातु नामाति कथेसीति अयं असम्भिन्नकथा नाम।

नेक्खम्मधातुआदीसु "नेक्खम्मपटिसंयुत्तो तक्को वितक्को सम्मासङ्कप्पो। अयं वुच्चति नेक्खम्मधातु। सब्बेपि कुसला धम्मा नेक्खम्मधातू"ति अयं **नेक्खम्मधातु।** "अब्यापादपटिसंयुत्तो तक्को...पे०... अयं वुच्चति अब्यापादधातु। या सत्तेसु मेत्ति...पे०... मेत्ताचेतोविमुत्ती"ति अयं **अब्यापादधातु।** "अविहिंसापटिसंयुत्तो तक्को...पे०... अयं वुच्चति अविहिंसाधातु। या सत्तेसु करुणा...पे०... करुणाचेतोविमुत्ती"ति अयं **अविहिंसाधातु।** इधापि वुत्तनयेनेव द्वे कथा वेदितब्बा।

अपरापि तिस्सो धातुयोति अञ्ञापि सुञ्ञतट्ठेन तिस्सो धातुयो। तासु "तत्थ कतमा कामधातु? हेट्ठतो अवीचिनिरयं परियन्तं करित्वा"ति एवं वित्थारितो कामभवो **कामधातु** नाम। "हेट्ठतो ब्रह्मलोकं परियन्तं करित्वा आकासानञ्चायतनुपगे देवे परियन्तं करित्वा"ति एवं वित्थारिता पन रूपारूपभवा इतरा द्वे धातुयो। धातुया आगतट्ठानम्हि हि भवेन परिच्छिन्दितब्बा। भवस्स आगतट्ठाने धातुया परिच्छिन्दितब्बा। इध भवेन परिच्छेदो कथितो। रूपधातुआदीसु रूपारूपधातुयो रूपारूपभवायेव। निरोधधातुया निब्बानं कथितं।

हीनादीसु हीना धातूति द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा। अवसेसा तेभूमकधम्मा **मज्झिमधातु।** नव लोकुत्तरधम्मा **पणीतधातु।**

कामतण्हाति पञ्चकामगुणिको रागो। रूपारूपभवेसु पन रागो झाननिकन्तिसस्सतदिट्ठिसहगतो रागो भववसेन पत्थना **भवतण्हा।** उच्छेददिट्ठिसहगतो रागो **विभवतण्हा।** अपिच ठपेत्वा पच्छिमं तण्हाद्वयं सेसतण्हा कामतण्हा नाम। यथाह "तत्थ कतमा भवतण्हा? भवदिट्ठिसहगतो रागो सारागो चित्तस्स सारागो। अयं वुच्चति भवतण्हा। तत्थ कतमा विभवतण्हा? उच्छेददिट्ठिसहगतो रागो सारागो चित्तस्स सारागो, अयं वुच्चति विभवतण्हा। अवसेसा तण्हा कामतण्हा"ति। पुन कामतण्हादीसु पञ्चकामगुणिको रागो कामतण्हा। रूपारूपभवेसु छन्दरागो इतरा द्वे तण्हा। अभिधम्मे पनेता "कामधातुपटिसंयुत्तो...पे०... अरूपधातुपटिसंयुत्तो"ति एवं वित्थारिता। इमिना वारेन किं दस्सेति? सब्बेपि तेभूमका धम्मा रजनीयट्ठेन तण्हावत्थुकाति सब्बतण्हा कामतण्हाय परियादियित्वा ततो नीहरित्वा इतरा द्वे तण्हा दस्सेति। रूपतण्हादीसु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूपभवे छन्दरागो **रूपतण्हा**। अरूपभवे छन्दरागो **अरूपतण्हा**। उच्छेददिट्ठिसहगतो रागो **निरोधतण्हा**।

संयोजनत्तिके वट्टस्मिं संयोजयन्ति बन्धन्तीति **संयोजनानि**। सति रूपादिभेदे काये दिट्ठि, विज्जमाना वा काये दिट्ठीति **सक्कायदिट्ठि**। विचिनन्तो एताय किच्छति, न सक्कोति सन्निट्ठानं कातुन्ति **विचिकिच्छा**। सीलञ्च वतञ्च परामसतीति **सीलब्बतपरामासो**। अत्थतो पन "रूपं अत्ततो समनुपस्सती"तिआदिना नयेन आगता वीसतिवत्थुका दिट्ठि **सक्कायदिट्ठि** नाम। "सत्थरि कङ्खती"तिआदिना नयेन आगता अट्ठवत्थुका विमति **विचिकिच्छा** नाम। "इधेकच्चो सीलेन सुद्धि वतेन सुद्धि सीलब्बतेन सुद्धीति सीलं परामसति, वतं परामसति, सीलब्बतं परामसति। या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगत"न्तिआदिना नयेन आगतो विपरियेसग्गाहो **सीलब्बतपरामासो** नाम।

तयो आसवाति एत्थ चिरपारिवासियट्ठेन वा आसवनट्ठेन वा **आसवा**। तत्थ "पुरिमा, भिक्खवे, कोटि न पञ्ञायति अविज्जाय, इतो पुब्बे अविज्जा नाहोसि, अथ पच्छा समभवी"ति, "पुरिमा, भिक्खवे, कोटि न पञ्ञायति भवतण्हाय भवदिट्ठिया, इतो पुब्बे भवदिट्ठि नाहोसि, अथ पच्छा समभवी"ति एवं ताव चिरपारिवासियट्ठेन आसवा वेदितब्बा। चक्खुतो रूपे सवति आसवति सन्दति पवत्तति। सोततो सद्दे। घानतो गन्धे। जिव्हातो रसे। कायतो फोट्ठब्बे। मनतो धम्मे सवति आसवति सन्दति पवत्ततीति एवं आसवनट्ठेन आसवाति वेदितब्बा।

पाळियं पन कत्थचि द्वे आसवा आगता "दिट्ठधम्मिका च आसवा सम्परायिका च आसवा"ति, कत्थचि "तयोमे, भिक्खवे, आसवा। कामासवो भवासवो अविज्जासवो"ति तयो। अभिधम्मे तेयेव दिट्ठासवेन सद्धिं चत्तारो। निब्बेधिकपरियाये "अत्थि, भिक्खवे, आसवा निरयगामिनिया, अत्थि आसवा तिरच्छानयोनिगामिनिया, अत्थि आसवा पेत्तिविसयगामिनिया, अत्थि आसवा मनुस्सलोकगामिनिया अत्थि आसवा देवलोकगामिनिया"ति एवं पञ्च। छक्कनिपाते आहुनेय्यसुत्ते "अत्थि, भिक्खवे, आसवा संवरा पहातब्बा, अत्थि आसवा पटिसेवना पहातब्बा, अत्थि आसवा परिवज्जना पहातब्बा, अत्थि आसवा अधिवासना पहातब्बा, अत्थि आसवा विनोदना पहातब्बा, अत्थि आसवा भावना पहातब्बा"ति एवं छ। सब्बासवपरियाये तेयेव दस्सनापहातब्बेहि सद्धिं सत्त। इमस्मिं पन सङ्गीतिसुत्ते तयो। तत्थ "यो कामेसु कामच्छन्दो"ति एवं वुत्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्चकामगुणिको रागो **कामासवो** नाम। "यो भवेसु भवच्छन्दो"ति एवं वुत्तो सस्सतदिट्ठिसहगतो रागो, भववसेन वा पत्थना **भवासवो** नाम। "दुक्खे अञ्ञाण"न्तिआदिना नयेन आगता अविज्जा **अविज्जासवो** नामाति। कामभवादयो कामधातुआदिवसेन वुत्तायेव।

कामेसनादीसु "तत्थ कतमा कामेसना? यो कामेसु कामच्छन्दो कामज्झोसानं, अयं वुच्चति कामेसना"ति एवं वुत्तो कामगवेसनरागो **कामेसना** नाम। "तत्थ कतमा भवेसना? यो भवेसु भवच्छन्दो भवज्झोसानं, अयं वुच्चति भवेसना"ति एवं वुत्तो भवगवेसनरागो **भवेसना** नाम। "तत्थ कतमा ब्रह्मचरियेसना? सस्सतो लोकोति वा...पे०... नेव होति न नहोति तथागतो परम्मरणाति वा, या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं विपरियेसग्गाहो, अयं वुच्चति ब्रह्मचरियेसना"ति एवं वुत्ता दिट्ठिगतिकसम्मतस्स ब्रह्मचरियस्स गवेसनदिट्ठि **ब्रह्मचरियेसना** नाम। न केवलञ्च भवरागदिट्ठियोव, तदेकट्ठं कम्मम्पि एसनायेव। वुत्तञ्हेतं "तत्थ कतमा कामेसना? कामरागो तदेकट्ठं अकुसलं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं, अयं वुच्चति कामेसना। तत्थ कतमा भवेसना? भवरागो तदेकट्ठं अकुसलं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं, अयं वुच्चति भवेसना। तत्थ कतमा ब्रह्मचरियेसना? अन्तग्गाहिका दिट्ठि तदेकट्ठं अकुसलं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं, अयं वुच्चति ब्रह्मचरियेसना"ति।

विधासु "कथंविधं सीलवन्तं वदन्ति, कथंविधं पञ्ञवन्तं वदन्ती"तिआदीसु (सं० नि० १.१.९५) आकारसण्ठानं विधा नाम। "एकविधेन ञाणवत्थु दुविधेन ञाणवत्थू"तिआदीसु (विभं० ७५१) कोट्ठासो। "सेय्योहमस्मीति विधा"तिआदीसु (विभं० ९२०) मानो विधा नाम। इध सो अधिप्पेतो। मानो हि सेय्यादिवसेन विदहनतो **विधा**ति वुच्चति। **सेय्योहमस्मी**ति इमिना सेय्यसदिसहीनानं वसेन तयो माना वुत्ता। सदिसहीनेसुपि एसेव नयो।

अयञ्हि **मानो** नाम सेय्यस्स तिविधो, सदिसस्स तिविधो, हीनस्स तिविधोति **नवविधो** होति। तत्थ "सेय्यस्स सेय्योहमस्मी"ति मानो राजूनञ्चेव पब्बजितानञ्च उप्पज्जति।

राजा हि रट्ठेन वा धनवाहनेहि वा "को मया सदिसो अत्थी"ति एतं मानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करोति। पब्बजितोपि सीलधुतङ्गादीहि "को मया सदिसो अत्थी"ति एतं मानं करोति। "सेय्यस्स सदिसोहमस्मी"ति मानोपि एतेसंयेव उप्पज्जति। राजा हि रट्ठेन वा धनवाहनेहि वा अञ्ञराजूहि सद्धिं मय्हं किं नानाकरणन्ति एतं मानं करोति। पब्बजितोपि सीलधुतङ्गादीहिपि अञ्ञेन भिक्खुना मय्हं किं नानाकरणन्ति एतं मानं करोति। "सेय्यस्स हीनोहमस्मी"ति मानोपि एतेसंयेव उप्पज्जति। यस्स हि रञ्ञो रट्ठं वा धनवाहनादीनि वा नातिसम्पन्नानि होन्ति, सो मय्हं राजाति वोहारमुखमत्तमेव, किं राजा नाम अहन्ति एतं मानं करोति। पब्बजितोपि अप्पलाभसक्कारो अहं धम्मकथिको बहुस्सुतो महाथेरोति कथामत्तकमेव, किं धम्मकथिको नामाहं किं बहुस्सुतो किं महाथेरो यस्स मे लाभसक्कारो नत्थीति एतं मानं करोति।

"सदिसस्स सेय्योहमस्मी"ति मानादयो अमच्चादीनं उप्पज्जन्ति। अमच्चो वा हि रट्ठियो वा भोगयानवाहनादीहि को मया सदिसो अञ्ञो राजपुरिसो अत्थीति वा मय्हं अञ्ञेहि सद्धिं किं नानाकरणन्ति वा अमच्चोति नाममेव मय्हं, घासच्छादनमत्तम्पि मे नत्थि, किं अमच्चो नामाहन्ति वा एते माने करोति।

"हीनस्स सेय्योहमस्मी"ति मानादयो दासादीनं उप्पज्जन्ति। दासो हि मातितो वा पितितो वा को मया सदिसो अञ्ञो दासो नाम अत्थि, अञ्ञे जीवितुं असक्कोन्ता कुच्छिहेतु दासा जाता, अहं पन पवेणीआगतत्ता सेय्योति वा पवेणीआगतभावेन उभतोसुद्धिकदासत्तेन असुकदासेन नाम सद्धिं किं मय्हं नानाकरणन्ति वा कुच्छिवसेनाहं दासब्यं उपगतो, मातापितुकोटिया पन मे दासट्ठानं नत्थि, किं दासो नाम अहन्ति वा एते माने करोति। यथा च दासो, एवं पुक्कुसचण्डालादयोपि एते माने करोन्तियेव।

एत्थ च सेय्यस्स सेय्योहमस्मीति, च सदिसस्स सदिसोहमस्मीति च हीनस्स हीनोहमस्मीति च इमे तयो माना याथावमाना नाम अरहत्तमग्गवज्झा। सेसा छ माना अयाथावमाना नाम पठममग्गवज्झा।

तयो अद्धाति तयो काला। **अतीतो अद्धा**तिआदीसु द्वेपरियाया सुत्तन्तपरियायो च अभिधम्मपरियायो च। सुत्तन्तपरियायेन पटिसन्धितो पुब्बे **अतीतो अद्धा** नाम। चुतितो पच्छा **अनागतो अद्धा** नाम। सह चुतिपटिसन्धीहि तदन्तरं **पच्चुप्पन्नो अद्धा** नाम। अभिधम्मपरियायेन तीसु खणेसु भङ्गतो उद्धं **अतीतो अद्धा** नाम। उप्पादतो पुब्बे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनागतो अद्धा नाम। खणत्तये **पच्चुप्पन्नो अद्धा** नाम। अतीतादिभेदो च नाम अयं धम्मानं होति, न कालस्स। अतीतादिभेदे पन धम्मे उपादाय इध परमत्थतो अविज्जमानोपि कालो तेनेव वोहारेन वुत्तोति वेदितब्बो।

तयो अन्ताति तयो कोट्ठासा। "कायबन्धनस्स अन्तो जीरती"तिआदीसु (चूळव० २७८) हि अन्तोयेव अन्तो। "एसेवन्तो दुक्खस्सा"तिआदीसु (सं० नि० १.२.५१) परभागो अन्तो। "अन्तमिदं, भिक्खवे, जीविकान"न्ति (सं० नि० २.३.८०) एत्थ लामकभावो अन्तो। "सक्कायो खो, आवुसो, पठमो अन्तो"तिआदीसु (अ० नि० २.६.६१) कोट्ठासो अन्तो। इध कोट्ठासो अधिप्पेतो। **सक्कायो**ति पञ्चुपादानक्खन्धा। **सक्कायसमुदयो**ति तेसं निब्बत्तिका पुरिमतण्हा। **सक्कायनिरोधो**ति उभिन्नं अप्पवत्तिभूतं निब्बानं। मग्गो पन निरोधाधिगमस्स उपायत्ता निरोधे गहिते गहितोवाति वेदितब्बो।

दुक्खदुक्खताति दुक्खभूता दुक्खता। दुक्खवेदनायेतं नामं। **सङ्खारदुक्खता**ति सङ्खारभावेन दुक्खता। अदुक्खमसुखावेदनायेतं नामं। सा हि सङ्खतत्ता उप्पादजराभङ्गपीळिता, तस्मा अञ्ञदुक्खसभावविरहतो सङ्खारदुक्खताति वुत्ता। **विपरिणामदुक्खता**ति विपरिणामे दुक्खता। सुखवेदनायेतं नामं। सुखस्स हि विपरिणामे दुक्खं उप्पज्जति, तस्मा सुखं विपरिणामदुक्खताति वुत्तं। अपिच ठपेत्वा दुक्खवेदनं सुखवेदनञ्च सब्बेपि तेभूमका धम्मा "सब्बे सङ्खारा दुक्खा"ति वचनतो सङ्खारदुक्खताति वेदितब्बा।

मिच्छत्तनियतोति मिच्छासभावो हुत्वा नियतो। नियतमिच्छादिट्ठिया सद्धिं आनन्तरियकम्मस्सेतं नामं। सम्मासभावे नियतो **सम्मत्तनियतो**। चतुन्नं अरियमग्गानमेतं नामं। न नियतोति **अनियतो**। अवसेसानं धम्मानमेतं नामं।

तयो तमाति "तमन्धकारो सम्मोहो अविज्जोघो महाभयो"ति वचनतो अविज्जा तमो नाम। इध पन अविज्जासीसेन विचिकिच्छा वुत्ता। **आरब्भा**ति आगम्म। **कङ्खती**ति कङ्खं उप्पादेति। **विचिकिच्छती**ति विचिनन्तो किच्छं आपज्जति, सन्निट्ठातुं न सक्कोति। **नाधिमुच्चती**ति तत्थ अधिमुच्छितुं न सक्कोति। **न सम्पसीदती**ति तं आरब्भ पसादं आरोपेतुं न सक्कोति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरक्खेय्यानीति न रक्खितब्बानि। तीसु द्वारेसु पच्चेकं रक्खणकिच्चं नत्थि, सब्बानि सतिया एव रक्खितानीति दीपेति। **नत्थि तथागतस्सा**ति। "इदं नाम मे सहसा उप्पन्नं कायदुच्चरितं, इमाहं यथा मे परो न जानाति, तथा रक्खामि, पटिच्छादेमी"ति एवं रक्खितब्बं नत्थि तथागतस्स कायदुच्चरितं। सेसेसुपि एसेव नयो। किं पन सेसखीणासवानं कायसमाचारादयो अपरिसुद्धाति? नो अपरिसुद्धा। न पन तथागतस्स विय परिसुद्धा। अप्पस्सुतखीणासवो हि किञ्चापि लोकवज्जं नापज्जति, पण्णत्तियं पन अकोविदत्ता विहारकारं कुटिकारं सहगारं सहसेय्यन्ति एवरूपा कायद्वारे आपत्तियो आपज्जति। सञ्चरित्तं पदसोधम्मं उत्तरिछप्पञ्चवाचं भूतारोचनन्ति एवरूपा वचीद्वारे आपत्तियो आपज्जति। उपनिक्खित्तसादियनवसेन मनोद्वारे रूपियप्पटिग्गाहणापत्तिं आपज्जति, धम्मसेनापतिसदिसस्सापि हि खीणासवस्स मनोद्वारे सउपारम्भवसेन मनोदुच्चरितं उप्पज्जति एव।

चातुमवत्थुस्मिञ्हि पञ्चहि भिक्खुसतेहि सद्धिं सारिपुत्तमोग्गल्लानानं पणामितकाले तेसं अत्थाय चातुमेय्यकेहि सक्येहि भगवति खमापिते थेरो भगवता "किन्ति ते सारिपुत्त अहोसि मया भिक्खुसङ्घे पणामिते"ति पुट्ठो अहं परिसाय अब्यत्तभावेन सत्थारा पणामितो। इतो दानि पट्ठाय परं न ओवदिस्सामीति चित्तं उप्पादेत्वा आह "एवं खो मे, भन्ते, अहोसि भगवता भिक्खुसङ्घो पणामितो, अप्पोस्सुक्को दानि भगवा दिट्ठधम्मसुखविहारं अनुयुत्तो विहरिस्सति, मयम्पि दानि अप्पोस्सुक्का दिट्ठधम्मसुखविहारं अनुयुत्ता विहरिस्सामा"ति।

अथस्स तस्मिं मनोदुच्चरिते उपारम्भं आरोपेन्तो सत्था आह– "आगमेहि त्वं, सारिपुत्त न खो ते, सारिपुत्त, पुनपि एवरूपं चित्तं उप्पादेतब्ब"न्ति। एवं परं न ओवदिस्सामि नानुसासिस्सामीति वितक्कितमत्तम्पि थेरस्स मनोदुच्चरितं नाम जातं। भगवतो पन एत्तकं नाम नत्थि, अनच्छरियञ्चेतं। सब्बञ्ञुतं पत्तस्स दुच्चरितं न भवेय्य। बोधिसत्तभूमियं ठितस्स छब्बस्सानि पधानं अनुयुञ्जन्तस्सापि पनस्स नाहोसि। उदरच्छविया पिट्ठिकण्टकं अल्लीनाय "कालङ्कतो समणो गोतमो"ति देवतानं विमतिया उप्पज्जमानायपि "सिद्धत्थ कस्मा किलमसि? सक्का भोगे च भुञ्जितुं पुञ्ञानि च कातु"न्ति मारेन पापिमता वुच्चमानस्स "भोगे भुञ्जिस्सामी"ति वितक्कमत्तम्पि नुप्पज्जति। अथ नं मारो बोधिसत्तकाले छब्बस्सानि बुद्धकाले एकं वस्सं अनुबन्धित्वा किञ्चि वज्जं अपस्सित्वा इदं वत्वा पक्कामि–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"सत्तवस्सानि भगवन्तं, अनुबन्धिं पदापदं।
ओतारं नाधिगच्छिस्सं, सम्बुद्धस्स सतीमतो"ति।। (सु० नि० ४४८)

अपिच अट्ठारसन्नं बुद्धधम्मानं वसेनापि भगवतो दुच्चरिताभावो वेदितब्बो। **अट्ठारस बुद्धधम्मा** नाम नत्थि तथागतस्स कायदुच्चरितं, नत्थि वचीदुच्चरितं, नत्थि मनोदुच्चरितं, अतीते बुद्धस्स अप्पटिहतञाणं, अनागते, पच्चुप्पन्ने बुद्धस्स अप्पटिहतञाणं, सब्बं कायकम्मं बुद्धस्स भगवतो ञाणानुपरिवत्ति, सब्बं वचीकम्मं, सब्बं मनोकम्मं बुद्धस्स भगवतो ञाणानुपरिवत्ति, नत्थि छन्दस्स हानि, नत्थि वीरियस्स हानि, नत्थि सतिया हानि, नत्थि दवा, नत्थि रवा, नत्थि चलितं नत्थि सहसा, नत्थि अब्यावटो मनो, नत्थि अकुसलचित्तन्ति।

किञ्चनाति पलिबोधा। **रागो किञ्चनन्ति** रागो उप्पज्जमानो सत्ते बन्धति पलिबुन्धति तस्मा किञ्चनन्ति वुच्चति। इतरेसुपि द्वीसु एसेव नयो।

अग्गीति अनुदहनट्ठेन **अग्गि**। **रागग्गी**ति रागो उप्पज्जमानो सत्ते अनुदहति झापेति, तस्मा अग्गीति वुच्चति। इतरेसुपि एसेव नयो। तत्थ वत्थूनि एका दहरभिक्खुनी चित्तलपब्बतविहारे उपोसथागारं गन्त्वा द्वारपालरूपकं ओलोकयमाना ठिता। अथस्सा अन्तो रागो उप्पन्नो। सा तेनेव झायित्वा कालमकासि। भिक्खुनियो गच्छमाना "अयं दहरा ठिता, पक्कोसथ, न"न्ति आहंसु। एका गन्त्वा कस्मा ठितासीति हत्थे गण्हि। गहितमत्ता परिवत्तित्वा पपता। इदं ताव रागस्स अनुदहनताय वत्थु। दोसस्स पन अनुदहनताय **मनोपदोसिका** देवा। मोहस्स अनुदहनताय **खिड्डापदोसिका** देवा दट्ठब्बा। मोहवसेन हि तासं सतिसम्मोसो होति। तस्मा खिड्डावसेन आहारकालं अतिवत्तित्वा कालङ्करोन्ति।

आहुनेय्यग्गीतिआदीसु आहुनं वुच्चति सक्कारो, आहुनं अरहन्तीति **आहुनेय्या**। मातापितरो हि पुत्तानं बहूपकारताय आहुनं अरहन्ति। तेसु विप्पटिपज्जमाना पुत्ता निरयादीसु निब्बत्तन्ति। तस्मा किञ्चापि मातापितरो नानुदहन्ति, अनुदहनस्स पन पच्चया होन्ति। इति अनुदहनट्ठेन आहुनेय्यग्गीति वुच्चन्ति। स्वायमत्थो मित्तविन्दकवत्थुना दीपेतब्बो –

मित्तविन्दको हि मातरा "तात, अज्ज उपोसथिको हुत्वा विहारे सब्बरत्तिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मस्सवनं सुण, सहस्सं ते दस्सामी''ति वुत्तो धनलोभेन उपोसथं समादाय विहारं गन्त्वा इदं ठानं अकुतोभयन्ति सल्लक्खेत्वा धम्मासनस्स हेट्ठा निपन्नो सब्बरत्तिं निद्दायित्वा घरं अगमासि। माता पातोव यागुं पचित्वा उपनामेसि। सो सहस्सं गहेत्वाव पिवि। अथस्स एतदहोसि– ''धनं संहरिस्सामी''ति। सो नावाय समुद्दं पक्खन्दितुकामो अहोसि। अथ नं माता ''तात, इमस्मिं कुले चत्तालीसकोटिधनं अत्थि, अलं गमनेना''ति निवारेसि। सो तस्सा वचनं अनादियित्वा गच्छति एव। माता पुरतो अट्ठासि। अथ नं कुज्झित्वा ''अयं मय्हं पुरतो तिट्ठती''ति पादेन पहरित्वा पतितं अन्तरं कत्वा अगमासि।

माता उट्ठहित्वा ''मादिसाय मातरि एवरूपं कम्मं कत्वा गतस्स ते गतट्ठाने सुखं भविस्सतीति एवंसञ्ञी नाम त्वं पुत्ता''ति आह। तस्स नावं आरुय्ह गच्छतो सत्तमे दिवसे नावा अट्ठासि। अथ ते मनुस्सा ''अद्धा एत्थ पापपुरिसो अत्थि सलाकं देथा''ति आहंसु। सलाका दिय्यमाना तस्सेव तिक्खत्तुं पापुणाति। ते तस्स उळुम्पं दत्वा तं समुद्दे पक्खिपिंसु। सो एकं दीपं गन्त्वा विमानपेतीहि सद्धिं सम्पत्तिं अनुभवन्तो ताहि ''पुरतो पुरतो मा अगमासी''ति वुच्चमानोपि तद्दिगुणं तद्दिगुणं सम्पत्तिं पस्सन्तो अनुपुब्बेन खुरचक्कधरं एकं अद्दस। तस्स तं चक्कं पदुमपुप्फं विय उपट्ठासि। सो तं आह– ''अम्भो, इदं तया पिळन्धितं पदुमं मय्हं देही''ति। ''न इदं सामि पदुमं, खुरचक्कं एत''न्ति। सो ''वञ्चेसि मं, त्वं किं मया पदुमं अदिट्ठपुब्ब''न्ति वत्वा त्वं लोहितचन्दनं विलिम्पित्वा पिळन्धनं पदुमपुप्फं मय्हं न दातुकामोति आह। सो चिन्तेसि ''अयम्पि मया कतसदिसं कम्मं कत्वा तस्स फलं अनुभवितुकामो''ति। अथ नं ''हन्द रे''ति वत्वा तस्स मत्थके चक्कं पक्खिपि। तेन वुत्तं–

''चतुब्भि अट्ठज्झगमा, अट्ठाहिपि च सोळस।
सोळसाहि च बात्तिंस, अत्रिच्छं चक्कमासदो।
इच्छाहतस्स पोसस्स, चक्कं भमति मत्थके''ति।। (जा० १.१.१०४)

गहपतीति पन गेहसामिको वुच्चति। सो मातुगामस्स सयनवत्थालङ्कारादिअनुप्पदानेन बहूपकारो। तं अतिचरन्तो मातुगामो निरयादीसु निब्बत्तति, तस्मा सोपि पुरिमनयेनेव अनुदहनट्ठेन गहपतग्गीति वुत्तो।

तत्थ वत्थु– कस्सपबुद्धस्स काले सोतापन्नस्स उपासकस्स भरिया अतिचारिनी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहोसि। सो तं पच्चक्खतो दिस्वा "कस्मा त्वं एवं करोसी"ति आह। सा "सचाहं एवरूपं करोमि, अयं मे सुनखो विलुप्पमानो खादतू"ति वत्वा कालङ्कत्वा कण्णमुण्डकदहे वेमानिकपेती हुत्वा निब्बत्ता। दिवा सम्पत्तिं अनुभवति, रत्तिं दुक्खं। तदा बाराणसीराजा मिगवं चरन्तो अरञ्ञं पविसित्वा अनुपुब्बेन कण्णमुण्डकदहं सम्पत्तो ताय सद्धिं सम्पत्तिं अनुभवति। सा तं वञ्चेत्वा रत्तिं दुक्खं अनुभवति। सो ञत्वा "कत्थ नु खो गच्छती"ति पिट्ठितो पिट्ठितो गन्त्वा अविदूरे ठितो कण्णमुण्डकदहतो निक्खमित्वा तं "पटपट"न्ति खादमानं एकं सुनखं दिस्वा असिना द्विधा छिन्दि। द्वे अहेसुं। पुन छिन्ने चत्तारो। पुन छिन्ने अट्ठ। पुन छिन्ने सोळस अहेसुं। सा "किं करोसि सामी"ति आह। सो "किं इद"न्ति आह। सा "एवं अकत्वा खेळपिण्डं भूमियं निट्ठुभित्वा पादेन घंसाही"ति आह। सो तथा अकासि। सुनखा अन्तरधायिंसु। तं दिवसं तस्सा कम्मं खीणं। राजा विप्पटिसारी हुत्वा गन्तुं आरद्धो। सा "मय्हं, सामि, कम्मं खीणं मा अगमा"ति आह। राजा असुत्वाव गतो।

दक्खिणेय्यग्गीति एत्थ पन **दक्खिणा**ति चत्तारो पच्चया, भिक्खुसङ्घो दक्खिणेय्यो। सो गिहीनं तीसु सरणेसु पञ्चसु सीलेसु दससु सीलेसु मातापितुउपट्ठाने धम्मिकसमणब्राह्मणउपट्ठानेति एवमादीसु कल्याणधम्मेसु नियोजनेन बहूपकारो, तस्मिं मिच्छापटिपन्ना गिही भिक्खुसङ्घं अक्कोसित्वा परिभासित्वा निरयादीसु निब्बत्तन्ति, तस्मा सोपि पुरिमनयेनेव अनुदहनट्ठेन दक्खिणेय्यग्गीति वुत्तो। इमस्स पनत्थस्स विभावनत्थं विमानवत्थुस्मिं रेवतीवत्थु वित्थारेतब्बं।

"तिविधेन रूपसङ्गहो"ति एत्थ **तिविधेना**ति तीहि कोट्ठासेहि। **सङ्गहो**ति जातिसञ्जातिकिरियगणनवसेन चतुब्बिधो सङ्गहो। तत्थ सब्बे खत्तिया आगच्छन्तूतिआदिको (म० नि० १.४६२) जातिसङ्गहो। सब्बे कोसलकातिआदिको सञ्जातिसङ्गहो। सब्बे हत्थारोहातिआदिको किरियसङ्गहो। चक्खायतनं कतमं खन्धगणनं गच्छतीति? चक्खायतनं रूपक्खन्धगणनं गच्छतीति। हञ्चि चक्खायतनं रूपक्खन्धेन सङ्गहितन्ति अयं गणनसङ्गहो, सो इध अधिप्पेतो। तस्मा तिविधेन रूपसङ्गहोति तीहि कोट्ठासेहि रूपगणनाति अत्थो।

सनिदस्सनादीसु अत्तानं आरब्भ पवत्तेन चक्खुविञ्ञाणसङ्खातेन सह निदस्सनेनाति **सनिदस्सनं**। चक्खुपटिहननसमत्थतो सह पटिघेनाति **सप्पटिघं**। तं अत्थतो रूपायतनमेव। चक्खुविञ्ञाणसङ्खातं नास्स निदस्सनन्ति **अनिदस्सनं**। सोतादिपटिहननसमत्थतो सह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पटिघेनाति **सप्पटिघं**। तं अत्थतो चक्खायतनादीनि नव आयतनानि। वुत्तप्पकारं नास्स निदस्सनन्ति **अनिदस्सनं**। नास्स पटिघोति **अप्पटिघं**। तं अत्थतो ठपेत्वा दसायतनानि अवसेसं सुखुमरूपं।

तयो सङ्खाराति सहजातधम्मे चेव सम्पराये फलधम्मे च सङ्खरोन्ति रासी करोन्तीति सङ्खारा। **अभिसङ्खरोतीति** अभिसङ्खारो। पुञ्ञो अभिसङ्खारो **पुञ्ञाभिसङ्खारो**।

"तत्थ कतमो पुञ्ञाभिसङ्खारो? कुसला चेतना कामावचरा रूपावचरा दानमया सीलमया भावनामया"ति एवं वुत्तानं अट्ठन्नं कामावचरकुसलमहाचित्तचेतनानं, पञ्चन्नं रूपावचरकुसलचेतनानञ्चेतं अधिवचनं। एत्थ च दानसीलमया अट्ठेव चेतना होन्ति। भावनामया तेरसापि। यथा हि पगुणं धम्मं सज्झायमानो एकं द्वे अनुसन्धिं गतोपि न जानाति, पच्छा आवज्जन्तो जानाति, एवमेव कसिणपरिकम्मं करोन्तस्स पगुणज्झानं पच्चवेक्खन्तस्स ञाणविप्पयुत्तापि भावना होति। तेन वुत्तं "भावनामया तेरसापी"ति।

तत्थ दानमयादीसु "दानं आरब्भ दानमधिकिच्च या उप्पज्जति चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं, अयं वुच्चति दानमयो पुञ्ञाभिसङ्खारो। सीलं आरब्भ, भावनं आरब्भ, भावनमधिकिच्च या उप्पज्जति चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं, अयं वुच्चति भावनामयो पुञ्ञाभिसङ्खारो"ति अयं सङ्खेपदेसना।

चीवरादीसु पन चतूसु पच्चयेसु रूपादीसु वा छसु आरम्मणेसु अन्नादीसु वा दससु दानवत्थूसु तं तं देन्तस्स तेसं उप्पादनतो पट्ठाय पुब्बभागे, परिच्चागकाले, पच्छा सोमनस्सचित्तेन अनुस्सरणे चाति तीसु कालेसु पवत्ता चेतना दानमया नाम। सीलपूरणत्थाय पन पब्बजिस्सामीति विहारं गच्छन्तस्स, पब्बजन्तस्स मनोरथं मत्थकं पापेत्वा पब्बजितो वतम्हि साधु साधूति आवज्जन्तस्स, पातिमोक्खं संवरन्तस्स, चीवरादयो पच्चये पच्चवेक्खन्तस्स, आपाथगतेसु रूपादीसु चक्खुद्वारादीनि संवरन्तस्स, आजीवं सोधेन्तस्स च पवत्ता चेतना सीलमया नाम।

पटिसम्भिदायं वुत्तेन विपस्सनामग्गेन "चक्खुं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो भावेन्तस्स...पे०... मनं। रूपे। धम्मे। चक्खुविञ्ञाणं...पे०... मनोविञ्ञाणं। चक्खुसम्फस्सं...पे०... मनोसम्फस्सं। चक्खुसम्फस्सजं वेदनं...पे०... मनोसम्फस्सजं वेदनं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूपसञ्ञं, जरामरणं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो भावेन्तस्स पवत्ता चेतना भावनामया नामा''ति अयं वित्थारकथा।

अपुञ्ञो च सो अभिसङ्खारो चाति **अपुञ्ञाभिसङ्खारो**। द्वादसअकुसलचित्तसम्पयुत्तानं चेतनानं एतं अधिवचनं। वुत्तम्पि चेतं ''तत्थ कतमो अपुञ्ञाभिसङ्खारो? अकुसलचेतना कामावचरा, अयं वुच्चति अपुञ्ञाभिसङ्खारो''ति। आनेञ्जं निच्चलं सन्तं विपाकभूतं अरूपमेव अभिसङ्खरोतीति **आनेञ्जाभिसङ्खारो**। चतुन्नं अरूपावचरकुसलचेतनानं एतं अधिवचनं। यथाह ''तत्थ कतमो आनेञ्जाभिसङ्खारो? कुसलचेतना अरूपावचरा, अयं वुच्चति आनेञ्जाभिसङ्खारो''ति।

पुग्गलत्तिके सत्तविधो पुरिसपुग्गलो, तिस्सो सिक्खा सिक्खतीति **सेक्खो**। खीणासवो सिक्खितसिक्खत्ता पुन न सिक्खिस्सतीति **असेक्खो**। पुथुज्जनो सिक्खाहि परिबाहियत्ता **नेवसेक्खो नासेक्खो**।

थेरत्तिके जातिमहल्लको गिही **जातित्थेरो** नाम। ''चत्तारोमे, भिक्खवे, थेरकरणा धम्मा। इध, भिक्खवे, थेरो सीलवा होति, बहुस्सुतो होति, चतुन्नं झानानं लाभी होति, आसवानं खया बहुस्सुतो होति, चतुन्नं झानानं लाभी होति, आसवानं खया अनासवं चेतोविमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति। इमे खो, भिक्खवे, चत्तारो थेरकरणा धम्मा''ति (अ० नि० १.४.२२)। एवं वुत्तेसु धम्मेसु एकेन वा अनेकेहि वा समन्नागतो **धम्मथेरो** नाम। अञ्ञतरो थेरनामको भिक्खूति एवं थेरनामको वा, यं वा पन महल्लककाले पब्बजितं सामणेरादयो दिस्वा थेरो थेरोति वदन्ति, अयं **सम्मुतिथेरो** नाम।

पुञ्ञकिरियवत्थूसु दानमेव **दानमयं**। पुञ्ञकिरिया च सा तेसं तेसं आनिसंसानं वत्थु चाति **पुञ्ञकिरियवत्थु**। इतरेसुपि द्वीसु एसेव नयो। अत्थतो पन पुब्बे वुत्तदानमयचेतनादिवसेनेव सद्धिं पुब्बभागअपरभागचेतनाहि इमानि तीणि पुञ्ञकिरियवत्थूनि वेदितब्बानि। एकमेकञ्चेत्थ पुब्बभागतो पट्ठाय कायेन करोन्तस्स कायकम्मं होति। तदत्थं वाचं निच्छारेन्तस्स वचीकम्मं। कायङ्गवाचङ्गं अचोपेत्वा मनसा चिन्तेन्तस्स मनोकम्मं। अन्नादीनि देन्तस्स चापि अन्नदानादीनि देमीति वा दानपारमिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवज्जेत्वा वा दानकाले दानमयं पुञ्ञकिरियवत्थु होति। वत्तसीसे ठत्वा ददतो सीलमयं। खयतो वयतो सम्मसनं पट्ठपेत्वा ददतो भावनामयं पुञ्ञकिरियवत्थु होति।

अपरानिपि सत्त पुञ्ञकिरियवत्थूनि अपचितिसहगतं पुञ्ञकिरियवत्थु, वेय्यावच्चसहगतं, पत्तानुप्पदानं, पत्तब्भनुमोदनं, देसनामयं, सवनमयं, दिट्ठिजुगतं पुञ्ञकिरियवत्थूति। तत्थ महल्लकं दिस्वा पच्चुग्गमनपत्तचीवरप्पटिग्गहण-अभिवादनमग्गसम्पदानादिवसेन अपचितिसहगतं वेदितब्बं। वुड्ढतरानं वत्तप्पटिपत्तिकरणवसेन, गामं पिण्डाय पविट्ठं भिक्खुं दिस्वा पत्तं गहेत्वा गामे भिक्खं समादपेत्वा उपसंहरणवसेन, "गच्छ भिक्खूनं पत्तं आहरा"ति सुत्वा वेगेन गन्त्वा पत्ताहरणादिवसेन च वेय्यावच्चसहगतं वेदितब्बं। चत्तारो पच्चये दत्वा सब्बसत्तानं पत्ति होतूति पवत्तनवसेन पत्तानुप्पदानं वेदितब्बं। परेहि दिन्नाय पत्तिया साधु सुट्ठूति अनुमोदनावसेन पत्तब्भनुमोदनं वेदितब्बं। एको "एवं मं 'धम्मकथिको'तिजानिस्सन्ती"ति इच्छाय ठत्वा लाभगरुको हुत्वा देसेति, तं न महप्फलं। एको अत्तनो पगुणधम्मं अपच्चासीसमानो परेसं देसेति, इदं देसनामयं पुञ्ञकिरियवत्थु नाम। एको सुणन्तो "इति मं 'सद्धो'ति जानिस्सन्ती"ति सुणाति, तं न महप्फलं। एको "एवं मे महप्फलं भविस्सती"ति हितप्फरणेन मुदुचित्तेन धम्मं सुणाति, इदं सवनमयं पुञ्ञकिरियवत्थु। दिट्ठिजुगतं पन सब्बेसं नियमलक्खणं। यंकिञ्चि पुञ्ञं करोन्तस्स हि दिट्ठिया उजुभावेनेव महप्फलं होति।

इति इमेसं सत्तन्नं पुञ्ञकिरियवत्थूनं पुरिमेहेव तीहि सङ्गहो वेदितब्बो। एत्थ हि अपचितिवेय्यावच्चानि सीलमये। पत्तिदानपत्तब्भनुमोदनानि दानमये। देसनासवनानि भावनामये। दिट्ठिजुगतं तीसुपि सङ्गहं गच्छति।

चोदनावत्थूनीति चोदनाकारणानि। **दिट्ठेना**ति मंसचक्खुना वा दिब्बचक्खुना वा वीतिक्कमं दिस्वा चोदेति। **सुतेना**ति पकतिसोतेन वा दिब्बसोतेन वा परस्स सद्दं सुत्वा चोदेति। **परिसङ्काय वा**ति दिट्ठपरिसङ्कितेन वा सुतपरिसङ्कितेन वा मुतपरिसङ्कितेन वा चोदेति। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन समन्तपासादिकायं वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

कामूपपत्तियोति कामूपसेवना कामप्पटिलाभा वा। **पच्चुपट्ठितकामा**ति निबद्धकामा निबद्धारम्मणा। **सेय्यथापि मनुस्सा**ति यथा मनुस्सा। मनुस्सा हि निबद्धेयेव वत्थुस्मिं वसं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वत्तेन्ति। यत्थ पटिबद्धचित्ता होन्ति, सतम्पि सहस्सम्पि दत्वा मातुगामं आनेत्वा निबद्धभोगं भुञ्जन्ति। **एकच्चे देवा** नाम चतुदेवलोकवासिनो। तेपि निबद्धवत्थुस्मिंयेव वसं वत्तेन्ति। **एकच्चे विनिपातिका** नाम नेरयिके ठपेत्वा अवसेसा मच्छकच्छपादयोपि हि निबद्धवत्थुस्मिंयेव वसं वत्तेन्ति। मच्छो अत्तनो मच्छिया कच्छपो कच्छपियाति। **निम्मिनित्वा निम्मिनित्वा**ति नीलपीतादिवसेन यादिसं यादिसं अत्तनो रूपं इच्छन्ति, तादिसं तादिसं निम्मिनित्वा आयस्मतो अनुरुद्धस्स पुरतो मनापकायिका देवता विय। **निम्मानरती**ति एवं सयं निम्मिते निम्मिते निम्माने रति एतेसन्ति निम्मानरती। **परनिम्मितकामा**ति परेहि निम्मितकामा। तेसञ्हि मनं ञत्वा परे यथारुचितं कामभोगं निम्मिनन्ति, ते तत्थ वसं वत्तेन्ति। कथं परस्स मनं जानन्तीति ? पकतिसेवनवसेन। यथा हि कुसलो सूदो रञ्ञो भुञ्जन्तस्स यं यं सो बहुं गण्हाति, तं तं तस्स रुच्चतीति जानाति, एवं पकतिया अभिरुचितारम्मणं ञत्वा तादिसकंयेव निम्मिनन्ति। ते तत्थ वसं वत्तेन्ति, मेथुनं सेवन्ति। केचि पन थेरा "हसितमत्तेन ओलोकितमत्तेन आलिङ्गितमत्तेन च तेसं कामकिच्चं इज्झती"ति वदन्ति, तं अट्ठकथायं "एतं पन नत्थी"ति पटिक्खित्तं। न हि कायेन अफुसन्तस्स फोट्ठब्बं कामकिच्चं साधेति। छन्नम्पि हि कामावचरानं कामा पाकतिका एव। वुत्तम्पि चेतं–

"छ एते कामावचरा, सब्बकामसमिद्धिनो।
सब्बेसं एकसङ्खातं, आयु भवति कित्तक"न्ति।। (विभं० १०२३)

सुखूपपत्तियोति सुखप्पटिलाभा। **उप्पादेत्वा उप्पादेत्वा सुखं विहरन्ती**ति ते हेट्ठा पठमज्झानसुखं निब्बत्तेत्वा उपरि विपाकज्झानसुखं अनुभवन्तीति अत्थो। **सुखेन अभिसन्ना**ति दुतियज्झानसुखेन तिन्ता। **परिसन्ना**ति समन्ततो तिन्ता। **परिपूरा**ति परिपुण्णा। **परिप्फुटा**ति तस्सेव वेवचनं। इदम्पि विपाकज्झानसुखमेव सन्धाय वुत्तं। **अहोसुखं अहोसुख**न्ति तेसं किर भवलोभो महा उप्पज्जति। तस्मा कदाचि करहचि एवं उदानं उदानेन्ति। **सन्तमेवा**ति पणीतमेव। **तुसिता**ति ततो उत्तरिं सुखस्स अपत्थनतो सन्तुट्ठा हुत्वा। **सुखं पटिवेदेन्ती**ति ततियज्झानसुखं अनुभवन्ति।

सेक्खा पञ्ञाति सत्त अरियपञ्ञा। अरहतो पञ्ञा **असेक्खा**। अवसेसा पञ्ञा **नेवसेक्खानासेक्खा**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामयादीसु अयं वित्थारो – "तत्थ कतमा चिन्तामया पञ्ञा ? योगविहितेसु वा कम्मायतनेसु योगविहितेसु वा सिप्पायतनेसु योगविहितेसु वा विज्जाट्ठानेसु कम्मस्सकतं वा सच्चानुलोमिकं वा रूपं अनिच्चन्ति वा...पे०... विञ्ञाणं अनिच्चन्ति वा यं एवरूपं अनुलोमिकं खन्तिं दिट्ठिं रुचिं मुत्तिं पेक्खं धम्मनिज्झानक्खन्तिं परतो असुत्वा पटिलभति, अयं वुच्चति **चिन्तामया पञ्ञा**। तत्थ कतमा सुतमया पञ्ञा ? योगविहितेसु वा कम्मायतनेसु...पे०... धम्मनिज्झानक्खन्तिं परतो सुत्वा पटिलभति, अयं वुच्चति **सुतमया पञ्ञा**। (तत्थ कतमा भावनामया पञ्ञा ?) सब्बापि समापन्नस्स पञ्ञा **भावनामया पञ्ञा**"ति (विभं० ७६८-६९)।

सुतावुधन्ति सुतमेव आवुधं। तं अत्थतो तेपिटकं बुद्धवचनं। तञ्हि निस्साय भिक्खु पञ्ञावुधं निस्साय सूरो योधो अविकम्पमानो महाकन्तारं विय संसारकन्तारं अतिक्कमति अविहञ्ञमानो। तेनेव वुत्तं– "सुतावुधो, भिक्खवे, अरियसावको अकुसलं पजहति, कुसलं भावेति, सावज्जं पजहति, अनवज्जं भावेति, सुद्धमत्तानं परिहरती"ति (अ० नि० २.७.६७)।

पविवेकावुधन्ति "कायविवेको चित्तविवेको उपधिविवेको"ति अयं तिविधोपि विवेकोव आवुधं। तस्स नानाकरणं कायविवेको विवेकट्ठकायानं नेक्खम्माभिरतानं। चित्तविवेको च परिसुद्धचित्तानं परमवोदानप्पत्तानं। उपधिविवेको च निरुपधीनं पुग्गलानं। इमस्मिञ्हि तिविधे विवेके अभिरतो, न कुतोचि भायति। तस्मा अयम्पि अवस्सयट्ठेन आवुधन्ति वुत्तो। लोकियलोकुत्तरपञ्ञाव आवुधं **पञ्ञावुधं**। यस्स सा अत्थि, सो न कुतोचि भायति, न चस्स कोचि भायति। तस्मा सापि अवस्सयट्ठेनेव आवुधन्ति वुत्ता।

अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियन्ति इतो पुब्बे अनञ्ञातं अविदितं धम्मं जानिस्सामीति पटिपन्नस्स उप्पन्नं इन्द्रियं। सोतापत्तिमग्गञाणस्सेतं अधिवचनं। **अञ्ञिन्द्रिय**न्ति अञ्ञाभूतं आजाननभूतं इन्द्रियं। सोतापत्तिफलतो पट्ठाय छसु ठानेसु ञाणस्सेतं अधिवचनं। **अञ्ञाताविन्द्रिय**न्ति अञ्ञातावीसु जाननकिच्चपरियोसानप्पत्तेसु धम्मेसु इन्द्रियं। अरहत्तफलञाणस्सेतं अधिवचनं।

मंसचक्खु चक्खुपसादो। **दिब्बचक्खु** आलोकनिस्सितं ञाणं। **पञ्ञाचक्खु** लोकियलोकुत्तरपञ्ञा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिसीलसिक्खादीसु अधिसीलञ्च तं सिक्खितब्बतो सिक्खा चाति **अधिसीलसिक्खा।** इतरस्मिं द्वयेपि एसेव नयो। तत्थ सीलं अधिसीलं, चित्तं अधिचित्तं, पञ्ञा अधिपञ्ञाति अयं पभेदो वेदितब्बो –

सीलं नाम पञ्चसीलदससीलानि, पातिमोक्खसंवरो **अधिसीलं** नाम। अट्ठ समापत्तियो चित्तं, विपस्सनापादकज्झानं **अधिचित्तं।** कम्मस्सकतञाणं पञ्ञा, विपस्सनापञ्ञा **अधिपञ्ञा।** अनुप्पन्नेपि हि बुद्धुप्पादे पवत्ततीति पञ्चसीलदससीलानि सीलमेव, पातिमोक्खसंवरसीलं बुद्धुप्पादेयेव पवत्ततीति अधिसीलं। चित्तपञ्ञासुपि एसेव नयो। अपिच निब्बानं पत्थयन्तेन समादिन्नं पञ्चसीलम्पि दससीलम्पि अधिसीलमेव। समापन्ना अट्ठ समापत्तियोपि अधिचित्तमेव। सब्बं वा लोकियं सीलमेव, लोकुत्तरं अधिसीलं। चित्तपञ्ञासुपि एसेव नयो।

भावनासु खीणासवस्स पञ्चद्वारिककायो **कायभावना** नाम। अट्ठ समापत्तियो **चित्तभावना** नाम। अरहत्तफलपञ्ञा **पञ्ञाभावना** नाम। खीणासवस्स हि एकन्तेनेव पञ्चद्वारिककायो सुभावितो होति। अट्ठ समापत्तियो चस्स न अञ्ञेसं विय दुब्बला, तस्सेव च पञ्ञा भाविता नाम होति पञ्ञावेपुल्लपत्तिया। तस्मा एवं वुत्तं।

अनुत्तरियेसु विपस्सना **दस्सनानुत्तरियं** मग्गो **पटिपदानुत्तरियं।** फलं **विमुत्तानुत्तरियं।** फलं वा दस्सनानुत्तरियं। मग्गो पटिपदानुत्तरियं। निब्बानं विमुत्तानुत्तरियं। निब्बानं वा दस्सनानुत्तरियं, ततो उत्तरिञ्हि दट्ठब्बं नाम नत्थि। मग्गो पटिपदानुत्तरियं। फलं विमुत्तानुत्तरियं। **अनुत्तरिय**न्ति उत्तमं जेट्ठकं।

समाधीसु पठमज्झानसमाधि **सवितक्कसविचारो।** पञ्चकनयेन दुतियज्झानसमाधि **अवितक्कविचारमत्तो।** सेसो **अवितक्कअविचारो।**

सुञ्ञतादीसु तिविधा कथा आगमनतो, सगुणतो, आरम्मणतोति। आगमनतो नाम एको भिक्खु अनत्ततो अभिनिविसित्वा अनत्ततो दिस्वा अनत्ततो वुट्ठाति, तस्स विपस्सना **सुञ्ञता** नाम होति। कस्मा ? असुञ्ञतत्तकारकानं किलेसानं अभावा। विपस्सनागमनेन मग्गसमाधि सुञ्ञतो नाम होति। मग्गागमनेन फलसमाधि सुञ्ञतो नाम। अपरो अनिच्चतो अभिनिविसित्वा अनिच्चतो दिस्वा अनिच्चतो वुट्ठाति। तस्स विपस्सना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनिमित्ता नाम होति। कस्मा? निमित्तकारककिलेसाभावा। विपस्सनागमनेन मग्गसमाधि **अनिमित्तो** नाम होति। मग्गागमनेन फलं अनिमित्तं नाम। अपरो दुक्खतो अभिनिविसित्वा दुक्खतो दिस्वा दुक्खतो वुट्ठाति, तस्स विपस्सना **अप्पणिहिता** नाम होति। कस्मा? पणिधिकारककिलेसाभावा। विपस्सनागमनेन मग्गसमाधि अप्पणिहितो नाम। मग्गागमनेन फलं अप्पणिहितं नामाति अयं **आगमनतो** कथा। मग्गसमाधि पन रागादीहि सुञ्ञतत्ता सुञ्ञतो, रागनिमित्तादीनं अभावा अनिमित्तो, रागपणिधिआदीनं अभावा अप्पणिहितोति अयं **सगुणतो** कथा। निब्बानं रागादीहि सुञ्ञतत्ता रागादिनिमित्तपणिधीनञ्च अभावा सुञ्ञतञ्चेव अनिमित्तञ्च अप्पणिहितञ्च। तदारम्मणो मग्गसमाधि सुञ्ञतो अनिमित्तो अप्पणिहितो। अयं **आरम्मणतो** कथा।

सोचेय्यानीति सुचिभावकरा सोचेय्यप्पटिपदा धम्मा। वित्थारो पनेत्थ "तत्थ कतमं **कायसोचेय्यं?** पाणातिपाता वेरमणी"तिआदिना नयेन वुत्तानं तिण्णं सुचरितानं वसेन वेदितब्बो।

मोनेय्यानीति मुनिभावकरा मोनेय्यप्पटिपदा धम्मा। तेसं वित्थारो "तत्थ कतमं **कायमोनेय्यं?** तिविधकायदुच्चरितस्स पहानं कायमोनेय्यं, तिविधं कायसुचरितं कायमोनेय्यं, कायारम्मणे ञाणं कायमोनेय्यं, कायपरिञ्ञा कायमोनेय्यं, कायपरिञ्ञासहगतो मग्गो कायमोनेय्यं, कायस्मिं छन्दरागप्पहानं कायमोनेय्यं, कायसङ्खारनिरोधा चतुत्थज्झानसमापत्ति कायमोनेय्यं। तत्थ कतमं **वचीमोनेय्यं?** चतुब्बिधवचीदुच्चरितस्स पहानं वचीमोनेय्यं, चतुब्बिधं वचीसुचरितं वचीमोनेय्यं, वाचारम्मणे ञाणं वचीमोनेय्यं वाचापरिञ्ञा वचीमोनेय्यं परिञ्ञासहगतो मग्गो, वाचाय छन्दरागप्पहानं, वचीसङ्खारनिरोधा दुतियज्झानसमापत्ति वचीमोनेय्यं। तत्थ कतमं **मनोमोनेय्यं?** तिविधमनोदुच्चरितस्स पहानं मनोमोनेय्यं, तिविधं मनोसुचरितं मनोमोनेय्यं, मनारम्मणे ञाणं मनोमोनेय्यं, मनोपरिञ्ञा मनोमोनेय्यं। परिञ्ञासहगतो मग्गो, मनस्मिं छन्दरागप्पहानं, चित्तसङ्खारनिरोधा सञ्ञावेदयितनिरोधसमापत्ति मनोमोनेय्य"न्ति (महानि० १४)।

कोसल्लेसु **आयो**ति वुड्ढि। **अपायो**ति अवुड्ढि। तस्स तस्स कारणं **उपायो**। तेसं पजानना कोसल्लं। वित्थारो पन विभङ्गे वुत्तोयेव।

वुत्तञ्हेतं - "तत्थ कतमं आयकोसल्लं? इमे धम्मे मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकुसला धम्मा नुप्पज्जन्ति, उप्पन्ना च अकुसला धम्मा निरुज्झन्ति। इमे वा पन मे धम्मे मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव कुसला धम्मा उप्पज्जन्ति, उप्पन्ना च कुसला धम्मा भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तन्तीति, या तत्थ पञ्ञा पजानना...पे०... सम्मादिट्ठि। इदं वुच्चति आयकोसल्लं। तत्थ कतमं अपायकोसल्लं? इमे धम्मे मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव कुसला धम्मा न उप्पज्जन्ति, उप्पन्ना च कुसला धम्मा निरुज्झन्ति। इमे वा पन मे धम्मे मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव अकुसला धम्मा उप्पज्जन्ति, उप्पन्ना च अकुसला धम्मा भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तन्तीति, या तत्थ पञ्ञा पजानना...पे०... सम्मादिट्ठि। इदं वुच्चति अपायकोसल्लं। सब्बापि तत्रुपाया पञ्ञा उपायकोसल्ल''न्ति (विभं० ७७१)। इदं पन अच्चायिककिच्चे वा भये वा उप्पन्ने तस्स तिकिच्छनत्थं ठानुप्पत्तिया कारणजाननवसेनेव वेदितब्बं।

मदाति मज्जनाकारवसेन पवत्तमाना। तेसु "अहं निरोगो सट्ठि वा सत्तति वा वस्सानि अतिक्कन्तानि, न मे हरीतकीखण्डम्पि खादितपुब्बं, इमे पनञ्ञे असुकं नाम ठानं रुज्जति, भेसज्जं खादामाति विचरन्ति, को अञ्ञो मादिसो निरोगो नामा''ति एवं मानकरणं **आरोग्यमदो**। "महल्लककाले पुञ्ञं करिस्साम, दहरम्ह तावा''ति योब्बने ठत्वा मानकरणं **योब्बनमदो**। "चिरं जीविं, चिरं जीवामि, चिरं जीविस्सामि; सुखं जीविं, सुखं जीवामि, सुखं जीविस्सामी''ति एवं मानकरणं **जीवितमदो**।

आधिपतेय्येसु अधिपतितो आगतं आधिपतेय्यं। "एत्तकोम्हि सीलेन समाधिना पञ्ञाय विमुत्तिया, न मे एतं पतिरूप''न्ति एवं अत्तानं अधिपत्तिं जेट्ठकं कत्वा पापस्स अकरणं **अत्ताधिपतेय्यं** नाम। लोकं अधिपतिं कत्वा अकरणं **लोकाधिपतेय्यं** नाम। लोकुत्तरधम्मं अधिपतिं कत्वा अकरणं **धम्माधिपतेय्यं** नाम।

कथावत्थूनीति कथाकारणानि। **अतीतं वा अद्धान**न्ति अतीतं धम्मं, अतीतक्खन्धेति अत्थो। अपिच "यं, भिक्खवे, रूपं अतीतं निरुद्धं विपरिणतं, 'अहोसी'ति तस्स सङ्खा, 'अहोसी'ति तस्स पञ्ञत्ति 'अहोसी'ति तस्स समञ्ञा, न तस्स सङ्खा 'अत्थी'ति, न तस्स सङ्खा 'भविस्सती'ति (सं० नि० २.३.६२) एवं आगतेन निरुत्तिपथसुत्तेनपेत्थ अत्थो दीपेतब्बो।

विज्जाति तमविज्झनट्ठेन विज्जा। विदितकरणट्ठेनापि विज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणम्हि उप्पज्जमानं पुब्बेनिवासं छादेत्वा ठितं तमं विज्झति, पुब्बेनिवासञ्च विदितं करोतीति विज्जा। चुतूपपातञाणं चुतिपटिसन्धिच्छादकं तमं विज्झति, तञ्च विदितं करोतीति विज्जा। आसवानं खये ञाणं चतुसच्चच्छादकं तमं विज्झति, चतुसच्चधम्मञ्च विदितं करोतीति विज्जा।

विहारेसु अट्ठ समापत्तियो **दिब्बो विहारो**। चतस्सो अप्पमञ्ञा **ब्रह्मा विहारो**। फलसमापत्ति **अरियो विहारो**।

पाटिहारियानि केवट्टसुत्ते वित्थारितानेव।

"इमे खो, आवुसो"तिआदीसु वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति समसट्ठिया तिकानं वसेन असीतिसतपञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

तिकवण्णना निट्ठिता।

चतुक्कवण्णना

३०६. इति तिकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि चतुक्कवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ "सतिपट्ठानचतुक्कं" पुब्बे वित्थारितमेव।

सम्मप्पधानचतुक्के **छन्दं जनेतीति** "यो छन्दो छन्दिकता कत्तुकम्यता कुसलो धम्मच्छन्दो"ति एवं वुत्तं कत्तुकम्यतं जनेति। **वायमतीति** वायामं करोति। **वीरियं आरभतीति** वीरियं जनेति। **चित्तं पग्गण्हातीति** चित्तं उपत्थम्भेति। अयमेत्थ सङ्खेपो। वित्थारो पन सम्मप्पधानविभङ्गे आगतोयेव।

इद्धिपादेसु छन्दं निस्साय पवत्तो समाधि **छन्दसमाधि**। पधानभूता सङ्खारा **पधानसङ्खारा**। **समन्नागतन्ति** तेहि धम्मेहि उपेतं। इद्धिया पादं, इद्धिभूतं वा पादन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इद्धिपादं। सेसेसुपि एसेव नयो। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन इद्धिपादविभङ्गे आगतो एव। विसुद्धिमग्गे पनस्स अत्थो दीपितो। झानकथापि विसुद्धिमग्गे वित्थारिताव।

३०७. **दिट्ठधम्मसुखविहाराया**ति इमस्मिंयेव अत्तभावे सुखविहारत्थाय। इध फलसमापत्तिझानानि, खीणासवस्स अपरभागे निब्बत्तितझानानि च कथितानि।

आलोकसञ्ञं मनसिकरोतीति दिवा वा रत्तिं वा सूरियचन्दपज्जोतमणिआदीनं आलोकं आलोकोति मनसिकरोति। **दिवासञ्ञं अधिट्ठाती**ति एवं मनसि कत्वा दिवातिसञ्ञं ठपेति। **यथा दिवा तथा रत्ति**न्ति यथा दिवा दिट्ठो आलोको, तथेव तं रत्तिं मनसिकरोति। **यथा रत्तिं तथा दिवा**ति यथा रत्तिं आलोको दिट्ठो, एवमेव दिवा मनसिकरोति। **इति विवटेन चेतसा**ति एवं अपिहितेन चित्तेन। **अपरियोनद्धेना**ति समन्ततो अनद्धेन। **सप्पभासन्ति** सओभासं। **ञाणदस्सनपटिलाभाया**ति ञाणदस्सनपटिलाभत्थाय। इमिना किं कथितं? मिद्धविनोदनआलोको कथितो परिकम्मआलोको वा। इमिना किं कथितं होति? खीणासवस्स दिब्बचक्खुञाणं। तस्मिं वा आगतेपि अनागतेपि पादकज्झानसमापत्तिमेव सन्धाय "सप्पभासं चित्तं भावेती"ति वुत्तं।

सतिसम्पजञ्ञायाति सत्तट्ठानिकस्स सतिसम्पजञ्ञस्स अत्थाय। **विदिता वेदना उप्पज्जन्ती**तिआदीसु खीणासवस्स वत्थु विदितं होति आरम्मणं विदितं वत्थारम्मणं विदितं। वत्थारम्मणविदितताय एवं वेदना उप्पज्जन्ति, एवं तिट्ठन्ति, एवं निरुज्झन्ति। न केवलञ्च वेदना एव इध वुत्ता सञ्ञादयोपि, अवुत्ता चेतनादयोपि, विदिता च उप्पज्जन्ति चेव तिट्ठन्ति च निरुज्झन्ति च। अपि च वेदनाय उप्पादो विदितो होति, उपट्ठानं विदितं होति। अविज्जासमुदया वेदनासमुदयो, तण्हासमुदया कम्मसमुदयो, फस्ससमुदया वेदनायसमुदयो। निब्बत्तिलक्खणं पस्सन्तोपि वेदनाक्खन्धस्स समुदयं पस्सति। एवं वेदनाय उप्पादो विदितो होति। कथं वेदनाय उपट्ठानं विदितं होति? अनिच्चतो मनसिकरोतो खयतूपट्ठानं विदितं होति। दुक्खतो मनसिकरोतो भयतूपट्ठानं विदितं होति। अनत्ततो मनसिकरोतो सुञ्ञतूपट्ठानं विदितं होति। एवं वेदनाय उपट्ठानं विदितं होति, खयतो भयतो सुञ्ञतो जानाति। कथं वेदनाय अत्थङ्गमो विदितो होति? अविज्जानिरोधा वेदनानिरोधो।...पे०... एवं वेदनाय अत्थङ्गमो विदितो होति। इमिनापि नयेनेत्थ अत्थो वेदितब्बो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इति रूपन्तिआदि वुत्तनयमेव। **अयं आवुसो समाधिभावनाति** अयं आसवानं खयञाणस्स पादकज्झानसमाधिभावना।

३०८. **अप्पमञ्ञाति** पमाणं अगहेत्वा अनवसेसफरणवसेन अप्पमञ्ञाव। अनुपदवण्णना पन भावनासमाधिविधानञ्च एतासं विसुद्धिमग्गे वित्थारितमेव। अरूपकथापि विसुद्धिमग्गे वित्थारिताव।

अपस्सेनानीति अपस्सयानि। **सङ्खायाति** ञाणेन ञत्वा। **पटिसेवतीति** ञाणेन ञत्वा सेवितब्बयुत्तकमेव सेवति। तस्स च वित्थारो "पटिसङ्खा योनिसो चीवरं परिभुञ्जती"तिआदिना नयेन वेदितब्बो। **सङ्खायेकं अधिवासेतीति** ञाणेन ञत्वा अधिवासेतब्बयुत्तकमेव अधिवासेति। वित्थारो पनेत्थ "पटिसङ्खा योनिसो खमो होति सीतस्सा"तिआदिना नयेन वेदितब्बो। **परिवज्जेतीति** ञाणेन ञत्वा परिवज्जेतुं युत्तमेव परिवज्जेति। तस्स वित्थारो "पटिसङ्खा योनिसो चण्डं हत्थिं परिवज्जेती"तिआदिना नयेन वेदितब्बो। **विनोदेतीति** ञाणेन ञत्वा विनोदेतब्बमेव विनोदेति, नुदति नीहरति अन्तो पविसितुं न देति। तस्स वित्थारो "उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेती"तिआदिना नयेन वेदितब्बो।

अरियवंसचतुक्कवण्णना

३०९. **अरियवंसाति** अरियानं वंसा। यथा हि खत्तियवंसो, ब्राह्मणवंसो, वेस्सवंसो, सुद्दवंसो, समणवंसो, कुलवंसो, राजवंसो, एवं अयम्पि अट्ठमो अरियवंसो अरियतन्ति अरियपवेणी नाम होति। सो खो पनायं अरियवंसो इमेसं वंसानं मूलगन्धादीनं काळानुसारितगन्धादयो विय अग्गमक्खायति। के पन ते अरिया येसं एते वंसाति? अरिया वुच्चन्ति बुद्धा च पच्चेकबुद्धा च तथागतसावका च, एतेसं अरियानं वंसाति **अरियवंसा।** इतो पुब्बे हि सतसहस्सकप्पाधिकानं चतुन्नं असङ्ख्येय्यानं मत्थके तण्हङ्करो मेधङ्करो सरणङ्करो दीपङ्करोति चत्तारो बुद्धा उप्पन्ना, ते अरिया, तेसं अरियानं वंसाति अरियवंसा। तेसं बुद्धानं परिनिब्बानतो अपरभागे असङ्ख्येय्यं अतिक्कमित्वा कोण्डञ्ञो नाम बुद्धो उप्पन्नो...पे०... इमस्मिं कप्पे ककुसन्धो, कोणागमनो, कस्सपो, अम्हाकं भगवा गोतमोति चत्तारो बुद्धा उप्पन्ना। तेसं अरियानं वंसाति अरियवंसा। अपिच अतीतानागतपच्चुप्पन्नानं सब्बबुद्धपच्चेकबुद्धबुद्धसावकानं अरियानं वंसाति अरियवंसा। ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खो पनेते **अग्गञ्ञा** अग्गाति जानितब्बा। **रत्तञ्ञा** दीघरत्तं पवत्ताति जानितब्बा। **वंसञ्ञा** वंसाति जानितब्बा।

पोराणाति न अधुनुप्पत्तिका। **असंकिण्णा** अविकिण्णा अनपनीता। **असंकिण्णपुब्बा** अतीतबुद्धेहि न संकिण्णपुब्बा। "किं इमेही"ति न अपनीतपुब्बा? **न सङ्कीयन्ती**ति इदानिपि न अपनीयन्ति। **न सङ्कीयिस्सन्ती**ति अनागतबुद्धेहिपि न अपनीयिस्सन्ति, ये लोके विञ्ञू समणब्राह्मणा, तेहि अप्पटिकुट्ठा, समणेहि ब्राह्मणेहि विञ्ञूहि अनिन्दिता अगरहिता।

सन्तुट्ठो होतीति पच्चयसन्तोसवसेन सन्तुट्ठो होति। **इतरीतरेन चीवरेना**ति थूलसुखुमलूखपणीतथिरजिण्णानं येन केनचि। अथ खो यथालद्धादीनं इतरीतरेन येन केनचि सन्तुट्ठो होतीति अत्थो। चीवरस्मिञ्हि तयो सन्तोसा- यथालाभसन्तोसो, यथाबलसन्तोसो, यथासारुप्पसन्तोसोति। पिण्डपातादीसुपि एसेव नयो। तेसं वित्थारकथा सामञ्ञफले वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। इमे तयो सन्तोसे सन्धाय "सन्तुट्ठो होति, इतरीतरेन यथालद्धादीसु येन केनचि चीवरेन सन्तुट्ठो होती"ति वुत्तं।

एत्थ च चीवरं जानितब्बं, चीवरक्खेत्तं जानितब्बं, पंसुकूलं जानितब्बं, चीवरसन्तोसो जानितब्बो, चीवरपटिसंयुत्तानि धुतङ्गानि जानितब्बानि। तत्थ **चीवरं जानितब्ब**न्ति खोमादीनि छ चीवरानि दुकूलादीनि छ अनुलोमचीवरानि जानितब्बानि। इमानि द्वादस कप्पियचीवरानि। कुसचीरं वाकचीरं फलकचीरं केसकम्बलं वाळकम्बलं पोत्थको चम्मं उलूकपक्खं रुक्खदुस्सं लतादुस्सं एरकदुस्सं कदलिदुस्सं वेळुदुस्सन्ति एवमादीनि पन अकप्पियचीवरानि। **चीवरक्खेत्त**न्ति "सङ्घतो वा गणतो वा ञातितो वा मित्ततो वा अत्तनो वा धनेन पंसुकूलं वा"ति एवं उप्पज्जनतो छ खेत्तानि, अट्ठन्नञ्च मातिकानं वसेन **अट्ठ खेत्तानि** जानितब्बानि। **पंसुकूल**न्ति सोसानिकं, पापणिकं, रथियं सङ्कारकूटकं, सोत्थियं, सिनानं, तित्थं, गतपच्चागतं, अग्गिदड्ढं, गोखायितं उपचिकखायितं, उन्दूरखायितं, अन्तच्छिन्नं, दसाच्छिन्नं, धजाहटं, थूपं, समणचीवरं, सामुद्दियं, आभिसेकियं, पन्थिकं, वाताहटं, इद्धिमयं, देवदत्तियन्ति तेवीसति पंसुकूलानि वेदितब्बानि।

एत्थ च **सोत्थिय**न्ति गब्भमलहरणं। **गतपच्चागत**न्ति मतकसरीरं पारुपित्वा सुसानं नेत्वा आनीतचीवरं। **धजाहट**न्ति धजं उस्सापेत्वा ततो आनीतं। **थूप**न्ति वम्मिके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूजितचीवरं। **सामुद्दियन्ति** समुद्दवीचीहि थलं पापितं। **पन्थिकन्ति** पन्थं गच्छन्तेहि चोरभयेन पासाणेहि कोट्टेत्वा पारुतचीवरं। **इद्धिमयन्ति** एहिभिक्खुचीवरं। सेसं पाकटमेव।

चीवरसन्तोसोति वीसति चीवरसन्तोसा, वितक्कसन्तोसो, गमनसन्तोसो, परियेसनसन्तोसो, पटिलाभसन्तोसो, मत्तप्पटिग्गहणसन्तोसो, लोलुप्पविवज्जनसन्तोसो, यथालाभसन्तोसो, यथाबलसन्तोसो, यथासारुप्पसन्तोसो, उदकसन्तोसो, धोवनसन्तोसो, करणसन्तोसो, परिमाणसन्तोसो, सुत्तसन्तोसो, सिब्बनसन्तोसो, रजनसन्तोसो, कप्पसन्तोसो, परिभोगसन्तोसो, सन्निधिपरिवज्जनसन्तोसो, विस्सज्जनसन्तोसोति।

तत्थ सादकभिक्खुना तेमासं निबद्धवासं वसित्वा एकमासमत्तं वितक्केतुं वट्टति। सो हि पवारेत्वा चीवरमासे चीवरं करोति। पंसुकूलिको अड्ढमासेनेव करोति। इति मासड्ढमासमत्तं वितक्कनं वितक्कसन्तोसो। वितक्कसन्तोसेन पन सन्तुट्ठेन भिक्खुना पाचीनक्खण्डराजिवासिकपंसुकूलिकत्थेरसदिसेन भवितब्बं।

थेरो किर चेतियपब्बतविहारे चेतियं वन्दिस्सामीति आगतो चेतियं वन्दित्वा चिन्तेसि "मय्हं चीवरं जिण्णं बहूनं वसनट्ठाने लभिस्सामी"ति। सो महाविहारं गन्त्वा सङ्घत्थेरं दिस्वा वसनट्ठानं पुच्छित्वा तत्थ वुत्थो पुनदिवसे चीवरं आदाय आगन्त्वा थेरं वन्दि। थेरो किं आवुसोति आह। गामद्वारं, भन्ते, गमिस्सामीति। अहम्पावुसो, गमिस्सामीति। साधु, भन्तेति गच्छन्तो महाबोधिद्वारकोट्ठके ठत्वा पुञ्ञवन्तानं वसनट्ठाने मनापं लभिस्सामीति चिन्तेत्वा अपरिसुद्धो मे वितक्कोति ततोव पटिनिवत्ति। पुनदिवसे अम्बङ्गणसमीपतो, पुनदिवसे महाचेतियस्स उत्तरद्वारतो, तथेव पटिनिवत्तित्वा चतुत्थदिवसे थेरस्स सन्तिकं अगमासि। थेरो इमस्स भिक्खुनो वितक्को न परिसुद्धो भविस्सतीति चीवरं गहेत्वा तेन सद्धिंयेव पञ्हं पुच्छमानो गामं पाविसि। तञ्च रत्तिं एको मनुस्सो उच्चारपलिबुद्धो साटकेयेव वच्चं कत्वा तं सङ्कारट्ठाने छड्डेसि। **पंसुकूलिकत्थेरो** तं नीलमक्खिकाहि सम्परिकिण्णं दिस्वा अञ्जलिं पग्गहेसि। महाथेरो "किं, आवुसो, सङ्कारट्ठानस्स अञ्जलिं पग्गण्हासी"ति ? "नाहं, भन्ते, सङ्कारट्ठानस्स अञ्जलिं पग्गण्हामि, मय्हं पितु दसबलस्स पग्गण्हामि, पुण्णदासिया सरीरं पारुपित्वा छड्डितं पंसुकूलं तुम्बमत्ते पाणके विधुनित्वा सुसानतो गण्हन्तेन दुक्करं कतं, भन्ते"ति। महाथेरो "परिसुद्धो वितक्को पंसुकूलिकस्सा"ति चिन्तेसि। पंसुकूलिकत्थेरोपि तस्मिंयेव ठाने ठितो विपस्सनं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वड्ढेत्वा तीणि फलानि पत्तो तं साटकं गहेत्वा चीवरं कत्वा पारुपित्वा पाचीनक्खण्डराजिं गन्त्वा अग्गफलं अरहत्तं पापुणि।

चीवरत्थाय गच्छन्तस्स पन "कत्थ लभिस्सामी"ति अचिन्तेत्वा कम्मट्ठानसीसेनेव गमनं **गमनसन्तोसो** नाम।

परियेसन्तस्स पन येन वा तेन वा सद्धिं अपरियेसित्वा लज्जिं पेसलं भिक्खुं गहेत्वा परियेसनं **परियेसनसन्तोसो** नाम।

एवं परियेसन्तस्स आहरियमानं चीवरं दूरतो दिस्वा "एतं मनापं भविस्सति, एतं अमनाप"न्ति एवं अवितक्केत्वा थूलसुखुमादीसु यथालद्धेनेव सन्तुस्सनं **पटिलाभसन्तोसो** नाम।

एवं लद्धं गण्हन्तस्सापि "एत्तकं दुपट्टस्स भविस्सति, एत्तकं एकपट्टस्सा"ति अत्तनो पहोनकमत्तेनेव सन्तुस्सनं **मत्तप्पटिग्गहणसन्तोसो** नाम।

चीवरं परियेसन्तस्स पन "असुकस्स घरद्वारे मनापं लभिस्सामी"ति अचिन्तेत्वा द्वारपटिपाटिया चरणं **लोलुप्पविवज्जनसन्तोसो** नाम।

लूखपणीतेसु येन केनचि यापेतुं सक्कोन्तस्स यथालद्धेनेव यापनं **यथालाभसन्तोसो** नाम।

अत्तनो थामं जानित्वा येन यापेतुं सक्कोति, तेन यापनं **यथाबलसन्तोसो** नाम।

मनापं अञ्ञस्स दत्वा अत्तनो येन केनचि यापनं **यथासारुप्पसन्तोसो** नाम।

"कत्थ उदकं मनापं, कत्थ अमनाप"न्ति अविचारेत्वा येन केनचि धोवनुपगेन उदकेन धोवनं **उदकसन्तोसो** नाम। पण्डुमत्तिकगेरुकपूतिपण्णरसकिलिट्ठानि पन उदकानि वज्जेतुं वट्टति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धोवन्तस्स पन मुग्गरादीहि अपहरित्वा हत्थेहि मद्दित्वा धोवनं **धोवनसन्तोसो** नाम। तथा असुज्झन्तं पण्णानि पक्खिपित्वा तापितउदकेनापि धोवितुं वट्टति।

एवं धोवित्वा करोन्तस्स इदं थूलं, इदं सुखुमन्ति अकोपेत्वा पहोनकनीहारेनेव करणं **करणसन्तोसो** नाम।

तिमण्डलप्पटिच्छादनमत्तस्सेव करणं **परिमाणसन्तोसो** नाम।

चीवरकरणत्थाय पन मनापसुत्तं परियेसिस्सामीति अविचारेत्वा रथिकादीसु वा देवट्ठाने वा आहरित्वा पादमूले वा ठपितं यंकिञ्चिदेव सुत्तं गहेत्वा करणं **सुत्तसन्तोसो** नाम।

कुसिबन्धनकाले पन अङ्गुलमत्ते सत्तवारे न विज्झितब्बं, एवं करोन्तस्स हि यो भिक्खु सहायो न होति, तस्स वत्तभेदोपि नत्थि। तिवङ्गुलमत्ते पन सत्तवारे विज्झितब्बं, एवं करोन्तस्स मग्गपटिपन्नेनापि सहायेन भवितब्बं। यो न होति, तस्स वत्तभेदो। अयं **सिब्बनसन्तोसो** नाम।

रजन्तेन पन काळकच्छकादीनि परियेसन्तेन न रजितब्बं। सोमवक्कलादीसु यं लभति, तेन रजितब्बं। अलभन्तेन पन मनुस्सेहि अरञ्ञे वाकं गहेत्वा छड्डितरजनं वा भिक्खूहि पचित्वा छड्डितकसटं वा गहेत्वा रजितब्बं, अयं **रजनसन्तोसो** नाम।

नीलकद्दमकाळसामेसु यंकिञ्चि गहेत्वा हत्थिपिट्ठे निसिन्नस्स पञ्ञायमानकपकरणं **कप्पसन्तोसो** नाम।

हिरिकोपीनपटिच्छादनमत्तवसेन परिभुञ्जनं **परिभोगसन्तोसो** नाम।

दुस्सं पन लभित्वा सुत्तं वा सूचिं वा कारकं वा अलभन्तेन ठपेतुं वट्टति, लभन्तेन न वट्टति। कतम्पि सचे अन्तेवासिकादीनं दातुकामो होति, ते च असन्निहिता याव आगमना ठपेतुं वट्टति। आगतमत्तेसु दातब्बं। दातुं असक्कोन्तेन अधिट्ठातब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अञ्ञस्मिं चीवरे सति पच्चत्थरणम्पि अधिट्ठातुं वट्टति। अनधिट्ठितमेव हि सन्निधि होति। अधिट्ठितं न होतीति **महासीवत्थेरो** आह। अयं **सन्निधिपरिवज्जनसन्तोसो** नाम।

विस्सज्जन्तेन पन न मुखं ओलोकेत्वा दातब्बं। सारणीयधम्मे ठत्वा विस्सज्जितब्बन्ति अयं **विस्सज्जनसन्तोसो** नाम।

चीवरपटिसंयुत्तानि धुतङ्गानि नाम पंसुकूलिकङ्गञ्चेव तेचीवरिकङ्गञ्च। तेसं वित्थारकथा **विसुद्धिमग्गतो** वेदितब्बा। इति चीवरसन्तोसमहाअरियवंसं पूरयमानो भिक्खु इमानि द्वे धुतङ्गानि गोपेति। इमानि गोपेन्तो चीवरसन्तोसमहाअरियवंसेन सन्तुट्ठो होति।

वण्णवादीति एको सन्तुट्ठो होति, सन्तोसस्स वण्णं न कथेति, एको न सन्तुट्ठो होति, सन्तोसस्स वण्णं कथेति, एको नेव सन्तुट्ठो होति, न सन्तोसस्स वण्णं कथेति, एको सन्तुट्ठो चेव होति, सन्तोसस्स च वण्णं कथेति, तं दस्सेतुं "इतरीतरचीवरसन्तुट्ठिया च वण्णवादी"ति वुत्तं।

अनेसनन्ति दूतेय्यपहिनगमनानुयोगप्पभेदं नानप्पकारं अनेसनं। **अप्पतिरूप**न्ति अयुत्तं। **अलद्धा चा**ति अलभित्वा। यथा एकच्चो "कथं नु खो चीवरं लभिस्सामी"ति। पुञ्ञवन्तेहि भिक्खूहि सद्धिं एकतो हुत्वा कोहञ्ञं करोन्तो उत्तसति परितसति, सन्तुट्ठो भिक्खु एवं अलद्धा चीवरं न परितसति। **लद्धा चा**ति धम्मेन समेन लभित्वा। **अगधितो**ति विगतलोभगिद्धो। **अमुच्छितो**ति अधिमत्ततण्हाय मुच्छं अनापन्नो। **अनज्झापन्नो**ति तण्हाय अनोत्थतो अपरियोनद्धो। **आदीनवदस्सावी**ति अनेसनापत्तियञ्च गेधितपरिभोगे च आदीनवं पस्समानो। **निस्सरणपञ्ञो**ति "यावदेव सीतस्स पटिघाताया"ति वुत्तं निस्सरणमेव पजानन्तो।

इतरीतरचीवरसन्तुट्ठियाति येन केनचि चीवरेन सन्तुट्ठिया। **नेवत्तानुक्कंसेती**ति "अहं पंसुकूलिको मया उपसम्पदमाळेयेव पंसुकूलिकङ्गं गहितं, को मया सदिसो अत्थी"ति अत्तुक्कंसनं न करोति। **न परं वम्भेती**ति "इमे पनञ्ञे भिक्खू न पंसुकूलिका"ति वा "पंसुकूलिकङ्गमत्तम्पि एतेसं नत्थी"ति वा एवं परं न वम्भेति। **यो हि तत्थ दक्खो**ति यो तस्मिं चीवरसन्तोसे, वण्णवादादीसु वा दक्खो छेको ब्यत्तो। **अनलसो**ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सातच्चकिरियाय आलसियविरहितो। **सम्पजानो पटिस्सतो**ति सम्पजानपञ्ञाय चेव सतिया च युत्तो। **अरियवंसे ठितो**ति अरियवंसे पतिट्ठितो।

इतरीतरेन पिण्डपातेनाति येन केनचि पिण्डपातेन। एत्थापि पिण्डपातो जानितब्बो। पिण्डपातक्खेत्तं जानितब्बं, पिण्डपातसन्तोसो जानितब्बो, पिण्डपातपटिसंयुत्तं धुतङ्गं जानितब्बं। तत्थ **पिण्डपातो**ति "ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं, खीरं, दधि, सप्पि, नवनीतं, तेलं, मधु, फाणितं, यागु, खादनीयं, सायनीयं, लेहनीय"न्ति सोळस पिण्डपाता।

पिण्डपातक्खेत्तन्ति सङ्घभत्तं, उद्देसभत्तं, निमन्तनं, सलाकभत्तं, पक्खिकं, उपोसथिकं, पाटिपदिकं, आगन्तुकभत्तं, गमिकभत्तं, गिलानभत्तं, गिलानुपट्ठाकभत्तं, धुरभत्तं, कुटिभत्तं, वारभत्तं, विहारभत्तन्ति पन्नरस पिण्डपातक्खेत्तानि।

पिण्डपातसन्तोसोति पिण्डपाते वितक्कसन्तोसो, गमनसन्तोसो, परियेसनसन्तोसो पटिलाभसन्तोसो, पटिग्गहणसन्तोसो, मत्तप्पटिग्गहणसन्तोसो, लोलुप्पविवज्जनसन्तोसो, यथालाभसन्तोसो, यथाबलसन्तोसो, यथासारुप्पसन्तोसो, उपकारसन्तोसो, परिमाणसन्तोसो, परिभोगसन्तोसो, सन्निधिपरिवज्जनसन्तोसो, विस्सज्जनसन्तोसोति पन्नरस सन्तोसा।

तत्थ सादको भिक्खु मुखं धोवित्वा वितक्केति। पिण्डपातिकेन पन गणेन सद्धिं चरता सायं थेरूपट्ठानकाले "स्वे कत्थ पिण्डाय चरिस्सामाति असुकगामे, भन्ते",ति एत्तकं चिन्तेत्वा ततो पट्ठाय न वितक्केतब्बं। एकचारिकेन वितक्कमाळके ठत्वा वितक्केतब्बं। ततो परं वितक्केन्तो अरियवंसा चुतो होति परिबाहिरो। अयं **वितक्कसन्तोसो** नाम।

पिण्डाय पविसन्तेन "कुहिं लभिस्सामी"ति अचिन्तेत्वा कम्मट्ठानसीसेन गन्तब्बं। अयं **गमनसन्तोसो** नाम।

परियेसन्तेन यं वा तं वा अगहेत्वा लज्जिं पेसलमेव गहेत्वा परियेसितब्बं। अयं **परियेसनसन्तोसो** नाम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूरतोव आहरियमानं दिस्वा "एतं मनापं, एतं अमनाप"न्ति चित्तं न उप्पादेतब्बं। अयं **पटिलाभसन्तोसो** नाम।

"इमं मनापं गण्हिस्सामि, इमं अमनापं न गण्हिस्सामी"ति अचिन्तेत्वा यंकिञ्चि यापनमत्तं गहेतब्बमेव, अयं **पटिग्गहणसन्तोसो** नाम।

एत्थ पन देय्यधम्मो बहु, दायको अप्पं दातुकामो, अप्पं गहेतब्बं। देय्यधम्मो बहु, दायकोपि बहुं दातुकामो, पमाणेनेव गहेतब्बं। देय्यधम्मो न बहु, दायकोपि अप्पं दातुकामो, अप्पं गहेतब्बं। देय्यधम्मो न बहु, दायको पन बहुं दातुकामो, पमाणेन गहेतब्बं। पटिग्गहणस्मिञ्हि मत्तं अजानन्तो मनुस्सानं पसादं मक्खेति, सद्धादेय्यं विनिपातेति, सासनं न करोति, विजातमातुयापि चित्तं गहेतुं न सक्कोति। इति मत्तं जानित्वाव पटिग्गहेतब्बन्ति अयं **मत्तप्पटिग्गहणसन्तोसो** नाम।

सड्ढकुलानियेव अगन्त्वा द्वारप्पटिपाटिया गन्तब्बं। अयं **लोलुप्पविवज्जनसन्तोसो** नाम। **यथालाभसन्तोसा**दयो चीवरे वुत्तनया एव।

पिण्डपातं परिभुञ्जित्वा समणधम्मं अनुपालेस्सामीति एवं उपकारं ञत्वा परिभुञ्जनं **उपकारसन्तोसो** नाम।

पत्तं पूरेत्वा आनीतं न पटिग्गहेतब्बं, अनुपसम्पन्ने सति तेन गाहापेतब्बं, असति हरापेत्वा पटिग्गहणमत्तं गहेतब्बं। अयं **परिमाणसन्तोसो** नाम।

"जिघच्छाय पटिविनोदनं इदमेत्थ निस्सरण"न्ति एवं परिभुञ्जनं **परिभोगसन्तोसो** नाम।

निदहित्वा न परिभुञ्जितब्बन्ति अयं **सन्निधिपरिवज्जनसन्तोसो** नाम।

मुखं अनोलोकेत्वा सारणीयधम्मे ठितेन विस्सज्जेतब्बं। अयं **विस्सज्जनसन्तोसो** नाम।

पिण्डपातपटिसंयुत्तानि पन पञ्च धुतङ्गानि– पिण्डपातिकङ्गं, सपदानचारिकङ्गं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकासनिकङ्गं, पत्तपिण्डिकङ्गं, खलुपच्छाभत्तिकङ्गन्ति। तेसं वित्थारकथा विसुद्धिमग्गे वुत्ता। इति पिण्डपातसन्तोसमहाअरियवंसं पूरयमानो भिक्खु इमानि पञ्च धुतङ्गानि गोपेति। इमानि गोपेन्तो पिण्डपातसन्तोसमहाअरियवंसेन सन्तुट्ठो होति। "वण्णवादी"तिआदीनि वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि।

सेनासनेनाति इध सेनासनं जानितब्बं, सेनासनक्खेत्तं जानितब्बं, सेनासनसन्तोसो जानितब्बो, सेनासनपटिसंयुत्तं धुतङ्गं जानितब्बं। तत्थ **सेनासन**न्ति मञ्चो, पीठं, भिसि, बिम्बोहनं, विहारो, अड्ढयोगो, पासादो, हम्मियं, गुहा, लेणं, अट्टो, माळो, वेळुगुम्बो, रुक्खमूलं, यत्थ वा पन भिक्खू पटिक्कमन्तीति इमानि पन्नरस सेनासनानि।

सेनासनक्खेत्तन्ति "सङ्घतो वा गणतो वा ञातितो वा मित्ततो वा अत्तनो वा धनेन पंसुकूलं वा"ति छ खेत्तानि।

सेनासनसन्तोसोति सेनासने वितक्कसन्तोसादयो पन्नरस सन्तोसा। ते पिण्डपाते वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। **सेनासनपटिसंयुत्तानि** पन पञ्च धुतङ्गानि– आरञ्ञिकङ्गं, रुक्खमूलिकङ्गं, अब्भोकासिकङ्गं, सोसानिकङ्गं, यथासन्ततिकङ्गन्ति। तेसं वित्थारकथा विसुद्धिमग्गे वुत्ता। इति सेनासनसन्तोसमहाअरियवंसं पूरयमानो भिक्खु इमानि पञ्च धुतङ्गानि गोपेति। इमानि गोपेन्तो सेनासनसन्तोसमहाअरियवंसेन सन्तुट्ठो होति।

गिलानपच्चयो पन पिण्डपातेयेव पविट्ठो। तत्थ यथालाभयथाबलयथासारुप्पसन्तोसेनेव सन्तुस्सितब्बं। नेसज्जिकङ्गं भावनारामअरियवंसं भजति। वुत्तम्पि चेतं–

"पञ्च सेनासने वुत्ता, पञ्च आहारनिस्सिता।
एको वीरियसंयुत्तो, द्वे च चीवरनिस्सिता"ति।।

इति आयस्मा धम्मसेनापति सारिपुत्तत्थेरो पथविं पत्थरमानो विय सागरकुच्छिं **पूरयमानो** विय आकासं वित्थारयमानो विय च पठमं चीवरसन्तोसं अरियवंसं कथेत्वा चन्दं उट्ठापेन्तो विय सूरियं उल्लङ्घेन्तो विय च दुतियं पिण्डपातसन्तोसं कथेत्वा सिनेरुं उक्खिपेन्तो विय ततियं सेनासनसन्तोसं अरियवंसं कथेत्वा इदानि सहस्सनयप्पटिमण्डितं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुत्थं भावनारामं अरियवंसं कथेतुं **पुन चपरं आवुसो भिक्खु पहानारामो होती**ति देसनं आरभि।

तत्थ आरमनं आरामो, अभिरतीति अत्थो। पञ्चविधे पहाने आरामो अस्साति **पहानारामो**। कामच्छन्दं पजहन्तो रमति, नेक्खम्मं भावेन्तो रमति, ब्यापादं पजहन्तो रमति...पे०... सब्बकिलेसे पजहन्तो रमति, अरहत्तमग्गं भावेन्तो रमतीति एवं पहाने रतोति **पहानरतो**। वुत्तनयेनेव भावनाय आरामो अस्साति **भावनारामो**। भावनाय रतोति **भावनारतो**।

इमेसु पन चतूसु अरियवंसेसु पुरिमेहि तीहि तेरसन्नं धुतङ्गानं चतुपच्चयसन्तोसस्स च वसेन सकलं विनयपिटकं कथितं होति। भावनारामेन अवसेसं पिटकद्वयं। इमं पन भावनारामतं अरियवंसं कथेन्तेन भिक्खुना पटिसम्भिदामग्गे नेक्खम्मपाळिया कथेतब्बो। दीघनिकाये दसुत्तरसुत्तन्तपरियायेन कथेतब्बो। मज्झिमनिकाये सतिपट्ठानसुत्तन्तपरियायेन कथेतब्बो। अभिधम्मे निद्देसपरियायेन कथेतब्बो।

तत्थ **पटिसम्भिदामग्गे नेक्खम्मपाळिया**ति सो नेक्खम्मं भावेन्तो रमति, कामच्छन्दं पजहन्तो रमति। अब्यापादं ब्यापादं। आलोकसञ्ञं, थिनमिद्धं। अविक्खेपं उद्धच्चं। धम्मववत्थानं, विचिकिच्छं। ञाणं, अविज्जं। पामोज्जं, अरतिं। पठमं झानं, पञ्च नीवरणे। दुतियं झानं, वितक्कविचारे। ततियं झानं, पीतिं। चतुत्थं झानं, सुखदुक्खे। आकासानञ्चायतनसमापत्तिं भावेन्तो रमति, रूपसञ्ञं पटिघसञ्ञं नानत्तसञ्ञं पजहन्तो रमति। विञ्ञाणञ्चायतनसमापत्तिं...पे०... नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्तिं भावेन्तो रमति, आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञं पजहन्तो रमति।

अनिच्चानुपस्सनं भावेन्तो रमति, निच्चसञ्ञं पजहन्तो रमति। दुक्खानुपस्सनं, सुखसञ्ञं। अनत्तानुपस्सनं, अत्तसञ्ञं। निब्बिदानुपस्सनं, नन्दिं। विरागानुपस्सनं, रागं। निरोधानुपस्सनं, समुदयं। पटिनिस्सग्गानुपस्सनं, आदानं। खयानुपस्सनं, घनसञ्ञं। वयानुपस्सनं, आयूहनं। विपरिणामानुपस्सनं, धुवसञ्ञं। अनिमित्तानुपस्सनं, निमित्तं। अप्पणिहितानुपस्सनं, पणिधिं। सुञ्ञतानुपस्सनं अभिनिवेसं। अधिपञ्ञाधम्मविपस्सनं, सारादानाभिनिवेसं। यथाभूतञाणदस्सनं, सम्मोहाभिनिवेसं। आदीनवानुपस्सनं, आलयाभिनिवेसं। पटिसङ्खानुपस्सनं, अप्पटिसङ्खं। विवट्टानुपस्सनं, संयोगाभिनिवेसं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोतापत्तिमग्गं, दिट्ठेकट्ठे किलेसे। सकदागामिमग्गं, ओळारिके किलेसे। अनागामिमग्गं, अणुसहगते किलेसे। अरहत्तमग्गं भावेन्तो रमति, सब्बकिलेसे पजहन्तो रमतीति एवं **पटिसम्भिदामग्गे** नेक्खम्मपाळिया कथेतब्बो।

दीघनिकाये दसुत्तरसुत्तन्तपरियायेनाति एकं धम्मं भावेन्तो रमति, एकं धम्मं पजहन्तो रमति...पे०... दस धम्मे भावेन्तो रमति, दस धम्मे पजहन्तो रमति। कतमं एकं धम्मं भावेन्तो रमति? कायगतासतिं सातसहगतं। इमं एकं धम्मं भावेन्तो रमति। कतमं एकं धम्मं पजहन्तो रमति? अस्मिमानं। इमं एकं धम्मं पजहन्तो रमति। कतमे द्वे धम्मे...पे०... कतमे दस धम्मे भावेन्तो रमति? दस कसिणायतनानि। इमे दस धम्मे भावेन्तो रमति•। कतमे दस धम्मे पजहन्तो रमति? दस मिच्छत्ते। इमे दस धम्मे पजहन्तो रमति। एवं खो, भिक्खवे, भिक्खु भावनारामो होतीति एवं दीघनिकाये दसुत्तरसुत्तन्तपरियायेन कथेतब्बो।

मज्झिमनिकाये सतिपट्ठानसुत्तन्तपरियायेनाति एकायनो, भिक्खवे, मग्गो सत्तानं विसुद्धिया, सोकपरिदेवानं समतिक्कमाय, दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमाय, ञायस्स अधिगमाय, निब्बानस्स सच्छिकिरियाय यदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना। कतमे चत्तारो? इध, भिक्खवे, भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरति... वेदनासु वेदनानुपस्सी... चित्ते चित्तानुपस्सी... धम्मेसु धम्मानुपस्सी... 'अत्थि धम्मा'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति यावदेव ञाणमत्ताय पटिस्सतिमत्ताय अनिस्सितो च विहरति न च किञ्चि लोके उपादियति। एवम्पि, भिक्खवे, भिक्खु भावनारामो होति भावनारतो, पहानारामो होति पहानरतो। पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु गच्छन्तो वा गच्छामीति पजानाति...पे०... पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सिवथिकाय छड्डितं...पे०... पूतीनि चुण्णकजातानि। सो इममेव कायं उपसंहरति, अयम्पि खो कायो एवंधम्मो एवंभावी एवंअनतीतोति। इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति...पे०... एवम्पि खो, भिक्खवे, भिक्खु भावनारामो होतीति एवं मज्झिमनिकाये सतिपट्ठानसुत्तन्तपरियायेन कथेतब्बो।

अभिधम्मे निद्देसपरियायेनाति सब्बेपि सङ्खते अनिच्चतो दुक्खतो रोगतो गण्डतो...पे०... संकिलेसिकधम्मतो पस्सन्तो रमति। अयं, भिक्खवे, भिक्खु भावनारामो होतीति एवं निद्देसपरियायेन कथेतब्बो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेव अत्तानुक्कंसेतीति अज्ज मे सट्ठि वा सत्तति वा वस्सानि अनिच्चं दुक्खं अनत्ताति विपस्सनाय कम्मं करोन्तस्स, को मया सदिसो अत्थीति एवं अत्तुक्कंसनं न करोति। **न परं वम्भेतीति** अनिच्चं दुक्खन्ति विपस्सनामत्तकम्पि नत्थि, किं इमे विस्सट्ठकम्मट्ठाना चरन्तीति एवं परं वम्भनं न करोति। सेसं वुत्तनयमेव।

३१०. **पधानानीति** उत्तमवीरियानि। **संवरपधानन्ति** चक्खादीनि संवरन्तस्स उप्पन्नवीरियं। **पहानपधानन्ति** कामवितक्कादयो पजहन्तस्स उप्पन्नवीरियं। **भावनापधानन्ति** बोज्झङ्गे भावेन्तस्स उप्पन्नवीरियं। **अनुरक्खणापधानन्ति** समाधिनिमित्तं अनुरक्खन्तस्स उप्पन्नवीरियं।

विवेकनिस्सितन्तिआदीसु विवेको विरागो निरोधोति तीणिपि निब्बानस्स नामानि। निब्बानञ्हि उपधिविवेकत्ता **विवेको।** तं आगम्म रागादयो विरज्जन्तीति **विरागो।** निरुज्झन्तीति **निरोधो।** तस्मा "विवेकनिस्सित"न्तिआदीसु आरम्मणवसेन अधिगन्तब्बवसेन वा निब्बाननिस्सितन्ति अत्थो। **वोस्सग्गपरिणामिन्ति** एत्थ द्वे वोस्सग्गा परिच्चागवोस्सग्गो च पक्खन्दनवोस्सग्गो च। तत्थ विपस्सना तदङ्गवसेन किलेसे च खन्धे च परिच्चजतीति परिच्चागवोस्सग्गो। मग्गो आरम्मणवसेन निब्बानं पक्खन्दतीति पक्खन्दनवोस्सग्गो। तस्मा वोस्सग्गपरिणामिन्ति यथा भावियमानो सतिसम्बोज्झङ्गो वोस्सग्गत्थाय परिणमति, विपस्सनाभावञ्च मग्गभावञ्च पापुणाति, एवं भावेतीति अयमेत्थ अत्थो। सेसपदेसुपि एसेव नयो।

भद्रकन्ति भद्दकं। **समाधिनिमित्तं** वुच्चति अट्ठिकसञ्ञादिवसेन अधिगतो समाधियेव। **अनुरक्खतीति** समाधिपरिबन्धकधम्मे रागदोसमोहे सोधेन्तो रक्खति। एत्थ च अट्ठिकसञ्ञादिका पञ्चेव सञ्ञा वुत्ता। इमस्मिं पन ठाने दसपि असुभानि वित्थारेत्वा कथेतब्बानि। तेसं वित्थारो विसुद्धिमग्गे वुत्तोयेव।

धम्मे ञाणन्ति एकपटिवेधवसेन चतुसच्चधम्मे ञाणं चतुसच्चब्भन्तरे निरोधसच्चे धम्मे ञाणञ्च। यथाह– "तत्थ कतमं धम्मे ञाणं? चतूसु मग्गेसु चतूसु फलेसु ञाण"न्ति (विभं० ७९६)। **अन्वये ञाणन्ति** चत्तारि सच्चानि पच्चक्खतो दिस्वा यथा इदानि, एवं अतीतेपि अनागतेपि इमेव पञ्चक्खन्धा दुक्खसच्चं, अयमेव तण्हा समुदयसच्चं, अयमेव निरोधो निरोधसच्चं, अयमेव मग्गो मग्गसच्चन्ति एवं तस्स ञाणस्स अनुगतियं ञाणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेनाह– "सो इमिना धम्मेन ञातेन दिट्ठेन पत्तेन विदितेन परियोगाळ्हेन अतीतानागतेन नयं नेती"ति। **परिये ञाण**न्ति परेसं चित्तपरिच्छेदे ञाणं। यथाह– "तत्थ कतमं परिये ञाणं? इध भिक्खु परसत्तानं परपुग्गलानं चेतसा चेतो परिच्च जानाती"ति (विभं० ७९६) वित्थारेतब्बं। ठपेत्वा पन इमानि तीणि ञाणानि अवसेसं **सम्मुतिञाणं** नाम। यथाह– "तत्थ कतमं सम्मुतिञाणं? ठपेत्वा धम्मे ञाणं ठपेत्वा अन्वये ञाणं ठपेत्वा परिच्छेदे ञाणं अवसेसं सम्मुतिञाण"न्ति (विभं० ७९६)।

दुक्खे ञाणादीहि अरहत्तं पापेत्वा एकस्स भिक्खुनो निग्गमनं चतुसच्चकम्मट्ठानं कथितं। तत्थ द्वे सच्चानि वट्टं, द्वे विवट्टं, वट्टे अभिनिवेसो होति, नो विवट्टे। द्वीसु सच्चेसु आचरियसन्तिके परियत्तिं उग्गहेत्वा कम्मं करोति, द्वीसु सच्चेसु "निरोधसच्चं नाम इट्ठं कन्तं मनापं, मग्गसच्चं नाम इट्ठं कन्तं मनाप"न्ति सवनवसेन कम्मं करोति। द्वीसु सच्चेसु उग्गहपरिपुच्छासवनधारणसम्मसनपटिवेधो वट्टति, द्वीसु सवनपटिवेधो वट्टति। तीणि किच्चवसेन पटिविज्झति, एकं आरम्मणवसेन। द्वे सच्चानि दुद्दसत्ता गम्भीरानि, द्वे गम्भीरत्ता दुद्दसानि।

सोतापत्तियङ्गादिचतुक्कवण्णना

३११. **सोतापत्तियङ्गानी**ति सोतापत्तिया अङ्गानि, सोतापत्तिमग्गस्स पटिलाभकारणानीति अत्थो। **सप्पुरिससंसेवो**ति बुद्धादीनं सप्पुरिसानं उपसङ्कमित्वा सेवनं। **सद्धम्मस्सवन**न्ति सप्पायस्स तेपिटकधम्मस्स सवनं। **योनिसोमनसिकारो**ति अनिच्चादिवसेन मनसिकारो। **धम्मानुधम्मप्पटिपत्ती**ति लोकुत्तरधम्मस्स अनुधम्मभूताय पुब्बभागपटिपत्तिया पटिपज्जनं।

अवेच्चप्पसादेनाति अचलप्पसादेन। "इतिपि सो भगवा"तिआदीनि विसुद्धिमग्गे वित्थारितानि। फलधातुआहारचतुक्कानि उत्तानत्थानेव। अपिचेत्थ लूखपणीतवत्थुवसेन ओळारिकसुखुमता वेदितब्बा।

विञ्ञाणट्ठितियोति विञ्ञाणं एतासु तिट्ठतीति विञ्ञाणट्ठितियो। आरम्मणट्ठितिवसेनेतं वुत्तं। **रूपूपाय**न्ति रूपं उपगतं हुत्वा। पञ्चवोकारभवस्मिञ्हि अभिसङ्खारविञ्ञाणं रूपक्खन्धं निस्साय तिट्ठति। तं सन्धायेतं वुत्तं। **रूपारम्मण**न्ति रूपक्खन्धगोचरं रूपपतिट्ठितं हुत्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नन्दूपसेचनन्ति लोभसहगतं सम्पयुत्तनन्दियाव उपसित्तं हुत्वा। इतरं उपनिस्सयकोटिया। **वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जतीति** सट्ठिपि सत्ततिपि वस्सानि एवं पवत्तमानं वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जति। **वेदनूपायादीसुपि** एसेव नयो। इमेहि पन तीहि पदेहि चतुवोकारभवे अभिसङ्खारविञ्ञाणं वुत्तं। तस्स यावतायुकं पवत्तनवसेन वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जना वेदितब्बा। चतुक्कवसेन पन देसनाय आगतत्ता विञ्ञाणूपायन्ति न वुत्तं। एवं वुच्चमाने च "कतमं नु खो एत्थ कम्मविञ्ञाणं, कतमं विपाकविञ्ञाण"न्ति सम्मोहो भवेय्य, तस्मापि न वुत्तं। **अगतिगमनानि** वित्थारितानेव।

चीवरहेतूति तत्थ मनापं चीवरं लभिस्सामीति चीवरकारणा उप्पज्जति। **इति भवाभवहेतूति** एत्थ **इतीति** निदस्सनत्थे निपातो। यथा चीवरादिहेतु, एवं भवाभवहेतूपीति अत्थो। **भवाभवोति** चेत्थ पणीतपणीततरानि तेलमधुफाणितादीनि अधिप्पेतानि। इमेसं पन चतुन्नं तण्हुप्पादानं पहानत्थाय पटिपाटियाव चत्तारो अरियवंसा देसिताति वेदितब्बा। **पटिपदाचतुक्कं** हेट्ठा वुत्तमेव। अक्खमादीसु पधानकरणकाले सीतादीनि न खमतीति **अक्खमा।** खमतीति **खमा।** इन्द्रियदमनं **दमा।** "उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेती"तिआदिना नयेन वितक्कसमनं **समा।**

धम्मपदानीति धम्मकोट्ठासानि। अनभिज्झा धम्मपदं नाम अलोभो वा अलोभसीसेन अधिगतज्झानविपस्सनामग्गफलनिब्बानानि वा। अब्यापादो धम्मपदं नाम अकोपो वा मेत्तासीसेन अधिगतज्झानादीनि वा। सम्मासति धम्मपदं नाम सुप्पट्ठितसति वा सतिसीसेन अधिगतज्झानादीनि वा। सम्मासमाधि धम्मपदं नाम समापत्ति वा अट्ठसमापत्तिवसेन अधिगतज्झानविपस्सनामग्गफलनिब्बानानि वा। दसासुभवसेन वा अधिगतज्झानादीनि अनभिज्झा धम्मपदं। चतुब्रह्मविहारवसेन अधिगतानि अब्यापादो धम्मपदं। दसानुस्सतिआहारेपटिकूलसञ्ञावसेन अधिगतानि सम्मासति धम्मपदं। दसकसिणआनापानवसेन अधिगतानि सम्मासमाधिधम्मपदन्ति।

धम्मसमादानेसु पठमं अचेलकपटिपदा। दुतियं तिब्बकिलेसस्स अरहत्तं गहेतुं असक्कोन्तस्स अस्सुमुखस्सापि रुदतो परिसुद्धब्रह्मचरियचरणं। ततियं कामेसु पातब्यता। चतुत्थं चत्तारो पच्चये अलभमानस्सापि झानविपस्सनावसेन सुखसमङ्गिनो सासनब्रह्मचरियं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मक्खन्धाति एत्थ गुणट्ठो खन्धट्ठो। **सीलक्खन्धो**ति सीलगुणो। एत्थ च फलसीलं अधिप्पेतं। सेसपदेसुपि एसेव नयो। इति चतूसुपि ठानेसु फलमेव वुत्तं।

बलानीति उपत्थम्भनट्ठेन अकम्पियट्ठेन च बलानि। तेसं पटिपक्खेहि कोसज्जादीहि अकम्पनियता वेदितब्बा। सब्बानिपि समथविपस्सनामग्गवसेन लोकियलोकुत्तरानेव कथितानि।

अधिट्ठानानीति एत्थ **अधी**ति उपसग्गमत्तं। अत्थतो पन तेन वा तिट्ठन्ति, तत्थ वा तिट्ठन्ति, ठानमेव वा तंतंगुणाधिकानं पुरिसानं अधिट्ठानं, पञ्ञाव अधिट्ठानं **पञ्ञाधिट्ठानं।** एत्थ च पठमेन अग्गफलपञ्ञा। दुतियेन वचीसच्चं। ततियेन आमिसपरिच्चागो। चतुत्थेन किलेसूपसमो कथितोति वेदितब्बो। पठमेन च कम्मस्सकतपञ्ञं विपस्सनापञ्ञं वा आदिं कत्वा फलपञ्ञा कथिता। दुतियेन वचीसच्चं आदिं कत्वा परमत्थसच्चं निब्बानं। ततियेन आमिसपरिच्चागं आदिं कत्वा अग्गमग्गेन किलेसपरिच्चागो। चतुत्थेन समापत्तिविक्खम्भिते किलेसे आदिं कत्वा अग्गमग्गेन किलेसवूपसमो। पञ्ञाधिट्ठानेन वा एकेन अरहत्तफलपञ्ञा कथिता। सेसेहि परमत्थसच्चं। सच्चाधिट्ठानेन वा एकेन परमत्थसच्चं कथितं। सेसेहि अरहत्तपञ्ञाति **मूसिकाभयत्थेरो** आह।

पञ्हब्याकरणादिचतुक्कवण्णना

३१२. **पञ्हब्याकरणानि** महापदेसकथाय वित्थारितानेव।

कण्हन्ति काळकं दसअकुसलकम्मपथकम्मं। **कण्हविपाक**न्ति अपाये निब्बत्तनतो काळकविपाकं। **सुक्क**न्ति पण्डरं कुसलकम्मपथकम्मं। **सुक्कविपाक**न्ति सग्गे निब्बत्तनतो पण्डरविपाकं। **कण्हसुक्क**न्ति मिस्सककम्मं। **कण्हसुक्कविपाक**न्ति सुखदुक्खविपाकं। मिस्सककम्मञ्हि कत्वा अकुसलेन तिरच्छानयोनियं मङ्गलहत्थिट्ठानादीसु उप्पन्नो कुसलेन पवत्ते सुखं वेदयति। कुसलेन राजकुलेपि निब्बत्तो अकुसलेन पवत्ते दुक्खं वेदयति। **अकण्हअसुक्क**न्ति कम्मक्खयकरं चतुमग्गञाणं अधिप्पेतं। तञ्हि यदि कण्हं भवेय्य, कण्हविपाकं ददेय्य। यदि सुक्कं भवेय्य, सुक्कविपाकं ददेय्य। उभयविपाकस्स पन अदानतो अकण्हासुक्कविपाकत्ता अकण्हं असुक्कन्ति अयमेत्थ अत्थो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सच्छिकरणीयाति पच्चक्खकरणेन चेव पटिलाभेन च सच्छिकातब्बा। **चक्खुना**ति दिब्बचक्खुना। **कायेना**ति सहजातनामकायेन। **पञ्ञाया**ति अरहत्तफलञाणेन।

ओघाति वट्टस्मिं सत्ते ओहनन्ति ओसीदापेन्तीति ओघा। तत्थ पञ्चकामगुणिको रागो **कामोघो**। रूपारूपभवेसु छन्दरागो **भवोघो**। तथा झाननिकन्ति सस्सतदिट्ठिसहगतो च रागो। द्वासट्ठि दिट्ठियो **दिट्ठोघो**।

वट्टस्मिं योजेन्तीति **योगा**। ते ओघा विय वेदितब्बा।

विसंयोजेन्तीति **विसञ्ञोगा**। तत्थ असुभज्झानं कामयोगविसंयोगो। तं पादकं कत्वा अधिगतो अनागामिमग्गो एकन्तेनेव **कामयोगविसञ्ञोगो** नाम। अरहत्तमग्गो **भवयोगविसञ्ञोगो** नाम। सोतापत्तिमग्गो **दिट्ठियोगविसञ्ञोगो** नाम। अरहत्तमग्गो **अविज्जायोगविसञ्ञोगो** नाम।

गन्थनवसेन **गन्था**। वट्टस्मिं नामकायञ्चेव रूपकायञ्च गन्थति बन्धति पलिबुन्धतीति **कायगन्थो**। **इदंसच्चाभिनिवेसो**ति इदमेव सच्चं, मोघमञ्ञन्ति एवं पवत्तो दिट्ठाभिनिवेसो।

उपादानानीति आदानग्गहणानि। कामोति रागो, सोयेव गहणट्ठेन उपादानन्ति **कामुपादानं**। दिट्ठीति मिच्छादिट्ठि, सापि गहणट्ठेन उपादानन्ति **दिट्ठुपादानं**। इमिना सुद्धीति एवं सीलवतानं गहणं **सीलब्बतुपादानं**। अत्ताति एतेन वदति चेव उपादियति चाति **अत्तवादुपादानं**।

योनियोति कोट्ठासा। अण्डे जाताति **अण्डजा**। जलाबुम्हि जाताति **जलाबुजा**। संसेदे जाताति **संसेदजा**। सयनस्मिं पूतिमच्छादीसु च निब्बत्तानमेतं अधिवचनं। वेगेन आगन्त्वा उपपतिता वियाति **ओपपातिका**। तत्थ देवमनुस्सेसु संसेदजओपपातिकानं अयं विसेसो। संसेदजा मन्दा दहरा हुत्वा निब्बत्तन्ति। ओपपातिका सोळसवस्सुद्देसिका हुत्वा। मनुस्सेसु हि भुम्मदेवेसु च इमा चतस्सोपि योनियो लब्भन्ति। तथा तिरच्छानेसु सुपण्णनागादीसु। वुत्तञ्हेतं – "तत्थ, भिक्खवे, अण्डजा सुपण्णा अण्डजेव नागे हरन्ति, न जलाबुजे न संसेदजे न ओपपातिके"ति (सं० नि० २.३.३९३)। चातुमहाराजिकतो पट्ठाय उपरिदेवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओपपातिकायेव। तथा नेरयिका। पेतेसु चतस्सोपि लब्भन्ति। **गब्भावक्कन्तियो** सम्पसादनीये कथिता एव।

अत्तभावपटिलाभेसु पठमो खिड्डापदोसिकवसेन वेदितब्बो। दुतियो ओरब्भिकादीहि घातियमानउरब्भादिवसेन। ततियो मनोपदोसिकावसेन। चतुत्थो चातुमहाराजिके उपादाय उपरिसेसदेवतावसेन। ते हि देवा नेव अत्तसञ्चेतनाय मरन्ति, न परसञ्चेतनाय।

दक्खिणाविसुद्धादिचतुक्कवण्णना

३१३. दक्खिणाविसुद्धियोति दानसङ्खाता दक्खिणा विसुज्झन्ति महप्फला होन्ति एताहीति **दक्खिणाविसुद्धियो**।

दायकतो विसुज्झति, नो पटिग्गाहकतोति यत्थ दायको सीलवा होति, धम्मेनुप्पन्नं देय्यधम्मं देति, पटिग्गाहको दुस्सीलो। अयं दक्खिणा वेस्सन्तरमहाराजस्स दक्खिणासदिसा। **पटिग्गाहकतो विसुज्झति, नो दायकतो**ति यत्थ पटिग्गाहको सीलवा होति, दायको दुस्सीलो, अधम्मेनुप्पन्नं देति, अयं दक्खिणा चोरघातकस्स दक्खिणासदिसा। **नेव दायकतो विसुज्झति, नो पटिग्गाहकतो**ति यत्थ उभोपि दुस्सीला देय्यधम्मोपि अधम्मेन निब्बत्तो। विपरियायेन चतुत्था वेदितब्बा।

सङ्गहवत्थूनीति सङ्गहकारणानि। तानि हेट्ठा विभत्तानेव।

अनरियवोहाराति अनरियानं लामकानं वोहारा।

अरियवोहाराति अरियानं सप्पुरिसानं वोहारा।

दिट्ठवादिताति दिट्ठं मयाति एवं वादिता। एत्थ च तंतंसमुट्ठापकचेतनावसेन अत्थो वेदितब्बो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्तन्तपादिचतुक्कवण्णना

३१४. **अत्तन्तपा**दीसु पठमो अचेलको। दुतियो ओरब्भिकादीसु अञ्ञतरो। ततियो यञ्ञयाजको। चतुत्थो सासने सम्मापटिपन्नो।

अत्तहिताय पटिपन्नादीसु पठमो यो सयं सीलादिसम्पन्नो, परं सीलादीसु न समादपेति आयस्मा वक्कलित्थेरो विय। दुतियो यो अत्तना न सीलादिसम्पन्नो, परं सीलादीसु समादपेति आयस्मा उपनन्दो विय। ततियो यो नेवत्तना सीलादिसम्पन्नो, परं सीलादीसु न समादपेति देवदत्तो विय। चतुत्थो यो अत्तना च सीलादिसम्पन्नो परञ्च सीलादीसु समादपेति आयस्मा महाकस्सपो विय।

तमादीसु **तमो**ति अन्धकारभूतो। **तमपरायणो**ति तममेव परं अयनं गति अस्साति तमपरायणो। एवं सब्बपदेसु अत्थो वेदितब्बो। एत्थ च पठमो नीचे चण्डालादिकुले दुज्जीविते हीनत्तभावे निब्बत्तित्वा तीणि दुच्चरितानि परिपूरेति। दुतियो तथाविधो हुत्वा तीणि सुचरितानि परिपूरेति। ततियो उळारे खत्तियकुले बहुअन्नपाने सम्पन्नत्तभावे निब्बत्तित्वा तीणि दुच्चरितानि परिपूरेति। चतुत्थो तादिसोव हुत्वा तीणि सुचरितानि परिपूरेति।

समणमचलोति समणअचलो। म-कारो पदसन्धिमत्तं। सो सोतापन्नो वेदितब्बो। सोतापन्नो हि चतूहि वातेहि इन्दखीलो विय परप्पवादेहि अकम्पियो। अचलसद्धाय समन्नागतोति **समणमचलो**। वुत्तम्पि चेतं– "कतमो च पुग्गलो समणमचलो? इधेकच्चो पुग्गलो तिण्णं संयोजनानं परिक्खया"ति (पु० प० १९०) वित्थारो। रागदोसानं पन तनुभूतत्ता सकदागामी **समणपदुमो** नाम। तेनाह– "कतमो पन पुग्गलो समणपदुमो? इधेकच्चो पुग्गलो सकिदेव इमं लोकं आगन्त्वा दुक्खस्सन्तं करोति, अयं वुच्चति पुग्गलो समणपदुमो"ति (पु० प० १९०)। रागदोसानं अभावा खिप्पमेव पुप्फिस्सतीति अनागामी **समणपुण्डरीको** नाम। तेनाह– "कतमो च पुग्गलो समणपुण्डरीको? इधेकच्चो पुग्गलो पञ्चन्नं ओरम्भागियानं...पे०... अयं वुच्चति पुग्गलो समणपुण्डरीको"ति (पु० प० १९०)। अरहा पन सब्बेसम्पि गन्थकारकिलेसानं अभावा समणेसु **समणसुखुमालो** नाम। तेनाह– "कतमो च पुग्गलो समणेसु समणसुखुमालो? इधेकच्चो आसवानं खया...पे०... उपसम्पज्ज विहरति। अयं वुच्चति पुग्गलो समणेसु समणसुखुमालो"ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"इमे खो, आवुसो"तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति समपञ्ञासाय चतुक्कानं वसेन द्वेपञ्हसतानि कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

चतुक्कवण्णना निट्ठिता।

पञ्चकवण्णना

३१५. इति चतुक्कवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि पञ्चकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ पञ्चसु खन्धेसु **रूपक्खन्धो** लोकियो। सेसा **लोकियलोकुत्तरा। उपादानक्खन्धा** लोकियाव। वित्थारतो पन खन्धकथा विसुद्धिमग्गे वुत्ता। **कामगुणा** हेट्ठा वित्थारिताव।

सुकतदुक्कटादीहि गन्तब्बाति **गतियो। निरयो**ति निरस्सादो। सहोकासेन खन्धा कथिता। ततो परेसु तीसु निब्बत्ता खन्धाव वुत्ता। चतुत्थे ओकासोपि।

आवासे मच्छरियं **आवासमच्छरियं।** तेन समन्नागतो भिक्खु आगन्तुकं दिस्वा "एत्थ चेतियस्स वा सङ्घस्स वा परिक्खारो ठपितो"तिआदीनि वत्वा सङ्घिकम्पि आवासं निवारेति। सो कालङ्कत्वा पेतो वा अजगरो वा हुत्वा निब्बत्तति। कुले मच्छरियं **कुलमच्छरियं।** तेन समन्नागतो भिक्खु तेहि कारणेहि अत्तनो उपट्ठाककुले अञ्ञेसं पवेसनम्पि निवारेति। लाभे मच्छरियं **लाभमच्छरियं।** तेन समन्नागतो भिक्खु सङ्घिकम्पि लाभं मच्छरायन्तो यथा अञ्ञे न लभन्ति, एवं करोति। वण्णे मच्छरियं **वण्णमच्छरियं। वण्णो**ति चेत्थ सरीरवण्णोपि गुणवण्णोपि वेदितब्बो। परियत्तिधम्मे मच्छरियं **धम्ममच्छरियं।** तेन समन्नागतो भिक्खु "इमं धम्मं परियापुणित्वा एसो मं अभिभविस्सती"ति अञ्ञस्स न देति। यो पन धम्मानुग्गहेन वा पुग्गलानुग्गहेन वा न देति, न तं मच्छरियं।

चित्तं निवारेन्ति परियोनन्धन्तीति **नीवरणानि।** कामच्छन्दो नीवरणपत्तो अरहत्तमग्गवज्झो। कामरागानुसयो कामरागसंयोजनपत्तो अनागामिमग्गवज्झो। थिनं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तगेलञ्ञं। मिद्धं खन्धत्तयगेलञ्ञं। उभयम्पि अरहत्तमग्गवज्झं। तथा उद्धच्चं। कुक्कुच्चं अनागामिमग्गवज्झं। विचिकिच्छा पठममग्गवज्झा।

संयोजनानीति बन्धनानि। तेहि पन बद्धेसु पुग्गलेसु रूपारूपभवे निब्बत्ता सोतापन्नसकदागामिनो अन्तोबद्धा बहिसयिता नाम। तेसञ्हि कामभवे बन्धनं। कामभवे अनागामिनो बहिबद्धा अन्तोसयिता नाम। तेसञ्हि रूपारूपभवे बन्धनं। कामभवे सोतापन्नसकदागामिनो अन्तोबद्धा अन्तोसयिता नाम। रूपारूपभवे अनागामिनो बहिबद्धा बहिसयिता नाम। खीणासवो सब्बत्थ अबन्धनो।

सिक्खितब्बं पदं **सिक्खापदं,** सिक्खाकोट्ठासोति अत्थो। सिक्खाय वा पदं सिक्खापदं, अधिचित्तअधिपञ्ञासिक्खाय अधिगमुपायोति अत्थो। अयमेत्थ सङ्खेपो। वित्थारतो पन सिक्खापदकथा विभङ्गप्पकरणे सिक्खापदविभङ्गे आगता एव।

अभब्बट्ठानादिपञ्चकवण्णना

३१६. "अभब्बो, आवुसो, खीणासवो भिक्खु सञ्चिच्च पाण"न्तिआदि देसनासीसमेव, सोतापन्नादयोपि पन अभब्बा। पुथुज्जनखीणासवानं निन्दापसंसत्थम्पि एवं वुत्तं। पुथुज्जनो नाम गारय्हो, मातुघातादीनिपि करोति। खीणासवो पन पासंसो, कुन्थकिपिल्लिकघातादीनिपि न करोतीति।

ब्यसनेसु वियस्सतीति ब्यसनं, हितसुखं खिपति विद्धंसेतीति अत्थो। ञातीनं ब्यसनं **ञातिब्यसनं,** चोररोगभयादीहि ञातिविनासोति अत्थो। भोगानं ब्यसनं **भोगब्यसनं,** राजचोरादिवसेन भोगविनासोति अत्थो। रोगो एव ब्यसनं **रोगब्यसनं।** रोगो हि आरोग्यं ब्यसति विनासेतीति ब्यसनं, सीलस्स ब्यसनं **सीलब्यसनं।** दुस्सील्यस्सेतं नामं। सम्मादिट्ठिं विनासयमाना उप्पन्ना दिट्ठि एव ब्यसनं **दिट्ठिब्यसनं।** एत्थ च ञातिब्यसनादीनि तीणि नेव अकुसलानि न तिलक्खणाहतानि। सीलदिट्ठिब्यसनद्वयं अकुसलं तिलक्खणाहतं। तेनेव "नावुसो, सत्ता ञातिब्यसनहेतु वा"तिआदिमाह।

ञातिसम्पदाति ञातीनं सम्पदा पारिपूरी बहुभावो। **भोगसम्पदाय**पि एसेव नयो। आरोग्यस्स सम्पदा **आरोग्यसम्पदा।** पारिपूरी दीघरत्तं अरोगता। **सीलदिट्ठिसम्पदासु**पि एसेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नयो। इधापि ञातिसम्पदादयो नो कुसला, न तिलक्खणाहता। सीलदिट्ठिसम्पदा कुसला, तिलक्खणाहता। तेनेव "नावुसो, सत्ता ञातिसम्पदाहेतु वा"तिआदिमाह।

सीलविपत्तिसीलसम्पत्तिकथा महापरिनिब्बाने वित्थारिताव।

चोदकेनाति वत्थुसंसन्दस्सना, आपत्तिसंसन्दस्सना, संवासप्पटिक्खेपो, सामीचिप्पटिक्खेपोति चतूहि चोदनावत्थूहि चोदयमानेन। **कालेन वक्खामि नो अकालेनाति** एत्थ चुदितकस्स कालो कथितो, न चोदकस्स। परं चोदेन्तेन हि परिसमज्झे वा उपोसथपवारणग्गे वा आसनसालभोजनसालादीसु वा न चोदेतब्बं। दिवाट्ठाने निसिन्नकाले "करोतायस्मा ओकासं, अहं आयस्मन्तं वत्तुकामो"ति एवं ओकासं कारेत्वा चोदेतब्बं। पुग्गलं पन उपपरिक्खित्वा यो लोलपुग्गलो अभूतं वत्वा भिक्खूनं अयसं आरोपेति, सो ओकासकम्मं विनापि चोदेतब्बो। **भूतेनाति** तच्छेन सभावेन। **सण्हेनाति** मट्ठेन मुदुकेन। **अत्थसञ्हितेनाति** अत्थकामताय हितकामताय उपेतेन।

पधानियङ्गपञ्चकवण्णना

३१७. पधानियङ्गानीति पधानं वुच्चति पदहनं, पधानमस्स अत्थीति पधानियो, पधानियस्स भिक्खुनो अङ्गानि **पधानियङ्गानि। सद्धोति** सद्धाय समन्नागतो। सद्धा पनेसा आगमनसद्धा, अधिगमनसद्धा, ओकप्पनसद्धा, पसादसद्धाति चतुब्बिधा। तत्थ सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं सद्धा अभिनीहारतो आगतत्ता **आगमनसद्धा** नाम। अरियसावकानं पटिवेधेन अधिगतत्ता **अधिगमनसद्धा** नाम। बुद्धो धम्मो सङ्घोति वुत्ते अचलभावेन ओकप्पनं **ओकप्पनसद्धा** नाम। पसादुप्पत्ति **पसादसद्धा** नाम। इध ओकप्पनसद्धा अधिप्पेता। **बोधिन्ति** चतुत्थमग्गञाणं। तं सुप्पटिविद्धं तथागतेनाति सद्दहति। देसनासीसमेव चेतं, इमिना पन अङ्गेन तीसुपि रतनेसु सद्धा अधिप्पेता। यस्स हि बुद्धादीसु पसादो बलवा, तस्स पधानवीरियं इज्झति। **अप्पाबाधोति** अरोगो। **अप्पातङ्कोति** निद्दुक्खो। **समवेपाकिनियाति** समविपाचनीया। **गहणियाति** कम्मजतेजोधातुया। **नातिसीताय नाच्चुण्हायाति** अतिसीतगहणिको सीतभीरू होति, अच्चुण्हगहणिको उण्हभीरू होति, तेसं पधानं न इज्झति। मज्झिमगहणिकस्स इज्झति। तेनाह– "मज्झिमाय पधानक्खमाया"ति। **यथाभूतं अत्तानं आविकत्ताति** यथाभूतं अत्तनो अगुणं पकासेता। **उदयत्थगामिनियाति** उदयञ्च अत्थङ्गमञ्च गन्तुं परिच्छिन्दितुं समत्थाय, एतेन पञ्चासलक्खणपरिग्गाहकं उदयब्बयञाणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुत्तं। **अरियाया**ति परिसुद्धाय। **निब्बेधिकाया**ति अनिब्बिद्धपुब्बे लोभक्खन्धादयो निब्बिज्झितुं समत्थाय। **सम्मा दुक्खक्खयगामिनिया**ति तदङ्गवसेन किलेसानं पहीनत्ता यं यं दुक्खं खीयति, तस्स तस्स दुक्खस्स खयगामिनिया। इति सब्बेहि इमेहि पदेहि विपस्सनापञ्ञाव कथिता। दुप्पञ्ञस्स हि पधानं न इज्झति।

सुद्धावासादिपञ्चकवण्णना

३१८. सुद्धावासाति सुद्धा इध आवसिंसु आवसन्ति आवसिस्सन्ति वाति सुद्धावासा। सुद्धाति किलेसमलरहिता अनागामिखीणासवा। **अविहा**तिआदीसु यं वत्तब्बं, तं महापदाने वुत्तमेव।

अनागामीसु आयुनो मज्झं अनतिक्कमित्वा अन्तराव किलेसपरिनिब्बानं अरहत्तं पत्तो **अन्तरापरिनिब्बायी** नाम। मज्झं उपहच्च अतिक्कमित्वा पत्तो **उपहच्चपरिनिब्बायी** नाम। असङ्खारेन अप्पयोगेन अकिलमन्तो सुखेन पत्तो **असङ्खारपरिनिब्बायी** नाम। ससङ्खारेन सप्पयोगेन किलमन्तो दुक्खेन पत्तो **ससङ्खारपरिनिब्बायी** नाम। इमे चत्तारो पञ्चसुपि सुद्धावासेसु लब्भन्ति। **उद्धंसोतोअकनिट्ठगामी**ति एत्थ पन चतुक्कं वेदितब्बं। यो हि अविहातो पट्ठाय चत्तारो देवलोके सोधेत्वा अकनिट्ठं गन्त्वा परिनिब्बायति, अयं उद्धंसोतो अकनिट्ठगामी नाम। यो अविहातो दुतियं वा ततियं वा चतुत्थं वा देवलोकं गन्त्वा परिनिब्बायति, अयं उद्धंसोतो न अकनिट्ठगामी नाम। यो कामभवतो अकनिट्ठेसु निब्बत्तित्वा परिनिब्बायति, अयं न उद्धंसोतो अकनिट्ठगामी नाम। यो हेट्ठा चतूसु देवलोकेसु तत्थ तत्थेव निब्बत्तित्वा परिनिब्बायति, अयं न उद्धंसोतो न अकनिट्ठगामी नामाति।

चेतोखिलपञ्चकवण्णना

३१९. चेतोखिलाति चित्तस्स थद्धभावा। **सत्थरि कङ्खती**ति सत्थु सरीरे वा गुणे वा कङ्खति। सरीरे कङ्खमानो “द्वत्तिंसमहापुरिसवरलक्खणपटिमण्डितं नाम सरीरं अत्थि नु खो नत्थी”ति कङ्खति। गुणे कङ्खमानो “अतीतानागतपच्चुप्पन्नजाननसमत्थं सब्बञ्ञुतञ्ञाणं अत्थि नु खो नत्थी”ति कङ्खति। **आतप्पाया**ति वीरियकरणत्थाय। **अनुयोगाया**ति पुनप्पुनं योगाय। सातच्चायाति **सततकिरियाय। पधानाया**ति पदहनत्थाय। **अयं पठमो चेतोखिलो**ति अयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्थरि विचिकिच्छासङ्खातो पठमो चित्तस्स थद्धभावो। **धम्मे**ति परियत्तिधम्मे च पटिवेधधम्मे च। परियत्तिधम्मे कङ्खमानो "तेपिटकं बुद्धवचनं चतुरासीतिधम्मक्खन्धसहस्सानीति वदन्ति, अत्थि नु खो एतं नत्थी"ति कङ्खति। पटिवेधधम्मे कङ्खमानो "विपस्सनानिस्सन्दो मग्गो नाम, मग्गनिस्सन्दो फलं नाम, सब्बसङ्खारपटिनिस्सग्गो निब्बानं नामाति वदन्ति, तं अत्थि नु खो नत्थी"ति कङ्खति। **सङ्घे कङ्खती**ति "उजुप्पटिपन्नोतिआदीनं पदानं वसेन एवरूपं पटिपदं पटिपन्नो चत्तारो मग्गट्ठा चत्तारो फलट्ठाति अट्ठन्नं पुग्गलानं समूहभूतो सङ्घो नाम अत्थि नु खो नत्थी"ति कङ्खति। **सिक्खाय कङ्खमानो** "अधिसीलसिक्खा नाम, अधिचित्तअधिपञ्ञासिक्खा नामाति वदन्ति, सा अत्थि नु खो नत्थी"ति कङ्खति। **अयं पञ्चमो**ति अयं सब्रह्मचारीसु कोपसङ्खातो पञ्चमो चित्तस्स थद्धभावो कचवरभावो खाणुकभावो।

चेतसोविनिबन्धादिपञ्चकवण्णना

३२०. **चेतसोविनिबन्धा**ति चित्तं बन्धित्वा मुट्ठियं कत्वा विय गण्हन्तीति चेतसोविनिबन्धा। **कामे**ति वत्थुकामेपि किलेसकामेपि। **काये**ति अत्तनो काये। **रूपे**ति बहिद्धारूपे। **यावदत्थ**न्ति यत्तकं इच्छति, तत्तकं। **उदरावदेहक**न्ति उदरपूरं। तञ्हि उदरं अवदेहनतो "उदरावदेहक"न्ति वुच्चति। **सेय्यसुख**न्ति मञ्चपीठसुखं। **पस्ससुख**न्ति यथा सम्परिवत्तकं सयन्तस्स दक्खिणपस्सवामपस्सानं सुखं होति, एवं उप्पन्नं सुखं। **मिद्धसुख**न्ति निद्दासुखं। **अनुयुत्तो**ति युत्तप्पयुत्तो विहरति। **पणिधाया**ति पत्थयित्वा। **ब्रह्मचरियेना**ति मेथुनविरतिब्रह्मचरियेन। **देवो वा भविस्सामी**ति महेसक्खदेवो वा भविस्सामि। **देवञ्ञतरो वा**ति अप्पेसक्खदेवेसु वा अञ्ञतरो।

इन्द्रियेसु पठमपञ्चके लोकियानेव कथितानि। दुतियपञ्चके पठमदुतियचतुत्थानि लोकियानि, ततियपञ्चमानि लोकियलोकुत्तरानि। ततियपञ्चके समथविपस्सनामग्गवसेन लोकियलोकुत्तरानि।

निस्सरणियपञ्चकवण्णना

३२१. **निस्सरणिया**ति निस्सटा विसञ्ञुत्ता। **धातुयो**ति अत्तसुञ्ञसभावा। **कामे मनसिकरोतो**ति कामे मनसिकरोन्तस्स, असुभज्झानतो वुट्ठाय अगदं गहेत्वा विसं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीमंसन्तो विय वीमंसनत्थं कामाभिमुखं चित्तं पेसेन्तस्साति अत्थो। **न पक्खन्दतीति** न पविसति। **न पसीदतीति** पसादं नापज्जति। **न सन्तिट्ठतीति** न पतिट्ठति। **न विमुच्चतीति** नाधिमुच्चति। यथा पन कुक्कुटपत्तं वा न्हारुदद्दुलं वा अग्गिम्हि पक्खित्तं पतिलीयति पतिकुटति पतिवत्तति न सम्पसारियति; एवं पतिलीयति न पसारियति। **नेक्खम्मं खो पना**ति इध नेक्खम्मं नाम दससु असुभेसु पठमज्झानं, तदस्स मनसिकरोतो चित्तं पक्खन्दति। **तस्स तं चित्तन्ति** तस्स तं असुभज्झानचित्तं। **सुगतन्ति** गोचरे गतत्ता सुट्ठु गतं। **सुभावितन्ति** अहानभागियत्ता सुट्ठु भावितं। **सुवुट्ठितन्ति** कामतो सुट्ठु वुट्ठितं। **सुविमुत्तन्ति** कामेहि सुट्ठु विमुत्तं। कामपच्चया आसवा नाम कामहेतुका चत्तारो आसवा। **विघाता**ति दुक्खा। **परिळाहा**ति कामरागपरिळाहा। **न सो तं वेदनं वेदेतीति** सो तं कामवेदनं विघातपरिळाहवेदनञ्च न वेदयति। **इदमक्खातं कामानं निस्सरणन्ति** इदं असुभज्झानं कामेहि निस्सटत्ता कामानं निस्सरणन्ति अक्खातं। यो पन तं झानं पादकं कत्वा सङ्खारे सम्मसन्तो ततियं मग्गं पत्वा अनागामिफलेन निब्बानं दिस्वा पुन कामा नाम नत्थीति जानाति, तस्स चित्तं अच्चन्तनिस्सरणमेव। सेसपदेसुपि एसेव नयो।

अयं पन विसेसो, दुतियवारे मेत्ताझानानि ब्यापादस्स निस्सरणं नाम। ततियवारे करुणाझानानि विहिंसाय निस्सरणं नाम। चतुत्थवारे अरूपज्झानानि रूपानं निस्सरणं नाम। अच्चन्तनिस्सरणे चेत्थ अरहत्तफलं योजेतब्बं।

पञ्चमवारे **सक्कायं मनसिकरोतो**ति सुद्धसङ्खारे परिग्गण्हित्वा अरहत्तं पत्तस्स सुक्खविपस्सकस्स फलसमापत्तितो वुट्ठाय वीमंसनत्थं पञ्चुपादानक्खन्धाभिमुखं चित्तं पेसेन्तस्स। **इदमक्खातं सक्कायनिस्सरणन्ति** इदं अरहत्तमग्गेन च फलेन च निब्बानं दिस्वा ठितस्स भिक्खुनो पुन सक्कायो नत्थीति उप्पन्नं अरहत्तफलसमापत्तिचित्तं सक्कायस्स निस्सरणन्ति अक्खातं।

विमुत्तायतनपञ्चकवण्णना

३२२. **विमुत्तायतनानीति** विमुच्चनकारणानि। **अत्थपटिसंवेदिनोति** पाळिअत्थं जानन्तस्स। **धम्मपटिसंवेदिनोति** पाळिं जानन्तस्स। **पामोज्जन्ति** तरुणपीति। **पीतीति** तुट्ठाकारभूता बलवपीति। **कायोति** नामकायो पटिपस्सम्भति। **सुखं वेदयतीति** सुखं पटिलभति। **चित्तं समाधियतीति** अरहत्तफलसमाधिना समाधियति। अयञ्हि तं धम्मं सुणन्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगतागतट्ठाने झानविपस्सनामग्गफलानि जानाति, तस्स एवं जानतो पीति उप्पज्जति। सो तस्सा पीतिया अन्तरा ओसक्कितुं न देन्तो उपचारकम्मट्ठानिको हुत्वा विपस्सनं वड्ढेत्वा अरहत्तं पापुणाति। तं सन्धाय वुत्तं– "चित्तं समाधियती"ति। सेसेसुपि एसेव नयो। अयं पन विसेसो, **समाधिनिमित्त**न्ति अट्ठतिंसाय आरम्मणेसु अञ्ञतरो समाधियेव समाधिनिमित्तं। **सुग्गहितं होती**तिआदीसु आचरियसन्तिके कम्मट्ठानं उग्गण्हन्तेन सुट्ठु गहितं होति। **सुट्ठु मनसिकत**न्ति सुट्ठु उपधारितं। **सुप्पटिविद्धं पञ्ञाया**ति पञ्ञाय सुट्ठु पच्चक्खं कतं। **तस्मिं धम्मे**ति तस्मिं कम्मट्ठानपाळिधम्मे।

विमुत्तिपरिपाचनीयाति विमुत्ति वुच्चति अरहत्तं, तं परिपाचेन्तीति **विमुत्तिपरिपाचनीया। अनिच्चसञ्ञा**ति अनिच्चानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा। **अनिच्चे दुक्खसञ्ञा**ति दुक्खानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा। **दुक्खे अनत्तसञ्ञा**ति अनत्तानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा। **पहानसञ्ञा**ति पहानानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा। **विरागसञ्ञा**ति विरागानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा।

"इमे खो आवुसो"तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति छब्बीसतिया पञ्चकानं वसेन तिंससतपञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

पञ्चकवण्णना निट्ठिता।

छक्कवण्णना

३२३. इति पञ्चकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि छक्कवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ **अज्झत्तिकानी**ति अज्झत्तज्झत्तिकानि। **बाहिरानी**ति ततो अज्झत्तज्झत्ततो बहिभूतानि। वित्थारतो पन आयतनकथा **विसुद्धिमग्गे** कथिताव। **विञ्ञाणकाया**ति विञ्ञाणसमूहा। **चक्खुविञ्ञाण**न्ति चक्खुपसादनिस्सितं कुसलाकुसलविपाकविञ्ञाणं। एस नयो सब्बत्थ। **चक्खुसम्फस्सो**ति चक्खुनिस्सितो सम्फस्सो। **सोतसम्फस्सा**दीसुपि एसेव नयो। **मनोसम्फस्सो**ति इमे दस सम्फस्से ठपेत्वा सेसो सब्बो मनोसम्फस्सो नाम। वेदनाछक्कम्पि एतेनेव नयेन वेदितब्बं। **रूपसञ्ञा**ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूपं आरम्मणं कत्वा उप्पन्ना सञ्ञा। एतेनुपायेन सेसापि वेदितब्बा। चेतनाछक्केपि एसेव नयो। तथा तण्हाछक्के।

अगारवोति गारवविरहितो। **अप्पतिस्सो**ति अप्पतिस्सयो अनीचवुत्ति। एत्थ पन यो भिक्खु सत्थरि धरमाने तीसु कालेसु उपट्ठानं न याति। सत्थरि अनुपाहने चङ्कमन्ते सउपाहनो चङ्कमति, नीचे चङ्कमन्ते उच्चे चङ्कमति, हेट्ठा वसन्ते उपरि वसति, सत्थुदस्सनट्ठाने उभो अंसे पारुपति, छत्तं धारेति, उपाहनं धारेति, नहायति, उच्चारं वा पस्सावं वा करोति। परिनिब्बुते पन चेतियं वन्दितुं न गच्छति, चेतियस्स पञ्ञायनट्ठाने सत्थुदस्सनट्ठाने वुत्तं सब्बं करोति, अयं **सत्थरि अगारवो** नाम। यो पन धम्मस्सवने संघुट्ठे सक्कच्चं न गच्छति, सक्कच्चं धम्मं न सुणाति, समुल्लपन्तो निसीदति, सक्कच्चं न गण्हाति, न वाचेति, अयं **धम्मे अगारवो** नाम। यो पन थेरेन भिक्खुना अनज्झिट्ठो धम्मं देसेति, निसीदति, पञ्हं कथेति, वुड्ढे भिक्खू घट्टेन्तो गच्छति, तिट्ठति, निसीदति, दुस्सपल्लत्थिकं वा हत्थपल्लत्थिकं वा करोति, सङ्घमज्झे उभो अंसे पारुपति, छत्तुपाहनं धारेति, अयं **सङ्घे अगारवो** नाम। एकभिक्खुस्मिम्पि हि अगारवे कते सङ्घे अगारवो कतोव होति। तिस्सो सिक्खा पन अपूरयमानोव **सिक्खाय अगारवो** नाम। अप्पमादलक्खणं अननुब्रूहयमानो **अप्पमादे अगारवो** नाम। दुविधम्पि **पटिसन्थारं** अकरोन्तो **पटिसन्थारे अगारवो** नाम। छ गारवा वुत्तप्पटिपक्खवसेन वेदितब्बा।

सोमनस्सूपविचाराति सोमनस्ससम्पयुत्ता विचारा। **सोमनस्सट्ठानिय**न्ति सोमनस्सकारणभूतं। **उपविचरती**ति वितक्केन वितक्केत्वा विचारेन परिच्छिन्दति। एस नयो सब्बत्थ। **दोमनस्सूपविचारा**पि एवमेव वेदितब्बा। तथा **उपेक्खूपविचारा। सारणीयधम्मा** हेट्ठा वित्थारिता। **दिट्ठिसामञ्ञगतो**ति इमिना पन पदेन कोसम्बकसुत्ते पठममग्गो कथितो। इध चत्तारोपि मग्गा।

विवादमूलछक्कवण्णना

३२५. विवादमूलानीति विवादस्स मूलानि। **कोधनो**ति कुज्झनलक्खणेन कोधेन समन्नागतो। **उपनाही**ति वेरअप्पटिनिस्सग्गलक्खणेन उपनाहेन समन्नागतो। **अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सान**न्ति द्विन्नं भिक्खूनं विवादो कथं देवमनुस्सानं अहिताय दुक्खाय संवत्तति। कोसम्बकक्खन्धके विय द्वीसु भिक्खूसु विवादं आपन्नेसु तस्मिं विहारे तेसं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तेवासिका विवदन्ति। तेसं ओवादं गण्हन्तो भिक्खुनिसङ्घो विवदति। ततो तेसं उपट्ठाका विवदन्ति। अथ मनुस्सानं आरक्खदेवता द्वे कोट्ठासा होन्ति। तत्थ धम्मवादीनं आरक्खदेवता धम्मवादिनियो होन्ति अधम्मवादीनं अधम्मवादिनियो। ततो आरक्खदेवतानं मित्ता भुम्मा देवता भिज्जन्ति। एवं परम्परा याव ब्रह्मलोका ठपेत्वा अरियसावके सब्बे देवमनुस्सा द्वे कोट्ठासा होन्ति। धम्मवादीहि पन अधम्मवादिनोव बहुतरा होन्ति। ततो "यं बहुकेहि गहितं, तं तच्छ"न्ति धम्मं विस्सज्जेत्वा बहुतराव अधम्मं गण्हन्ति। ते अधम्मं पुरक्खत्वा वदन्ता अपायेसु निब्बत्तन्ति। एवं द्विन्नं भिक्खूनं विवादो देवमनुस्सानं अहिताय दुक्खाय होति।

अज्झत्तं वाति तुम्हाकं अब्भन्तरपरिसाय। **बहिद्धा वा**ति परेसं परिसाय।

मक्खीति परेसं गुणमक्खनलक्खणेन मक्खेन समन्नागतो। **पळासी**ति युगग्गाहलक्खणेन पळासेन समन्नागतो। **इस्सुकी**ति परसक्कारादीनि इस्सायनलक्खणाय इस्साय समन्नागतो। **मच्छरी**ति आवासमच्छरियादीहि समन्नागतो। **सठो**ति केराटिको। **मायावी**ति कतपापपटिच्छादको। **पापिच्छो**ति असन्तसम्भावनिच्छको दुस्सीलो। **मिच्छादिट्ठी**ति नत्थिकवादी अहेतुकवादी अकिरियवादी। **सन्दिट्ठिपरामासी**ति सयं दिट्ठिमेव परामसति। **आधानग्गाही**ति दळ्हग्गाही। **दुप्पटिनिस्सग्गी**ति न सक्का होति गहितं विस्सज्जापेतुं।

पथवीधातूति पतिट्ठाधातु। **आपोधातू**ति आबन्धनधातु। **तेजोधातू**ति परिपाचनधातु। **वायोधातू**ति वित्थम्भनधातु। **आकासधातू**ति असम्फुट्ठधातु। **विञ्ञाणधातू**ति विजाननधातु।

निस्सरणियछक्कवण्णना

३२६. **निस्सरणिया धातुयो**ति निस्सटधातुयोव। **परियादाय तिट्ठती**ति परियादियित्वा हापेत्वा तिट्ठति। **'मा हेवन्तिस्स वचनीयो'**ति यस्मा अभूतं ब्याकरणं ब्याकरोति, तस्मा मा एवं भणीति वत्तब्बो। **यदिदं मेत्ताचेतोविमुत्ती**ति या अयं मेत्ताचेतोविमुत्ति, इदं निस्सरणं ब्यापादस्स, ब्यापादतो निस्सटाति अत्थो। यो पन मेत्ताय तिकचतुक्कज्झानतो वुट्ठितो सङ्खारे सम्मसित्वा ततियमग्गं पत्वा "पुन ब्यापादो नत्थी"ति ततियफलेन निब्बानं पस्सति, तस्स चित्तं अच्चन्तं निस्सरणं ब्यापादस्स। एतेनुपायेन सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनिमित्ता चेतोविमुत्तीति अरहत्तफलसमापत्ति। सा हि रागनिमित्तादीनञ्चेव रूपनिमित्तादीनञ्च निच्चनिमित्तादीनञ्च अभावा "अनिमित्ता"ति वुत्ता। **निमित्तानुसारी**ति वुत्तप्पभेदं निमित्तं अनुसरतीति निमित्तानुसारी।

अस्मीति अस्मिमानो। **अयमहमस्मी**ति पञ्चसु खन्धेसु अयं नाम अहं अस्मीति एत्तावता अरहत्तं ब्याकतं होति। **विचिकिच्छाकथंकथासल्ल**न्ति विचिकिच्छाभूतं कथंकथासल्लं।'**मा हेवन्तिस्स वचनीयो**ति सचे ते पठममग्गवज्झा विचिकिच्छा उप्पज्जति, अरहत्तब्याकरणं मिच्छा होति, तस्मा मा अभूतं भणीति वारेतब्बो। **अस्मिमानसमुग्घातो**ति अरहत्तमग्गो। अरहत्तमग्गफलवसेन हि निब्बाने दिट्ठे पुन अस्मिमानो नत्थीति अरहत्तमग्गो अस्मिमानसमुग्घातोति वुत्तो।

अनुत्तरियादिछक्कवण्णना

३२७. **अनुत्तरियानी**ति अनुत्तरानि जेट्ठकानि। दस्सनेसु अनुत्तरियं **दस्सनानुत्तरियं**। सेसपदेसुपि एसेव नयो। तत्थ हत्थिरतनादीनं दस्सनं न दस्सनानुत्तरियं, निविट्ठसद्धस्स पन निविट्ठपेमवसेन दसबलस्स वा भिक्खुसङ्घस्स वा कसिणासुभनिमित्तादीनं वा अञ्ञतरस्स दस्सनं **दस्सनानुत्तरियं** नाम। खत्तियादीनं गुणकथासवनं न सवनानुत्तरियं, निविट्ठसद्धस्स पन निविट्ठपेमवसेन तिण्णं वा रतनानं गुणकथासवनं तेपिटकबुद्धवचनसवनं वा **सवनानुत्तरियं** नाम। मणिरतनादिलाभो न लाभानुत्तरियं, सत्तविधअरियधनलाभो पन **लाभानुत्तरियं** नाम। हत्थिसिप्पादिसिक्खनं न सिक्खानुत्तरियं, सिक्खत्तयपूरणं पन **सिक्खानुत्तरियं** नाम। खत्तियादीनं पारिचरिया न पारिचरियानुत्तरियं, तिण्णं पन रतनानं पारिचरिया **पारिचरियानुत्तरियं** नाम। खत्तियादीनं गुणानुस्सरणं नानुस्सतानुत्तरियं, तिण्णं पन रतनानं गुणानुस्सरणं **अनुस्सतानुत्तरियं** नाम।

अनुस्सतियोव **अनुस्सतिट्ठानानि** नाम। **बुद्धानुस्सती**ति बुद्धस्स गुणानुस्सरणं। एवं अनुस्सरतो हि पीति उप्पज्जति। सो तं पीतिं खयतो वयतो पट्ठपेत्वा अरहत्तं पापुणाति। उपचारकम्मट्ठानं नामेतं गिहीनम्पि लब्भति, एस नयो सब्बत्थ। वित्थारकथा पनेत्थ विसुद्धिमग्गे वुत्तनयेनेव वेदितब्बा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सततविहारछक्कवण्णना

३२८. **सततविहारा**ति खीणासवस्स निच्चविहारा। **चक्खुना रूपं दिस्वा**ति चक्खुद्वारारम्मणे आपाथगते तं रूपं चक्खुविञ्ञाणेन दिस्वा जवनक्खणे इट्ठे अरज्जन्तो **नेव सुमनो होति**, अनिट्ठे अदुस्सन्तो **न दुम्मनो**। असमपेक्खने मोहं अनुप्पादेन्तो **उपेक्खको विहरति** मज्झत्तो, सतिया युत्तत्ता **सतो,** सम्पजञ्ञेन युत्तत्ता **सम्पजानो।** सेसपदेसुपि एसेव नयो। इति छसुपि द्वारेसु उपेक्खको विहरतीति इमिना छळङ्गुपेक्खा कथिता। **सम्पजानो**ति वचनतो पन चत्तारि ञाणसम्पयुत्तचित्तानि लब्भन्ति। **सततविहारा**ति वचनतो अट्ठपि महाचित्तानि लब्भन्ति **अरज्जन्तो अदुस्सन्तो**ति वचनतो दसपि चित्तानि लब्भन्ति। सोमनस्सं कथं लब्भतीति चे आसेवनतो लब्भति।

अभिजातिछक्कवण्णना

३२९. **अभिजातियो**ति जातियो। **कण्हाभिजातिको समानो**ति कण्हे नीचकुले जातो हुत्वा। **कण्हं धम्मं अभिजायती**ति काळकं दसदुस्सील्यधम्मं पसवति करोति। सो तं अभिजायित्वा निरये निब्बत्तति। **सुक्कं धम्म**न्ति अहं पुब्बेपि पुञ्ञानं अकतत्ता नीचकुले निब्बत्तो। इदानि पुञ्ञं करोमीति पुञ्ञसङ्खातं पण्डरं धम्मं अभिजायति। सो तेन सग्गे निब्बत्तति। **अकण्हं असुक्कं निब्बान**न्ति निब्बानञ्हि सचे कण्हं भवेय्य, कण्हविपाकं ददेय्य। सचे सुक्कं, सुक्कविपाकं ददेय्य। द्विन्नम्पि अप्पदानतो पन "अकण्हं असुक्क"न्ति वुत्तं। निब्बानञ्च नाम इमस्मिं अत्थे अरहत्तं अधिप्पेतं। तञ्हि किलेसनिब्बानन्ते जातत्ता निब्बानं नाम। तं एस अभिजायति पसवति करोति। **सुक्काभिजातिको समानो**ति सुक्के उच्चकुले जातो हुत्वा। सेसं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

निब्बेधभागियछक्कवण्णना

निब्बेधभागियाति निब्बेधो वुच्चति निब्बानं, तं भजन्ति उपगच्छन्तीति **निब्बेधभागिया।** अनिच्चसञ्ञादयो पञ्चके वुत्ता। निरोधानुपस्सनाञाणे सञ्ञा **निरोधसञ्ञा** नाम।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"इमे खो, आवुसो"तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति द्वावीसतिया छक्कानं वसेन बात्तिंससतपञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

छक्कवण्णना निट्ठिता।

सत्तकवण्णना

३३०. इति छक्कवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि सत्तकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि।

तत्थ सम्पत्तिपटिलाभट्ठेन सद्धाव धनं **सद्धाधनं**। एस नयो सब्बत्थ। **पञ्ञाधनं** पनेत्थ सब्बसेट्ठं। पञ्ञाय हि ठत्वा तीणि सुचरितानि पञ्चसीलानि दससीलानि पूरेत्वा सग्गूपगा होन्ति, सावकपारमीञाणं, पच्चेकबोधिञाणं, सब्बञ्ञुतञ्ञाणञ्च पटिविज्झन्ति। इमासं सम्पत्तीनं पटिलाभकारणतो पञ्ञा "धन"न्ति वुत्ता। सत्तपि चेतानि लोकियलोकुत्तरमिस्सकानेव कथितानि। **बोज्झङ्ग**कथा कथिताव।

समाधिपरिक्खाराति समाधिपरिवारा। सम्मादिट्ठादीनि वुत्तत्थानेव। इमेपि सत्त परिक्खारा लोकियलोकुत्तराव कथिता।

असतं धम्मा असन्ता वा धम्मा लामका धम्माति **असद्धम्मा**। विपरियायेन **सद्धम्मा** वेदितब्बा। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव। **सद्धम्मेसु** पन सद्धादयो सब्बेपि विपस्सकस्सेव कथिता। तेसुपि पञ्ञा लोकियलोकुत्तरा। अयं विसेसो।

सप्पुरिसानं धम्माति **सप्पुरिसधम्मा**। तत्थ सुत्तगेय्यादिकं धम्मं जानातीति **धम्मञ्ञू**। तस्स तस्सेव भासितस्स अत्थं जानातीति **अत्थञ्ञू**। "एत्तकोम्हि सीलेन समाधिना पञ्ञाया"ति एवं अत्तानं जानातीति **अत्तञ्ञू**। पटिग्गहणपरिभोगेसु मत्तं जानातीति **मत्तञ्ञू**। अयं कालो उद्देसस्स, अयं कालो परिपुच्छाय, अयं कालो योगस्स अधिगमायाति एवं कालं जानातीति **कालञ्ञू**। एत्थ च पञ्च वस्सानि उद्देसस्स कालो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस परिपुच्छाय। इदं अतिसम्बाधं। दस वस्सानि पन उद्देसस्स कालो। वीसति परिपुच्छाय। ततो परं योगे कम्मं कातब्बं। अट्ठविधं परिसं जानातीति **परिसञ्ञू।** सेवितब्बासेवितब्बं पुग्गलं जानातीति **पुग्गलञ्ञू।**

३३१. **निद्दसवत्थूनी**ति निद्दसादिवत्थूनि। निद्दसो भिक्खु, निब्बीसो, नित्तिंसो, निच्चत्तालीसो, निप्पञ्ञासो भिक्खूति एवं वचनकारणानि। अयं किर पञ्हो तित्थियसमये उप्पन्नो। तित्थिया हि दसवस्सकाले मतं निगण्ठं निद्दसोति वदन्ति। सो किर पुन दसवस्सो न होति। न केवलञ्च दसवस्सोव। नववस्सोपि...पे०... एकवस्सोपि न होति। एतेनेव नयेन वीसतिवस्सादिकालेपि मतं निब्बीसो, नित्तिंसो, निच्चत्तालीसो, निप्पञ्ञासोति वदन्ति। आयस्मा आनन्दो गामे विचरन्तो तं कथं सुत्वा विहारं गन्त्वा भगवतो आरोचेसि। भगवा आह–

"न इदं, आनन्द, तित्थियानं अधिवचनं मम सासने खीणासवस्सेतं अधिवचनं। खीणासवो हि दसवस्सकाले परिनिब्बुतो पुन दसवस्सो न होति। न केवलञ्च दसवस्सोव, नववस्सोपि...पे०... एकवस्सोपि। न केवलञ्च एकवस्सोव, दसमासिकोपि...पे०... एकमासिकोपि। एकदिवसिकोपि। एकमुहुत्तोपि न होति एव। कस्मा? पुन पटिसन्धिया अभावा। निब्बीसादीसुपि एसेव नयो। इति भगवा मम सासने खीणासवस्सेतं अधिवचन"न्ति–

वत्वा येहि कारणेहि सो निद्दसो होति, तानि दस्सेतुं सत्त निद्दसवत्थूनि देसेति। थेरोपि तमेव देसनं उद्धरित्वा सत्त निद्दसवत्थूनि **इधावुसो, भिक्खु, सिक्खासमादाने**तिआदिमाह। तत्थ **इधा**ति इमस्मिं सासने। **सिक्खासमादाने तिब्बच्छन्दो होती**ति सिक्खत्तयपूरणे बहलच्छन्दो होति। **आयतिञ्च सिक्खासमादाने अविगतपेमो**ति अनागते पुनदिवसादीसुपि सिक्खापूरणे अविगतपेमेन समन्नागतो होति। **धम्मनिसन्तिया**ति धम्मनिसामनाय। विपस्सनायेतं अधिवचनं। **इच्छाविनये**ति तण्हाविनयने। **पटिसल्लाने**ति एकीभावे। **वीरियारम्भे**ति कायिकचेतसिकस्स वीरियस्स पूरणे। **सतिनेपक्के**ति सतियञ्चेव नेपक्कभावे च। **दिट्ठिपटिवेधे**ति मग्गदस्सने। सेसं सब्बत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

सञ्ञासु असुभानुपस्सनाञाणे सञ्ञा **असुभसञ्ञा।** आदीनवानुपस्सनाञाणे सञ्ञा **आदीनवसञ्ञा** नाम। सेसा हेट्ठा वुत्ता एव। बलसत्तकविञ्ञाणट्ठितिसत्तकपुग्गलसत्तकानि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुत्तनयानेव। अप्पहीनट्ठेन अनुसयन्तीति **अनुसया।** थामगतो कामरागो कामरागानुसयो। एस नयो सब्बत्थ। संयोजनसत्तकं उत्तानत्थमेव।

अधिकरणसमथसत्तकवण्णना

अधिकरणसमथेसु अधिकरणानि समेन्ति वूपसमेन्तीति **अधिकरणसमथा। उप्पन्नुप्पन्नानन्ति** उप्पन्नानं उप्पन्नानं। **अधिकरणानन्ति** विवादाधिकरणं अनुवादाधिकरणं आपत्ताधिकरणं किच्चाधिकरणन्ति इमेसं चतुन्नं। **समथाय वूपसमायाति** समथत्थञ्चेव वूपसमनत्थञ्च। **सम्मुखाविनयो दातब्बो...पे०... तिणवत्थारकोति** इमे सत्त समथा दातब्बा।

तत्रायं विनिच्छयनयो। अधिकरणेसु ताव धम्मोति वा अधम्मोति वा अट्ठारसहि वत्थूहि विवदन्तानं भिक्खूनं यो विवादो, इदं **विवादाधिकरणं** नाम। सीलविपत्तिया वा आचारदिट्ठिआजीवविपत्तिया वा अनुवदन्तानं अनुवादो उपवदना चेव चोदना च, इदं **अनुवादाधिकरणं** नाम। मातिकाय आगता पञ्च, विभङ्गे द्वेति सत्तपि आपत्तिक्खन्धा, इदं **आपत्ताधिकरणं** नाम। सङ्घस्स अपलोकनादीनं चतुन्नं कम्मानं करणं, इदं **किच्चाधिकरणं** नाम।

तत्थ विवादाधिकरणं द्वीहि समथेहि सम्मति सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च। सम्मुखाविनयेनेव सम्ममानं यस्मिं विहारे उप्पन्नं तस्मिंयेव वा अञ्ञत्थ वूपसमेतुं गच्छन्तानं अन्तरामग्गे वा यत्थ गन्त्वा सङ्घस्स निय्यातितं तत्थ सङ्घेन वा सङ्घे वूपसमेतुं असक्कोन्ते तत्थेव उब्बाहिकाय सम्मतपुग्गलेहि वा विनिच्छितं सम्मति। एवं सम्ममाने च पनेतस्मिं या सङ्घसम्मुखता धम्मसम्मुखता विनयसम्मुखता पुग्गलसम्मुखता, अयं **सम्मुखाविनयो** नाम।

तत्थ च कारकसङ्घस्स सङ्घसामग्गिवसेन सम्मुखीभावो **सङ्घसम्मुखता।** समेतब्बस्स वत्थुनो भूतता **धम्मसम्मुखता।** यथा तं समेतब्बं, तथेव सम्मनं **विनयसम्मुखता।** यो च विवदति, येन च विवदति, तेसं उभिन्नं अत्थपच्चत्थिकानं सम्मुखीभावो **पुग्गलसम्मुखता।** उब्बाहिकाय वूपसमे पनेत्थ सङ्घसम्मुखता परिहायति। एवं ताव सम्मुखाविनयेनेव सम्मति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सचे पनेवम्पि न सम्मति, अथ नं उब्बाहिकाय सम्मता भिक्खू "न मयं सक्कोम वूपसमेतु"न्ति सङ्घस्सेव निय्यातेन्ति, ततो सङ्घो पञ्चङ्गसमन्नागतं भिक्खुं सलाकग्गाहापकं सम्मन्नति। तेन गुळ्हकविवटकसकण्णजप्पकेसु तीसु सलाकग्गाहेसु अञ्ञतरवसेन सलाकं गाहापेत्वा सन्निपतितपरिसाय धम्मवादीनं येभुय्यताय यथा ते धम्मवादिनो वदन्ति, एवं वूपसन्तं अधिकरणं सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च वूपसन्तं होति।

तत्थ सम्मुखाविनयो वुत्तनयो एव। यं पन येभुय्यसिकाकम्मस्स करणं, अयं **येभुय्यसिका** नाम। एवं विवादाधिकरणं द्वीहि समथेहि सम्मति। **अनुवादाधिकरणं** चतूहि समथेहि सम्मति– सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च। **सम्मुखाविनयेनेव** सम्ममानं यो च अनुवदति, यञ्च अनुवदति, तेसं वचनं सुत्वा सचे काचि आपत्ति नत्थि, उभो खमापेत्वा, सचे अत्थि, अयं नामेत्थ आपत्तीति एवं विनिच्छितं वूपसम्मति। तत्थ सम्मुखाविनयलक्खणं वुत्तनयमेव। यदा पन खीणासवस्स भिक्खुनो अमूलिकाय सीलविपत्तिया अनुद्धंसितस्स सतिविनयं याचमानस्स सङ्घो ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन सतिविनयं देति, तदा सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च वूपसन्तं होति। दिन्ने पन सतिविनये पुन तस्मिं पुग्गले कस्सचि अनुवादो न रुहति।

यदा उम्मत्तको भिक्खु उम्मादवसेन अस्सामणके अज्झाचारे "सरतायस्मा एवरूपिं आपत्ति"न्ति भिक्खूहि चोदियमानो "उम्मत्तकेन मे, आवुसो, एतं कतं, नाहं तं सरामी"ति भणन्तोपि भिक्खूहि चोदियमानोव पुन अचोदनत्थाय अमूळ्हविनयं याचति, सङ्घो चस्स ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन अमूळ्हविनयं देति, तदा सम्मुखाविनयेन च अमूळ्हविनयेन च वूपसन्तं होति। दिन्ने पन अमूळ्हविनये पुन तस्मिं पुग्गले कस्सचि तप्पच्चया अनुवादो न रुहति।

यदा पन पाराजिकेन वा पाराजिकसामन्तेन वा चोदियमानस्स अञ्ञेनञ्ञं पटिचरतो पापुस्सन्नताय पापियस्स पुग्गलस्स "सचायं अच्छिन्नमूलो भविस्सति, सम्मा वत्तित्वा ओसारणं लभिस्सति। सचे छिन्नमूलो अयमेवस्स नासना भविस्सती"ति मञ्ञमानो सङ्घो ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन तस्सपापियसिकं करोति, तदा सम्मुखाविनयेन च तस्सपापियसिकाय च वूपसन्तं होतीति। एवं अनुवादाधिकरणं चतूहि समथेहि सम्मति। **आपत्ताधिकरणं** तीहि समथेहि सम्मति सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च। तस्स सम्मुखाविनयेनेव वूपसमो नत्थि। यदा पन एकस्स वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्खुनो सन्तिके सङ्घगणमज्झेसु वा भिक्खु लहुकं आपत्तिं देसेति, तदा **आपत्ताधिकरणं** सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च वूपसम्मति।

तत्थ सम्मुखाविनये ताव यो च देसेति, यस्स च देसेति, तेसं सम्मुखीभावो पुग्गलसम्मुखता। सेसं वुत्तनयमेव।

पुग्गलस्स गणस्स च देसनाकाले सङ्घसम्मुखता परिहायति। या पनेत्थ अहं, भन्ते, इत्थन्नामं आपत्तिं आपन्नोति च आम, पस्सामीति च पटिञ्ञा, ताय पटिञ्ञाय "आयतिं संवरेय्यासी"ति करणं, तं **पटिञ्ञातकरणं** नाम। सङ्घादिसेसे हि परिवासादियाचना पटिञ्ञा। परिवासादीनं दानं पटिञ्ञातकरणं नाम। द्वे पक्खजाता पन भण्डनकारका भिक्खू बहुं अस्सामणकं अज्झाचरित्वा पुन लज्जिधम्मे उप्पन्ने सचे मयं इमाहि आपत्तीहि अञ्ञमञ्ञं कारेस्साम, सियापि तं अधिकरणं कक्खळत्ताय संवत्तेय्याति अञ्ञमञ्ञं आपत्तिया कारापने दोसं दिस्वा यदा तिणवत्थारककम्मं करोन्ति, तदा आपत्ताधिकरणं सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च सम्मति।

तत्थ हि यत्तका हत्थपासूपगता "न मेतं खमती"ति एवं दिट्ठाविकम्मं अकत्वा निद्दम्पि ओक्कन्ता होन्ति, सब्बेसं ठपेत्वा थुल्लवज्जञ्च गिहिपटिसंयुत्तञ्च सब्बापत्तियो वुट्ठहन्ति, एवं आपत्ताधिकरणं तीहि समथेहि सम्मति। **किच्चाधिकरणं** एकेन समथेन सम्मति सम्मुखाविनयेनेव। इमानि चत्तारि अधिकरणानि यथानुरूपं इमेहि सत्तहि समथेहि सम्मन्ति। तेन वुत्तं– उप्पन्नुप्पन्नानं अधिकरणानं समथाय वूपसमाय सम्मुखाविनयो दातब्बो...पे०... तिणवत्थारकोति। अयमेत्थ विनिच्छयनयो। वित्थारो पन समथक्खन्धके आगतोयेव। विनिच्छयोपिस्स समन्तपासादिकायं वुत्तो।

"इमे खो, आवुसो"तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति चुद्दसन्नं सत्तकानं वसेन अट्ठनवुति पञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

सत्तकवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठकवण्णना

३३३. इति सत्तकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि अट्ठकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ **मिच्छत्ता**ति अयाथावा मिच्छासभावा। **सम्मत्ता**ति याथावा सम्मासभावा।

३३४. कुसीतवत्थूनीति कुसीतस्स अलसस्स वत्थूनि पतिट्ठा कोसज्जकारणानीति अत्थो। **कम्मं कत्तब्बं होती**ति चीवरविचारणादिकम्मं कातब्बं होति। **न वीरियं आरभती**ति दुविधम्पि वीरियं नारभति। **अप्पत्तस्सा**ति झानविपस्सनामग्गफलधम्मस्स अप्पत्तस्स पत्तिया। **अनधिगतस्सा**ति तस्सेव अनधिगतस्स अधिगमत्थाय। **असच्छिकतस्सा**ति तस्सेव अपच्चक्खकतस्स सच्छिकरणत्थाय। **इदं पठमन्ति** इदं हन्दाहं निपज्जामीति एवं ओसीदनं पठमं कुसीतवत्थु। इमिना नयेन सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो। "मासाचितं मञ्ञे"ति एत्थ पन **मासाचितं** नाम तिन्तमासो। यथा तिन्तमासो गरुको होति, एवं गरुकोति अधिप्पायो। **गिलाना वुट्ठितो होती**ति गिलानो हुत्वा पच्छा वुट्ठितो होति।

३३५. आरम्भवत्थूनीति वीरियकारणानि। तेसम्पि इमिनाव नयेन अत्थो वेदितब्बो।

३३६. दानवत्थूनीति दानकारणानि। **आसज्ज दानं देती**ति पत्वा दानं देति। आगतं दिस्वाव मुहुत्तंयेव निसीदापेत्वा सक्कारं कत्वा दानं देति, दस्सामि दस्सामीति न किलमेति। इति एत्थ आसादनं दानकारणं नाम होति। **भया दानं देती**तिआदीसुपि भयादीनि दानकारणानीति वेदितब्बानि। तत्थ **भयं** नाम अयं अदायको अकारकोति गरहाभयं वा अपायभयं वा। **अदासि मे**ति मय्हं पुब्बे एस इदं नाम अदासीति देति। **दस्सति मे**ति अनागते इदं नाम दस्सतीति देति। **साहु दानन्ति** दानं नाम साधु सुन्दरं, बुद्धादीहि पण्डितेहि पसत्थन्ति देति। **चित्तालङ्कारचित्तपरिक्खारत्थं दानं देती**ति समथविपस्सनाचित्तस्स अलङ्कारत्थञ्चेव परिवारत्थञ्च देति। दानञ्हि चित्तं मुदुकं करोति। येन लद्धं होति, सोपि लद्धं मेति मुदुचित्तो होति, येन दिन्नं, सोपि दिन्नं मयाति मुदुचित्तो होति, इति उभिन्नम्पि चित्तं मुदुकं करोति, तेनेव "अदन्तदमनं दान"न्ति वुच्चति। यथाह –

"अदन्तदमनं दानं, अदानं दन्तदूसकं।
दानेन पियवाचाय, उन्नमन्ति नमन्ति चा"ति।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमेसु पन अट्ठसु दानेसु चित्तालङ्कारदानमेव उत्तमं।

३३७. दानूपपत्तियोति दानपच्चया उपपत्तियो। **दहती**ति ठपेति। **अधिट्ठातीति** तस्सेव वेवचनं। **भावेती**ति वड्ढेति। **हीने विमुत्त**न्ति हीनेसु पञ्चकामगुणेसु विमुत्तं। **उत्तरि अभावित**न्ति ततो उत्तरि मग्गफलत्थाय अभावितं। **तत्रूपपत्तिया संवत्तती**ति यं पत्थेत्वा कुसलं कतं, तत्थ तत्थ निब्बत्तनत्थाय संवत्तति।

वीतरागस्साति मग्गेन वा समुच्छिन्नरागस्स समापत्तिया वा विक्खम्भितरागस्स। दानमत्तेनेव हि ब्रह्मलोके निब्बत्तितुं न सक्का। दानं पन समाधिविपस्सनाचित्तस्स अलङ्कारो परिवारो होति। ततो दानेन मुदुचित्तो ब्रह्मविहारे भावेत्वा ब्रह्मलोके निब्बत्तति। तेन वुत्तं "वीतरागस्स नो सरागस्सा"ति।

खत्तियानं परिसा **खत्तियपरिसा,** समूहोति अत्थो। एस नयो सब्बत्थ।

लोकस्स धम्मा **लोकधम्मा**। एतेहि मुत्तो नाम नत्थि, बुद्धानम्पि होन्तियेव। वुत्तम्पि चेतं– "अट्ठिमे, भिक्खवे, लोकधम्मा लोकं अनुपरिवत्तन्ति, लोको च अट्ठ लोकधम्मे अनुपरिवत्तती"ति (अ० नि० ३.८.५)। **लाभो अलाभो**ति लाभे आगते अलाभो आगतो एवाति वेदितब्बो। **यसा**दीसुपि एसेव नयो।

३३८. अभिभायतनविमोक्खकथा हेट्ठा कथिता एव।

"इमे खो, आवुसो"तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति एकादसन्नं अट्ठकानं वसेन अट्ठासीति पञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

अट्ठकवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवकवण्णना

३४०. इति अट्ठकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि नवकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ **आघातवत्थूनी**ति आघातकारणानि। **आघातं बन्धती**ति कोपं बन्धति करोति उप्पादेति।

तं कुतेत्थ लब्भाति तं अनत्थचरणं मा अहोसीति एतस्मिं पुग्गले कुतो लब्भा, केन कारणेन सक्का लद्धुं? परो नाम परस्स अत्तनो चित्तरुचिया अनत्थं करोतीति एवं चिन्तेत्वा आघातं पटिविनोदेति। अथ वा सचाहं पटिकोपं करेय्यं, तं कोपकरणं एत्थ पुग्गले कुतो लब्भा, केन कारणेन लद्धब्बन्ति अत्थो। कुतो लाभातिपि पाठो, सचाहं एत्थ कोपं करेय्यं, तस्मिं मे कोपकरणे कुतो लाभा, लाभा नाम के सियुन्ति अत्थो। इमस्मिञ्च अत्थे **तन्ति** निपातमत्तमेव होति।

३४१. सत्तावासाति सत्तानं आवासा, वसनट्ठानानीति अत्थो। तत्थ सुद्धावासापि सत्तावासोव, असब्बकालिकत्ता पन न गहिता। सुद्धावासा हि बुद्धानं खन्धावारसदिसा। असङ्खेय्यकप्पे बुद्धेसु अनिब्बत्तन्तेसु तं ठानं सुञ्ञं होतीति असब्बकालिकत्ता न गहिता। सेसमेत्थ यं वत्तब्बं, तं हेट्ठा वुत्तमेव।

३४२. अक्खणेसु **धम्मो च देसियती**ति चतुसच्चधम्मो देसियति। **ओपसमिको**ति किलेसूपसमकरो। **परिनिब्बानिको**ति किलेसपरिनिब्बानेन परिनिब्बानावहो। **सम्बोधगामी**ति चतुमग्गञाणपटिवेधगामी। **अञ्ञतरन्ति** असञ्ञभवं वा अरूपभवं वा।

३४३. अनुपुब्बविहाराति अनुपटिपाटिया समापज्जितब्बविहारा।

३४४. अनुपुब्बनिरोधाति अनुपटिपाटिया निरोधा।

"इमे, खो आवुसो"तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति छन्नं नवकानं वसेन चतुपण्णास पञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

नवकवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसकवण्णना

३४५. इति नवकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि दसकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ **नाथकरणा**ति "सनाथा, भिक्खवे, विहरथ मा अनाथा, दस इमे, भिक्खवे, धम्मा नाथकरणा"ति (अ० नि० ३.१०.१८) एवं अक्खाता अत्तनो पतिट्ठाकरा धम्मा।

कल्याणमित्तोतिआदीसु सीलादिगुणसम्पन्ना कल्याणा अस्स मित्ताति **कल्याणमित्तो**। ते चस्स ठाननिसज्जादीसु सह अयनतो सहायाति **कल्याणसहायो**। चित्तेन चेव कायेन च कल्याणमित्तेसु एव सम्पवङ्को ओनतोति **कल्याणसम्पवङ्को। सुवचो होती**ति सुखेन वत्तब्बो होति सुखेन अनुसासितब्बो। **खमो**ति गाळ्हेन फरुसेन कक्खळेन वुच्चमानो खमति, न कुप्पति। **पदक्खिणग्गाही अनुसासनि**न्ति यथा एकच्चो ओवदियमानो वामतो गण्हाति, पटिप्फरति वा असुणन्तो वा गच्छति, एवं अकत्वा "ओवदथ, भन्ते, अनुसासथ, तुम्हेसु अनोवदन्तेसु को अञ्ञो ओवदिस्सती"ति पदक्खिणं गण्हाति।

उच्चावचानीति उच्चानि च अवचानि च। **किं करणीयानी**ति किं करोमीति एवं वत्वा कत्तब्बकम्मानि। तत्थ **उच्चकम्मानि** नाम चीवरस्स करणं रजनं चेतिये सुधाकम्मं उपोसथागारचेतियघरबोधियघरेसु कत्तब्बन्ति एवमादि। **अवचकम्मं** नाम पादधोवनमक्खनादिखुद्दककम्मं। **तत्रुपायाया**ति तत्रुपगमनीया। **अलं कातु**न्ति कातुं समत्थो होति। **अलं संविधातु**न्ति विचारेतुं समत्थो।

धम्मे अस्स कामो सिनेहोति **धम्मकामो,** तेपिटकं बुद्धवचनं पियायतीति अत्थो। **पियसमुदाहारो**ति परस्मिं कथेन्ते सक्कच्चं सुणाति, सयञ्च परेसं देसेतुकामो होतीति अत्थो। "अभिधम्मे अभिविनये"ति एत्थ धम्मो अभिधम्मो, विनयो अभिविनयोति चतुक्कं वेदितब्बं। तत्थ **धम्मो**ति सुत्तन्तपिटकं। **अभिधम्मो**ति सत्त पकरणानि। **विनयो**ति उभतोविभङ्गा। **अभिविनयो**ति खन्धकपरिवारा। अथ वा सुत्तन्तपिटकम्पि अभिधम्मपिटकम्पि **धम्मो** एव। मग्गफलानि **अभिधम्मो**। सकलं विनयपिटकं **विनयो**। किलेसवूपसमकारणं **अभिविनयो**। इति सब्बस्मिम्पि एत्थ धम्मे अभिधम्मे विनये अभिविनये च। **उळारपामोज्जो**ति बहुलपामोज्जो होतीति अत्थो।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

कुसलेसु धम्मेसूति कारणत्थे भुम्मं, चतुभूमककुसलधम्मकारणा, तेसं अधिगमत्थाय अनिक्खित्तधुरो होतीति अत्थो।

३४६. कसिणदसके सकलट्ठेन **कसिणानि**। तदारम्मणानं धम्मानं खेत्तट्ठेन वा अधिट्ठानट्ठेन वा **आयतनानि**। **उद्धन्ति** उपरि गगनतलाभिमुखं। **अधोति** हेट्ठा भूमितलाभिमुखं। **तिरियन्ति** खेत्तमण्डलमिव समन्ता परिच्छिन्दित्वा। एकच्चो हि उद्धमेव कसिणं वड्ढेति, एकच्चो अधो, एकच्चो समन्ततो। तेन तेन वा कारणेन एवं पसारेति आलोकमिव रूपदस्सनकामो। तेन वुत्तं "पथवीकसिणमेको सञ्जानाति उद्धं अधो तिरियं"न्ति। **अद्वयन्ति** इदं पन एकस्स अञ्ञभावानुपगमनत्थं वुत्तं। यथा हि उदकं पविट्ठस्स सब्बदिसासु उदकमेव होति, न अञ्ञं, एवमेव पथवीकसिणं पथवीकसिणमेव होति, नत्थि तस्स अञ्ञो कसिणसम्भेदोति। एस नयो सब्बत्थ। **अप्पमाणन्ति** इदं तस्स तस्स फरणअप्पमाणवसेन वुत्तं। तञ्हि चेतसा फरन्तो सकलमेव फरति, न "अयमस्स आदि, इदं मज्झ"न्ति पमाणं गण्हातीति। **विञ्ञाणकसिणन्ति** चेत्थ कसिणुग्घाटिमाकासे पवत्तविञ्ञाणं। तत्थ कसिणवसेन कसिणुग्घाटिमाकासे कसिणुग्घाटिमाकासवसेन तत्थ पवत्तविञ्ञाणे उद्धं अधो तिरियता वेदितब्बा। अयमेत्थ सङ्खेपो। कम्मट्ठानभावनानयेन पनेतानि पथवीकसिणादीनि वित्थारतो विसुद्धिमग्गे वुत्तानेव।

अकुसलकम्मपथदसकवण्णना

३४७. कम्मपथेसु कम्मानेव सुगतिदुग्गतीनं पथभूतत्ता **कम्मपथा** नाम। तेसु पाणातिपातो अदिन्नादानं मुसावादादयो च चत्तारो ब्रह्मजाले वित्थारिता एव। **कामेसुमिच्छाचारोति** एत्थ पन **कामेसूति** मेथुनसमाचारेसु मेथुनवत्थूसु वा। **मिच्छाचारोति** एकन्तनिन्दितो लामकाचारो। लक्खणतो पन असद्धम्माधिप्पायेन कायद्वारप्पवत्ता अगमनीयट्ठानवीतिक्कमचेतना **कामेसुमिच्छाचारो**।

तत्थ **अगमनीयट्ठानं** नाम पुरिसानं ताव मातुरक्खिता, पितुरक्खिता, मातापितुरक्खिता, भातुरक्खिता, भगिनिरक्खिता, ञातिरक्खिता, गोत्तरक्खिता, धम्मरक्खिता, सारक्खा, सपरिदण्डाति मातुरक्खितादयो दस। धनक्कीता, छन्दवासिनी, भोगवासिनी, पटवासिनी, ओदपत्तकिनी, ओभतचुम्बटा, दासी च भरिया च, कम्मकारी च भरिया च, धजाहटा, मुहुत्तिकाति एता धनक्कीतादयो दसाति वीसति। इत्थीसु पन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिन्नं सारक्खसपरिदण्डानं दसन्नञ्च धनक्कीतादीनन्ति द्वादसन्नं इत्थीनं अञ्ञे पुरिसा। इदं अगमनीयट्ठानं नाम। सो पनेस मिच्छाचारो सीलादिगुणरहिते अगमनीयट्ठाने अप्पसावज्जो। सीलादिगुणसम्पन्ने महासावज्जो। तस्स चत्तारो सम्भारा अगमनीयवत्थु, तस्मिं सेवनचित्तं, सेवनप्पयोगो, मग्गेनमग्गप्पटिपत्तिअधिवासनन्ति। एको पयोगो साहत्थिको एव।

अभिज्झायतीति **अभिज्झा,** परभण्डाभिमुखी हुत्वा तन्निन्नताय पवत्ततीति अत्थो। सा "अहो वत इदं ममस्सा"ति एवं परभण्डाभिज्झायनलक्खणा अदिन्नादानं विय अप्पसावज्जा महासावज्जा च। तस्सा द्वे सम्भारा परभण्डं, अत्तनो परिणामनञ्च। परभण्डवत्थुके हि लोभे उप्पन्नेपि न ताव कम्मपथभेदो होति, याव "अहो वतीदं ममस्सा"ति अत्तनो न परिणामेति।

हितसुखं ब्यापादयतीति **ब्यापादो**। सो परं विनासाय मनोपदोसलक्खणो फरुसावाचा विय अप्पसावज्जो महासावज्जो च। तस्स द्वे सम्भारा परसत्तो च, तस्स विनासचिन्ता च। परसत्तवत्थुके हि कोधे उप्पन्नेपि न ताव कम्मपथभेदो होति, याव "अहो वतायं उच्छिज्झेय्य विनस्सेय्या"ति तस्स विनासं न चिन्तेति।

यथाभुच्चगहणाभावेन मिच्छा पस्सतीति **मिच्छादिट्ठि**। सा "नत्थि दिन्न"न्तिआदिना नयेन विपरीतदस्सनलक्खणा। सम्फप्पलापो विय अप्पसावज्जा महासावज्जा च। अपिच अनियता अप्पसावज्जा, नियता महासावज्जा। तस्सा द्वे सम्भारा वत्थुनो च गहिताकारविपरीतता, यथा च तं गण्हाति, तथाभावेन तस्सूपट्ठानन्ति।

इमेसं पन दसन्नं अकुसलकम्मपथानं धम्मतो कोट्ठासतो आरम्मणतो वेदनातो मूलतोति पञ्चहाकारेहि विनिच्छयो वेदितब्बो।

तत्थ **धम्मतो**ति एतेसु हि पटिपाटिया सत्त चेतनाधम्माव होन्ति। अभिज्झादयो तयो चेतनासम्पयुत्ता।

कोट्ठासतोति पटिपाटिया सत्त, मिच्छादिट्ठि चाति इमे अट्ठ कम्मपथा एव होन्ति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो मूलानि। अभिज्झाब्यापादा कम्मपथा चेव मूलानि च। अभिज्झा हि मूलं पत्वा लोभो अकुसलमूलं होति। ब्यापादो दोसो अकुसलमूलं होति।

आरम्मणतोति पाणातिपातो जीवितिन्द्रियारम्मणतो सङ्खारारम्मणो होति। अदिन्नादानं सत्तारम्मणं वा सङ्खारारम्मणं वा, मिच्छाचारो फोट्ठब्बवसेन सङ्खारारम्मणो। "सत्तारम्मणो"तिपि एके। मुसावादो सत्तारम्मणो वा सङ्खारारम्मणो वा, तथा पिसुणवाचा। फरुसवाचा सत्तारम्मणाव। सम्फप्पलापो दिट्ठसुतमुतविञ्ञातवसेन सत्तारम्मणो वा सङ्खारारम्मणो वा। तथा अभिज्झा। ब्यापादो सत्तारम्मणोव। मिच्छादिट्ठि तेभूमकधम्मवसेन सङ्खारारम्मणा।

वेदनातोति पाणातिपातो दुक्खवेदनो होति। किञ्चापि हि राजानो चोरं दिस्वा हसमानापि "गच्छथ नं घातेथा"ति वदन्ति, सन्निट्ठापकचेतना पन दुक्खसम्पयुत्ताव होति। अदिन्नादानं तिवेदनं। मिच्छाचारो सुखमज्झत्तवसेन द्विवेदनो। सन्निट्ठापकचित्ते पन मज्झत्तवेदनो न होति। मुसावादो तिवेदनो। तथा पिसुणवाचा। फरुसवाचा दुक्खवेदना। सम्फप्पलापो तिवेदनो। अभिज्झा सुखमज्झत्तवसेन द्विवेदना तथा मिच्छादिट्ठि। ब्यापादो दुक्खवेदनो।

मूलतोति पाणातिपातो दोसमोहवसेन द्विमूलको होति। अदिन्नादानं दोसमोहवसेन वा लोभमोहवसेन वा। मिच्छाचारो लोभमोहवसेन। मुसावादो दोसमोहवसेन वा लोभमोहवसेन वा तथा पिसुणवाचा सम्फप्पलापो च। फरुसवाचा दोसमोहवसेन। अभिज्झा मोहवसेन एकमूला। तथा ब्यापादो। मिच्छादिट्ठि लोभमोहवसेन द्विमूलाति।

कुसलकम्मपथदसकवण्णना

पाणातिपाता वेरमणिआदीनि समादानसम्पत्तसमुच्छेदविरतिवसेन वेदितब्बानि।

धम्मतो पन एतेसुपि पटिपाटिया सत्त चेतनापि वत्तन्ति विरतियोपि। अन्ते तयो चेतनासम्पयुत्ताव।

कोट्ठासतोति पटिपाटिया सत्त कम्मपथा एव, नो मूलानि। अन्ते तयो कम्मपथा चेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूलानि च। अनभिज्झा हि मूलं पत्वा अलोभो कुसलमूलं होति। अब्यापादो अदोसो कुसलमूलं। सम्मादिट्ठि अमोहो कुसलमूलं।

आरम्मणतोति पाणातिपातादीनं आरम्मणानेव एतेसं आरम्मणानि। वीतिक्कमितब्बतोयेव हि वेरमणी नाम होति। यथा पन निब्बानारम्मणो अरियमग्गो किलेसे पजहति, एवं जीवितिन्द्रियादिआरम्मणापेते कम्मपथा पाणातिपातादीनि दुस्सील्यानि पजहन्तीति वेदितब्बा।

वेदनातोति सब्बे सुखवेदना होन्ति मज्झत्तवेदना वा। कुसलं पत्वा हि दुक्खवेदना नाम नत्थि।

मूलतोति पटिपाटिया सत्त ञाणसम्पयुत्तचित्तेन विरमन्तस्स अलोभअदोसअमोहवसेन तिमूलानि होन्ति, ञाणविप्पयुत्तचित्तेन विरमन्तस्स द्विमूलानि। अनभिज्झा ञाणसम्पयुत्तचित्तेन विरमन्तस्स द्विमूला, ञाणविप्पयुत्तचित्तेन एकमूला। अलोभो पन अत्तनाव अत्तनो मूलं न होति। अब्यापादेपि एसेव नयो। सम्मादिट्ठि अलोभादोसवसेन द्विमूला एवाति।

अरियवासदसकवण्णना

३४८. अरियवासाति अरिया एव वसिंसु वसन्ति वसिस्सन्ति एतेसूति अरियवासा। **पञ्चङ्गविप्पहीनो**ति पञ्चहि अङ्गेहि विप्पयुत्तोव हुत्वा खीणासवो अवसि वसति वसिस्सतीति तस्मा अयं पञ्चङ्गविप्पहीनता, अरियस्स वासत्ता अरियवासोति वुत्तो। एस नयो सब्बत्थ।

एवं खो, आवुसो, भिक्खु छळङ्गसमन्नागतो होतीति छळङ्गुपेक्खाय समन्नागतो होति। छळङ्गुपेक्खा नाम केति? ञाणादयो। "ञाण"न्ति वुत्ते किरियतो चत्तारि ञाणसम्पयुत्तचित्तानि लब्भन्ति। "सततविहारो"ति वुत्ते अट्ठ महाचित्तानि। "रज्जनदुस्सनं नत्थी"ति वुत्ते दस चित्तानि लब्भन्ति। सोमनस्सं आसेवनवसेन लब्भति।

सतारक्खेन चेतसाति खीणासवस्स हि तीसु द्वारेसु सब्बकालं सति आरक्खकिच्चं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साधेति। तेनेवस्स "चरतो च तिट्ठतो च सुत्तस्स च जागरस्स च सततं समितं ञाणदस्सनं पच्चुपट्ठितं होती"ति वुच्चति।

पुथुसमणब्राह्मणानन्ति बहूनं समणब्राह्मणानं। एत्थ च **समणाति** पब्बज्जुपगता। **ब्राह्मणाति** भोवादिनो। **पुथुपच्चेकसच्चानीति** बहूनि पाटेक्कसच्चानि, इदमेव दस्सनं सच्चं, इदमेव दस्सनं सच्चन्ति एवं पाटियेक्कं गहितानि बहूनि सच्चानीति अत्थो। **नुन्नानीति** निहतानि। **पणुन्नानीति** सुट्ठु निहतानि। **चत्तानीति** विस्सट्ठानि। **वन्तानीति** वमितानि। **मुत्तानीति** छिन्नबन्धनानि कतानि। **पहीनानीति** पजहितानि। **पटिनिस्सट्ठानीति** यथा न पुन चित्तं आरुहन्ति, एवं पटिनिस्सज्जितानि। सब्बानेव तानि गहितग्गहणस्स विस्सट्ठभाववेवचनानि।

समवयसट्ठेसनोति एत्थ **अवयाति** अनूना। **सट्ठाति** विस्सट्ठा। सम्मा अवया सट्ठा एसना अस्साति **समवयसट्ठेसनो।** सम्मा विस्सट्ठसब्बएसनोति अत्थो। **रागा चित्तं विमुत्तन्ति**आदीहि मग्गस्स किच्चनिप्फत्ति कथिता।

रागो मे पहीनोतिआदीहि पच्चवेक्खणाय फलं कथितं।

असेक्खधम्मदसकवण्णना

असेक्खा सम्मादिट्ठीतिआदयो सब्बेपि फलसम्पयुत्तधम्मा एव। एत्थ च सम्मादिट्ठि, सम्माञाणन्ति द्वीसु ठानेसु पञ्ञाव कथिता। **सम्माविमुत्तीति** इमिना पदेन वुत्तावसेसा। फलसमापत्तिधम्मा सङ्गहिताति वेदितब्बा।

"इमे खो, आवुसो"तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति छन्नं दसकानं वसेन समसट्ठि पञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

दसकवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्हसमोधानवण्णना

३४९. इध पन ठत्वा पञ्हा समोधानेतब्बा। इमस्मिञ्हि सुत्ते एककवसेन द्वे पञ्हा कथिता। दुकवसेन सत्तति। तिकवसेन असीतिसतं। चतुक्कवसेन द्वेसतानि। पञ्चकवसेन तिंससतं। छक्कवसेन बात्तिंससतं। सत्तकवसेन अट्ठनवुति। अट्ठकवसेन अट्ठासीति। नवकवसेन चतुपण्णास। दसकवसेन समसट्ठीति एवं सहस्सं चुद्दस पञ्हा कथिता।

इमञ्हि सुत्तन्तं ठपेत्वा तेपिटके बुद्धवचने अञ्ञो सुत्तन्तो एवं बहुपञ्हपटिमण्डितो नत्थि। भगवा इमं सुत्तन्तं आदितो पट्ठाय सकलं सुत्वा चिन्तेसि– "धम्मसेनापति सारिपुत्तो बुद्धबलं दीपेत्वा अप्पटिवत्तियं सीहनादं नदति। सावकभासितोति वुत्ते ओकप्पना न होति, जिनभासितोति वुत्ते होति, तस्मा जिनभासितं कत्वा देवमनुस्सानं ओकप्पनं इमस्मिं सुत्तन्ते उप्पादेस्सामी"ति। ततो वुट्ठाय साधुकारं अदासि। तेन वुत्तं "अथ खो भगवा वुट्ठहित्वा आयस्मन्तं सारिपुत्तं आमन्तेसि, साधु, साधु, सारिपुत्त, साधु खो त्वं सारिपुत्त, भिक्खूनं सङ्गीतिपरियायं अभासी"ति।

तत्थ **सङ्गीतिपरियाय**न्ति सामग्गिया कारणं। इदं वुत्तं होति– "साधु, खो त्वं, सारिपुत्त, मम सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन संसन्दित्वा भिक्खूनं सामग्गिरसं अभासी"ति। **समनुञ्ञो सत्था अहोसी**ति अनुमोदनेन समनुञ्ञो अहोसि। एत्तकेन अयं सुत्तन्तो जिनभासितो नाम जातो। देसनापरियोसाने इमं सुत्तन्तं मनसिकरोन्ता ते भिक्खू अरहत्तं पापुणिंसूति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

सङ्गीतिसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. दसुत्तरसुत्तवण्णना

३५०. **एवं मे सुत**न्ति दसुत्तरसुत्तं। तत्रायं अपुब्बपदवण्णना – **आवुसो भिक्खवे**ति सावकानं आलपनमेतं। बुद्धा हि परिसं आमन्तयमाना 'भिक्खवे'ति वदन्ति। सावका सत्थारं उच्चट्ठाने ठपेस्सामाति सत्थु आलपनेन अनालपित्वा आवुसोति आलपन्ति। **ते भिक्खू**ति ते धम्मसेनापतिं परिवारेत्वा निसिन्ना भिक्खू। के पन ते भिक्खूति? अनिबद्धवासा दिसागमनीया भिक्खू। बुद्धकाले द्वे वारे भिक्खू सन्निपतन्ति – उपकट्ठवस्सूपनायिककाले च पवारणकाले च। उपकट्ठवस्सूपनायिकाय दसपि वीसतिपि तिंसम्पि चत्तालीसम्पि पञ्ञासम्पि भिक्खू वग्गा वग्गा कम्मट्ठानत्थाय आगच्छन्ति। भगवा तेहि सद्धिं सम्मोदित्वा कस्मा, भिक्खवे, उपकट्ठाय वस्सूपनायिकाय विचरथाति पुच्छति। अथ ते "भगवा कम्मट्ठानत्थं आगतम्ह, कम्मट्ठानं नो देथा"ति याचन्ति।

सत्था तेसं चरियवसेन रागचरितस्स असुभकम्मट्ठानं देति। दोसचरितस्स मेत्ताकम्मट्ठानं, मोहचरितस्स उद्देसो परिपुच्छा – 'कालेन धम्मस्सवनं, कालेन धम्मसाकच्छा, इदं तुम्हं सप्पाय'न्ति आचिक्खति। वितक्कचरितस्स आनापानस्सतिकम्मट्ठानं देति। सद्धाचरितस्स पसादनीयसुत्तन्ते बुद्धसुबोधिं धम्मसुधम्मतं सङ्घसुप्पटिपत्तिञ्च पकासेति। ञाणचरितस्स अनिच्चतादिपटिसंयुत्ते गम्भीरे सुत्तन्ते कथेति। ते कम्मट्ठानं गहेत्वा सचे सप्पायं होति, तत्थेव वसन्ति। नो चे होति, सप्पायं सेनासनं पुच्छित्वा गच्छन्ति। ते तत्थ वसन्ता तेमासिकं पटिपदं गहेत्वा घटेत्वा वायमन्ता सोतापन्नापि होन्ति सकदागामिनोपि अनागामिनोपि अरहन्तोपि।

ततो वुत्थवस्सा पवारेत्वा सत्थु सन्तिकं गन्त्वा "भगवा अहं तुम्हाकं सन्तिके कम्मट्ठानं गहेत्वा सोतापत्तिफलं पत्तो...पे०... अहं अग्गफलं अरहत्त"न्ति पटिलद्धगुणं आरोचेन्ति। तत्थ इमे भिक्खू उपकट्ठाय वस्सूपनायिकाय आगता। एवं आगन्त्वा गच्छन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पन भिक्खू भगवा अग्गसावकानं सन्तिकं पेसेति, यथाह "अपलोकेथ पन, भिक्खवे, सारिपुत्तमोग्गल्लाने"ति। भिक्खू च वदन्ति "किं नु खो मयं, भन्ते, अपलोकेम सारिपुत्तमोग्गल्लाने"ति (सं० नि० २.३.२)। अथ ने भगवा तेसं दस्सने उय्योजेसि। "सेवथ, भिक्खवे, सारिपुत्तमोग्गल्लाने; भजथ, भिक्खवे, सारिपुत्तमोग्गल्लाने। पण्डिता भिक्खू अनुग्गाहका सब्रह्मचारीनं। सेय्यथापि, भिक्खवे, जनेता एवं सारिपुत्तो। सेय्यथापि जातस्स आपादेता एवं मोग्गल्लानो। सारिपुत्तो, भिक्खवे, सोतापत्तिफले विनेति, मोग्गल्लानो उत्तमत्थे"ति (म० नि० ३.३७१)।

तदापि भगवा इमेहि भिक्खूहि सद्धिं पटिसन्थारं कत्वा तेसं भिक्खूनं आसयं उपपरिक्खन्तो "इमे भिक्खू सावकविनेय्या"ति अद्दस। **सावकविनेय्या** नाम ये बुद्धानम्पि धम्मदेसनाय बुज्झन्ति सावकानम्पि। **बुद्धविनेय्या** पन सावका बोधेतुं न सक्कोन्ति। सावकविनेय्यभावं पन एतेसं ञत्वा कतरस्स भिक्खुनो देसनाय बुज्झिस्सन्तीति ओलोकेन्तो सारिपुत्तस्साति दिस्वा थेरस्स सन्तिकं पेसेसि। थेरो ते भिक्खू पुच्छि "सत्थु सन्तिकं गतत्थ आवुसो"ति। "आम, गतम्ह सत्थारा पन अम्हे तुम्हाकं सन्तिकं पेसिता"ति। ततो थेरो "इमे भिक्खू मय्हं देसनाय बुज्झिस्सन्ति, कीदिसी नु खो तेसं देसना वट्टती"ति चिन्तेन्तो "इमे भिक्खू समग्गारामा, सामग्गिरसस्स दीपिका नेसं देसना वट्टती"ति सन्निट्ठानं कत्वा तथारूपं देसनं देसेतुकामो **दसुत्तरं पवक्खामी**तिआदिमाह। तत्थ दसधा मातिकं ठपेत्वा विभत्तोति दसुत्तरो, एककतो पट्ठाय याव दसका गतोतिपि दसुत्तरो, एकेकस्मिं पब्बे दस दस पञ्हा विसेसितातिपि दसुत्तरो, तं **दसुत्तरं**। **पवक्खामी**ति कथेस्सामि। **धम्मन्ति** सुत्तं। **निब्बानपत्तिया**ति निब्बानपटिलाभत्थाय। **दुक्खस्सन्तकिरियाया**ति सकलस्स वट्टदुक्खस्स परियन्तकरणत्थं। **सब्बगन्थप्पमोचनन्ति** अभिज्झाकायगन्थादीनं सब्बगन्थानं पमोचनं।

इति थेरो देसनं उच्चं करोन्तो भिक्खूनं तत्थ पेमं जनेन्तो एवमेतं उग्गहेतब्बं परियापुणितब्बं धारेतब्बं वाचेतब्बं मञ्ञिस्सन्तीति चतूहि पदेहि वण्णं कथेसि, "एकायनो अयं, भिक्खवे, मग्गो"तिआदिना नयेन तेसं तेसं सुत्तानं भगवा विय।

एकधम्मवण्णना

३५१. (क) तत्थ **बहुकारो**ति बहूपकारो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ख) **भावेतब्बो**ति वड्ढेतब्बो।

(ग) **परिञ्ञेय्यो**ति तीहि परिञ्ञाहि परिजानितब्बो।

(घ) **पहातब्बो**ति पहानानुपस्सनाय पजहितब्बो।

(ङ) **हानभागियो**ति अपायगामिपरिहानाय संवत्तनको।

(च) **विसेसभागियो**ति विसेसगामिविसेसाय संवत्तनको।

(छ) **दुप्पटिविज्झो**ति दुप्पच्चक्खकरो।

(ज) **उप्पादेतब्बो**ति निप्फादेतब्बो।

(झ) **अभिञ्ञेय्यो**ति ञातपरिञ्ञाय अभिजानितब्बो।

(ञ) **सच्छिकातब्बो**ति पच्चक्खं कातब्बो।

एवं सब्बत्थ मातिकासु अत्थो वेदितब्बो। इति आयस्मा सारिपुत्तो यथा नाम दक्खो वेळुकारो सम्मुखीभूतं वेळुं छेत्वा निग्गण्ठिं कत्वा दसधा खण्डे कत्वा एकमेकं खण्डं हीरं हीरं करोन्तो फालेति, एवमेव तेसं भिक्खूनं सप्पायं देसनं उपपरिक्खित्वा दसधा मातिकं ठपेत्वा एकेककोट्ठासे एकेकपदं विभजन्तो "कतमो एको धम्मो बहुकारो, अप्पमादो कुसलेसु धम्मेसूति"तिआदिना नयेन देसनं वित्थारेतुं आरद्धो।

तत्थ **अप्पमादो कुसलेसु धम्मेसू**ति सब्बत्थकं उपकारकं अप्पमादं कथेसि। अयञ्हि अप्पमादो नाम सीलपूरणे, इन्द्रियसंवरे, भोजने मत्तञ्ञुताय, जागरियानुयोगे, सत्तसु सद्धम्मेसु, विपस्सनागब्भं गण्हापने, अत्थपटिसम्भिदादीसु, सीलक्खन्धदिपञ्चधम्मक्खन्धेसु, ठानाट्ठानेसु, महाविहारसमापत्तियं, अरियसच्चेसु, सतिपट्ठानादीसु, बोधिपक्खियेसु, विपस्सनाञाणादीसु अट्ठसु विज्जासूति सब्बेसु अनवज्जट्ठेन कुसलेसु धम्मेसु बहूपकारो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेनेव नं भगवा "यावता, भिक्खवे, सत्ता अपदा वा...पे०... तथागतो तेसं अग्गमक्खायति। एवमेव खो, भिक्खवे, ये केचि कुसला धम्मा, सब्बेते अप्पमादमूलका अप्पमादसमोसरणा, अप्पमादो तेसं धम्मानं अग्गमक्खायती"तिआदिना (सं० नि० ३.५.१३९) नयेन हत्थिपदादीहि ओपम्मेहि ओपमेन्तो **संयुत्तनिकाये अप्पमादवग्गे** नानप्पकारं थोमेति। तं सब्बं एकपदेनेव सङ्गहेत्वा थेरो अप्पमादो कुसलेसु धम्मेसूति आह। **धम्मपदे** अप्पमादवग्गेनापिस्स बहूपकारता दीपेतब्बा। असोकवत्थुनापि दीपेतब्बा–

(क) असोकराजा हि निग्रोधसामणेरस्स "अप्पमादो अमतपद"न्ति गाथं सुत्वा एव "तिट्ठ, तात, मय्हं तया तेपिटकं बुद्धवचनं कथित"न्ति सामणेरे पसीदित्वा चतुरासीतिविहारसहस्सानि कारेसि। इति थामसम्पन्नेन भिक्खुना अप्पमादस्स बहूपकारता तीहि पिटकेहि दीपेत्वा कथेतब्बा। यंकिञ्चि सुत्तं वा गाथं वा अप्पमाददीपनत्थं आहरन्तो "अट्ठाने ठत्वा आहरसि, अतित्थेन पक्खन्दो"ति न वत्तब्बो। धम्मकथिकस्सेवेत्थ थामो च बलञ्च पमाणं।

(ख) **कायगतासतीति** आनापानं चतुइरियापथो सतिसम्पजञ्ञं द्वत्तिंसाकारो चतुधातुववत्थानं दस असुभा नव सिवथिका चुण्णिकमनसिकारो केसादीसु चत्तारि रूपज्झानानीति एत्थ उप्पन्नसतिया एतं अधिवचनं। **सातसहगताति** ठपेत्वा चतुत्थज्झानं अञ्ञत्थ सातसहगता होति सुखसम्पयुत्ता, तं सन्धायेतं वुत्तं।

(ग) **सासवो उपादानियोति** आसवानञ्चेव उपादानानञ्च पच्चयभूतो। इति तेभूमकधम्ममेव नियमेति।

(घ) **अस्मिमानोति** रूपादीसु अस्मीति मानो।

(ङ) **अयोनिसो मनसिकारोति** अनिच्चे निच्चन्तिआदिना नयेन पवत्तो उप्पथमनसिकारो।

(च) विपरियायेन **योनिसो मनसिकारो** वेदितब्बो।

(छ) **आनन्तरिको चेतोसमाधीति** अञ्ञत्थ मग्गानन्तरं फलं आनन्तरिको चेतोसमाधि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाम। इध पन विपस्सनानन्तरो मग्गो विपस्सनाय वा अनन्तरत्ता अत्तनो वा अनन्तरं फलदायकत्ता आनन्तरिको चेतोसमाधीति अधिप्पेतो।

(ज) **अकुप्पं ञाणन्ति** अञ्ञत्थ फलपञ्ञा अकुप्पञाणं नाम। इध पच्चवेक्खणपञ्ञा अधिप्पेता।

(झ) **आहारट्ठितिका**ति पच्चयट्ठितिका। **अयं एको धम्मो**ति येन पच्चयेन तिट्ठन्ति, अयं एको धम्मो ञातपरिञ्ञाय अभिञ्ञेय्यो।

(ञ) **अकुप्पा चेतोविमुत्ती**ति अरहत्तफलविमुत्ति।

इमस्मिं वारे अभिञ्ञाय ञातपरिञ्ञा कथिता। परिञ्ञाय तीरणपरिञ्ञा। पहातब्बसच्छिकातब्बेहि पहानपरिञ्ञा। **दुप्पटिविज्झो**ति एत्थ पन मग्गो कथितो। **सच्छिकातब्बो**ति फलं कथितं, मग्गो एकस्मिंयेव पदे लब्भति। फलं पन अनेकेसुपि लब्भतियेव।

भूताति सभावतो विज्जमाना। **तच्छा**ति याथावा। **तथा**ति यथा वुत्ता तथासभावा। **अवितथा**ति यथा वुत्ता न तथा न होन्ति। **अनञ्ञथा**ति वुत्तप्पकारतो न अञ्ञथा। **सम्मा तथागतेन अभिसम्बुद्धा**ति तथागतेन बोधिपल्लङ्के निसीदित्वा हेतुना कारणेन सयमेव अभिसम्बुद्धा ञाता विदिता सच्छिकता। इमिना थेरो ''इमे धम्मा तथागतेन अभिसम्बुद्धा, अहं पन तुम्हाकं रञ्ञो लेखवाचकसदिसो''ति जिनसुत्तं दस्सेन्तो ओकप्पनं जनेसि।

एकधम्मवण्णना निट्ठिता।

द्वेधम्मवण्णना

३५२. (क) **इमे द्वे धम्मा बहुकारा**ति इमे द्वे सतिसम्पजञ्ञा धम्मा सीलपूरणादीसु अप्पमादो विय सब्बत्थ उपकारका हितावहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ख) **समथो च विपस्सना चा**ति इमे द्वे सङ्गीतिसुत्ते लोकियलोकुत्तरा कथिता। इमस्मिं दसुत्तरसुत्ते पुब्बभागा कथिता।

(छ) **सत्तानं संकिलेसाय सत्तानं विसुद्धिया**ति अयोनिसो मनसिकारो हेतु चेव पच्चयो च सत्तानं संकिलेसाय, योनिसो मनसिकारो विसुद्धिया। तथा दोवचस्सता पापमित्तता संकिलेसाय; सोवचस्सता कल्याणमित्तता विसुद्धिया। तथा तीणि अकुसलमूलानि; तीणि कुसलमूलानि। चत्तारो योगा चत्तारो विसंयोगा। पञ्च चेतोखिला पञ्चिन्द्रियानि। छ अगारवा छ गारवा। सत्त असद्धम्मा सत्त सद्धम्मा। अट्ठ कुसीतवत्थूनि अट्ठ आरम्भवत्थूनि। नव आघातवत्थूनि नव आघातप्पटिविनया। दस अकुसलकम्मपथा दस कुसलकम्मपथाति एवं पभेदा इमे द्वे धम्मा दुप्पटिविज्झाति वेदितब्बा।

(झ) **सङ्खता धातू**ति पच्चयेहि कता पञ्चक्खन्धा। असङ्खता धातूति पच्चयेहि अकतं निब्बानं।

(ञ) **विज्जा च विमुत्ति चा**ति एत्थ **विज्जा**ति तिस्सो विज्जा। **विमुत्ती**ति अरहत्तफलं।

इमस्मिं वारे अभिञ्ञादीनि एककसदिसानेव, उप्पादेतब्बपदे पन मग्गो कथितो, सच्छिकातब्बपदे फलं।

द्वेधम्मवण्णना निट्ठिता।

तयोधम्मवण्णना

३५३. (छ) **कामानमेतं निस्सरणं यदिदं नेक्खम्म**न्ति एत्थ **नेक्खम्म**न्ति अनागामिमग्गो अधिप्पेतो। सो हि सब्बसो कामानं निस्सरणं। **रूपानं निस्सरणं यदिदं आरुप्प**न्ति एत्थ आरुप्पेपि अरहत्तमग्गो। पुन उप्पत्तिनिवारणतो सब्बसो रूपानं निस्सरणं नाम। **निरोधो**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स निस्सरणन्ति इध अरहत्तफलं निरोधोति अधिप्पेतं। अरहत्तफलेन हि निब्बाने दिट्ठे पुन आयतिं सब्बसङ्खारा न होन्तीति अरहत्तं सङ्खतनिरोधस्स पच्चयत्ता निरोधोति वुत्तं।

(ज) **अतीतंसे ञाण**न्ति अतीतंसारम्मणं ञाणं इतरेसुपि एसेव नयो।

इमस्मिम्पि वारे अभिञ्ञादयो एककसदिसाव। दुप्पटिविज्झपदे पन मग्गो कथितो, सच्छिकातब्बे फलं।

तयोधम्मवण्णना निट्ठिता।

चत्तारोधम्मवण्णना

३५४. (क) **चत्तारि चक्कानी**ति एत्थ **चक्कं** नाम दारुचक्कं, रतनचक्कं, धम्मचक्कं, इरियापथचक्कं, सम्पत्तिचक्कन्ति पञ्चविधं। तत्थ "यं पनिदं सम्म, रथकार, चक्कं छहि मासेहि निट्ठितं, छारत्तूनेही"ति (अ० नि० १.३.१५) इदं दारुचक्कं। "पितरा पवत्तितं चक्कं अनुप्पवत्तेती"ति (अ० नि० २.५.१३२) इदं रतनचक्कं। "पवत्तितं चक्क"न्ति (म० नि० २.३९९) इदं धम्मचक्कं। "चतुचक्कं नवद्वार"न्ति (सं० नि० १.१.२९) इदं इरियापथचक्कं। "चत्तारिमानि, भिक्खवे, चक्कानि, येहि समन्नागतानं देवमनुस्सानं चतुचक्कं पवत्तती"ति (अ० नि० १.४.३१) इदं सम्पत्तिचक्कं। इधापि एतदेव अधिप्पेतं।

पतिरूपदेसवासोति यत्थ चतस्सो परिसा सन्दिस्सन्ति, एवरूपे अनुच्छविके देसे वासो। **सप्पुरिसूपनिस्सयो**ति बुद्धादीनं सप्पुरिसानं अवस्सयनं सेवनं भजनं। **अत्तसम्मापणिधी**ति अत्तनो सम्मा ठपनं, सचे पन पुब्बे अस्सद्धादीहि समन्नागतो होति, तानि पहाय सद्धादीसु पतिट्ठापनं। **पुब्बे च कतपुञ्ञता**ति पुब्बे उपचितकुसलता। इदमेवेत्थ पमाणं। येन हि ञाणसम्पयुत्तचित्तेन कुसलं कतं होति, तदेव कुसलं तं पुरिसं पतिरूपदेसे उपनेति, सप्पुरिसे भजापेसि। सो एव च पुग्गलो अत्तानं सम्मा ठपेति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतूसु आहारेसु पठमो लोकियोव। सेसा पन तयो सङ्गीतिसुत्ते लोकियलोकुत्तरमिस्सका कथिता। इध पुब्बभागे लोकिया।

(च) **कामयोगविसंयोगा**दयो अनागामिमग्गादिवसेन वेदितब्बा।

(छ) **हानभागिया**दीसु पठमस्स झानस्स लाभी कामसहगता सञ्ञामनसिकारा समुदाचरन्ति **हानभागियो** समाधि। तदनुधम्मता सति सन्तिट्ठति **ठितिभागियो** समाधि। वितक्कसहगता सञ्ञामनसिकारा समुदाचरन्ति **विसेसभागियो** समाधि। निब्बिदासहगता सञ्ञामनसिकारा समुदाचरन्ति विरागूपसञ्हितो **निब्बेधभागियो** समाधीति इमिना नयेन सब्बसमापत्तियो वित्थारेत्वा अत्थो वेदितब्बो। विसुद्धिमग्गे पनस्स विनिच्छयकथा कथिताव।

इमस्मिम्पि वारे अभिञ्ञादीनि एककसदिसानेव। अभिञ्ञापदे पनेत्थ मग्गो कथितो। सच्छिकातब्बपदे फलं।

चत्तारोधम्मवण्णना निट्ठिता।

पञ्चधम्मवण्णना

३५५. (ख) पीतिफरणतादीसु पीतिं फरमाना उप्पज्जतीति द्वीसु झानेसु पञ्ञा **पीतिफरणता** नाम। सुखं फरमानं उप्पज्जतीति तीसु झानेसु पञ्ञा **सुखफरणता** नाम। परेसं चेतो फरमाना उप्पज्जतीति चेतोपरियपञ्ञा **चेतोफरणता** नाम। आलोकफरणे उप्पज्जतीति दिब्बचक्खुपञ्ञा **आलोकफरणता** नाम। पच्चवेक्खणञाणं **पच्चवेक्खणनिमित्तं** नाम। वुत्तम्पि चेतं "द्वीसु झानेसु पञ्ञा पीतिफरणता, तीसु झानेसु पञ्ञा सुखफरणता। परचित्ते पञ्ञा चेतोफरणता, दिब्बचक्खु आलोकफरणता। तम्हा तम्हा समाधिम्हा वुट्ठितस्स पच्चवेक्खणञाणं पच्चवेक्खणनिमित्त''न्ति (विभं० ८०४)।

तत्थ पीतिफरणता सुखफरणता द्वे पादा विय। चेतोफरणता आलोकफरणता द्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हत्था विय। अभिञ्ञापादकज्झानं मज्झिमकायो विय। पच्चवेक्खणनिमित्तं सीसं विय। इति आयस्मा सारिपुत्तत्थेरो पञ्चङ्गिकं सम्मासमाधिं अङ्गपच्चङ्गसम्पन्नं पुरिसं कत्वा दस्सेसि।

(ज) **अयं समाधि पच्चुप्पन्नसुखो चे वा**तिआदीसु अरहत्तफलसमाधि अधिप्पेतो। सो हि अप्पितप्पितक्खणे सुखत्ता **पच्चुप्पन्नसुखो**। पुरिमो पुरिमो पच्छिमस्स पच्छिमस्स समाधिसुखस्स पच्चयत्ता आयतिं **सुखविपाको**।

किलेसेहि आरकत्ता **अरियो**। कामामिसवट्टामिसलोकामिसानं अभावा **निरामिसो**। बुद्धादीहि महापुरिसेहि सेवितत्ता **अकापुरिससेवितो**। अङ्गसन्तताय आरम्मणसन्तताय सब्बकिलेसदरथसन्तताय च **सन्तो**। अतप्पनीयट्ठेन **पणीतो**। किलेसपटिप्पस्सद्धिया लद्धत्ता किलेसपटिप्पस्सद्धिभावं वा लद्धत्ता **पटिप्पस्सद्धलद्धो**। पटिप्पस्सद्धं पटिप्पस्सद्धीति हि इदं अत्थतो एकं। पटिप्पस्सद्धकिलेसेन वा अरहता लद्धत्ता पटिप्पस्सद्धलद्धो। एकोदिभावेन अधिगतत्ता एकोदिभावमेव वा अधिगतत्ता **एकोदिभावाधिगतो**। अप्पगुणसासवसमाधि विय ससङ्खारेन सप्पयोगेन चित्तेन पच्चनीकधम्मे निग्गय्ह किलेसे वारेत्वा अनधिगतत्ता **नससङ्खारनिग्गय्हवारितगतो**। तञ्च समाधिं समापज्जन्तो ततो वा वुट्ठहन्तो सतिवेपुल्लपत्तत्ता। **सतोव समापज्जति सतो वुट्ठहति**। यथापरिच्छिन्नकालवसेन वा सतो समापज्जति सतो वुट्ठहति। तस्मा यदेत्थ "अयं समाधि पच्चुप्पन्नसुखो चेव आयतिञ्च सुखविपाको"ति एवं पच्चवेक्खमानस्स पच्चत्तंयेव अपरप्पच्चयं ञाणं उप्पज्जति, तं एकमङ्गं। एस नयो सेसेसुपि। एवमिमेहि पञ्चहि पच्चवेक्खणञाणेहि अयं समाधि "पञ्चञाणिको सम्मासमाधी"ति वुत्तो।

इमस्मिं वारे विसेसभागियपदे मग्गो कथितो। सच्छिकातब्बपदे फलं। सेसं पुरिमसदिसमेव।

छधम्मवण्णना

३५६. छक्केसु सब्बं उत्तानत्थमेव। दुप्पटिविज्झपदे पनेत्थ मग्गो कथितो। सेसं पुरिमसदिसं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तधम्मवण्णना

३५७. (ञ) **सम्मप्पञ्ञाय सुदिट्ठा होन्ती**ति हेतुना नयेन विपस्सनाञाणेन सुदिट्ठा होन्ति। **कामा**ति वत्थुकामा च किलेसकामा च, द्वेपि सपरिळाहट्ठेन अङ्गारकासु विय सुदिट्ठा होन्ति। **विवेकनिन्न**न्ति निब्बाननिन्नं। **पोणं पब्भार**न्ति निन्नस्सेतं वेवचनं। **ब्यन्तीभूत**न्ति नियतिभूतं। नित्तण्हन्ति अत्थो। कुतो ? सब्बसो आसवट्ठानीयेहि धम्मेहि तेभूमकधम्मेहीति अत्थो। इध भावेतब्बपदे मग्गो कथितो। सेसं पुरिमसदिसमेव।

अट्ठधम्मवण्णना

३५८. (क) **आदिब्रह्मचरियिकाय पञ्ञाया**ति सिक्खत्तयसङ्गहस्स मग्गब्रह्मचरियस्स आदिभूताय पुब्बभागे तरुणसमथविपस्सनापञ्ञाय। अट्ठङ्गिकस्स वा मग्गस्स आदिभूताय सम्मादिट्ठिपञ्ञाय। **तिब्ब**न्ति बलवं। **हिरोत्तप्प**न्ति हिरी च ओत्तप्पञ्च। **पेम**न्ति गेहस्सितपेमं। **गारवो**ति गरुचित्तभावो। गरुभावनीयञ्हि उपनिस्साय विहरतो किलेसा नुप्पज्जन्ति ओवादानुसासनिं लभति। तस्मा तं निस्साय विहारो पञ्ञापटिलाभस्स पच्चयो होति।

(छ) अक्खणेसु यस्मा पेता असुरानं आवाहनं गच्छन्ति, विवाहनं गच्छन्ति, तस्मा पेत्तिविसयेनेव असुरकायो गहितोति वेदितब्बो।

(ज) **अप्पिच्छस्सा**ति एत्थ पच्चयअप्पिच्छो, अधिगमअप्पिच्छो, परियत्तिअप्पिच्छो, धुतङ्गअप्पिच्छोति चत्तारो अप्पिच्छा। तत्थ पच्चयअप्पिच्छो बहुं देन्ते अप्पं गण्हाति, अप्पं देन्ते अप्पतरं वा गण्हाति, न वा गण्हाति, न अनवसेसगाही होति। अधिगमअप्पिच्छो मज्झन्तिकत्थेरो विय अत्तनो अधिगमं अञ्ञेसं जानितुं न देति। परियत्तिअप्पिच्छो तेपिटकोपि समानो न बहुस्सुतभावं जानापेतुकामो होति साकेततिस्सत्थेरो विय। धुतङ्गअप्पिच्छो धुतङ्गपरिहरणभावं अञ्ञेसं जानितुं न देति द्वेभातिकत्थेरेसु जेट्ठकत्थेरो विय। वत्थु विसुद्धिमग्गे कथितं। **अयं धम्मो**ति एवं सन्तगुणनिगूहनेन च पच्चयपटिग्गहणे मत्तञ्ञुताय च अप्पिच्छस्स पुग्गलस्स अयं नवलोकुत्तरधम्मो सम्पज्जति, नो महिच्छस्स। एवं सब्बत्थ योजेतब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्तुट्ठस्साति चतूसु पच्चयेसु तीहि सन्तोसेहि सन्तुट्ठस्स। **पविवित्तस्सा**ति कायचित्तउपधिविवेकेहि विवित्तस्स। तत्थ **कायविवेको** नाम गणसङ्गणिकं विनोदेत्वा अट्ठआरम्भवत्थुवसेन एकीभावो। एकीभावमत्तेन पन कम्मं न निप्फज्जतीति कसिणपरिकम्मं कत्वा अट्ठ समापत्तियो निब्बत्तेति, अयं **चित्तविवेको** नाम। समापत्तिमत्तेनेव कम्मं न निप्फज्जतीति झानं पादकं कत्वा सङ्खारे सम्मसित्वा सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणाति, अयं **उपधिविवेको** नाम। तेनाह भगवा– "कायविवेको च विवेकट्ठकायानं नेक्खम्माभिरतानं। चित्तविवेको च परिसुद्धचित्तानं परमवोदानप्पत्तानं। उपधिविवेको च निरुपधीनं पुग्गलानं विसङ्खारगतान"न्ति (महानि० ४९)।

सङ्गणिकारामस्साति गणसङ्गणिकाय चेव किलेससङ्गणिकाय च रतस्स। **आरद्धवीरियस्सा**ति कायिकचेतसिकवीरियवसेन आरद्धवीरियस्स। **उपट्ठितसतिस्सा**ति चतुसतिपट्ठानवसेन उपट्ठितसतिस्स। **समाहितस्सा**ति एकग्गचित्तस्स। **पञ्ञवतो**ति कम्मस्सकतपञ्ञाय पञ्ञवतो। **निप्पपञ्चस्सा**ति विगतमानतण्हादिट्ठिपपञ्चस्स।

इध भावेतब्बपदे मग्गो कथितो। सेसं पुरिमसदिसमेव।

नवधम्मवण्णना

३५९. (ख) **सीलविसुद्धी**ति विसुद्धिं पापेतुं समत्थं चतुपारिसुद्धिसीलं। **पारिसुद्धिपधानियङ्ग**न्ति परिसुद्धभावस्स पधानङ्गं। **चित्तविसुद्धी**ति विपस्सनाय पदट्ठानभूता अट्ठ पगुणसमापत्तियो। **दिट्ठिविसुद्धी**ति सपच्चयनामरूपदस्सनं। **कङ्खावितरणविसुद्धी**ति पच्चयाकारञाणं। अद्धत्तयेपि हि पच्चयवसेनेव धम्मा पवत्तन्तीति पस्सतो कङ्खं वितरति। **मग्गामग्गञाणदस्सनविसुद्धी**ति ओभासादयो न मग्गो, वीथिप्पटिपन्नं उदयब्बयञाणं मग्गोति एवं मग्गामग्गे ञाणं। **पटिपदाञाणदस्सनविसुद्धी**ति रथविनीते वुट्ठानगामिनिविपस्सना कथिता, इध तरुणविपस्सना। **ञाणदस्सनविसुद्धी**ति रथविनीते मग्गो कथितो, इध वुट्ठानगामिनिविपस्सना। एता पन सत्तपि विसुद्धियो वित्थारेन विसुद्धिमग्गे कथिता। **पञ्ञा**ति अरहत्तफलपञ्ञा। **विमुत्तिपि** अरहत्तफलविमुत्तियेव।

(छ) **धातुनानत्तं पटिच्च उप्पज्जति फस्सनानत्त**न्ति चक्खादिधातुनानत्तं पटिच्च चक्खुसम्फस्सादिनानत्तं उप्पज्जतीति अत्थो। **फस्सनानत्तं पटिच्चा**ति चक्खुसम्फस्सादिनानत्तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पटिच्च। **वेदनानानत्तन्ति** चक्खुसम्फस्सजादिवेदनानानत्तं। **सञ्ञानानत्तं पटिच्चाति** कामसञ्ञादिनानत्तं पटिच्च। **सङ्कप्पनानत्तन्ति** कामसङ्कप्पादिनानत्तं। **सङ्कप्पनानत्तं पटिच्च उप्पज्जति छन्दनानत्तन्ति** सङ्कप्पनानत्तताय रूपे छन्दो सद्दे छन्दोति एवं छन्दनानत्तं उप्पज्जति। **परिळाहनानत्तन्ति** छन्दनानत्तताय रूपपरिळाहो सद्दपरिळाहोति एवं परिळाहनानत्तं उप्पज्जति। **परियेसनानानत्तन्ति** परिळाहनानत्तताय रूपपरियेसनादिनानत्तं उप्पज्जति। **लाभनानत्तन्ति** परियेसनानानत्तताय रूपपटिलाभादिनानत्तं उप्पज्जति।

(ज) सञ्ञासु **मरणसञ्ञाति मरणानुपस्सनाञाणे सञ्ञा। आहारेपटिकूलसञ्ञाति** आहारं परिग्गण्हन्तस्स उप्पन्नसञ्ञा। **सब्बलोकेअनभिरतिसञ्ञाति** सब्बस्मिं वट्टे उक्कण्ठन्तस्स उप्पन्नसञ्ञा। सेसा हेट्ठा कथिता एव। इध बहुकारपदे मग्गो कथितो। सेसं पुरिमसदिसमेव।

दसधम्मवण्णना

३६०. (झ) **निज्जरवत्थूनीति** निज्जरकारणानि। **मिच्छादिट्ठि निज्जिण्णा होतीति** अयं हेट्ठा विपस्सनायपि निज्जिण्णा एव पहीना। कस्मा पुन गहिताति असमुच्छिन्नत्ता। विपस्सनाय हि किञ्चापि जिण्णा, न पन समुच्छिन्ना, मग्गो पन उप्पज्जित्वा तं समुच्छिन्दति, न पुन वुट्ठातुं देति। तस्मा पुन गहिता। एवं सब्बपदेसु नयो नेतब्बो।

एत्थ च सम्मादिट्ठिपच्चया चतुसट्ठि धम्मा भावनापारिपूरिं गच्छन्ति। कतमे चतुसट्ठि ? सोतापत्तिमग्गक्खणे अधिमोक्खट्ठेन सद्धिन्द्रियं परिपूरेति, पग्गहट्ठेन वीरियिन्द्रियं परिपूरेति, अनुस्सरणट्ठेन सतिन्द्रियं परिपूरेति, अविक्खेपट्ठेन समाधिन्द्रियं परिपूरेति, दस्सनट्ठेन पञ्ञिन्द्रियं परिपूरेति, विजाननट्ठेन मनिन्द्रियं, अभिनन्दनट्ठेन सोमनस्सिन्द्रियं, पवत्तसन्ततिअधिपतेय्यट्ठेन जीवितिन्द्रियं परिपूरेति...पे०... अरहत्तफलक्खणे अधिमोक्खट्ठेन सद्धिन्द्रियं, पवत्तसन्ततिअधिपतेय्यट्ठेन जीवितिन्द्रियं परिपूरेतीति एवं चतूसु मग्गेसु चतूसु फलेसु अट्ठ अट्ठ हुत्वा चतुसट्ठि धम्मा पारिपूरिं गच्छन्ति। इध अभिञ्ञेय्यपदे मग्गो कथितो। सेसं पुरिमसदिसमेव।

इध ठत्वा पञ्हा समोधानेतब्बा। दसके सतं पञ्हा कथिता। एकके च नवके च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सतं, दुके च अट्ठके च सतं, तिके च सत्तके च सतं, चतुक्के च छक्के च सतं, पञ्चके पञ्ञासाति अट्ठछट्ठानि पञ्हसतानि कथितानि होन्ति।

"इदमवोच आयस्मा सारिपुत्तो, अत्तमना ते भिक्खू आयस्मतो सारिपुत्तस्स भासितं अभिनन्दु"न्ति साधु, साधूति अभिनन्दन्ता सिरसा सम्पटिच्छिंसु। ताय च पन अत्तमनताय इममेव सुत्तं आवज्जमाना पञ्चसतापि ते भिक्खू सह पटिसम्भिदाहि अग्गफले अरहत्ते पतिट्ठहिंसूति।

सुमङ्गलविलासिनिया दीघनिकायट्ठकथाय

दसुत्तरसुत्तवण्णना निट्ठिता।

निट्ठिता च पाथिकवग्गस्स वण्णनाति।

पाथिकवग्गट्ठकथा निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निगमनकथा

एत्तावता च –

आयाचितो **सुमङ्गल, परिवेण**निवासिना थिरगुणेन।
दाठानागसङ्घत्थेरेन, थेरवंसन्वयेन।।

दीघागमवरस्स दसबल, गुणगणपरिदीपनस्स अट्ठकथं।
यं आरभिं **सुमङ्गल, विलासिनिं** नाम नामेन।।

सा हि महाट्ठकथाय, सारमादाय निट्ठिता।
एसा एकासीतिपमाणाय, पाळिया भाणवारेहि।।

एकूनसट्ठिमत्तो, **विसुद्धिमग्गोपि** भाणवारेहि।
अत्थप्पकासनत्थाय, आगमानं कतो यस्मा।।

तस्मा तेन सहा'यं, अट्ठकथा भाणवारगणनाय।
सुपरिमितपरिच्छिन्नं, चत्तालीससतं होति।।

सब्बं चत्तालीसाधिकसत, परिमाणं भाणवारतो एवं।
समयं पकासयन्तिं, महाविहारे निवासिनं।।

मूलकट्ठकथासार, मादाय मया इमं करोन्तेन।
यं पुञ्ञमुपचितं तेन, होतु सब्बो सुखी लोकोति।।

परमविसुद्धसद्धाबुद्धिवीरियपटिमण्डितेन सीलाचारज्जवमद्दवादिगुणसमुदयसमुदितेन सकसमयसमयन्तरगहनज्झोगाहणसमत्थेन पञ्ञावेय्यत्तियसमन्नागतेन तिपिटकपरियत्तिप्पभेदे साट्ठकथे सत्थुसासने अप्पटिहतञाणप्पभावेन महावेय्याकरणेन करणसम्पत्तिजनित-सुखविनिग्गतमधुरोदारवचनलावण्णयुत्तेन युत्तमुत्तवादिना वादीवरेन महाकविना पभिन्नपटिसम्भिदापरिवारे छळभिञ्ञादिप्पभेदगुणपटिमण्डिते उत्तरिमनुस्सधम्मे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुप्पतिट्ठितबुद्धीनं थेरवंसप्पदीपानं थेरानं महाविहारवासीनं वंसालङ्कारभूतेन विपुलविसुद्धबुद्धिना **बुद्धघोसो**ति गरूहि गहितनामधेय्येन थेरेन कता अयं **सुमङ्गलविलासिनी** नाम दीघनिकायट्ठकथा –

ताव तिट्ठतु लोकस्मिं, लोकनित्थरणेसिनं।
दस्सेन्ती कुलपुत्तानं, नयं दिट्ठिविसुद्धिया।।

याव बुद्धोति नामम्पि, सुद्धचित्तस्स तादिनो।
लोकम्हि लोकजेट्ठस्स, पवत्तति महेसिनोति।।

सुमङ्गलविलासिनी नाम

दीघनिकायट्ठकथा निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दानुक्कमणिका

अ

अकट्ठपाकिमन्ति – १३३
अकट्ठपाकोति – ४७
अकणोति – ४७
अकण्हअसुक्कन्ति – १८७
अकथितभावं – १०९,११०
अकनिट्ठगामी – १९४
अकप्पियचीवरानि – १७४
अकम्पनञाणं – १५०
अकरणभावो – ३३
अकसिरलाभीति – ७२
अकसिरेन – ६७
अकारकोति – २०७
अ-कारो – २०
अकालेनाति – १९३
अकिच्छलाभीति – ७२
अकिच्छेन – ६७
अकित्तिसञ्जननी – ११६
अकित्तिसञ्जननीति – ११६
अकुप्पञाणं – २२१
अकुसलकम्मतो – ९२
अकुसलकम्मपथे – ३०,१२०
अकुसलचित्तन्ति – १६०
अकुसलचित्तुप्पादधम्मा – २४
अकुसलचित्तुप्पादा – २४, १५४
अकुसलचेतना – १६४
अकुसलमूलन्ति – १४९
अकुसलसङ्खाताति – २४, ४२
अकुसला धम्मा – १५३, १७०
अकुसलानि – १९२
अक्खधुत्ता – ११७
अक्खमा – १८६
अक्खम्मियोति – ९४
अक्खरं – ४८
अक्खसोण्डो – ११७
अक्खातो – ५९
अक्खिरोगादीनं – ११६
अक्खो – ११९
अखिलमनिमित्तमकण्टकन्ति – ९४
अगमनीयट्ठानवीतिक्कमचेतना – २११
अगमनीयट्ठानं – २११, २१२
अगारवो – १९८
अगारवोति – १९८
अग्गकोण्डा – ९७
अग्गञ्ञेनाति – ४८
अग्गपरिवारं – ७
अग्गपुग्गलो – ९५
अग्गपुरिसो – १५
अग्गप्पत्ता – २२
अग्गफलं – १७६, २१७
अग्गब्राह्मणानं – ४१
अग्गरसदायको – ९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गसावका – ५३, ५५
अग्गाति – १७४
अग्गिक्खन्धो – १२२
अग्गीति – १६०
अग्गुपट्ठायिका – ३९
अग्गोति – ८२
अङ्गीरसा – १३१
अङ्गुत्तरनिकायो – ७४
अचरिमन्ति – ७३
अचलसद्धाय – १९०
अचेलकपटिपदा – १८६
अचेलको – २०, १९०
अचेलकोति – ७
अचेलो – ५, ७, ९, १०
अचेलोति – ४
अचेलं – ४, ५
अच्चन्तनिस्सरणमेव – १९६
अच्छन्तीति – ४९
अच्छरियअब्भुतवण्णना – ७८, ७९
अच्छरियमनुस्सो – ७५
अच्छादनवत्थमोक्खपावुरणानन्ति – १०५
अच्छिद्दकादिपाठगणका – ३२
अच्छिन्नमूलो – २०५
अच्छिन्नवुत्तीति – १२७
अजवीथि – ४६
अजितोपि – ९
अज्जवं – १४८
अज्झत्तज्झत्तिकानि – १९७
अज्झत्तसमुट्ठाना – १४६
अज्झत्तिकानीति – १९७
अज्झापन्नोति – १९
अज्झासयन्ति – १८
अज्झासयादिब्रह्मचरियभूतं – १८
अञ्ञतित्थिया – १६
अञ्ञतित्थियाति – १६
अञ्ञथाभावी – ६३
अञ्ञदत्थुहरो – ११९
अञ्ञदत्थुहरोति – ११९
अञ्ञदुक्खसभावविरहतो – १५८
अञ्ञभावानुपगमनत्थं – २११
अञ्ञसरणपटिक्खेपवचनं – २७
अञ्ञा – ११४, १२५
अञ्ञाताविन्द्रियन्ति – १६७
अञ्ञाति – १२४
अञ्ञिन्द्रियन्ति – १६७
अटवियं – ९५, १२४
अट्ठकथायं – १३२,१६६
अट्ठङ्गिको मग्गो – ६१
अट्ठधम्मवण्णना – २२६
अट्ठविमोक्खपटिक्खेपवसेनेव – ६५
अट्ठविमोक्खलाभिनो – ६५
अट्ठविमोक्खे – ६५
अट्ठसमापत्तियो – ६३
अट्ठानकुसलताति – १४७
अट्ठारसबुद्धधम्मे – ५२
अट्ठितधम्माति – ८७
अट्ठुप्पत्तिया – ९१
अण्डजा – १८८
अतिउण्हन्तिआदीसुपि – ११८
अतिधम्मभारेन – ७६,७७
अतिनिपुणा – १०७
अतिबलवलोभो – ३३
अतिमानीति – २१
अतिरेकचीवरं – ८२
अतिसीतन्ति – ११८
अतीतबुद्धेहि – १७४
अतीतानागतपच्चुप्पन्नजाननसमत्थं – १९४
अतीतानागतपच्चुप्पन्नबुद्धानं – ५८
अतीतो – ५, १५७, १५८
अतुट्ठाकारभूतं – ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थङ्गमनकालो – ४६
अत्थचरियायाति – ९९
अत्थञ्ञू – २०२
अत्थपटिसम्भिदा – ५२
अत्थपटिसम्भिदादीसु – २१९
अत्थपटिसंवेदिनोति – १९६
अत्थसञ्हितं – ८०
अत्थिभावं – ९
अत्थुद्धारोति – ९५
अत्थुपेतन्ति – ८६
अत्थूपसंहितन्ति – १०१
अत्तकिलमथानुयोगन्ति – ७२
अत्तकिलमथानुयोगमनुयुत्ता – १८
अत्तञ्ञू – २०२
अत्तदीपा – ३७
अत्तदीपाति – २७
अत्तभावपटिलाभेसु – १८९
अत्तवादुपादानं – १८८
अत्तसञ्चेतनाय – १८९
अत्तसञ्ञं – १८२
अत्तसम्मापणिधीति – २२३
अत्तसरणाति – २७
अत्तहिताय – १९०
अत्ता च लोको – ९०, १४५
अत्ताति – १८८
अत्ताधिपतेय्यं – १७०
अत्तानुक्कंसेतीति – १९, १८४
अथुसोति – ४७
अदिन्नादानं – २११, २१२, २१३
अदुक्खमसुखावेदनायेतं – १५८
अदुक्खलाभी – ७२
अदुस्सन्तोति – २०१
अद्धाति – १५७
अद्वेज्झवचना – ६
अधम्मकिरिया – ३१
अधम्मरागोति – ३३
अधम्मसम्मतन्ति – ४८
अधम्मोति – ४३, ४८, २०४
अधिकतरपञ्ञो – ६१, ७१
अधिकरणसमथा – २०४
अधिकरणानन्ति – २०४
अधिकरणानं – २०६
अधिकुसलाति – ९३
अधिकुसलेसु – ९३
अधिगतज्झानविपस्सनामग्गफलनिब्बानानि – १८६
अधिगतमग्गानञ्हि – ११६
अधिगमत्थाय – २०७, २११
अधिगमनसद्धा – १९३
अधिचिण्णं – ८०
अधिचित्तअधिपञ्ञासिक्खा – १९५
अधिचित्तं – १६८
अधिजेगुच्छेति – १८
अधिट्ठानचित्तेन – १०
अधिट्ठानानीति – १८७
अधिट्ठानं – १८७
अधिपञ्ञत्ति – ९०
अधिपञ्ञत्तीति – ९०
अधिपञ्ञा – १६८
अधिपञ्ञाधम्मविपस्सनं – १८२
अधिमत्ततण्हाय – १७८
अधिमुच्चति – १३७
अधिमुत्ति – १५१
अधिवचनन्ति – ७९, १४६, २०३
अधिवचनं – ९, १०२, ११५, १५१, १६३, १६४, १६७, १८८, २०३, २२०
अधिसीलसिक्खा – १६८, १९५
अधिसीलं – १६८
अधोति – २११
अधोमुखोति – २३
अधोसङ्घपादो – १०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनज्झापन्नोति – १७८
अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियन्ति – १६७
अनत्थचरणं – २०९
अनत्थसञ्हितन्ति – ७२
अनत्थसंयुत्तं – ७२
अनत्तसञ्ञाति – १९७
अनत्तानुपस्सनाञाणे – १९७
अनत्तानुपस्सनं – १८२
अनधिगतस्साति – २०७
अननुस्सरितुकामताय – ८७
अनन्तमपरिमाणन्ति – ५४
अनन्तमपरिमाणं – ५४
अनभिरतिबहुलो – १०४
अनभिसम्भुणमानाति – ४९
अनरियवोहाराति – १८९
अनरियवोहारे – ६७
अनलसोति – १२७, १७८
अनवज्जट्ठेन – ६०, २१९
अनवज्जधम्मे – १४५
अनवज्जलक्खणानं – २८
अनवमाननायाति – १२५
अनागतबुद्धानं – ५६
अनागतो अद्धा – १५७, १५८
अनागामिखीणासवा – १९४
अनागामिनो – १९२
अनागामिफलेन – १९६
अनागामिमग्गवज्झं – १९२
अनागामिमग्गो – १८८, २२२
अनागामी – १५, ५३, ६३, १९०
अनाथपिण्डिकस्स – ४०
अनाथपिण्डिको – १२३
अनादीनवदस्सावीतिआदीनवमत्तम्पि – २०
अनावरणञाणं – ७०
अनासवा – ७०
अनाहारा – १४२
अनिक्खित्तछन्दता – १५१
अनिक्खित्तधुरता – १५१
अनिच्चतादिपटिसंयुत्ते – २१७
अनिच्चतो – ७१, १०३, १६३, १६४, १६८, १७२, १८३
अनिच्चसञ्ञाति – १९७
अनिच्चसञ्ञादयो – २०१
अनिच्चानुपस्सनाञाणे – १९७
अनिच्चानुपस्सनं – १८२
अनिच्चे – ६४, १९७, २२०
अनिच्छितो – ११७
अनिदस्सनं – १६२, १६३
अनिन्द्रियबद्धस्स – १४४
अनिमित्तानुपस्सनं – १८२
अनिमित्तं – १६९
अनियतो – १५८
अनिय्यानिककथं – ८८
अनिस्सरणपञ्ञोति – २०
अनिस्सितो – १८३
अनुयोगो – ११५
अनुकम्पन्तीति – १२६
अनुच्छविककम्मं – ४३
अनुट्ठानसीलेन – ११८
अनुतापकारदस्सनत्थं – ८४
अनुत्तरभावो – ५९
अनुत्तरासम्मासम्बोधि – ५८
अनुत्तरियन्ति – ५९, १६८
अनुत्तरियानीति – २००
अनुत्तरोति – ५३, ६०, ६१, ७१
अनुदहनताय – १६०
अनुधम्मभूताय – १८५
अनुधम्मं – ७८
अनुपरियायपथन्ति – ५७
अनुपरिवत्ततीति – २०८
अनुपसमसंवत्तनिकेति – ८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुपुब्बनिरोधाति – २०९
अनुपुब्बविहाराति – २०९
अनुप्पत्तसदत्थो – ४३
अनुप्पादपरियोसाने – १५१
अनुप्पादाय – १५१
अनुप्पियभाणीति – ११९
अनुभवन्तीति – १६६
अनुमानञाणं – ५७
अनुयन्तखत्तिया – ३१
अनुयुत्तोति – १९५
अनुयोगक्खमो – ५६
अनुयोगो – ५७, ५८, ६४
अनुयोगोति – ५७, ११५
अनुरक्खणापधानन्ति – १८४
अनुरूपयानवाहनसम्पदानेनपि – ३१
अनुलोमचीवरानि – १७४
अनुवादाधिकरणं – २०४,२०५
अनुविचरितं – ८८
अनुसन्धिं – १२, ३७, १६३
अनुसया – २०४
अनुसासनीविधासु – ५३
अनुस्सतानुत्तरियं – २००
अनुस्सतिट्ठानानि – ५२, २००
अनुस्सरतीति – ६६
अनुस्सरितुमारद्धो – ५१, ५२
अनेकपरियायेनाति – ३
अनेसनन्ति – १७८
अनेसनं – १७८
अनोत्तप्पन्ति – १४६
अनोमदस्सीबुद्धस्स – ५२
अनोमनिक्कमोति – १०१
अनोमविहारी – १०१
अन्तग्गाहिकायाति – २१
अन्तमन्तानेव – १७
अन्तमन्तानेवाति – १७
अन्तरदीपादीसु – ३५
अन्तराति – ९७
अन्तरापरिनिब्बायी – १९४
अन्तलिक्खे – १३४
अन्तिमपुरिसो – ३२
अन्तेवासिकम्यताति – २४
अन्तेवासिकसमणा – १३
अन्तोजनसङ्खातं – ३१
अन्तोमणिविमाने – ४५
अन्तोवङ्कपादो – ४
अन्तोवापियं – ४७
अन्तोसमापत्तियं – ६३
अन्तोसारविरहितेन – १३
अन्धभावकरणं – ४४
अन्वयबुद्धिया – ५४
अन्वये ञाणं – १८५
अपचितिवेय्यावच्चानि – १६५
अपणिहितानुपस्सनं – १८२
अपण्णत्तिकभावं – ५६
अपरगोयानदीपे – ४६
अपरपजा – १२५
अपरम्परियधम्मा – ५३
अपरिपुण्णवस्सता – ४०
अपरिमाणगणना – ९
अपरियोनद्धेनाति – १७२
अपरिसावचरोति – १७
अपरिसावचरं – २३
अपरिसुद्धाति – १५९
अपरिहीनधम्मं – १०७
अपस्सेनानीति – १७३
अपायगामिपरिहानाय – २१९
अपायमुखानीति – ११४
अपायसहायोति – ११९
अपायोति – १६९
अपुञ्ञाभिसङ्खारोति – १६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पगुणसासवसमाधि – २२५
अप्पच्चयञ्च – ७
अप्पटिकूलसञ्ञी – ७०
अप्पटिघं – १६३
अप्पटिहतञाणं – १६०
अप्पणिहितोति – १६९
अप्पतिस्सोति – १९८
अप्पत्तस्साति – २०७
अप्पनिग्घोसानीति – १६
अप्पमञ्ञाति – १७३
अप्पमत्तो – २९
अप्पमाणन्ति – २११
अप्पमाददीपनत्थं – २२०
अप्पमादप्पटिपत्तियं – ७६
अप्पमादलक्खणं – १९८
अप्पमादवग्गे – २२०
अप्पमादसमोसरणा – २२०
अप्पमंसलोहितं – १३७
अप्पलाभसक्कारो – १५७
अप्पसद्दानीति – १६
अप्पस्सुतखीणासवो – १५९
अप्पहीनविपल्लासानञ्हि – २५
अप्पाबाधोति – १९३
अफरुसवाचता – १४८
अबुद्धोति – ४३
अबुद्धोव – ८
अब्बोच्छिन्नन्ति – ६४
अब्भन्तरेहीति – ९४
अब्भोकासिकङ्गं – १८१
अब्भोकासेति – १७
अब्याकतट्ठानवण्णना – ८९
अब्यापादधातु – १५४
अब्यापादपटिसंयुत्तो – १५३, १५४
अब्यापादवितक्को – १५३
अब्यावटो – १६०
अभयघोसञ्च – ११२
अभयदानेन – ३१
अभिक्कन्तवण्णाति – १३०
अभिक्कन्तसद्दो – १२९, १३०
अभिचेतसिकानं – ७२
अभिजातियोति – २०१
अभिजानाति – ६१, ७१
अभिजायतीति – २०१
अभिज्झाकायगन्थादीनं – २१८
अभिज्झादोमनस्सं – २८
अभिज्झाब्यापादाति – ३३
अभिज्झायतीति – २१२
अभिञ्ञापादकज्झानं – २२५
अभिञ्ञायो – ६३, १०२, १०३, १०४
अभिञ्ञेय्योति – २१९
अभिधम्मपरियायं – ६०
अभिधम्मपिटकं – ७३,७४
अभिधम्मोति – २१०
अभिनिब्बत्तेतीति – १९
अभिनिवज्जेय्यासीति – ३१
अभिनीलनेत्तादिलक्खणवण्णना – १०८
अभिप्पसन्ना – १००
अभिभवनसमत्थो – ९५
अभिभायतनविमोक्खकथा – २०८
अभिभायतनानि – ५२
अभियोगिनोति – १०८
अभिरतीति – १८२
अभिरुचितारम्मणं – १६६
अभिरूपच्छवीति – १३०
अभिविनयोति – २१०
अभिसङ्खरोतीति – १६३, १६४
अभिसङ्खारो – १६३, १६४
अभिसम्बुद्धन्ति – ८८,८९
अभिसम्बुद्धाति – २२१
अभिसित्ता – ९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभीतनादं – १०, २५
अमतनिब्बानसच्छिकिरियाय – ३
अमतपदन्ति – २२०
अमतपानं – ३८
अमतं – ३१
अमायावी – २४
अमोहो – ६७, १५१, २१४
अम्बट्ठसुत्ते – ५०
अम्बणम्बणं – ४८
अम्बपानादिअट्ठविधं – ९६
अम्बवने – ५१, ८०
अयोनिसो – १४९, २२०, २२२
अयोनिसोमनसिकारोतिस्स – १४३
अरञ्ञज्झासया – १३९
अरञ्ञवनपत्थानीति – १६
अरञ्ञवासोपि – २३
अरहतीति – ४, ४४
अरहत्तनिकूटेन – २५, ३८, ५०
अरहत्तपञ्ञाति – १८७
अरहत्तप्पटिलाभमेव – ५
अरहत्तप्पत्तअनागामिनो – ६५
अरहत्तफलञाणेन – १८८
अरहत्तफलपञ्ञा – १६८, १८७, २२७
अरहत्तफलविमुत्ति – २२१
अरहत्तफलसङ्खातं – ३८
अरहत्तफलसमाधि – २२५
अरहत्तफलसमापत्ति – २००
अरहत्तफलसमापत्तिचित्तं – १९६
अरहत्तफलं – ३८, ५२, १९६, २२२
अरहत्तमग्गञाणे – ५५
अरहत्तमग्गञाणं – ५५
अरहत्तमग्गट्ठा – ६५
अरहत्तमग्गवज्झा – १५७
अरहत्तमग्गेन – १९६
अरहत्तमग्गेनेव – ५५
अरहत्तमग्गो – ५२, १८८, २००, २२२
अरहन्ति – १६०
अरहन्तं – ५, १२
अरहाति – ४, ५
अरिट्ठो – २१, १३५
अरियचक्कवत्तिवत्तं – ३२
अरियधम्मतो – ४४
अरियपञ्ञा – १६६
अरियफले – १५१
अरियभूमियं – ४४
अरियमग्गो – ५८, ८९, २१४
अरियमग्गं – १८, ६६, ६७, १०३
अरियवासा – २१४
अरियवासाति – २१४
अरियवोहाराति – १८९
अरियवंसाति – १७३
अरियसावका – ८५
अरियाय विमुत्तिया – १५
अरियिद्धीति – ७०
अरियेन – १५
अरियो विहारो – १७१
अरूपज्झानानि – १९६
अरूपतण्हा – १५५
अरूपधातुपटिसंयुत्तोति – १५४
अरूपसमापत्तिया – ६५
अरूपावचरकुसलचेतनानं – १६४
अरोगो – १९३
अलङ्कारदानेन – १२५
अलङ्कारानुप्पदानेनाति – १२५
अलमरियाति – ४२
अलसकब्याधिना – ५
अलाभोति – २०८
अलिकतुच्छनिप्फलवाचाय – ९
अलोभअदोसअमोहवसेन – २१४
अलं – २७, ६२, ८४, ८६, १४८, १६१, २१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलंपतेय्याति – ३३
अवसेसअरहन्तेहि – ५३
अवसेसखुद्दकपारिचरियाय – १२४
अविकिण्णवचनब्यप्पथो – ११०
अविक्खम्भनीयो – ९४
अविक्खेपो – १५०
अविगतपेमोति – २०३
अविज्जा – १४४, १५५, १५६, १५८
अविज्जाति – १४५
अविज्जानिरोधा – १७२
अविज्जापच्चया – १४७
अविज्जासमुदया – १७२
अविज्जासवोति – १५५
अविज्जोघो – १५८
अविञ्ञापितत्थाति – ८४
अवितक्कअविचारो – १६८
अवितक्कविचारमत्तो – १६८
अविदितट्ठानेति – ५७
अविदितनिब्बाना – १३
अविप्फारिकभावो – ३५
अविसयो – ७२
अविसहन्तोति – ३
अविसंवादनतायाति – १२५
अविहिंसाति – १४९
अविहिंसाधातु – १५४
अविहिंसावितक्को – १५३
अविहेठनकम्मं – १०७
अवीचि – ३५
अवीचिअन्तरे – ६२
अवीचिनिरयं – १५४
अवीचिमहानिरयो – ३५
अवीतिक्कमोति – १५०
अवेच्चप्पसादेनाति – १८५
अवेलाय – ११५, ११६
असङ्खता – २२२
असङ्खारपरिनिब्बायी – १९४
असङ्गाहकभावं – १००
असच्छिकतस्साति – २०७
असञ्ञसत्ता – १४२
असद्धम्मा – २०२, २२२
असनिविचक्कन्ति – २०
असन्तसम्भावनपत्थनलक्खणाय – २१
असब्भिकथं – ३४
असमाधिसंवत्तनिका – १४८
असमुच्छिन्नत्ता – २२८
असमो – ७७
असम्पजञ्ञन्ति – १४९
असम्पजञ्ञं – १४९
असम्पजानो – ६२
असम्पजानोति – ६१
असम्पवेधी – ५६,८७
असम्फप्पलापा – ६८
असम्मूळ्हो – ६२
असहानधम्मतन्ति – १०७
असाधारणञाणानि – ५२
असीतिअनुब्यञ्जनानि – ९१
असीतिमहासावके – ११३
असीतिसतपञ्हे – १७१
असुभकम्मट्ठानं – २१७
असुभज्झानचित्तं – १९६
असुभज्झानं – १८८, १९६
असुभसञ्ञा – २०३
असुभानुपस्सनाञाणे – २०३
असुरकायो – २२६
असुरयोनितो – ६
असुरा – ९७
असेक्खधम्मे – ५२
असेक्खा – १६६, २१५
असोकराजा – २२०
असंविज्जमानट्ठेनाति – १३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंहारियाति – ४४
अस्मिमानदोसेन – ११
अस्मिमानसमुग्घातोति – २००
अस्मिमानोति – २२०
अस्सजिमहासावकस्स – ५९
अस्सपिट्ठे – ११९
अस्सयानन्ति – १३४
अस्सासपत्ताति – १८
अहियक्खादयो – ९५
अहिरिकन्ति – १४६
अहिविज्जादिअनेकविधा – १०१
अहेतुकवादी – १९९

आ

आकासगङ्गं – १४१
आकासधातूति – १९९
आकासानञ्चायतनसमापत्ति – ५१
आकासाभिमुखिं – ५४
आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्ति – ५१
आगतनिमित्तेन – ६२, ६३
आगतसद्धा – ४३
आगमनभयं – १२२
आगमनसद्धा – १९३
आघातप्पटिविनया – २२२
आघातो – ३४, १५३
आचरियपरम्पराय – ५६
आचरियभरियाति – ३४
आचरियवादो – १३
आचरिया – १२२
आचरियोति – २४
आजाननभूतं – १६७
आटानाटनगरे – १२९, १३१
आटानाटा – १३४
आटानाटादिका – १३४
आटानाटियन्ति – १३१
आटानाटियसुत्तं – १२९, १३७
आणाखेत्तं – ७२
आणापवत्तिट्ठाने – ३१
आतप्पन्ति – ६४
आतापी – २८
आदिच्चबन्धुनन्ति – १३२
आदिच्चबन्धुनं – १३२
आदिब्रह्मचरियन्ति – १८
आदिब्रह्मचरियिकाय – २२६
आदीनवदस्सनत्थं – ३
आदीनवदस्सावीति – १७८
आदीनवसञ्ञा – २०३
आदीनवानुपस्सनाञाणे – २०३
आदेसनाविधासु – ५३
आधानग्गाही – २१
आधिपतेय्यट्ठेन – ६०
आनन्तरिको – २२०, २२१
आनन्दत्थेरो – ८२, ८३
आनन्दोति – ८२
आनापानस्सतिकम्मट्ठानं – २१७
आनापानस्सतिं – ५२
आनापानं – २२०
आनिसंसो – ९६, ९८, १००, १०१, १०२, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११
आनीतचीवरं – १७४
आनुभावसम्पन्नस्स – १३४
आनेञ्जाभिसङ्खारोति – १६४
आपत्ताधिकरणं – २०४, २०५, २०६
आपत्तिकुसलताति – १४६
आपत्तिवुट्ठानकुसलताति – १४६
आपाथकनिसादी – २०
आपायिकोति – ३
आपोधातूति – १९९
आपोरसो – १४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आबन्धनधातु – १९९
आभतधनं – १२५
आभिचेतसिकानन्ति – ७२
आमिसदानेन – १०५
आमिसपटिसन्थारो – १४९
आमिसपरिच्चागो – १८७
आयतनकुसलताति – १४७
आयतनपञ्ञत्तियं – ५३
आयतनपञ्ञापनासु – ६१
आयतनानि – १६३, २११
आयतन्ति – ३५
आयतपण्हि – ९७
आयुसङ्खारोस्सज्जने – ७२
आयोति – १६९
आरक्खकिच्चं – २१४
आरक्खदेवता – १९९
आरञ्ञिकङ्गं – १८१
आरद्धविपस्सको – १५१
आरद्धविपस्सना – ६४
आरद्धवीरियस्साति – २२७
आरद्धवीरियेनाति – ७१
आरद्धवीरियो – ६८, ६९, ८४
आरम्मणतोति – १६८, २१३, २१४
आरम्मणलक्खणूपनिज्झानवसेन – ६९
आरम्मणाभिमुखं – १४५
आरोग्यकरणकम्मं – १०७
आरोग्यट्ठेन – ६०
आलोकनिस्सितं – १६७
आलोकसञ्ञं – १७२, १८२
आलोकोति – १७२
आवसथं – ९६
आवाटमण्डूके – १२
आवासकुलाभवण्णधम्मेसु – २१
आवासमच्छरियं – १९१
आवाहका – ११७
आवाहविवाहकानन्ति – ११७
आविलक्खि – १०८
आवुधन्ति – १६७
आसनपूजं – १३७
आसनसालाभोजनसालादीसु – १९३
आसभीति – ५६
आसवक्खयपरियोसाने – ३८
आसवक्खया – ३८
आसवनट्ठेन – १५५
आसवाति – १५५
आसवानं – ४२, ६१, १६४, १७१, १७३, १९०
आसादेतब्बन्ति – १२
आसाळ्हमासे – ४६
आहारकिच्चं – ४४, १४३
आहारट्ठितिका – १४२, १४४
आहारट्ठितिकाति – १४२, १४३, २२१
आहारनिस्सिता – १८१
आहारपच्चयो – १४४
आहाराति – १४२
आहारेपटिकूलसञ्ञाति – २२८
आहुनेय्यग्गीति – १६०
आहुनेय्यसुत्ते – १५५
आळकमन्दाति – १३४
आळवकपुच्छा – ७४

इ

इच्छाति – ३५
इच्छाविनयेति – २०३
इतरीतरचीवरसन्तुट्ठियाति – १७८
इतिपीति – ४४
इत्थिलिङ्गं – ४७,४८
इत्थिसोण्डा – ११७
इदंसच्चाभिनिवेसोति – १८८
इद्धिपाटिहारियन्ति – २, ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इद्धिपाटिहारियं – ३, ४
इद्धिपादविभङ्गे – १७२
इद्धिपादाति – ६०
इद्धिपादं – ६०, १७२
इद्धिभावनाय – ९८
इद्धिविधञाणं – ५२
इद्धिविधासूति – ७१
इद्धिविधे – ५३
इधत्तभावे – ४३
इधलोकभाविनी – ११६
इन्दखीलो – १९०
इन्दनामाति – १३२
इन्दो – १०५, १३८
इन्द्रियदमनं – १८६
इन्द्रियपञ्ञत्ति – ९०
इन्द्रियभावनतो – ७४
इन्द्रियसंवरे – २१९
इब्भेति – ४१
इरियतीति – १५
इरियापथचक्कं – २२३
इरियापथो – १४३
इरियापथं – १४१
इस्सरकुत्तं – १३
इस्सरियवोस्सग्गेनाति – १२५
इस्सरोति – १३
इस्सुकीति – १९९

उ

उक्कट्ठञ्च – १०१
उक्कण्ठनबहुलो – १०४
उक्कण्ठितसभावा – ८०
उक्कुटिकपादा – ९७
उक्खलिं – १३३
उग्गतउदकं – ५५
उग्गहमनसिकारपजानना – १४७
उच्चकम्मानि – २१०
उच्चारपलिबुद्धो – १७५
उच्चावचानीति – २१०
उच्छिट्ठमंसं – ११
उच्छेददिट्ठिसहगतो – १५४, १५५
उजुजातिकोति – २४
उजुप्पटिपन्नोतिआदीनं – १९५
उट्ठानकोति – १२७
उट्ठानफलूपजीवी – १४३
उट्ठानवीरियसम्पन्नो – १२७
उण्हीससीसलक्खणं – १०८
उतुसंवच्छरा – ४७
उत्तमग्गरसदायकोति – ९९
उत्तमनिस्सयभूतं – १८
उत्तमपुरिसोति – १३०
उत्तमो – ७७, ९९
उत्तरकाति – ४
उत्तरकुरूसु – ४६
उत्तरा – १२२
उत्तरिछप्पञ्चवाचं – १५९
उत्तरितरञाणोति – ५५
उत्तरिमनुस्सधम्मे – २३०
उत्तासबहुलो – १०४
उत्तासभयं – ९५
उदकरहदो – १३२, १३५
उदकसन्तोसो – १७५, १७६
उदकसोण्डियं – ११
उदकास्सुदन्ति – ८५
उदयत्थगामिनियाति – १९३
उदरावदेहकन्ति – १९५
उदुम्बरिकसुत्तं – १५
उदुम्बरेहि – ३६
उद्धग्गलोमलक्खणञ्च – १०१
उद्धग्गिकन्तिआदीसु – ३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्धच्चं – १८२, १९२
उद्धुमातउदरो – ५
उद्धंसोतो – १९४
उद्धंसोतोअकनिट्ठगामीति – १९४
उपकट्ठवस्सूपनायिकाय – २१७
उपकारसन्तोसो – १७९, १८०
उपक्किलेसाति – ५७
उपक्किलेसो – १९
उपचारकम्मट्ठानं – २००
उपचितत्ताति – ९३
उपज्झायो – ८२
उपट्ठाककुले – १९१
उपट्ठाको – ५, ८, ९
उपट्ठितसतिस्साति – २२७
उपड्ढपथन्ति – ८
उपधिविवेकोति – १६७
उपनाहीति – २१, १९८
उपनिज्झायतन्ति – ४८
उपनिस्सयकोटिया – १८६
उपभोगपरिक्खारा – १०२
उपयोगं – ३९
उपरिभूमियं – ३९
उपरिमा – १२२
उपसङ्कमनकिच्चन्ति – ११३
उपहच्चपरिनिब्बायी – १९४
उपादानक्खन्धा – १९१
उपादानानीति – १८८
उपायकोसल्लन्ति – १७०
उपायमनसिकारं – ६४
उपारम्भचित्तताय – १०४
उपालिना – ८१
उपाहनत्थविकं – ९६
उपाहनदण्डकं – ९६
उपेक्खको – ७१, २०१
उपेक्खूपविचारा – १९८
उपोसथकम्मं – ९५
उपोसथङ्गानि – १५
उपोसथागारचेतियघरबोधियघरेसु – २१०
उपोसथूपवासेति – ९३
उपोसथो – ९५
उप्पज्जनकतण्हा – ३५
उप्पज्जनकदिट्ठि – १४५
उप्पन्नमग्गफलकाले – १५३
उप्पन्नलोभो – ४५
उप्पन्नवीरियं – १८४
उप्पन्नसतिया – २२०
उप्पन्नसद्धो – ५५
उप्पन्नसोमनस्सपवेदनत्थं – ५१
उप्पन्नुप्पन्नानं – २०६
उप्पादजराभङ्गपीळिता – १५८
उब्बाधनायाति – १०८
उब्बाधिकन्ति – ११०
उब्बेगभयस्स – ९७
उभतोभागविमुत्तो – ६५
उभतोभागविमुत्तोति – ६५
उभतोविभङ्गे – ७४
उभयकारी – ५०
उभयविपाकदानट्ठानं – ५०
उभयेसूति – ४२
उलूकपक्खं – १७४
उसूयनलक्खणाय – २१
उस्सङ्खपादलक्खणञ्च – १०१
उस्सुकोति – ९७
उळारपामोज्जोति – २१०
उळारसद्दो – ५५
उळाराति – ५५, ५६, १३१
उळारो – ५६, ७५

ए

एकखुरं – १३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकगुणोपि – ७१
एकग्गचित्तस्स – २२७
एकङ्कुलद्वङ्कुलमत्तं – २९
एकधम्मो – १४४
एकनामाति – १३२
एकनीहारेन – ८१
एकपटिवेधवसेन – १८४
एकपल्लङ्के – ९९
एकपादेन – २०
एकपुग्गलो – ७५
एकपुरिससन्धारणी – ७६
एकबुद्धधारणी – ७६
एकलक्खणा – ६०
एकविहारीति – १२६
एकसिक्खा – ७६
एकानुसासनी – ७६
एकायनो – १८३, २१८
एकासनिकङ्गं – १८१
एकासने – ९९
एकीभावमत्तेन – २२७
एकीभावो – २२७
एकेकलोमलक्खणञ्च – १०९
एकोदकीभूतन्ति – ४४
एकोदिभावाधिगतो – २२५
एणिजङ्घलक्खणं – १०२
एतदानुत्तरियन्ति – ५३, ५९
एरकदुस्सं – १७४
एवंसीलातिआदीसु – ५६

ओ

ओकप्पनसद्धा – १९३
ओघतरणा – ७४
ओघाति – १८८
ओजसि – १३५
ओजाति – १३०
ओड्डवचित्तकाति – १३६
ओतारन्ति – २७
ओदनकुम्मासन्ति – ७
ओपपातिका – ४४, १४५, १८८
ओपायिकतरानीति – ८५
ओभासेत्वाति – १३१
ओरसोति – ४४
ओरोधेय्यामाति – १७
ओलोकनकम्मं – १०८
ओलोकितसञ्ञाय – २७
ओहितभारो – ४३
ओहितोति – ४३
ओळारिकसुखुमता – १८५

क

ककुसन्धो – १७३
कक्खळत्ताय – २०६
कङ्खतीति – १५८, १९४, १९५
कङ्खावितरणविसुद्धीति – २२७
कच्छपियाति – १६६
कच्छपो – १६६
कटच्छुभत्तमत्तं – ९१
कणिकारपुप्फसदिसो – ४४
कण्टको – ९४
कण्ठमभिपूरयित्वा – ७६
कण्णसुखाति – ११०
कण्हन्ति – ५९, १८७
कण्हविपाकन्ति – १८७
कण्हविपाकाति – ४२
कण्हसप्पो – ११२
कण्हसुक्कविपाकन्ति – १८७
कण्हसुक्कं – ५९
कण्होति – ४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्हं – ५९, १८७, २०१
कतकम्मं – ९२
कतकरणीयो – ४३
कतप्पटिच्छादनलक्खणाय – २१
कतरकोट्ठासं – १२२
कतसिक्खा – ८०
कत्तब्बकम्मानि – २१०
कत्तिकादिनक्खत्तानि – ४७
कत्तुकम्यता – १७१
कथला – ९४
कथापाभतन्ति – ८२
कथासल्लापन्ति – १७
कथंकथासल्लं – २००
कदलिदुस्सं – १७४
कदलिं – ६६
कन्दरा – ५५
कप्पसन्तोसो – १७५, १७७
कप्पितभावं – १११
कप्पियकारकम्पि – ९६
कबळीकारो – १४२
कमलवनं – ९१
कम्मकिलेसाति – ११४
कम्मकिलेसोति – ११४
कम्मक्खयकरं – १८७
कम्मच्छेदो – ११७
कम्मजतेजोधातुया – १९३
कम्मजवाता – ६२
कम्मट्ठानपाळिधम्मे – १९७
कम्मट्ठानसुद्धिको – १९, २१
कम्मट्ठानं – १९७, २१७
कम्मन्तसंविधानेनाति – १२५
कम्मभवं – ६४
कम्मवाचाय – १४६
कम्मविञ्ञाणं – १८६
कम्मसमुदयो – १७२
कम्मसरिक्खकं – ९४, ९६, ९७, ९८, १००, १०१, १०२, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११
कम्मस्सकतञाणं – १५०, १६८
कम्मस्सकताजाननपञ्ञा – १०१
कम्मायतनेसु – १६७
कम्मारभस्ता – ९४
करणसन्तोसो – १७५, १७७
करणीयोति – ३८
करुणाचेतोविमुत्तीति – १५४
करुणाझानानि – १९६
कलन्दकनिवापोति – ११२
कलन्दकयोनियं – ९२
कलन्दकाति – ११२
कलहप्पवड्ढनीति – ११६
कल्याणकम्मे – १२०
कल्याणमित्ता – १२४
कल्याणमित्तो – २१०
कल्याणसहायो – २१०
कसायरसपीतानि – ३०
कसिकम्मं – १३३
कसिणपरिकम्मं – १६३, २२७
कसिणभावनं – ६३
कसिणसम्भेदोति – २११
कसिणानि – २११
कसिवाणिज्जादिकम्मं – १२२
कस्सपबुद्धकालिका – ७४
कस्सपबुद्धस्स – १६१
कस्सपो – १७३
कहापणारहस्स – १०६
कहापणोति – १२०
कळारजनको – ३२
कळारदन्ताति – १३६
काणगावी – १७
कामकिच्चं – १६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामगवेसनरागो – १५६
कामगुणा – २२, २८, १९१
कामच्छन्दोति – १५६
कामतण्हा – १५४
कामतण्हाति – १५४
कामधातु – १५३,१५४
कामधातूति – १५३
कामपच्चया – १९६
कामभोगिनियोति – ८५
कामभोगिनोति – ८५
कामयोगविसंयोगो – १८८
कामरागानुसयो – १९१, २०४
कामवितक्को – १५२, १५३
कामवितक्कं – १०४, १७३, १८६
कामवेदनं – १९६
कामसञ्ञा – १५३
कामसुखल्लिकानुयोगन्ति – ७१
कामसुखं – ७२
कामाति – २२६
कामावचरकुसलमहाचित्तचेतनानं – १६३
कामावचरचित्तानि – ७२
कामासवो – १५५, १५६
कामुपादानं – १८८
कामूपपत्तियोति – १६५
कामूपसंहिता – २८
कामेसुमिच्छाचारोति – २११
कामोघो – १८८
कामोति – १८८
कायकम्मं – १२६, १५६, १६०, १६४
कायकिलमथं – ७२
कायगतासतीति – २२०
कायगन्थो – १८८
कायचित्तउपधिविवेकेहि – २२७
कायदुक्खं – १४२
कायदुच्चरितं – १५२, १५९, १६०
कायदुब्बलभावोति – ३५
कायपरिञ्ञा – १६९
कायपरिञ्ञासहगतो – १६९
कायभावना – १६८
कायमोनेय्यं – १६९
कायविञ्ञेय्या – २८
कायविवेको – १६७, २२७
कायसक्खीति – ६६
कायसङ्खारनिरोधा – १६९
कायसमाचारादयो – १५९
कायसुचरितेतिआदिमाह – ९३
कायसुचरितं – १५२, १६९
कायसोचेय्यं – १६९
कायानुपस्सनासतिपट्ठानं – ६०
कायानुपस्सी – २८, १८३
कायानुपस्सीतिआदीनि – २७
कायारम्मणे – १६९
कायालसियताय – ११५
कायालसियविरहितो – ६८
कायिको – १४८, १५०
कायेनाति – १८८
कायो – ४४, ९१, १८३
कायोति – १९६
कारणप्पटिपन्नो – ८४
कारुञ्ञजातो – ११
कालकञ्चिकाति – ५
कालञ्ञू – ८८, २०२
कालन्ति – ३१
कालपरिच्छेदं – ५१
कालसमये – १२३, १२६
कालसमयोति – १२३
काळकविपाकं – १८७
काळपक्खउपोसथतो – ४६
काळवल्लवासी – ५९, ६४
काळसीहो – १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काळुदायी – ७८
किच्चाधिकरणन्ति – २०४
कित्तिवण्णहराति – १२६
किमेविदं – ४४
किरियसङ्गहो – १६२
किलेसकामा – २२६
किलेसकामे – ८७
किलेसक्खयो – ६६
किलेसदरथसम्पयुत्ता – २४
किलेसनिब्बानेन – १३२
किलेसनिब्बानं – १३
किलेसपरिच्चागो – १८७
किलेसपरिनिब्बानेन – २४, ५०, २०९
किलेसपरिनिब्बानं – ७४, १९४
किलेसमारोपि – २७
किलेसविमुत्तिञाणे – ६९
किलेसवूपसमो – १८७
किलेससम्पयुत्तता – ११४
कुक्कुच्चं – १९२
कुक्कुटकाति – १३६
कुक्कुटो – ६३
कुज्झनलक्खणेन – २१, १९८
कुटिलकण्टको – १०४
कुटिलचित्तो – २४
कुमारवाहनेपि – १३४
कुम्भकारसिप्पं – १०१
कुम्भण्डानन्ति – १३३
कुलवंसो – १७३
कुलवंसं – १२३
कुलावकं – ९२
कुवेरनळिनीति – १३६
कुवेरो – १३५
कुसचीरं – १७४
कुसलकम्मपथाति – २२२
कुसलचेतना – १६४
कुसलधम्मे – ५२
कुसलन्ति – ३३
कुसलपञ्ञत्तियं – ५३
कुसलमूलानि – २२२
कुसलमूलं – २१४
कुसला – ६०, ९३, १५४, १६३, १७०, १९३, २२०
कुसलाकुसलकम्मानि – ५०
कुसलाकुसलविपाकविञ्ञाणं – १९७
कुसिनाटा – १३४
कुसिनारायं – ७४
कुसीतवत्थूनीति – २०७
कुसुम्भकन्दरा – ५५
कुसुम्भा – ५५
कुहकोतिआदि – ६८
केणियजटिलादयो – ७१
केराटिकलक्खणेन – २१
केवलकप्पन्ति – १३०
केवलपरिपुण्णं – १३०
केवलसद्दो – १३०
केवली – १३०
केसकम्बलं – १७४
केसमस्सुन्ति – ३०
केसरभारमत्तमेव – ११
केसरसीहो – १०
केसरं – १४१
कोटिगामो – ३६
कोट्ठासतोति – २१२, २१३
कोणागमनो – १७३
कोण्डञ्ञो – १७३
कोधनादिभावं – १०५
कोधनोति – १९८
कोधसामन्ता – १४८
कोपसङ्घातो – १९५
कोपीननिदंसनीति – ११६
कोपो – ३४, १०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोरक्खत्तियोति – ४, ६
कोसल्लसम्भूतट्ठेन – ६०
कोसल्लं – १६९
कोसोहितवत्थगुय्हलक्खणं – १०६

ख

खज्जकं – ९५
खज्जभोज्जादिजोतकं – ९९
खज्जोपनका – ५
खत्तियकुले – ५०, १९०
खत्तियधम्मं – ४९
खत्तियपरिसा – २०८
खत्तियो – ४, ४८
खदिरत्थम्भे – २९
खन्तीति – १४८
खन्धत्तयगेलञ्ञं – १९२
खन्धपञ्ञत्ति – ९०
खन्धपरिनिब्बानं – ७४
खमतीति – १९, २०, १८६, २०६
खयगामिनिया – १९४
खयञाणस्स – १७३
खयधम्मं – १०३
खयानुपस्सनं – १८२
खलमूसिकायोति – १२
खलुपच्छाभत्तिकङ्गन्ति – १८१
खिड्डापदोसिकन्ति – १३
खिड्डापदोसिका – १६०
खिप्पाभिञ्ञा – ६७
खीणासवबलानि – ५२
खीणासवा – १३१
खीणासवो – ४३, ८७, १६४, १९२, २०३, २१४
खीरभत्तं – १९
खुज्जा – ९७
खुज्जुत्तरादयो – ८५
खुद्दकमातिका – ९३
खुद्दमधुन्ति – ४४
खुरचक्कधरं – १६१
खेत्तपरिग्गहो – ७३
खेत्तविसुद्धिया – ३५
खेत्तसामिनो – ४८
खेमन्ति – ९४
खेमाथेरीउप्पलवण्णथेरीआदयो – ८५
खेमं – १२२

ग

गणकमहामत्ताति – ३२
गणजेट्ठको – १०८
गणना – १०१
गतनिमित्तेन – ६२
गतपच्चागतं – १७४
गतियो – १९१
गन्था – १८८
गन्धकुटिं – ८,५१
गन्धधूमादीहि – ९५
गन्धपिसनकनिसदाय – ९६
गन्धसम्पन्नाति – ४४
गन्धायतनं – ८८
गब्भमलहरणं – १७४
गब्भसहस्सप्पटिमण्डितो – ३९
गब्भावक्कन्ति – ६२
गब्भावक्कन्तियं – ५३
गब्भावासे – ६२
गब्भिनियोति – ४२
गब्भोक्कमनेसु – ६१
गम्भीरभूमिं – ८७
गरुचित्तभावो – २२६
गरुचित्तं – ३४
गलवाटका – १३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गहपतिनेचयिकाति – ९
गहपतिमहासालो – ११२
गहपतीति – १६१
गहेतब्बबुद्धगुणायेव – ५४
गारवोति – २२६
गाविं – १३४
गिज्झकूटन्ति – १३१
गिद्धोति – ६९
गिरिराजा – ७७
गिलानपच्चयो – १८१
गिलाना – २०७
गिहिभूतेन – ११८
गिहिविनयो – १२८
गिहिविनयं – ११३
गिहिसोतापन्ना – ८५
गुणदीपिका – ७९
गुणानुस्सरणं – २००
गुळासवो – ११५
गूळ्हजिव्हा – १०९
गेधजातो – १९
गोकाणन्ति – २३
गोचरगामं – १, ४, २६, ५१, ११२
गोतमन्ति – १३२
गोतमो – ५, ८, ९, १०, १३, १६, १८, ८१, ८७
गोतमोति – १५९, १७३
गोपुरट्टालकयुत्तं – ११२
गोमयपिण्डमत्तम्पि – ४८
गोमुत्तवङ्कता – १४८
गोरक्ख – ४९
गोवीथीति – ४६

घ

घनपथवियं – १४०
घनसञ्ञं – १८२
घरावासो – १२१
घातितभावं – ९७
घानविञ्ञेय्या – २८

च

चक्कपेय्यालतो – ७४
चक्करतनमत्थके – २९
चक्करतनं – २९
चक्कलक्खणं – ९६
चक्कवत्तिराजा – १४१
चक्कवत्तिसिरीविभवो – २९
चक्कवत्तिसुत्तं – २६
चक्कवाळसमीपेन – ४६
चक्कवाळेसु – ९७
चक्कवाळं – ४४, ७३, ९३, १४५
चक्कानीति – २२३
चक्खायतनं – १६२
चक्खुकरणीति – ७२
चक्खुद्वारारम्मणे – २०१
चक्खुनाति – १८८
चक्खुपटिहननसमत्थतो – १६२
चक्खुपसादो – १६७
चक्खुमा – १३१
चक्खुरूपं – १४७
चक्खुविञ्ञाणन्ति – १९७
चक्खुविञ्ञाणसङ्खातं – १६२
चक्खुविञ्ञाणुप्पत्तिनिवारणेन – ४४
चक्खुविञ्ञेय्या – २८
चक्खुसम्फस्सजं – १६३
चक्खुसम्फस्सोति – १९७
चङ्कमतीति – ४०
चण्डालपुत्तो – १७
चतुक्कुण्डिकोति – ४
चतुचत्तालीस – ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुत्थज्झानिकफलसमापत्ति – ७२
चतुत्थमग्गञाणं – १९३
चतुत्थं झानं – ५१, १८२
चतुधातुववत्थानं – २२०
चतुपारिसुद्धिसीलं – १४८, २२७
चतुब्बिधवचीदुच्चरितस्स – १६९
चतुब्बिधो – १६२
चतुब्रह्मविहारवसेन – १८६
चतुभूमककुसलधम्मकारणा – २११
चतुमग्गञाणपटिवेधगामी – २०९
चतुयोनिपरिच्छेदकञाणं – ५२
चतुवण्णसुद्धिवण्णना – ४२, ४३
चतुसच्चकम्मट्ठानं – १८५
चतुसच्चधम्मञ्च – १७१
चतुसच्चधम्मो – २०९
चतुसट्ठि – २२८
चतुसतिपट्ठानवसेन – २२७
चत्तालीसकोटिधनं – १२८, १६१
चन्दभागमहानदिं – ५५
चन्दभागा – ५५
चन्दमण्डलं – ४५, ४६
चन्दवङ्कता – १४८
चन्दिमसूरियाति – ४५
चन्दिमा – ४५, १३१
चन्दोति – ४५
चम्मक्खण्डं – ५१, ५५
चम्मं – १७४
चरणकभावं – ११६
चरणन्ति – १०१
चरणं – १७६
चरियवसेन – २१७
चातुमहाराजिकादीनं – ६३
चातुयामसंवरसंवुतोति – २२
चातुयामसंवरोपि – २३
चारिकं – ८२, १३९
चित्तकम्मं – १३९
चित्तगहपतिहत्थकआळवकादयो – ८५
चित्तगेलञ्ञं – १९२
चित्तन्ति – १९६
चित्तपरिच्छेदे – १८५
चित्तभावना – १६८
चित्तलपब्बतविहारे – १६०
चित्तविवेको – १६७, २२७
चित्तविसुद्धीति – २२७
चित्तसङ्खारनिरोधा – १६९
चित्तसङ्खारा – ६३
चित्तानुपस्सनासतिपट्ठानं – ६०
चित्तानुपस्सी – २८, १८३
चित्तालङ्कारचित्तपरिक्खारत्थं – २०७
चित्तुत्रासभयं – ९
चित्तं – २, ८, १५, २५, २६, ३४, ३७, ५७, ६३, ९२, १४३, १५९, १६८, १७१, १७२, १८०, १९१, १९५, १९६, १९७, १९९, २०७, २१५
चिन्तामया – १६७
चिरनिसिन्नो – १२९
चिरपारिवासियट्ठेन – १५५
चीवरकुटिं – २०
चीवरक्खेत्तं – १७४
चीवररजनकं – ९६
चीवरसन्तोसमहाअरियवंसं – १७८
चीवरहेतूति – १८६
चुतिपटिसन्धिच्छादकं – १७१
चुतिपटिसन्धिवसेन – ७०
चुतूपपातञाणं – १७१
चुन्दत्थेरो – ८३
चूळअनाथपिण्डिकमहाअनाथपिण्डिकादयो – ८५
चूळसीवत्थेरो – ५९
चेतसाति – १७२, २१४
चेतसोविनिबन्धा – १९५
चेतियघरधूपनत्थाय – ९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेतियङ्गणे – ९६, १३७
चेतियपब्बतविहारे – १७५
चेतियपूजादीनं – ९६
चेतियं – १७५, १९८
चेतोखिला – २२२
चेतोपरियञाणन्ति – ६४
चेतोपरियञाणलाभी – ६३
चेतोपरियञाणवसेन – ६३
चेतोपरियपञ्ञा – २२४
चेतोविमुत्तीति – २००, २२१
चेतोसमाधिन्ति – ६४
चेतोसमाधीति – २२०,२२१
चोदकेनाति – १९३
चोरकम्मं – ३३, ११६
चोरतो – ९५
चोरा – ९४, ११६, ११७, १२४, १४९
चोरादिउपद्दवनिवारणत्थं – ३१

छ

छअपायमुखादिवण्णना – ११५
छआदीनवादिवण्णना – ११६, ११७, ११८
छधम्मवण्णना – २२५
छन्दरागप्पहानं – १६९
छन्दरागवसेन – ६४
छन्दवासिनी – २११
छन्दसमाधि – १७१
छन्दसमाधिपधानसङ्खारसमन्नागतं – ६०
छन्दोति – २२८
छन्दं – ४५, १५१, १७१
छन्नपरिब्बाजको – १५
छमानिकिण्णन्ति – ४
छविमंसलोहितन्ति – ६४
छळङ्गसमन्नागतो – २१४
छळङ्गुपेक्खा – २०१, २१४
छिन्नपादो – १०
छिन्नमूलो – २०५

ज

जङ्गमंसं – १०२
जनाति – १३१
जनोघं – १३४
जम्बुदीपे – ४१, ८१
जयापेक्खोति – ६८
जरसिङ्गालो – ११, १७
जरसिङ्गालोति – १२
जराति – ३५
जरामरणनिरोधे – १०३
जलाबुजा – १८८
जवनक्खणे – २०१
जवनपञ्ञा – १०३
जागरियानुयोगमनुयुत्तोति – ६८
जागरियानुयोगं – ६८, १०३
जातिखेत्तं – ७२
जातिजरामरणियाति – २४
जातित्थेरो – १६४
जातिमूलस्स – ८८
जातिसङ्गहो – १६२
जानपदा – ३१
जिनभासितोति – २१६
जिनसुत्तं – २२१
जियावेगो – १४३
जिव्हग्गे – ४५, १०७
जिव्हाविञ्ञेय्या – २८
जीवकम्बवनं – ५१
जीवञ्जीवकसद्देत्थाति – १३५
जीवितक्खयं – ११५
जीवितमदो – १७०
जीवितिन्द्रियं – २२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जूतकरो – ११७
जेट्ठकरुक्खो – १३७
जेट्ठो – ७७
जेतवनमहाविहारं – ४०
जोतिकपासाणा – १३३

झ

झाननिकन्तिसस्सतदिट्ठिसहगतो – १५४
झानपच्चयो – १४३
झानफस्सं – ६५
झानविपस्सनामग्गफलधम्मस्स – २०७
झानविपस्सनामग्गफलानि – १९७
झानविपस्सनावसेन – १८६
झानसमापत्तियो – २२
झानसुखं – ३७
झानानि – ३७
झामअङ्गारो – ५६
झायीति – ६९

ञ

ञाणजालं – २, १३९
ञाणदस्सनपटिलाभायाति – १७२
ञाणदस्सनविसुद्धीति – २२७
ञाणदस्सनं – ८७, १५१, २१५
ञाणदेसना – ७०
ञाणपरियन्तिकं – ७२
ञाणवादेन – ८
ञाणवादेना – ८
ञाणविप्पयुत्तचित्तेन – २१४
ञाणसम्पयुत्तचित्तेन – २१४, २२३
ञाणानुपरिवत्ति – १६०
ञातपरिञ्ञा – २२१
ञातिब्यसनं – १९२
ञातिसम्पदाति – १९२
ञायप्पटिपन्नोति – ८४
ञेय्यपरियन्तिकं – ७२

ठ

ठपितचित्ता – ५८
ठानकुसलताति – १४७
ठानन्ति – १७, १४७, १५१
ठानपरिच्छिन्दनसमत्था – १४७
ठानाठानकुसलो – १४८
ठितनिमित्तेन – ६२
ठितभिक्खु – ६९
ठितिभागियो – ६३, २२४

त

तङ्खणुप्पन्नकोधवसेन – ११५
तच्छा – ५, ६
तण्डुलमेव – ४७
तण्हङ्कुरो – १७३
तण्हा – ४३, ४५, ८९, १४४, १५४, १५५, १८४
तण्हाछक्के – १९८
तण्हाद्वयं – १५४
तण्हासमुदया – १७२
तण्हाहेतु – २०
तण्हुप्पादानं – १८६
ततियज्झानसुखं – १६६
ततियमग्गो – ६५
ततियाति – ६२
ततियं झानं – ५१, १८२
ततोजसी – १३५
ततोतला – १३५
ततोला – १३५
तत्तला – १३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्रुपपत्तिजननतोति – ३२
तथसभावो – ११०
तथागतप्पवेदिता – ६६
तथागतबलानि – ५२
तथागतसद्दवित्थारे – ८९
तथागतसावका – १७३
तथागताति – ६
तथागतेति – १२
तथागतेन – ७२, ८८, १०५, १०६, १०७, २२१
तदत्थजोतकन्ति – ९९
तदत्थपरिदीपना – ९६
तदनुधम्मता – २२४
तदाधिगच्छतीति – ९९
तपनिस्सितको – १९
तपस्सिनो – १९
तपस्सिभावेन – २२
तपस्सीति – १९, २१
तपोजिगुच्छाति – १८
तमपरायणोति – १९०
तम्बपण्णिदीपे – ७४
तरुणपीति – १९६
तरुणविपस्सना – २२७
तरुणसमथविपस्सनापञ्ञाय – २२६
तस्सज्झासयं – २४
तापसपब्बज्जं – ३०
तारकरूपानीति – ४७
तालवण्टं – ५९
तावतिंसभवनं – ९४
ताळच्छिग्गळेन – ६२
तिकचतुक्कज्झानतो – १९९
तिक्खपञ्ञा – १०४
तिणवत्थारककम्मं – २०६
तिणसीहो – १०
तिण्णं – ३, ४०, ४१, ६९, ७०, १६९, १९०, २००
तित्थियपरिवासं – ४०
तित्थियाति – १६
तित्थियानञ्हि – २२
तिन्दुकखाणुकपरिब्बाजकारामे – १०
तिपिटकपरियत्तिप्पभेदे – २३०
तिपिटकमहासीवत्थेरो – ५९
तिब्बच्छन्दो – २०३
तिरच्छानयोनिगामिनिया – १५५
तिरच्छानयोनियं – ५०, १८७
तिरित्तमंसं – ११
तिरियन्ति – २११
तिलक्खणाहतं – ७, १९२
तिविधकायदुच्चरितस्स – १६९
तिवेदनो – २१३
तिवेदनं – २१३
तिसन्धिपल्लङ्कं – ५१
तीरणपरिञ्ञा – २२१
तुच्छकुम्भीव – १७
तुच्छपुरिसाति – २५
तुट्ठिबहुलो – १०३
तुण्हीभूतोति – २३
तेचीवरिकङ्गञ्च – १७८
तेजसि – १३५
तेजो – १३३
तेजोधातूति – १९९
तेपिटकबुद्धवचनसवनं – २००
तेपिटके – ७३, २१६
तेभूमकधम्मा – १५४
तेरसधुतङ्गसमादानं – १९
तेविज्जसुत्तं – ४०

थ

थद्धभावो – १९५
थद्धमच्छरियभावो – ११८
थद्धो – २१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थम्भरहितो – १२७
थामवता – ७१
थिनमिद्धं – १८२
थिरगहणो – ९२
थूपन्ति – १७४
थूलन्ति – १०
थूलसरीरो – ११
थेरसल्लापो – ५९
थेरोति – ८४,१६४

द

दक्खिणाति – १६२
दक्खिणाविसुद्धियोति – १८९
दक्खिणेय्यग्गीति – १६२
दक्खिणेय्यताय – १२२
दण्डदीपिकं – १४०
दण्डमाणवकानि – १३६
दन्तकूटं – २०
दन्तोति – २३
दन्धाभिञ्ञा – ६७
दमा – १८६
दसअकुसलकम्मपथकम्मं – १८७
दसकसिणआनापानवसेन – १८६
दसकुसलकम्मपथधम्मं – ३०
दसदुस्सील्यधम्मं – २०१
दसबलं – २२, २६, १३९
दसब्यामट्ठाने – ५४
दससहस्सचक्कवाळदेवता – ७५
दससहस्सिलोकधातु – ६२
दससीलानि – २०२
दसायतनानि – १६३
दसुत्तरतो – ७४
दसुत्तरसुत्तन्ते – ७२
दस्सनञाणं – १५१
दस्सनसमापत्ति – ६४, ६५
दस्सनसमापत्तियं – ५३
दस्सनसमापत्तीति – ६४, ६५
दस्सनानुत्तरियं – १६८, २००
दहरभिक्खुनी – १६०
दळ्हनेमि – २९
दळ्हपाकारतोरणन्ति – ५७
दळ्हसमादानोति – ९२
दळ्हुद्धापन्ति – ५७
दाठानागसङ्घत्थेरेन – २३०
दानकारणानीति – २०७
दानपच्चया – २०८
दानपारमिं – १६४
दानमयं – १६४, १६५
दानवत्थूनीति – २०७
दानसालं – ९५
दानसीलमया – १६३
दानसंविभागेति – ९३
दानादिसङ्गहकम्मं – १००
दानूपपत्तियोति – २०८
दायज्जं – ३०, १२३
दायादा – ४१
दारभरणाय – ११७
दारुचक्कं – २२३
दारुपत्तिकन्तेवासीति – १०
दालिद्दियन्ति – ३२
दासकम्मकरा – १२२
दिट्ठधम्मसुखविहारज्झानानि – ७२
दिट्ठधम्मसुखविहारायाति – १७२
दिट्ठधम्मसुखविहारं – १५९
दिट्ठधम्मिका – ८६,१५५
दिट्ठबुद्धगुणा – ५४
दिट्ठाविकम्मं – २०६
दिट्ठिजुगतं – १६५
दिट्ठिनिज्झानक्खन्तिया – ५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठिपञ्ञत्ति – ९०
दिट्ठिपटिवेधेति – २०३
दिट्ठिब्यसनं – १९२
दिट्ठिविपत्तीति – १५०
दिट्ठिविसुद्धि – १५०, १५१
दिट्ठीति – १५५, १८८
दिट्ठुपादानं – १८८
दिट्ठोघो – १८८
दिट्ठं – ६६, ८८, १०६, १८९
दित्तोति – ११
दिन्नादायिनोति – १२६
दिब्बगन्धं – ४४,४७
दिब्बचक्खु – २३, १६७, २२४
दिब्बचक्खुञाणं – १७२
दिब्बचक्खुपञ्ञा – २२४
दिब्बचक्खुपादकज्झानसमापत्ति – ६४
दिब्बयानं – १३४
दिब्बसोतञाणं – ५२
दिवासञ्ञं – १७२
दीघङ्गुलिमहापुरिसलक्खणं – ९७
दीघनिकाये – १८२, १८३
दीघपण्हिको – ९८
दीघपासादो – ८०
दीघभाणकमहासीवत्थेरो – ५८
दीघोति – १३८
दीपङ्करोति – १७३
दीपसिखा – ५६
दुक्कटमत्तं – २१
दुक्खक्खयगामिनियाति – १९४
दुक्खदुक्खताति – १५८
दुक्खदोमनस्सानं – १८३
दुक्खधम्मानन्ति – ११६
दुक्खनिरोधगामिनी – ६६,८९
दुक्खनिरोधोति – ६६,८९
दुक्खपटिपदा – ६७
दुक्खपरिजाननो – ८९
दुक्खवेदना – २१३, २१४
दुक्खवेदनियो – १४३
दुक्खवेदनं – १५८
दुक्खसञ्ञाति – १९७
दुक्खसमुदयोति – ६६, ८९
दुक्खस्सन्तकिरियायाति – २१८
दुक्खाति – १५८
दुक्खानुपस्सनाञाणे – १९७
दुक्खानुपस्सनं – १८२
दुक्खोति – ४२
दुक्खं – १३, ६२, ८४, १०१, १०३, ११६, १४३, १४४, १४६, १५८, १६२, १८४, १८७, १९४
दुच्चरितन्ति – १५२
दुच्चरितानि – १५२, १९०
दुतियज्झानसमाधि – १६८
दुतियज्झानसमापत्ति – १६९
दुतियज्झानसुखेन – १६६
दुतियपादेन – ९४
दुतियमग्गो – ६५
दुतियं झानं – ५१, १८२
दुप्पच्चक्खकरो – २१९
दुप्पटिनिस्सग्गीति – १९९
दुप्पटिविज्झाति – २२२
दुप्पटिविज्झोति – २१९, २२१
दुस्सीलोति – ६८, १२१
दूतेय्यपहिनगमनानुयोगप्पभेदं – १७८
देय्यधम्मेन – ३१
देवदत्तो – १९०
देवपुत्तमारोपि – २७
देसनाञाणकुसलतं – ७०
देसनासवनानि – १६५
देसेतीति – ६०
दोमनस्सन्ति – ११६
दोमनस्ससङ्खातं – ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोवचस्सताति – १४६
दोवारिकाति – ३२
दोसक्खन्धं – १०४
दोसमोहवसेन – २१३
दोसोति – २, १०६
द्वङ्गुलकप्पोति – १३१
द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि – ९१
द्वत्तिंसवरलक्खणप्पटिमण्डितं – ४३
द्वत्तिंससूरियानं – १४०
द्वत्तिंसिमानीति – ९१
द्वादसअकुसलचित्तसम्पयुत्तानं – १६४
द्वारं – ५८
द्विजिव्हा – १०९
द्विमूलको – २१३
द्विमूलाति – २१३
द्विवेदना – २१३
द्वेधिकजाताति – ८०

ध

धजग्गसुत्तं – १३७
धतरट्ठो – १४१
धनन्ति – २०२
धनसम्पत्ति – १०७
धमकरणं – १२६
धम्मआणं – १२९,१३८
धम्मकथिकोति – १६५
धम्मकथं – १४,८१,१३९
धम्मकामो – २१०
धम्मकायो – ४४
धम्मकायोति – ४४
धम्मकेतूति – ३०
धम्मक्खन्धाति – १८७
धम्मचक्कप्पवत्तने – ७२
धम्मचक्कं – २२३
धम्मच्छन्दोति – १७१
धम्मजो – ४४
धम्मञ्ञू – २०२
धम्मताति – ९५
धम्मतेजेन – ९४
धम्मतोति – २१२
धम्मथेरो – १६४
धम्मदानयञ्ञं – १०१
धम्मदायादो – ४४
धम्मदेसनाकाले – ५६
धम्मद्धजो – ३०
धम्मनिज्झानक्खन्तिं – १६७
धम्मनिम्मितोति – ४४
धम्मनिसन्तियाति – २०३
धम्मन्ति – २५,३०,२०१,२१८
धम्मन्वयेन – ५४,५८
धम्मन्वयोति – ५७
धम्मपटिसन्थारो – १४९
धम्मपटिसम्भिदा – ५२
धम्मपटिसंवेदिनोति – १९६
धम्मपदानीति – १८६
धम्मप्पटिग्गाहका – २७
धम्मभण्डागारिकं – २७
धम्मभूतोति – ४४
धम्मयागन्ति – १०१
धम्मरतनपूजा – ८२
धम्मरतनं – ८२
धम्मराजभावं – ८९
धम्मवादिनियो – १९९
धम्मविचयो – ६७,१५१
धम्मविनयं – ८०
धम्मसङ्गहो – ७४
धम्मसभावो – ४४
धम्मसरणा – २७
धम्मसवनञ्च – १२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मसवनायाति – ५८
धम्मसुधम्मतं – २१७
धम्मसेनापति – ५८, ७१, १४४, १५९, १८१, २१६
धम्मसेनापतिं – ११२,२१७
धम्मसंहितन्ति – ८९
धम्मस्सवनं – १६१,२१७
धम्माति – २४, ६०, १६४, १८३, २०२
धम्माधिपतेय्योति – ३०
धम्माधिपतेय्यं – १७०
धम्मानुधम्मन्ति – १००
धम्मानुधम्मप्पटिपत्तीति – १८५
धम्मानुपस्सनासतिपट्ठानन्ति – ६०
धम्मानुपस्सी – २८,१८३
धम्मानुसारीति – ६६
धम्माभिसमयो – २५
धम्मायतनं – १४७
धम्मारम्मणं – ८८
धम्मिकथा – १४१
धम्मूपसंहितन्ति – १०१
धम्मोति – ४८, ५९, ६६, १४२, २०४, २१०, २२१, २२६
धातुकुसलतापि – १४७
धातुपरिनिब्बानन्ति – ७४
धातुपरिनिब्बानं – ७४
धातुयोति – १५४, १९५, १९९
धातुसञ्ञं – ७०
धारणत्थं – ८६
धारेति – ७६,१९८
धितिमाति – ६९
धुतङ्गअप्पिच्छोति – २२६
धुतङ्गगुणे – ५२
धुतङ्गधरस्स – २१
धुतङ्गधरोति – १९
धुतङ्गसुद्धिको – १९
धुतङ्गानि – १७४, १७८, १८०, १८१
धुतङ्गं – १९, १७९, १८१
धुत्ताति – ११७
धुवसञ्ञं – १८२
धोवनसन्तोसो – १७५,१७७

न

नक्खत्ततारका – ४६
नगरं – २६, ३६, ५१, ५८, १३४
नङ्गलकट्ठकरणं – २७, २८
नङ्गलकोटिवङ्कताति – १४८
नङ्गलाति – १३३
नङ्गुट्ठं – ११, ९२
नटनाटकादिनच्चं – ११७
नत्थिकवादी – १९९
नन्दूपसेचनन्ति – १८६
नमत्थूति – १३२
नमस्सन्ति – १३२
नयग्गाहो – ५७
नलाटमण्डलं – १७
नवद्वारन्ति – २२३
नवब्यामयोत्तेन – ५४
नवलोकुत्तरधम्मदायज्जं – ४४
नवलोकुत्तरधम्मनिस्सितं – ८९
नवलोकुत्तरधम्मो – २२६
नहानोदकं – १२४
नहापितसिप्पं – १०१
नळकारदेवपुत्तो – ३६
नळकारसिप्पं – १०१
नळकारा – ३६
नागदीपे – ७४
नागवीथि – ४६
नागसेनत्थेरेन – ७५
नाटपुत्तस्स – ८०
नाटपुत्तो – ८०, ८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाटसूरिया – १३४
नातितिखिणेन – ६६
नाथकरणाति – २१०
नाधिमुच्छतीति – १५८
नानत्तसञ्ञं – १८२
नानत्ताभावं – ५८
नानाकिच्चा – ६०
नानारतनविचित्तं – ९१
नानासभावा – ६०
नाभिपि – ७७
नाभिसज्जीति – १०४
नामकायो – १९६
नामग्गहणकिच्चं – १४५
नावा – ७६, १६१
नाळन्दवासिको – ८०
नाळन्दाति – ५१
निकामलाभीति – ७२
निक्किलेसभावेन – ४२
निक्कुण्डको – ४७
निक्कोसज्जा – १२५
निक्खन्तदन्तमत्तको – ७
निगण्ठनाटपुत्तकालङ्किरियवण्णना – ८०
निगण्ठो – ८१
निगमोति – १
निग्रोधसामणेरस्स – २२०
निग्रोधाति – २३
निग्रोधो – १६
निच्चफला – १३५
निच्चलग्गहणो – ९२
निच्चविहारा – २०१
निच्चसमये – १२३, १२६
निच्छन्दरागत्ता – ६४
निज्जरवत्थूनीति – २२८
निट्ठगमनकारणं – ५९
नित्तण्हो – १४१
निदंसनकथं – १०१
निद्दासुखं – १९५
निद्देसपरियायेनाति – १८३
निद्धुमङ्गारेन – १३३
निपकोति – ६९
निपच्चकारन्ति – ४३
निब्बत्तितञ्ञानानि – १७२
निब्बत्तिलक्खणं – १७२
निब्बानथले – १२
निब्बाननिस्सितन्ति – १८४
निब्बानन्ति – ८७, २०१
निब्बानपत्तियाति – २१८
निब्बानारम्मणो – २१४
निब्बानं – ५८, ६५, १०२, १०३, १४५, १५१, १५४, १५८, १६८, १६९, १८४, १८७, १९५, १९६, १९९, २०१, २२२
निब्बिदानुपस्सनं – १८२
निब्बुतदीपसिखा – ३०
निब्बुति – १३
निब्बेधभागिया – ५२, २०१
निब्बेधभागियाति – २०१
निब्बेधभागियो – ६३, २२४
निब्बेधिकपञ्ञाति – १०४
निब्बेधिकपरियाये – १५५
निब्बेधिकायाति – १९४
निमित्तग्गाही – १४९
निमित्तानुसारीति – २००
निम्मानरतीति – १६६
निम्मितकामा – १६६
निम्मिनन्ति – १६६
नियतमिच्छादिट्ठिया – १५८
नियतोति – १५८
नियमलक्खणं – १६५
नियमो – ७०
निय्यानिकसासनं – ८३, ८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निय्यानिको – ५९
निरत्थकभावं – १८
निरपेक्खो – ३७
निरयगामिनिया – १५५
निरयोति – १९१
निरामिसो – २२५
निरुज्झतीति – १३२
निरुत्तिपटिसम्भिदा – ५२
निरुपक्किलेसो – २१
निरोगो – १७०
निरोधतण्हा – १५५
निरोधधम्मन्ति – १०३
निरोधधातुया – १५४
निरोधसच्चं – १८४,१८५
निरोधसच्छिकरणो – ८९
निरोधसञ्ञा – २०१
निरोधानुपस्सनाञाणे – २०१
निरोधानुपस्सनं – १८२
निरोधोति – ६६, १८४, २२२, २२३
निवातवुत्तीति – १२७
निविट्ठसद्धो – ४३
निसिन्नपासाणफलकं – १०
निस्सरणन्ति – १८०, १९६, २२२
निस्सरणपञ्ञोति – १७८
नीवरणप्पहानम्पि – २३
नीवरणानि – ५७, १९१
नेकतिकाति – ११७
नेक्खम्मधातूति – १५४
नेक्खम्मपाळियाति – १८२
नेक्खम्मवितक्को – १५३
नेक्खम्मसञ्ञादयोपि – १५३
नेगमा – ३१
नेचयिकाति – ९
नेपक्कन्ति – ६९
नेमि – १३५
नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्ति – ५२
नेवसेक्खानासेक्खा – १६६
नेसज्जिकङ्गं – १८१
न्हातकिलेसत्ता – १३१

प

पकतिलोकियमनुस्सानं – ६२
पक्खित्तदिब्बोजा – ४४
पगुणज्झानं – १६३
पगुणधम्मं – १६५
पगुणसमापत्तियो – २२७
पग्गहितवीरियेन – ७१
पग्गाहनिमित्तञ्च – १५०
पग्गाहो – १५०
पच्चक्खातोति – २
पच्चत्थिकतो – ९५
पच्चत्थिकेनाति – ९४
पच्चत्तं – ६९, १२७
पच्चनीकदिट्ठि – ३३
पच्चनीकधम्मे – २२५
पच्चयहेतु – ८६
पच्चयाकारञाणं – २२७
पच्चवेक्खणञाणानि – ५२
पच्चवेक्खणञाणं – २२४
पच्चवेक्खणनिमित्तन्ति – २२४
पच्चवेक्खणपञ्ञा – २२१
पच्चवेक्खतीति – ६४
पच्चुपट्ठितकामाति – १६५
पच्चुपट्ठितो – ३४
पच्चुप्पन्नसुखो – २२५
पच्चुप्पन्नो – १५७, १५८
पच्चेकबुद्धा – ५३, ५५, १७३
पच्चेकबोधिञाणं – ५५,२०२
पच्चेकबोधिपटिलाभपच्चया – ९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चेकबोधिसत्तानञ्च – ६२
पच्छिमदस्सनं – ७५
पच्छिमा – १२२
पजानना – १५१, १६९
पजाननाति – १४६, १४७, १४९, १५०
पञ्चकामगुणिको – १५४, १५६, १८८
पञ्चङ्गिकंसम्मासमाधिं – ५२
पञ्चञाणिको – २२५
पञ्चदस – ४७, ५२
पञ्चद्वारिककायो – १६८
पञ्चधम्मवण्णना – २२४
पञ्चनीवरणेपाहं – १४३
पञ्चवण्णा – ७८
पञ्चवोकारभवस्मिञ्हि – १८५
पञ्चसीलदससीलचतुपारिसुद्धिसीलपूरणकाले – ९३
पञ्चसीलानि – २०२
पञ्चातपं – २०
पञ्चाभिञ्ञा – ७३
पञ्चिन्द्रियानीति – ६०
पञ्चुपादानक्खन्धा – १५८
पञ्चुपादानक्खन्धाभिमुखं – १९६
पञ्ञत्तसिक्खापदस्स – १५२
पञ्ञवतोति – २२७
पञ्ञवाति – ६९
पञ्ञा – १७, ३२, ५१, ५२, ५३, ६६, ६७, ६८, ६९, १४६, १४७, १४९, १५०, १५१, १६६, १६७, १६८, १७०, २०२, २२४
पञ्ञाक्खन्धं – १०३
पञ्ञाचक्खु – १६७
पञ्ञाति – ६७, १६६, १६७, २२७
पञ्ञाधनं – २०२
पञ्ञाधिट्ठानं – १८७
पञ्ञापटिलाभहेतू – ५२
पञ्ञापारिपूरिन्ति – २४
पञ्ञापुब्बङ्गमं – ६६
पञ्ञाभावना – १६८
पञ्ञायाति – ६६, १०४, १०७, १८८, १९७, २०२, २२६
पञ्ञाविमुत्तस्स – ६६
पञ्ञाविमुत्ति – १४०
पञ्ञाविमुत्तोति – ६५
पञ्ञावुधं – १६७
पञ्ञावेपुल्लपत्तिया – १६८
पञ्ञिन्द्रियं – ६६, २२८
पटवासिनी – २११
पटिकूलसञ्ञी – ७०, ७१
पटिग्गाहकतोति – १८९
पटिघसञ्ञं – १८२
पटिघोति – १६३
पटिच्चसमुप्पन्नं – १०३
पटिच्चसमुप्पादकुसलताति – १४७
पटिञ्ञातकरणं – २०६
पटिपत्तिअन्तरधानन्ति – ७३
पटिपदाचतुक्कं – १८६
पटिपदाञाणदस्सनविसुद्धीति – २२७
पटिपदानुत्तरियं – १६८
पटिपदासु – ५३
पटिपन्नो – ७२, १९५
पटिपुग्गलोति – ७८
पटिप्पस्सद्धलद्धो – २२५
पटिबद्धचित्ता – १६६
पटिभानपटिसम्भिदा – ५२
पटिभानवाति – १२७
पटिभानसम्पन्नो – ६९
पटिलाभसन्तोसो – १७५, १७६, १७९, १८०
पटिविरताति – ३१
पटिविरूळ्हन्ति – ४७
पटिवेधअन्तरधानं – ७३
पटिवेधधम्मे – १९५
पटिवेधोति – ७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पटिसङ्खानबलन्ति – १४९
पटिसङ्खानुपस्सनं – १८२
पटिसन्थरणं – १४९
पटिसन्थारे – १९८
पटिसन्धिग्गहणं – ७३
पटिसन्धिवसेन – ६२,१५१
पटिसम्भिदापत्तेहि – ७४
पटिसम्भिदामग्गे – १८२, १८३
पटिसल्लानसारुप्पानीति – १६
पटिसल्लीनोति – १५
पटिस्सतिमत्ताय – १८३
पटिस्सतोति – १७९
पटिहारकन्ति – १०९
पट्ठानं – ७४
पठमज्झानसमाधि – १६८
पठमज्झानसमापत्ति – ६४
पठमज्झानसुखं – १६६
पठमज्झानं – ६३, ६४, १९६
पठममग्गवज्झा – १५७, १९२, २००
पठममग्गो – ६५, १९८
पठमं झानं – ५१, १८२
पणिधिकारककिलेसाभावा – १६९
पणीततरञ्च – २२
पणीतधातु – १५४
पणीतपणीतन्ति – ५९
पणीतभोजनदानं – ९८
पणीतलाभिता – ९८
पणीतो – २२५
पण्डरविपाकं – १८७
पण्डरो – ४१
पण्डितदोवारिकेहि – ५७
पण्डितदोवारिको – ५८
पण्डितदोवारिकं – ५८
पण्डितो – ७३, १२७
पण्डुपलासं – ९६
पण्डुसीहो – १०
पण्णसालं – ३६
पण्हिकोण्डा – ९७
पतिट्ठितसद्धो – ४३
पतितमक्कटो – ५६
पतितमुसला – ४९
पतितिथियना – १०५
पतिरूपदेसवासोति – २२३
पत्तक्खन्धोति – २३
पत्तचीवरमादाय – ५१
पत्तचीवरं – ८२
पत्तपिण्डिकङ्गं – १८१
पत्तयोगक्खेमाति – ८४
पत्तिदानं – १२३
पत्तिं – १३७
पथवीकसिणं – २११
पथवीधातुतेजोधातुवायोधातुभेदं – ८८
पथवीधातूति – १९९
पथवीरसो – १४४
पथवोजं – १४१
पदक्खिणं – २१०
पदसोधम्मं – १५९
पदालता – ४७
पदीपतेलं – ९६
पदीपसिखा – १४१
पदीपेय्यन्ति – ९६
पदुमपुप्फं – १६१
पदुमवने – १३६
पदुमवनं – १४०
पदुमुत्तरं – ३९
पधानङ्गं – २२७
पधानवीरियं – १९३
पधानसङ्खारा – १७१
पधानियङ्गानीति – १९३
पधानं – ६४, ८९, १५९, १९३, १९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पन्थघातं – ३३
पन्थदुहनन्ति – ३३
पन्थिकन्ति – १७५
पन्नरस – १७९, १८१
पपटिकप्पत्ता – २२
पबुद्धकाले – १२०
पब्बज्जाकालो – ३०
पब्बतमत्थके – १२१
पभिन्नपटिसम्भिदापरिवारे – २३०
पमाणञ्ञू – ६८
पमादट्ठानन्ति – ११५
पयिरुपासिता – १०४
पयोगो – २१२
परकुसिटनाटा – १३४
परत्तभावे – ४३
परपुग्गलविमुत्तिञाणेति – ६९
परभण्डाभिज्झायनलक्खणा – २१२
परमत्थं – १०२,१०३
परमविसुद्धसद्धाबुद्धिवीरियपटिमण्डितेन – २३०
परलोकत्थं – ८८
परवादभिन्दनं – २५
परविसये – २७, २८
परसञ्चेतनाय – १८९
पराजयोति – ८
परामसतीति – १५५
परिकम्मआलोको – १७२
परिक्खीणभवसंयोजनो – ४३
परिक्खीणा – ४३, ६५, ६६
परिच्छिन्दति – १९८
परिजाननादिकरणीयं – ४३
परिञ्ञाय – २२१
परिञ्ञेय्योति – २१९
परित्तपरिकम्मकथा – १३७
परित्ताणं – १२४, १२५
परिदीपना – ९६
परिनिब्बानतो – ७३, १७३
परिनिब्बानिकोति – २०९
परिनिब्बायतीति – ५०
परिनिब्बुतोति – २४
परिपाचनधातु – १९९
परिपुण्णकाया – ९८
परिपुण्णसङ्कप्पोति – १९
परिपुण्णसीसो – १०८
परिब्बाजकानं – २५
परिब्बाजकारामे – १५
परिब्बाजकारामं – २, १०
परिब्बाजकोति – १५
परिभोगसन्तोसो – १७५, १७७, १७९, १८०
परियत्ति – ७३
परियत्तिअन्तरधानं – ७३
परियत्तिधम्मे – १९१,१९५
परियत्तीति – ७३
परियायपथं – ५८
परियुट्ठासि – २५
परियुट्ठितचित्ता – २५
परियुट्ठितभावं – २५
परियेसनसन्तोसो – १७५, १७६, १७९
परियेसनानानत्तन्ति – २२८
परियेसितन्ति – ८८
परियोगाळ्हेन – १८५
परियोसानदस्सनत्थं – ६१
परियोसितसङ्कप्पो – १९
परिवज्जेति – १७३
परिवज्जेतीति – १७३
परिसङ्काय – १६५
परिसावचरा – ३२
परिसुद्धचित्तानं – १६७, २२७
परिसुद्धपरिवारो – १११
परिसुद्धपाळि – २३
परिसुद्धपाळिमत्तम्पि – २३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिसुद्धब्रह्मचरियचरणं – १८६
परिसुद्धभावस्स – २२७
परिळाहोति – ४८
परोपण्णास – ५२
पलिबुन्धतीति – १८८
पलिबोधा – १६०
पवत्तविञ्ञाणं – २११
पवत्तिवेदनीयं – ५०
पवरो – ७७
पवाळवण्णा – १४०
पवाळवेदिकापरिक्खित्तो – १४१
पविवेकावुधन्ति – १६७
पवुच्चन्तीति – १३३
पवेसनकनिक्खमनके – ५८
पसन्नचित्तस्स – १०८
पसादनीयसुत्तन्ते – २१७
पसादमत्तानुरक्खणे – १४
पसादसद्धाति – १९३
पस्ससुखन्ति – १९५
पहातब्बोति – २१९
पहानपधानन्ति – १८४
पहानपरिञ्ञा – २२१
पहानसञ्ञाति – १९७
पहानानुपस्सनाञाणे – १९७
पहानारामो – १८२, १८३
पहूतजिव्हालक्खणं – १०९
पाकटजरा – ३५
पाकारविवरन्ति – ५७
पाकारसन्धिन्ति – ५७
पाकारो – ५८
पाटलिपुत्तं – ६८
पाटिहारियानि – ६, ७, १७१
पाटिहारियं – २, ४, ६, ७, ८, ९, १०, १२
पाणातिपातं – ३५, ९७
पातिमोक्खन्ति – १२९
पातिमोक्खसंवरसीलं – १०१, १६८
पात्वाकासीति – ७, १०५
पाथिकपुत्तोति – ८,९
पाथिकपुत्तं – ९,१०
पादकज्झानसमाधिभावना – १७३
पादकज्झानसमापत्तिमेव – १७२
पादकुक्कुच्चं – १४१
पादकं – ६४, १५३, १८८, १९६, २२७
पादधोवनमक्खनादिखुद्दककम्मं – २१०
पादमूले – ३९, ५२, १२२, १७७
पादापच्चेति – ४१
पानट्ठाने – ११८
पानसखा – ११८
पानसोण्डा – ११७
पानानीति – ९८
पापजिगुच्छनवादो – १८, २२
पापज्झासयो – ४
पापमित्तता – १४६, २२२
पापमित्तो – १४६
पापिच्छोति – १९९
पाभतेन – ८३
पामोज्जन्ति – १९६
पामोज्जबहुलो – १०३
पायमानाति – ४२
पारगू – ४०, ४१
पारमियो – ३, ५, ९२
पाराजिकसदिसं – २१
पारिचरियानुत्तरियं – २००
पारिच्छत्तको – ९१, १४०
पारिसुद्धिपधानियङ्गन्ति – २२७
पारुतचीवरं – १७५
पावळा – १०
पावानगरवासिनो – १३९
पावारिकम्बवनेति – ५१
पासाणफलके – १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासादिकसुत्तन्ते – ७२
पासादिकसुत्तं – ८०
पाळिअत्थं – १९६
पिटकसम्पदानेन – ५६
पिटकानि – ७३
पिट्ठिमक्खनं – ९६
पिण्डगणनाय – ७०
पिण्डपातक्खेत्तन्ति – १७९
पिण्डपातसन्तोसमहाअरियवंसं – १८१
पिण्डपातसन्तोसोति – १७९
पिण्डपातिकङ्गं – १८०
पिण्डपातोति – १७९
पितुवचनं – ११३
पिपासाति – ११७
पियचक्खुना – १०८
पियदस्सनोति – १०८
पियवचनं – ९९
पियवदू – १००
पियसमुदाहारोति – २१०
पिसुणवाचा – २१३
पीठसप्पि – ९७
पीठसप्पिम्पि – ५०
पीति – ७८, ८४, १९७, २००
पीतिपामोज्जेन – १०८
पीतिभक्खा – ४४
पीतिसोमनस्सं – ५५
पीतीति – १९६
पुग्गलत्तिके – १६४
पुग्गलपञ्ञत्तियं – ५३
पुग्गलपञ्ञत्तीति – ९०
पुग्गलसम्मुखता – २०४, २०६
पुञ्ञकम्मं – ११३, १२८
पुञ्ञकिरियवत्थूति – १६५
पुञ्ञकिरिया – १६४
पुञ्ञफलन्ति – २९
पुञ्ञमुपचितं – २३०
पुञ्ञविपाकोपि – २९
पुञ्ञानुभावेन – ३६
पुञ्ञाभिसङ्खारोति – १६३
पुण्णवड्ढनकुमारस्स – ३९
पुथुज्जनकल्याणका – ४३
पुथुज्जनखीणासवानं – १९२
पुथुदिसाति – ११३
पुथुनानासमाधिपञ्ञाविमुत्तिविमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेसु – १०३
पुथुनानासीलक्खन्धेसु – १०३
पुथुपञ्ञा – १०२,१०३
पुथुसमणब्राह्मणानन्ति – २१५
पुप्फासवो – ११५
पुब्बङ्गमकम्मं – १०८
पुब्बभागमग्गक्खणे – ६६
पुब्बविदेहे – ४६
पुब्बारामे – ३९, ४०
पुब्बेकतकम्मपटिक्खेपदीपनं – ९७
पुब्बेनिवासञाणे – ५३
पुब्बेनिवासादीनि – २३
पुब्बेनिवासं – ६९, १७१
पुरत्थिमा – १२२,१२४
पुराणोदकं – १३५
पुरिमकायतो – १४०
पुरिमतण्हा – १५८
पुरिमबोधिसत्तानं – ११०
पुरिसत्तभावं – ४८
पुरिसधोरय्हेनाति – ७१
पुरिसपुग्गलो – १६४.
पुरिसलिङ्गं – ४८
पुरिसवरग्गलक्खणेहीति – ९८
पुरिसविसेसं – १०६
पुरिससीलसमाचारे – ५३
पुरिसोति – ३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरेचारिकं – १३६, १३७
पुरोहितं – ६३
पूजारहा – ३३
पूजितचीवरं – १७५
पूवसुरा – ११५
पेक्खन्ति – १२७
पेत्तिविसयगामिनिया – १५५
पेत्तिविसये – ३४
पेमनीयो – ११०
पेसकारसिप्पं – १०१
पोक्खरणिया – १३५
पोक्खरसातका – १३६
पोक्खरसातिसमोति – १०६
पोट्ठपादसुत्तन्तस्मिञ्हि – ७२
पोट्ठपादसुत्ते – १४, १५, १६, ६५
पोणं – २२६
पोनोब्भविकाति – २४
पोराणकत्थेरा – ९५
पोराणाति – १७४
पोराणं – ४१
पोसोति – ६५
पंसुकूलन्ति – १७४
पंसुकूलिकङ्गं – १७८

फ

फणहत्थका – ९७
फरुससद्देन – ३२
फरुसावाचा – २१२
फलकचीरं – १७४
फलधम्मे – १६३
फलधातुआहारचतुक्कानि – १८५
फलपञ्ञञ्च – २४
फलपञ्ञा – १८७, २२१
फलभारभरिता – ११९
फलसतिपट्ठानं – ६०
फलसमङ्गिस्सञाणन्ति – १५०
फलसमाधि – १६८
फलसमापत्ति – १७१
फलसमापत्तिझानानि – १७२
फलसमापत्तितो – १९६
फलसमापत्तिधम्मा – २१५
फलसीलं – १८७
फलासवो – ११५
फस्सनानत्तन्ति – २२७
फस्ससमुदया – १७२
फस्सो – १४२
फासुविहारायाति – १३१
फीतन्ति – ९४
फोट्ठब्बायतनं – ८८
फोट्ठब्बारम्मणं – ८८

ब

बन्धुभूते – ४१
बन्धूति – ४१
बलकायो – ३१
बलवकोपो – ३४
बलवतण्हाय – १९
बलानीति – ६०, १८७
बहलच्छन्दो – २०३
बहिद्धारूपे – १९५
बहिद्धासमुट्ठानं – १४६
बहिमुखो – १०४
बहिवङ्कपादा – ९७
बहुकारोति – २१८
बहुजन – १११
बहुजनपुब्बङ्गमो – १०८
बहुरोगो – १०७
बहुलीकम्मन्ति – १५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुस्सुतभावं – २२६
बहूपकारो – १६१, १६२, २१८, २१९
बाराणसीराजा – १६२
बालोति – १०
बाहितपापट्ठेन – १०२
बाहिरानीति – १९७
बाळ्हन्ति – ११०
बिम्बोहनं – १८१
बीजमानो – ५९
बीरणत्थम्बके – ६
बुद्धगुणा – ५४, ५५, ५९
बुद्धगुणे – ५३, ५५, ८१
बुद्धगुणेसु – ५९
बुद्धघोसोति – २३१
बुद्धचक्खुना – ११३
बुद्धआणानि – ५२
बुद्धधम्मानं – १६०
बुद्धबलं – २५, २१६
बुद्धरतनस्स – ८२
बुद्धरस्मियो – १४०
बुद्धरूपं – ४३
बुद्धवचनगण्हनपञ्ञा – ६९
बुद्धवचनं – ४४, १६७, १९५, २१०, २२०
बुद्धविनेय्या – २१८
बुद्धविसयो – ६
बुद्धसासने – ४०, ११३, १२८
बुद्धा – ३५, ४३, ५५, ५६, ५८, ७३, ७५, १३१, १३२, १३९, १४०, १७३, २१७
बुद्धानुस्सतीति – २००
बुद्धुप्पादे – १६८
बुद्धोति – ८, ७७, २३१
बोज्झङ्गकथा – २०२
बोज्झङ्गमिस्सका – ५८
बोज्झङ्गाति – ६०
बोधिचेतियआसनपोत्थकादिपूजनत्थाय – ९६
बोधिजन्ति – ८८
बोधिपक्खियधम्मा – २९
बोधिपक्खियानन्ति – ५०
बोधिपल्लङ्के – ७३, ७४, २२१
बोधिमूले – १७, ८८
बोधिसत्तकाले – १५९
बोधिसत्तभूमियं – १५९
बोधिसत्तो – ४८, ७३, ९२, ९७
ब्यग्घोति – १२
ब्यञ्जनन्ति – ८५
ब्यत्तोति – ५७
ब्यन्तीभूतन्ति – २२६
ब्याकरोतीति – ८८
ब्याधिभयं – १५१
ब्यापादधातु – १५३
ब्यापादवितक्को – १५२, १५३
ब्यापादसञ्ञा – १५३
ब्यापादो – ३३, ३४, १०५, १५२, १९९, २१२, २१३
ब्यामप्पमाणं – ५३
ब्रह्मकायो – ४४
ब्रह्मकुत्तन्ति – १३
ब्रह्मचरियन्ति – ८५, १३०, १४४
ब्रह्मचरियवासं – ४३, ८५
ब्रह्मचरियेसना – १५६
ब्रह्मचारिनियोति – ८५
ब्रह्मचारिनोति – ८५
ब्रह्मजाति – ४१
ब्रह्मजाले – १३, ४४, ६४, ६८, ७०, ८९, ११७, २११
ब्रह्मदायादाति – ४१, ४२
ब्रह्मनिम्मिताति – ४१
ब्रह्मभूतो – ४४
ब्रह्मलोका – ७५, १९९
ब्रह्मविहारा – ३७
ब्रह्मविहारादीनि – २३
ब्रह्मस्सरतं – ११०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्रह्मस्सरलक्खणं – ११०
ब्राह्मणकुलीनाति – ४०
ब्राह्मणकुले – ५०
ब्राह्मणजच्चाति – ४०
ब्राह्मणवंसो – १७३
ब्राह्मणाति – ४१, ८२, २१५
ब्राह्मणियोति – ४१
ब्राह्मणो – ५५, ६१, ६३, ७१, ८२, १३५

भ

भगवतोति – ६१, ७१
भगवाति – ५७, ५८, ५९, ६१, ७१, ११३, १३०
भग्गवगोत्तं – २
भङ्गतो – १५८
भण्डनकारका – २०६
भत्तकिच्चं – २६
भत्तपुटं – ८०
भत्तवेतनानुप्पदानेनाति – १२५
भत्तसोण्डा – ११७
भत्तानुमोदनं – २६
भद्दजिसेट्ठि – ३६
भद्दालता – ४७
भद्दियनगरे – ३९
भद्रकन्ति – १८४
भन्तेति – ४, ७, २२, ५६, ७७, ८२, ११४, १७५, १७९
भयन्ति – ९
भयसभावसण्ठितं – १४६
भरियाति – १३३
भवगवेसनरागो – १५६
भवगामिकम्मे – १०४
भवच्छन्दोति – १५६
भवतण्हा – १४५, १५४
भवतण्हाति – १४५
भवदिट्ठि – १४५, १५५
भवदिट्ठिसहगतो – १५४
भवरागो – १५६
भवलोभो – १६६
भवाभवोति – १८६
भवासवो – १५५, १५६
भवेसनाति – १५६
भवोघो – १८८
भवोति – ९२
भस्ससमाचारे – ५३, ६७, ६८
भारतयुद्धसीताहरणसदिसं – ८८
भारद्वाजो – ४०
भावनापधानन्ति – १८४
भावनापारिपूरिं – २२८
भावनाबलन्ति – १५०
भावनामयाति – १६३
भावनामये – १६५
भावनामयं – १६५
भावनारतो – १८२, १८३
भावनारामअरियवंसं – १८१
भावनारामो – १८२, १८३
भावेतब्बोति – २१९
भासितभावं – १०१
भिक्खवेति – २९, २१७
भिक्खुनियोति – ८५
भिक्खुभावं – ४०
भिक्खूति – २७, १४८, १६४, २०३, २१७
भिन्नकिलेसा – १४१
भूताति – २२१
भूतारोचनन्ति – १५९
भेदकरवाचं – ६८
भेरण्डकंयेवाति – ११
भोगवासिनी – २११
भोगविनासोति – १९२
भोगसम्पदायपि – १९२
भोगादिसम्पन्नं – ४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोगियाति – ९६
भोजनन्ति – ९९, १३३
भोजनीयानीति – ९८

म

म-कारो – १९०
मक्खनतेलं – ९६
मक्खिभावे – ३
मक्खीति – १९९
मगधक्खेत्ते – २६
मग्गदस्सने – २०३
मग्गन्ति – १२१
मग्गपञ्ञापारिपूरिं – २४
मग्गपञ्ञं – ११६
मग्गपटिपन्नेनापि – १७७
मग्गफलनिब्बानसम्पत्ति – २९
मग्गफलं – २२
मग्गब्रह्मचरियस्स – २२६
मग्गमूलेन – ४४
मग्गवसेनेव – ६०
मग्गसच्चन्ति – १८४
मग्गसमङ्गिस्सञाणं – १५०
मग्गसमाधि – १६८,१६९
मग्गामग्गञाणदस्सनविसुद्धीति – २२७
मग्गेनमग्गप्पटिपत्तिअधिवासनन्ति – २१२
मघदेववंसस्स – ३२
मङ्कुभूतोति – २३
मङ्गलअस्सं – ५०
मङ्गलउसभं – ५०
मच्चुमारोपि – २७
मच्छरियचित्तं – १३३
मच्छरियं – १०४, १९१
मच्छरीति – २१, १९९
मज्झत्तवेदना – २१४
मज्झन्तिकत्थेरो – २२६
मज्झिमकायो – २२५
मज्झिमधातु – १५४
मज्झिमनिकाये – ४०, १८२, १८३
मज्झिमपदेसे – ५७
मज्झिमयामोति – ४६
मञ्चपीठसुखं – १९५
मञ्चपीठं – ९६
मञ्ञतीति – १२
मञ्ञनलक्खणेन – २१
मणिमयं – १३३
मतसरीरं – ६
मतिमाति – ६९
मत्तञ्ञूति – ६८
मत्तप्पटिग्गहणसन्तोसो – १७५, १७६, १७९, १८०
मत्तेय्यतायाति – ९३
मदप्पमादा – ३१
मधुपानं – १४१
मधुरमंसानीति – ११
मधुररसे – १२६
मधुररसं – ४७
मध्वासवो – ११५
मनसाति – ८८
मनसिकरोतीति – १७२
मनसिकारकुसलताति – १४७
मनापसुत्तं – १७७
मनिन्द्रियं – २२८
मनुञ्ञदस्सनं – १३३
मनुस्सधम्माति – २
मनुस्सभूतो – ८७, ९२
मनुस्सराहस्सेय्यकानीति – १६
मनुस्सलोकगामिनिया – १५५
मनोकम्मं – १२६, १५६, १६०, १६४
मनोगणनाय – ७०
मनोदुच्चरितं – १५२, १५९, १६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनोपदोसिका – १६०
मनोपदोसोति – ३४
मनोपरिञ्ञा – १६९
मनोभावनीयानन्ति – १५
मनोमयिद्धिञाणं – ५२
मनोमोनेय्यं – १६९
मनोविञ्ञाणधातु – १४७
मनोविञ्ञाणं – १६३
मनोसङ्खारा – ६३
मनोसञ्चेतना – १४२
मनोसम्फस्सजं – १६३
मनोसम्फस्सोति – १९७
मनोसुचरितन्ति – १५२
मन्तभाणिनोति – १३१
मन्तस्साजीविनोति – ३२
मन्ताति – ६८
मन्दनिग्घोसानि – १६
मन्दसद्दानि – १६
ममत्तविरहिता – १३३
मयूरकोञ्चाभिरुदाति – १३५
मरणभयन्ति – १५१
मरणवधभयत्तनोति – ९७
मरणवधभयं – ९७
मरणवधेनाति – १०८
मरणवधो – ९७
मरणसञ्ञाति – २२८
मरणानुपस्सनाञाणे – २२८
महाउदायीति – ७८
महाकरुणासमापत्तितो – २६
महाकस्सपत्थेरस्स – ७३
महाकस्सपं – ११३
महागङ्गाय – ३६
महाचेतियं – ७४
महाट्ठकथाय – २३०
महाथेरोति – १५७
महादानं – २६
महाधनधञ्ञनिचयो – ९
महानेरूति – १३३
महापञ्ञा – १०२
महापथवितो – ५४
महापथवी – ९४
महापनादो – ३६
महापरिनिब्बाने – ८५, १९३
महापुरिसनिमित्तानि – ९१
महापुरिसलक्खणानीति – ९१, ९२
महापुरिसलक्खणं – ९४, ९७, १०५
महापुरिसवितक्के – ५२
महापुरिसोति – ९१
महाबन्धनाति – १२
महाबोधिपल्लङ्के – ७५
महाब्रह्मा – ७८, १४१
महामङ्गलकथा – १३७
महामोग्गल्लानं – ११३
महाविदुग्गाति – १२
महाविहारवासीनं – २३१
महाविहारसमापत्तियं – २१९
महासक्कारे – ८५
महासतिपट्ठाने – २७, ६७
महासत्तो – ७३, ९३
महासमुद्दो – ५३, ५४, ५५, ९२
महासीवत्थेरो – ६८, १४४, १७८
महासुदस्सने – ३२
महेसिनोति – १३१, २३१
महोदरा – १३३
मातापितरो – ३५, ११२, ११३, १२२, १२३, १२४, १४५, १६०
मातिकानं – १७४
मातुलनगरवासिनो – २६
मातुलरुक्खं – २६
मातुलानीति – ३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मानथद्धतं – २
मानद्धजं – १७, २३
मानसिकपरियादानत्थं – १५०
मानो – १५६, २२०
मायावीति – २१, १९९
मारबलन्ति – ३८
मारो – २५, २८, ४३, ५५, ७७, १५९
मारोति – २७
मालाकम्मलताकम्मपटिमण्डितं – ९६
मालं – ९६
मिगरञ्ञोति – १०
मिगराजा – ११
मिगसञ्ञन्ति – ३४
मिगारमाताति – ३९
मिगारमातुपासादेति – ३९, ४०
मिगारसेट्ठिपुत्तस्स – ३९
मिच्छत्तनियतोति – १५८
मिच्छत्ताति – २०७
मिच्छा – ५, ७७, ८५, २००, २१२
मिच्छाचारोति – २११
मिच्छादिट्ठि – १५०, १८८, २१२, २१३, २२८
मिच्छादिट्ठिकम्मसमादानहेतूति – ४९
मिच्छादिट्ठिकम्मस्स – ४९
मिच्छादिट्ठिवसेन – ४९
मिच्छादिट्ठीति – ३३, १५२, १९९
मिच्छाधम्मोति – ३३
मिच्छापटिपन्ना – १६२
मिच्छासङ्कप्पो – १५३
मिच्छासभावो – १५८
मित्तकरोति – १२७
मित्तपतिरूपका – १२०
मित्तविन्दको – १६०
मित्तामच्चा – १२२
मिद्धविनोदनआलोको – १७२
मिद्धसुखन्ति – १९५
मिलिन्दरञ्ञापि – ७५
मुखच्छेदकवादं – ४२
मुखोदकदन्तकट्ठं – १२४
मुट्ठस्सच्चन्ति – १४९
मुण्डसमणकस्स – ४१
मुतन्ति – ८८
मुतपरिसङ्कितेन – १६५
मुत्ततालपक्कं – ८
मुत्ताति – ६३
मुदुचित्तो – २०७, २०८
मुदुपुप्फाभिकिण्णा – ९४
मुदुमद्दवचित्तं – २९
मुदुमंसानीति – १०
मुद्दा – १०१
मुसावादादिचेतना – १५२
मुसावादूपसञ्हितन्ति – ६७
मुसावादेन – ६, ९, १३
मुसावादं – ३३, ४३, ६८
मूलकसोण्डा – ११७
मूलघच्चन्ति – ३२
मूलतोति – २१२, २१३, २१४
मूलपरियाया – ७४
मूसिकाभयत्थेरो – १८७
मेण्डकसेट्ठिपुत्तस्स – ३९
मेत्तचित्तं – ३४, १२६, १३७
मेत्तसुत्तं – १३७
मेत्ताकम्मट्ठानं – २१७
मेत्ताचेतोविमुत्ति – १४९, १९९
मेत्ताचेतोविमुत्तीति – १५४, १९९
मेत्ताझानानि – १९६
मेत्तानिसंसे – ५२
मेथुनधम्मं – ४९
मेधङ्करो – १७३
मेधावीति – ५७,१२७
मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरस्स – ७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोग्गल्लानो – २१८
मोघपुरिसाति – २, ३
मोघमञ्ञन्ति – ८९, ९०, १८८
मोनेय्यप्पटिपदा – १६९
मोरगीववण्णा – १४०
मोरनिवापोति – १७
मोहक्खन्धं – १०४
मोहागतिं – ११५
मोहो – १४९, १५२
मंसखण्डं – ११
मंसचक्खु – १६७
मंसचक्खुना – १४१, १६५
मंसभोजनं – १९

य

यक्खचेतियट्ठानं – ७
यक्खदोवारिका – १३५
यक्खपरिचारको – १३६
यक्खपिसाचादीनं – ६३
यक्खराजआणं – १३८
यक्खा – १३१, १३४
यथाकामलाभी – ७२
यथानुरूपं – २०६
यथाबलसन्तोसो – १७४, १७५, १७६, १७९
यथाभूतञाणदस्सनं – १८२
यथाभूतन्ति – ५८
यथालाभसन्तोसादयो – १८०
यथालाभसन्तोसो – १७४, १७५, १७६, १७९
यथासारुप्पसन्तोसोति – १७४
यन्तसालाय – १३५
यमकपाटिहारियं – ९४
यमकमहानदीमहोघो – ५४
यसग्गप्पत्तोति – ७
यसत्थेरस्स – ७३
यागुभत्तं – २, ४९, ९५, ९६
युगन्धरपब्बतं – ९४
युगेहि – १०
युत्तपटिभानो – ६९
यूपोति – ३६
योगक्खेमकामोति – १०७
योगक्खेमं – ८४
योगो – ३८
योनिजाव – ४२
योनियोति – १८८
योनिसोमनसिकारमूलके – ५२
योनिसोमनसिकारोति – १८५
योब्बनमदो – १७०

र

रक्खणकिच्चं – १५९
रक्खतीति – ३१, १२०
रक्खावरणगुत्ति – ३१
रजतमयं – १३३
रजनदोणिकं – ९६
रजनसन्तोसो – १७५, १७७
रजनीया – २८
रजनं – ९६, २१०
रतनचक्कं – २२३
रतनपूरिता – ७७
रतनमण्डपो – १३५
रतनसुत्तन्ति – १३७
रत्तकम्बलपरिक्खित्तो – १४०
रत्तिन्दिवाति – ४७
रत्तियाति – १२९, १३०
रथस्साणीव – १२७
रन्धगवेसिनो – १०४
रभसाति – १३६
रमतीति – १८२, १८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रसगिद्धा – ४१
रसग्गसग्गिलक्खणं – १०७
रसन्ति – ४७
रसपथविं – ४५
रससम्पन्नाति – ४४
रससम्पन्नानं – ९८
रसायतनं – ८८
रसारम्मणं – ८८
रागग्गीति – १६०
रागदोसमोहनिम्मदनसमत्थो – ५९
रागनिमित्तादीनं – १६९
रागादिखिलानञ्च – १११
राजआणं – १२९
राजकथादितिरच्छानकथं – ८८
राजगहे – १६
राजगहं – २५, ११२, ११३, १२७
राजञ्ञानीति – १०१
राजतो – ९५
राजधम्मं – ३२
राजपब्बजिता – ३०
राजपवेणिं – ३२
राजवल्लभो – ११५
राजवंसं – ३२
राजाति – ११२, १३५, १५७
राजायतनचेतियं – ७४
राजिनोति – १३४
राजिसयोति – ३०
राजिसिम्हीति – ३०
रित्तकुम्भिसदिसं – १७
रित्तघटं – १७
रुक्खदुस्सं – १७४
रुक्खमूलिकङ्गं – १८१
रुप्पनट्ठेन – १४५
रूपकायञ्च – १८८
रूपक्खन्धं – १८५
रूपतण्हा – १५५
रूपपतिट्ठितं – १८५
रूपपरिळाहो – २२८
रूपसञ्जाति – १९७
रूपादिगोचरतो – १५
रूपायतनं – ८८
रूपारम्मणन्ति – १८५
रूपावचरकुसलचेतनानञ्चेतं – १६३
रूपियप्पटिग्गाहणापत्तिं – १५९
रोगब्यसनं – १९२

ल

लक्खणत्तयं – ९७, १०७
लक्खणद्वयं – १००, १०१, १०७, १०८, १०९, ११०, १११
लक्खणनिब्बत्तनसमत्थं – ९२
लक्खणानिसंसो – ९४, ९७
लज्जवन्ति – १४८
लज्जासभावसण्ठिता – १४६
लज्जिधम्मे – २०६
लज्जीभावो – १४८
लतादुस्सं – १७४
लापो – २७, २८
लाभग्गप्पत्तोति – ७
लाभग्गयसग्गपत्तन्ति – ८५
लाभनानत्तन्ति – २२८
लाभसक्कारसिलोकन्ति – १९
लाभसक्कारो – २२, ७५, १२४, १५७
लाभिरुत्तमन्ति – ९९
लामकं – ७२
लाळुदायी – ७८
लिङ्गविपल्लासो – ६
लुद्दाचारकम्मखुद्दाचारकम्मुना – ४९
लुब्भतीति – १५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लूखतपस्सिनो – २१
लूखाजीविन्ति – २०
लेखा – ४६, १०१
लेहनीयानीति – ९८
लोकधम्मा – २०८
लोकधातु – ७२,७६
लोकधातुयाति – ७२
लोकन्तरवासी – ५९
लोकपञ्ञत्तिं – ३
लोकविनासो – ३४
लोकवोहारवसेन – ६५
लोकसमुदाचारवसेन – २
लोकाधिपतेय्यं – १४६,१७०
लोकियधम्मेन – १०७
लोकियलोकुत्तरपञ्ञा – १६७
लोकियलोकुत्तरा – १९१, २०२, २२२
लोकियानि – १९५
लोकियो – १९१
लोकुत्तरधम्मा – ७१,१५४
लोकुत्तरो – १४७, १५३
लोकुप्पत्तिचरियवंसं – ४१
लोकुप्पत्तिवंसकथं – ४७
लोकुप्पत्तिसमये – ४८
लोकोति – १५६, २३०
लोभो – १५२, २१३
लोमहंसनकरं – ९५
लोमहंसोति – ९
लोलजातिकोति – ४४
लोलुप्पविवज्जनसन्तोसो – १७५, १७६, १७९, १८०
लोहितचन्दनं – १६१

व

वक्कलित्थेरो – १९०
वङ्कक्खि – १०८
वङ्कादिदोसविरहितं – ५९
वङ्गीसत्थेरो – ६९
वचनपटिकरा – १००
वचीकम्मं – १२६, १५६, १६०, १६४
वचीदुच्चरितं – १५२, १६०
वचीपरमोति – ११९
वचीमोनेय्यं – १६९
वचीसङ्खारनिरोधा – १६९
वच्छायनो – ५६
वजिरनाळियो – ३९
वज्जनीयधम्मवज्जनत्थं – १२२
वज्जप्पटिच्छादनकम्मं – १०६
वज्जिगामेति – ३
वज्झभेरिया – ३२
वञ्चनिका – ११८
वट्टगामी – २९
वड्ढितुकामेहि – ३७, ३८
वड्ढिस्सति – ३२
वण्णकसिणं – १३
वण्णमच्छरियं – १९१
वण्णवादीति – १७८
वण्णसम्पन्नाति – ४४
वत्थदानेन – १०५
वत्थमालालङ्कारसरीरसमुट्ठिताय – १३१
वत्थारम्मणं – १७२
वत्थुकामा – २२६
वत्तपटिपत्तियं – ३०
वधकचित्तन्ति – ३४
वनकुक्कुटका – १३६
वयधम्मं – १०३
वयानुपस्सनं – १८२
वलाहका – १३५
वल्लि – ६
वस्सूपनायिकाय – २१७
वाकचीरं – १७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाक्करणसम्पन्नो – ६९
वाचापरिञ्ञा – १६९
वातपूरिता – ९४
वादानुवादोति – ७८
वामना – ९७
वायमतीति – १७१
वायोकसिणे – १४३
वायोधातूति – १९९
वासेट्ठभारद्वाज – ५०
वाहनं – १३४
वाळकम्बलं – १७४
विकालविसिखाचरियानुयोगोति – ११५
विक्खम्भितरागस्स – २०८
विगतदरथकिलमथोति – १११
विगतपापो – १११
विगतलोभगिद्धो – १७८
विघातपरिळाहवेदनञ्च – १९६
विघातोति – १९६
विघाससंवड्ढोति – ११
विचिकिच्छतीति – १५८
विचिकिच्छा – १५५, १५८, १९२, २००
विचिकिच्छासङ्घातो – १९५
विजनवातानीति – १६
विजम्भनकाले – ११
विजाननधातु – १९९
विजायमानाति – ४२
विज्जाति – १०१, १५१, १७०, २२२
विञ्ञाणकसिणन्ति – २११
विञ्ञाणकायाति – १९७
विञ्ञाणट्ठितियोति – १८५
विञ्ञाणधातूति – १९९
विञ्ञाणसमूहा – १९७
विञ्ञाणसोतन्ति – ६४
विञ्ञाणं – ४३, १०३, १४२, १४५, १६७, १८५
विञ्ञातन्ति – ८८
विञ्ञातारं – ८६
विञ्ञूहि – १७४
वितक्कमाळके – १७९
वितक्कविचारे – १८२
वितक्कविप्फारसद्दन्ति – ६३
वितक्कसन्तोसो – १७५, १७९
वितक्कसहगता – २२४
वितक्केस्सतीति – ६३
वितक्कोति – १७५
वित्थम्भनधातु – १९९
विदितकरणट्ठेनापि – १७०
विदितट्ठाने – ५७
विदिताति – १३, ५६
विद्धंसेतीति – १९२
विधाति – १५६
विनट्ठरूपो – १०
विनयट्ठकथायं – १४९
विनयधरोति – १४५
विनयपिटके – ७४
विनयसम्मुखता – २०४
विनासचिन्ता – २१२
विनासमुखानि – ११४
विनासेतीति – १९२
विनिच्छयनयो – २०४, २०६
विनिपातेति – १८०
विनीवरणं – १५
विनेय्य – २८
विनोदेतीति – १७३
विपरिणामदुक्खताति – १५८
विपरिणामानुपस्सनं – १८२
विपरीतचित्तो – १३
विपरीतसञ्ञो – १३
विपरीतोति – १३
विपस्सना – ५८, १५०, १६८, १६९, १८४, २२२
विपस्सनागब्भं – २१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विपस्सनागमनेन – १६८, १६९
विपस्सनाञाणेन – २२६
विपस्सनाञाणं – ५२, १५१
विपस्सनाति – ५८
विपस्सनानन्तरो – २२१
विपस्सनानिस्सन्दो – १९५
विपस्सनापञ्ञा – ६९, १६८
विपस्सनापादकज्झानं – ७२, १६८
विपस्सनाभावञ्च – १८४
विपस्सनामग्गेन – १६३
विपस्सनामत्तकम्पि – १८४
विपस्सनायेतं – २०३
विपस्सनं – ६३, १५१, १७५, १९७
विपस्सीयेव – १३१
विपाकज्झानसुखं – १६६
विपाकन्ति – ६
विपाकविञ्ञाणन्ति – १८६
विपाकोति – ६
विपाकं – ६, २९
विपापोति – १११
विपुलत्ताति – ९३
विपुललाभी – ७२
विपुलविसुद्धबुद्धिना – २३१
विप्पटिपन्ना – १२३
विभवतण्हा – १५४
विभवदिट्ठीति – १४५
विमानवत्थुस्मिं – १६२
विमुच्चतीति – १९६
विमुत्तानुत्तरियं – १६८
विमुत्तायतनानीति – १९६
विमुत्ति – ५१, १९७, २२२
विमुत्तिक्खन्धं – १०३
विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्ना – १४०
विमुत्तिञाणदस्सनं – ५१, ५२
विमुत्तिपरिपाचनीयाति – १९७
विमुत्तीति – १५१, २२२
विरत्तरूपाति – ८०
विरागधम्मं – १०३
विरागसञ्ञाति – १९७
विरागानुपस्सनाञाणे – १९७
विरागानुपस्सनं – १८२
विरागो – १८४
विरुज्झतीति – १४२
विरुद्धवचनं – ८०
विरूळ्हं – ४७
विलासिनिं – २३०
विवटेन – १७२
विवट्टगामिकुसलं – २९
विवट्टगामी – २९
विवट्टानुपस्सनं – १८२
विवादाधिकरणं – २०४,२०५
विवाहका – ११७
विविधपक्खिसङ्घसमाकुला – १३५
विवेकजं – ३७
विवेकट्ठकायानं – १६७, २२७
विवेकनिन्नन्ति – २२६
विवेकनिस्सितन्तिआदीसु – १८४
विवेको – १८४
विसङ्खारगतानन्ति – २२७
विसटोदको – १३२
विसदञाणो – ५७
विसमट्ठितावयवलक्खणो – १००
विसमलोभोति – ३३
विसयखेत्तं – ७२
विसहीति – ३
विसाखा – ४०
विसाखाति – ३९
विसिट्ठो – ७७
विसुद्धिमग्गतो – १७८
विसुद्धियाति – २२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसेसत्थपरिदीपना – ९६
विसेसभागियोति – २१९
विसेसाभावतो – ७५
विसंयोगो – १३०
विसंयोजेन्तीति – १८८
विस्सकम्मदेवपुत्तं – ३६
विस्सज्जनसन्तोसो – १७८, १८०
विस्सट्ठकम्मट्ठाना – १८४
विस्सट्ठसब्बएसनोति – २१५
विस्सासकरणं – २६
विहरतीति – १, ५१, ७०, ७१, ८४, २०१
विहारङ्गणं – २०
विहारसमापत्तियो – १०२, १०३
विहिंसाधातु – १५३
विहिंसाधातूति – १५३
विहिंसावितक्को – १५२, १५३
विहिंसासञ्ञा – १५३
वीतदोसो – १४१
वीतमोहो – १४१
वीतरागो – १४१
वीतसारदाति – १३२
वीथियोति – ४६
वीरियसम्बोज्झङ्गसीसेन – १५०
वीरियारम्भेति – २०३
वीरियिन्द्रियं – २२८
वीरियं – २२, ६४, ७१, ८४, १५०, १५१, १७१, २०७
वीसतिब्यामट्ठाने – ५४
वुट्ठानकालपरिच्छेदका – १४७
वुट्ठानकुसलता – १४६, १४७
वुट्ठानगामिनिविपस्सना – २२७
वुट्ठानपरिच्छेदजानना – १४६
वुत्तप्पटिपक्खनयेन – १४६, १४९
वुसितवा – ४३, १३०
वूपसमनत्थञ्च – २०४
वूपसमायाति – २०४
वेठनं – ११७, १२७
वेदतुट्ठिपामोज्जबहुलो – १०३
वेदनाक्खन्धस्स – १७२
वेदनाछक्कम्पि – १९७
वेदनाति – १४५
वेदनातोति – २१३, २१४
वेदनानानत्तन्ति – २२८
वेदनानिरोधो – १७२
वेदनानुपस्सनासतिपट्ठानं – ६०
वेदनानुपस्सी – २८, १८३
वेदनापरिग्गहसुत्तन्तकथनदिवसे – ५८
वेदनायसमुदयो – १७२
वेदनासमुदयो – १७२
वेदनासु – २८, १८३
वेदबहुलो – १०३
वेदयतीति – १९६
वेदानं – ४०, ४१
वेदेतीति – १९६
वेधञ्ञनामका – ८०
वेधञ्ञा – ८०
वेपुल्लत्तञ्चाति – २४
वेभूतियवाचा – ६८
वेय्यञ्जनिकाति – ९५
वेय्याकरणन्ति – ७९
वेय्यावच्चकरभावं – १०९
वेरप्पसवोति – ११८
वेरमणियाति – १३१
वेरमणी – २१४
वेसालिन्ति – ७
वेसालीनगरे – ३
वेस्सवणो – १३१, १३६
वेस्सवंसो – १७३
वेस्सामित्तपब्बतवासी – १३८
वेस्सामित्तोति – १३८
वेळुकारो – २१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेळुगुम्बो – १८१
वेळुदुस्सन्ति – १७४
वेळुवनन्ति – ११२
वोस्सग्गपरिणामिन्ति – १८४
वोस्सज्जनेन – १२६

स

सउपधिकाति – ७०
सकटं – ७७
सकदागामिनोपि – २१७
सकदागामी – ५३, ६३, १९०
सकभावेन – ७५
सकलचक्कवाळगब्भे – ५३
सकलसरीरचलनं – ९
सकलसासनब्रह्मचरियस्स – ८९
सक्कच्चकिरियतो – ८०
सक्काति – २५, ४९
सक्कायदिट्ठि – १५५
सक्कायनिरोधोति – १५८
सक्कायनिस्सरणन्ति – १९६
सक्कायसमुदयोति – १५८
सक्कायोति – १५८
सक्को – ३६, ७७, ९२, १४१
सक्खरा – ९४
सक्यपुत्तियोति – ४
सक्याति – ८०
सखिलन्ति – ११०
सगुणतो – १६८, १६९
सग्गपरायणो – १२८
सग्गसंवत्तनिका – ३२
सग्गस्स – ३२, १२१
सङ्कप्पनानत्तं – २२८
सङ्खतनिरोधस्स – २२३
सङ्खता – २२२
सङ्खारक्खन्धो – १४६
सङ्खारट्ठितिकाति – १४३, १४४
सङ्खारदुक्खताति – १५८
सङ्खारा – ६६, १०३, १४५, १५८, १६३, १७१
सङ्खारोति – १४४
सङ्गहवत्थूनीति – १८९
सङ्गहितपरिजनाति – १२५
सङ्गाहकभावं – १००
सङ्गीतिकारेहि – ७९
सङ्गीतिपरियायन्ति – २१६
सङ्गीतीति – ७३
सङ्घरतनस्स – ८२
सङ्घसुप्पटिपत्तिञ्च – २१७
सङ्घादिसेसे – २०६
सङ्घोति – ५९, १९३
सच्चकथनं – १०९
सच्चपञ्ञत्ति – ९०
सच्चप्पटिवेधो – ७३
सच्चवचनं – ४२
सच्चानुलोमिकञाणं – १५०
सच्छिकरणीयाति – १८८
सच्छिकरोतीति – १०३
सच्छिकातब्बोति – २१९, २२१
सज्झायकरणं – १२४
सञ्चरित्तं – १५९
सञ्जातपुप्फाति – ४२
सञ्जातिसङ्गहो – १६२
सञ्ञानानत्तं – २२८
सञ्ञापेतब्बोति – ८६
सठोति – १९९
सण्हेनाति – १९३
सतण्हो – १९
सततकिरियाय – १९४
सततविहाराति – २०१
सतपुञ्ञलक्खणन्ति – ९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सति – २९, ७५, ८५, ११३, १४९, १५०, १५५, १७८, १८०, १८३, २१४, २२४
सतिनेपक्केति – २०३
सतिन्द्रियं – २२८
सतिपट्ठानचतुक्कं – १७१
सतिपट्ठानन्ति – ८५, ८६
सतिपट्ठानभावनाय – ५८, ९०
सतिपट्ठानाति – ५०, ५८, ६०, ८५, ८६
सतिपट्ठानानीति – ८५
सतिबलञ्च – १५०
सतिबलन्ति – १५०
सतिमाति – ६९
सतिसम्पजञ्ञस्स – १७२
सतिसम्पजञ्ञायाति – १७२
सतिसम्पजञ्ञं – २२०
सतिसम्बोज्झङ्गो – १८४
सत्तबोज्झङ्गा – १५०
सत्तरतनानि – १०१
सत्तविधअरियधनलाभो – २००
सत्तसत्तति – ५२
सत्ताति – ३३, १४२
सत्तावासदेसना – ५२
सत्तावासाति – २०९
सत्तोति – ४८
सद्दायतनं – ८८
सद्दारम्मणं – ८८
सद्धम्मस्सवनन्ति – १८५
सद्धम्मं – ८४
सद्धा – ४३, ७१, १९३
सद्धादयो – २०२
सद्धाधनं – २०२
सद्धानुसारिम्हिपि – ६६
सद्धानुसारीति – ६७
सद्धापुब्बङ्गमं – ६७
सद्धाविमुत्तो – ६६
सद्धाविमुत्तोति – ६६
सद्धासम्पन्नो – ६८
सद्धिन्द्रियं – ६६, २२८
सद्धिविहारिको – १३०
सद्धिविहारिकं – ८२
सद्धोति – १६५, १९३
सनिदस्सनं – १६२
सन्तुट्ठो – १७४, १७८, १८१
सन्दिट्ठिकाति – ११६
सन्दिट्ठिपरामासी – २१
सन्दिट्ठिपरामासीति – १९९
सन्धागारं – १३९, १४०
सन्धानो – १५, १६
सन्निट्ठापकचित्ते – २१३
सन्निट्ठापकचेतना – २१३
सन्निधिकारकन्ति – ४८
सन्निधिपरिवज्जनसन्तोसो – १७५, १७८, १७९, १८०
सपच्चयनामरूपदस्सनं – २२७
सपदानचारिकङ्गं – १८०
सपरिळाहट्ठेन – २२६
सप्पटिघं – १६२, १६३
सप्पटिभागं – ५९
सप्पभासन्ति – १७२
सप्पाटिहीरकतन्ति – ८४
सप्पिनवनीतादीनि – ९८
सप्पुरिसधम्मा – २०२
सप्पुरिससंसेवोति – १८५
सप्पुरिसूपनिस्सयोति – २२३
सब्बकिरियानं – ३०
सब्बकिलेसपरिनिब्बानत्थाय – २४
सब्बकिलेसानञ्च – १११
सब्बगन्थप्पमोचनन्ति – २१८
सब्बञ्ञुतञ्ञाणगतिको – ५७
सब्बञ्ञुतञ्ञाणञ्च – २०२
सब्बञ्ञुतञ्ञाणञ्चाति – ५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सब्बञ्ञुतञ्ञाणप्पटिलाभपच्चया – ९३
सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन – ८७, १३२, १४४, २१६
सब्बञ्ञुतञ्ञाणं – ५७, ५८
सब्बञ्ञुनो – ४
सब्बञ्ञुपवारणं – १८
सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं – ६२,१९३
सब्बतण्हा – १५४
सब्बभूतानुकम्पिनो – १३१
सब्बलोकियमहाजनतो – ५३
सब्बलोकेअनभिरतिसञ्ञाति – २२८
सब्बवट्टदुक्खक्खयाय – ३
सब्बसमापत्तियो – २२४
सब्बावन्तेहि – ९३
सभावपकति – ७७
सभियपुच्छा – ७४
समकारीति – ६८
समचारी – ६८
समज्जागमनं – ११५
समज्जाभिचरणन्ति – ११५
समणञ्ञानीति – १०२
समणधम्मकरणवीरियं – ६९
समणधम्मं – ८६,१८०
समणपदुमो – १९०
समणपुण्डरीको – १९०
समणब्राह्मणा – ३१, ३४, ७१, ७२, १२२, १७४
समणमचलो – १९०
समणमण्डलं – ४९
समणवंसो – १७३
समणसुखुमालो – १९०
समणानुच्छविकानीति – १०२
समणारहानीति – १०२
समणूपभोगानीति – १०२
समणो – ४, ५, ९, १०, १३, १६, १८, ५५, ६१, ७१, ८१, ८७, १५९
समथनिमित्तं – १५०
समथविपस्सना – २४,६०
समथविपस्सनाचित्तस्स – २०७
समथविपस्सनामग्गवसेन – ६०, १८७, १९५
समथविपस्सनाय – ६३
समथो – १५०,२२२
समदन्तलक्खणञ्च – १११
समन्तपरिपूरानि – १०७
समसङ्गहकम्मं – १०६
समसमन्ति – ९०
समादिन्नकम्महेतु – ४९
समादिन्नधुतङ्गो – २०
समादियतीति – १९
समाधि – ५१, ६३, १५०, १७१, २२४, २२५
समाधिक्खन्धं – १०३
समाधिनिमित्तन्ति – १९७
समाधिनिमित्तं – १८४,१९७
समाधिन्द्रियं – २२८
समाधिपरिक्खाराति – २०२
समाधिबलन्ति – १५०
समाधिभावनाति – १७३
समाधियतीति – १९६,१९७
समाधिविपस्सनाचित्तस्स – २०८
समाधिसुखस्स – २२५
समापज्जितब्बविहारा – २०९
समापत्तिकुसलताति – १४७
समापत्तियो – ७३, १५१, १६८, १७१, २२७
समापत्तिवुट्ठानकुसलताति – १४७
समितपापट्ठेन – १०२
समितपापबाहितपापा – ३१
समुग्गततारकं – १४०
समुच्छिन्नरागस्स – २०८
समुदयसच्चं – १८४
समुद्दपरियन्तन्ति – ३०
समुद्दोति – १३२
सम्पजञ्ञञ्च – १५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पजञ्ञेन – २०१
सम्पजञ्ञं – १४९
सम्पजानता – ६२
सम्पजानपञ्ञाय – १७९
सम्पजानो – २८, ६२, १७९, २०१
सम्पजानोति – २०१
सम्पत्तिचक्कन्ति – २२३
सम्पसादनीयसुत्तं – ५१
सम्पसादनीये – ७२, १८९
सम्पसीदतीति – १५८
सम्फप्पलापो – २१२, २१३
सम्बुद्धानं – १२
सम्बोज्झङ्गा – ५८
सम्बोधगामीति – २०९
सम्बोधि – ५५
सम्बोधिकाले – ७२
सम्मतपुग्गलेहि – २०४
सम्मता – २०५
सम्मत्तनियतो – १५८
सम्मदक्खातो – १४२, १४४
सम्मदञ्ञा – ४२, ४३
सम्मप्पञ्ञाय – २२६
सम्मप्पधानविभङ्गे – १७१
सम्मप्पधानाति – ६०
सम्मसनपटिवेधपच्चवेक्खणपञ्ञा – १४७
सम्मसनमनसिकारा – १४७
सम्माञाणन्ति – २१५
सम्मादिट्ठि – ६७, १५१, १७०, २१४, २१५
सम्मादिट्ठिपच्चया – २२८
सम्मादिट्ठीति – १५२
सम्माननायाति – १२५
सम्मापटिपत्तिं – ४९
सम्मापटिपदं – ५९
सम्मापटिपन्नो – १९०
सम्मामनसिकारन्ति – ६४
सम्माविमुत्तीति – २१५
सम्मासङ्कप्पो – १५४
सम्मासति – १८६
सम्मासमाधि – १८६
सम्मासमाधीति – २२५
सम्मासम्बुद्धोति – ७५
सम्मासम्बोधिन्ति – ५८
सम्मुखाविनयलक्खणं – २०५
सम्मुखाविनयो – २०४, २०५, २०६
सम्मुखीभावो – २०४, २०६
सम्मुतिकथा – ६५
सम्मुतिञाणन्ति – १८५
सम्मुतिथेरो – १६४
सयनं – ९९
सयंपभाय – ४५
सरणङ्करो – १७३
सरसचुतिया – ९७
सरितोदकोति – १३२
सरीरकिच्चं – ९, ८१
सल्लापत्थिको – १६
सल्लेखताति – ७८
सवनउग्गहपच्चवेक्खणा – १४७
सवनधारणसम्मसनपटिवेधपञ्ञा – १४७
सवनपटिवेधो – १८५
सवितक्कसविचारा – १४७
सवितक्कसविचारो – १६८
सविपाकं – ५९
ससङ्खारपरिनिब्बायी – १९४
सस्सतदिट्ठिसहगतो – १५६, १८८
सस्सतवादेसु – ५३
सस्सतवादोति – ७०
सस्सं – ११९
सहधम्मिकोति – ७८
साकेततिस्सत्थेरो – २२६
साखल्यं – १४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सागरपरियन्तन्ति – ९४
सागरसीमं – ९४
साटकं – ११७, ११९, १२७, १७६
साठेय्येन – १३, १४, २१
साधुकमनुरक्खाति – १४
सानुचारिको – ७
सामगामो – ८१
सामञ्ञफलानि – १०२, १०३, १०४
सामञ्ञफले – २२, २४, १७४
सामीचिकम्मन्ति – ४३
सायनीयानीति – ९८
सारणीयधम्मा – १९८
सारप्पत्तभावं – २२
सारप्पत्ता – २२
सारम्भजा – ६८
सारिपुत्त – ५६, १५९, २१६
सारिपुत्तत्थेरो – ५३, ८२, १४४, १८१, २२५
सारिपुत्तमोग्गल्लाने – २१८
सारिपुत्ताति – ५६
सारिपुत्तो – ५४, ५८, ८२, १३९, २१६, २१८, २१९, २२९
सालवतिया – १३५
सालिभागं – ४८
सालियवबीजादीनि – ११९
सावकपारमीञाणे – ५४, ५७, ५८, ५९
सावकपारमीञाणं – ५२, ५५, ५८, ५९, २०२
सावकपारमीपटिलाभपच्चया – ९३
सासनट्ठितिया – ७३
सासनब्रह्मचरियं – ८५, १४४, १८६
सासवा – ७०
साहसिकाति – ११८
सिक्खतीति – १६४
सिक्खाकामो – १४८
सिक्खाकोट्ठासोति – १९२
सिक्खानुत्तरियं – २००
सिक्खापदं – ८२, १९२
सिङ्गालकोति – ११२
सिङ्गालकं – १२, १२४
सिङ्गालसुत्तं – ११२
सिङ्गालं – ११
सिनेरु – ७७, १३३
सिनेरुभिमुखा – ४६
सिनेरुसमीपेन – ४६
सिप्पुग्गहणकाले – १२४
सिब्बनसन्तोसो – १७५, १७७
सिलापथवियं – ४३
सिवन्ति – ९४
सीलक्खन्धोति – १८७
सीलतो – २२
सीलदिट्ठिसम्पदा – १९३
सीलदिट्ठिसम्पदासुपि – १९२
सीलधुतङ्गादीहि – १५७
सीलब्बतपरामासो – १५५
सीलब्बतुपादानं – १८८
सीलमयं – १६५
सीलवा – १००, १६४, १८९
सीलविनासको – १५०
सीलविपत्तीति – १५०
सीलविसुद्धि – १५०
सीलसमादानेति – ९३
सीलसमाधितो – १३
सीलसम्पत्तिया – ३५
सीलसम्पदाति – १५०
सीलसम्पन्नोति – १२१
सीलसंवरो – १४८, १५०
सीलालयो – ९५
सीलं – २२, ५१, ५२, ५८, १०३, १४१, १५०, १५१, १५५, १६३, १६८
सीसमत्थकं – ७८
सीहनादन्ति – १०, २५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीहनादो – ११
सीहहनुलक्खणं – ११०
सुकतकम्मकराति – १२६
सुकसाळिकसद्देत्थाति – १३६
सुक्कविपाकन्ति – १८७
सुक्काति – ४२
सुक्को – ४२
सुक्कं – ५९, १८७, २०१
सुक्खकललपटलं – ४७
सुक्खविपस्सकस्स – १९६
सुक्खविपस्सको – ६५
सुखदुक्खप्पटिसंवेदी – ५०
सुखदुक्खविपाकं – १८७
सुखदुक्खादिधम्मायतनं – ८८
सुखनिप्फादकं – ८४
सुखल्लिकानुयोगन्ति – ८६
सुखल्लियनानुयोगं – ८६
सुखविपाकट्ठेनाति – ६०
सुखविपाकोति – २२५
सुखवेदनञ्च – १५८
सुखवेदना – २१४
सुखवेदनियो – १४३
सुखसञ्ञं – १८२
सुखसेवनाधिमुत्तन्ति – ८६
सुखुमपञ्ञा – १०७
सुखुमरूपं – १६३
सुखूपपत्तियोति – १६६
सुगतमहाचीवरं – २७
सुगन्धोति – ४७
सुचरितेनाति – ९८
सुचिपरिवारोति – १११
सुञ्ञतानुपस्सनं – १८२
सुञ्ञतो – १६८, १६९, १७२
सुञ्ञवनेति – १२
सुञ्ञागारेसु – १७
सुतपरिसङ्कितेन – १६५
सुतमया – १६७
सुतावुधन्ति – १६७
सुत्तन्तपरियायं – ६०
सुत्तन्तपिटके – ७४
सुत्तन्तपिटकं – ७३, २१०
सुत्तसन्तोसो – १७५, १७७
सुदस्सनोति – १३३
सुद्दा – ४९
सुद्धचित्तस्स – २३१
सुद्धसङ्खारपुञ्जोयं – ९०
सुद्धावासाति – १९४
सुधाकम्मं – २१०
सुनक्खत्तो – २, ३, ४, ८
सुनिखातइन्दखीलो – ४४
सुन्दरदस्सनो – १३३
सुन्दरहदया – १२०
सुपरिमितपरिच्छिन्नं – २३०
सुपरिसुद्धं – ४७
सुप्पटिपन्नो – ५९
सुप्पटिपन्नोति – ५९
सुप्पट्ठितसति – १८६
सुप्पतिट्ठितचित्ताति – ५८
सुप्पतिट्ठितपादता – ९४
सुप्पतिट्ठितबुद्धीनं – २३१
सुभुजोति – ९८
सुमत्थेरो – ५९, ६४
सुमनदेविया – ३९
सुमागधायाति – १७
सुरभिकुसुमदामं – ३१
सुरामदेन – ११२
सुरं – ११६, १२०
सुवण्णकक्कटका – १३६
सुवण्णचम्पकपुप्फेहि – १४०
सुवण्णतोरणं – ९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुवण्णपासादो – १४१
सुविमुत्तन्ति – १९६
सुवुट्ठितन्ति – १९६
सुसङ्गहितपरिजनता – १००
सुसण्ठानसम्पन्नो – ९८
सुसानभावं – ६
सुसिक्खितो – १३१
सुसूति – ९८
सुसंविहितकम्मन्ताति – १२५
सुसंहितन्ति – ११०
सुहदाति – १२०
सूकरखतलेणद्वारे – ५९
सूकरमंसं – ५
सूचिकम्मकरणट्ठाने – ९६
सूचिपासेन – ५४
सूपो – १३३
सूरियमण्डलं – ४५
सूरियरस्मिसम्फस्सेन – ११३
सूरियुग्गमनकालो – ४६
सूरियोति – ४५, १३३
सूरियं – २, २०, १८१
सेक्खा – ४३, १६६
सेट्ठनादो – ५६
सेट्ठविहारी – १०१
सेट्ठो – ४१, ४२, ७७
सेनासनक्खेत्तं – १८१
सेनासनसन्तोसोति – १८१
सेनासनेनाति – १८१
सेय्यथापि – ५३, ५५, ५७, ८७, १६५, १८३, २१८
सेरीसको – १३८
सेवनचित्तं – २१२
सेवनप्पयोगो – २१२
सेसखीणासवानं – १५९
सेसतण्हा – १५४
सोकपरिदेवानं – १८३
सोचेय्यप्पटिपदा – १६९
सोण्डाति – ११७
सोतविञ्ञेय्या – २८
सोतसम्फस्सादीसुपि – १९७
सोतापत्तिफलट्ठं – ६५
सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय – ६६
सोतापत्तिफलसमापत्तिं – ६३
सोतापत्तिफलं – २१७
सोतापत्तिमग्गक्खणे – २२८
सोतापत्तिमग्गो – ५२, १८८
सोतापत्तिमग्गं – ६३, १८३
सोतापत्तियङ्गानीति – १८५
सोतापन्नसकदागामिनो – १९२
सोतापन्ना – ३९
सोतापन्नो – ४३, ५३, ६३, ६४, ११२, ११४, १९०
सोत्थियन्ति – १७४
सोमनस्सिन्द्रियं – २२८
सोमोतिआदीनि – १३८
सोरच्चन्ति – १४८
सोवग्गिका – ३२
सोवण्णमयं – १३३
सोसानिकङ्गं – १८१
संकिलिट्ठन्ति – २१
संकिलेसिका – २४
संयुत्तनिकाये – २२०
संयोगाभिनिवेसं – १८२
संयोजनानि – १५५
संयोजनानीति – १९२
संयोजयन्ति – १५५
संवच्छरोति – ४७
संवट्टविवट्टकथा – ४४
संवरपधानन्ति – १८४
संवरीपि – १३२
संवेगोति – १५१
संसीदन्तो – ११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसेदजा – १८८
स्वाक्खातो – ५९

ह

हत्थकुक्कुच्चं – १४१
हत्थिनागानं – ४६
हदयङ्गमा – १४८
हदयरूपं – १४१
हनुकं – ११०
हनुभावं – ११०
हरितुपलित्तट्ठाने – ९५
हरितुपलित्तं – १३७
हरीतकीखण्डम्पि – १७०
हानभागियोति – २१९
हासपञ्ञा – १०३
हासबहुलो – १०३
हिरिओत्तप्पानि – १४६
हिरी – ५८, १४६, २२६
हिरोत्तप्पन्ति – २२६
हीनज्झासयो – ४
हीनञ्च – १०१
हीनसम्मतन्ति – ४९
हीनायावत्तो – ३
हेतुपच्चया – १४७
हेतुभूतेन – ३६
हेतूति – ४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथानुक्कमणिका

अ

अदन्तदमनं दानं – २०७
अप्पकेनापि मेधावी – ८३

आ

आयाचितो सुमङ्गल – २३०

ए

एकूनसट्ठिमत्तो – २३०
एवमेतं तदा आसि – ३६

क

को मे वन्दति पादानि – १२९

च

चतुब्भि अट्ठज्झगमा – १६१

छ

छ एते कामावचरा – १६६

त

तस्मा तेन सहा'यं – २३०
ताव तिट्ठतु लोकस्मिं – २३१

द

दीघागमवरस्स दसबल – २३०

न

न मे आचरियो अत्थि – ७८

प

पञ्च सेनासने वुत्ता – १८१
पनादो नाम सो राजा – ३६

ब

बुद्धोपि बुद्धस्स भणेय्य वण्णं – ५४

म

मूलकट्ठकथासार – २३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य

याव बुद्धोति नामम्पि – २३१

स

सत्तवस्सानि भगवन्तं – १६०
सब्बं चत्तालीसाधिकसत – २३०
सहस्सकण्डो सतगेण्डु – ३६
सा हि महाट्ठकथाय – २३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ-सूची

पालि टेक्स्ट सोसायटी (लंदन) – १९७१

पालि टेक्स्ट सोसायटी पृष्ठ संख्या	पालि टेक्स्ट सोसायटी प्रथम वाक्यांश	वि. वि. वि. पृष्ठ संख्या	वि. वि. वि. पंक्ति संख्या
८१६	एवं मे सुतं	१	१
८१७	एतदवोचा ति	२	९
८१८	अमतनिब्बानसच्छिकिरियाय	३	२
८१९	यथा तं आपायिको	३	२४
८२०	एतदवोचा ति	४	१९
८२१	मत्तं मत्तन्ति	५	१४
८२२	अथ नेसं वल्ली	६	१०
८२३	चेतियन्ति	७	६
८२४	उपट्ठपथन्ति	८	१
८२५	रक्खतेन्ति	८	२५
८२६	अहं अतिमहन्तं	९	२०
८२७	पाटिकपुत्तो वा ति	१०	१६
८२८	करोति। तेन	११	१४
८२९	कोत्थू ति सिगालो	१२	९
८३०	पच्चत्तं येव निब्बुति	१३	५
८३१	एत्तकं धम्मकथं	१३	२६
८३२	एवं मे सुतन्ति	१५	१
८३३	यावता ति यत्तका	१६	१
८३४	केन पुग्गलेन	१६	२१
८३५	असम्भिन्नकेसरसीहं	१७	१७
८३६	कथं अपरिपुण्णा ति	१८	१३
८३७	लब्भन्ती ति लाभा	१९	१३
८३८	खीयनलक्खणं	२०	९
८३९	थद्धो होति	२१	७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८४०	अग्गं पापेतू ति	२२	३
८४१	जानिस्ससी ति	२२	२३
८४२	बुद्धो सो भगवा	२३	१९
८४३	सो एव वो उद्देसो	२४	१४
८४४	अञ्ञाणत्थम्पी ति	२५	१०
८४५	एवं मे सुतन्ति	२६	१
८४६	महाजनस्स ठान-निसज्जानं	२७	१
८४७	ये मयं अगोचरे	२७	२१
८४८	कुसलं वट्टगामि च	२९	३
८४९	मे दानी''ति	३०	२
८५०	धम्मं अपचयामानो ति	३०	२२
८५१	मदप्पमादा	३१	१७
८५२	तेल मधुफाणिकादिसु	३२	१०
८५३	एकिदन्ति	३३	७
८५४	सम्मेदन्ति	३४	५
८५५	नदीविदुग्गन्ति	३४	२५
८५६	वड्ढित्वा असङ्खेय्यतं	३५	२१
८५७	सद्धिं पुञ्ञकम्मं	३६	२२
८५८	इदं तं आसवक्खयपरियोसाने	३७	२९
८५९	एवं मे सुतन्ति	३९	१
८६०	कारेसि । तस्स	३९	१६
८६१	ब्राह्मणकुला ति	४०	२३
८६२	ब्रह्मजाति ब्रह्मतो	४१	१८
८६३	वत्तन्ता व सुज्झन्ती ति	४२	९
८६४	जने तस्मिन्ति	४३	७
८६५	असंहारिया ति	४४	२
८६६	पयसोतत्तस्सा ति	४४	२१
८६७	परिक्खितं	४५	१६
८६८	चक्कवालसमीपेन	४६	२०
८६९	कलम्बुका ति नाळिका	४७	१३
८७०	मरियादं ठपेय्यामा ति	४८	११
८७१	विस्सुकम्मन्ते	४९	९
८७२	अनुभवति	५०	९
८७३	एवं मे सुतं	५१	१
८७४	पे०... नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्ति	५२	१
८७५	धुतङ्गगुणे	५२	२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८७६	सङ्घाटिकण्णं	५३	२०
८७७	दसबलस्स गुणे	५४	१३
८७८	पटिग्गहेतुं	५५	१०
८७९	इति किरा ति	५६	४
८८०	अविदितट्ठाने	५७	४
८८१	किलिट्ठं करोन्ति	५७	२५
८८२	आरभि	५८	२०
८८३	ठाने धम्मेसू ति	५९	१३
८८४	वेदनानुपस्सनासतिपट्ठानं	६०	११
८८५	तं भगवा ति	६१	६
८८६	अयं दुतिया ति	६२	६
८८७	देवतानन्ति	६३	७
८८८	पनेत्थ सङ्खेपो	६४	१
८८९	आरद्धविपस्सना	६४	२२
८९०	अरहत्तमग्गट्ठा	६५	२२
८९१	तथा यस्स	६६	२६
८९२	न च वेभूतियन्ति	६७	२१
८९३	समकारी ति	६८	२३
८९४	तिण्णं संयोजनानं	६९	१६
८९५	एत्तेकन्ति दस्सेथा ति	७०	१४
८९६	वा ब्राह्मणो वा	७१	१०
८९७	अथकिलमथानुयोगन्ति	७२	६
८९८	अभिधम्मपिटकं	७३	३
८९९	धम्मसङ्गहो	७४	३
९००	दससहस्सीलोकधातुं	७५	४
९०१	सब्बे पि तथागता	७५	२६
९०२	एकबुद्धधारणी	७६	१८
९०३	अप्पटिपुग्गलो	७७	२०
९०४	पस्स खो त्वं	७८	१७
९०५	एवं मे सुतन्ति	८०	१
९०६	विरत्तरूपा ति	८०	१३
९०७	हत्थपादपहारादीनि	८१	१५
९०८	एकं बहुस्सुतं	८२	११
९०९	होती ति आदिमाह	८३	११
९१०	सम्मापटिपन्नस्स	८४	११
९११	इदमेव तन्ति	८५	९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१२	सम्माव्यञ्जने च	८६	५
९१३	गम्भीरनेमो ति	८७	३
९१४	सुतानुसारी ति	८७	२५
९१५	एवं अभिसम्बुदं	८८	१६
९१६	न आदिब्रह्मचरियकन्ति	८९	१०
९१७	एत्थापि पञ्ञत्ति चेव	९०	१०
९१८	एवं मे सुतन्ति	९१	१
९१९	ततो भगवता	९१	१८
९२०	बोधिसत्तो तादिसेन	९२	२१
९२१	कुसला नाम	९३	१६
९२२	पारमीनं आनुभावेन	९४	१०
९२३	तत्थ सच्चे ति	९५	४
९२४	अदासि । पानं देन्तो	९५	२३
९२५	इध कम्मं नाम	९६	२०
९२६	निब्बत्तति । तथा परं	९७	१७
९२७	यापयति वसिद्धिभावनाय	९८	१०
९२८	वचनमेव तस्स	९९	१०
९२९	द्वे लक्खणानि निब्बत्तन्ति	१००	१३
९३०	एरयन्ति भणन्तो	१०१	९
९३१	एणिजङ्घलक्खणं	१०२	७
९३२	विमुत्तिक्खन्धं	१०३	९
९३३	सारम्भं मानं	१०४	४
९३४	चेव सुखुमत्थरणादिदानञ्च	१०५	४
९३५	उट्ठहित्वा : केन	१०६	६
९३६	अभिनिपुणा मनुजा ति	१०७	४
९३७	उब्बाधनाया ति	१०८	२
९३८	पटिभोगियानी ति	१०९	१
९३९	जानातू ति	११०	१
९४०	ति द्विदुगमो	११०	२२
९४१	एवं मे सुतन्ति	११२	१
९४२	घनकोटियो अत्थि	११२	१६
९४३	तस्मा पातो व	११३	२२
९४४	पापं कम्मं करोती ति	११४	१९
९४५	चेव भोगा	११५	१९
९४६	भरिया पि बाहि	११६	१८
९४७	मित्तामच्चानं परिभूतो	११७	१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९४८	अत्थेसु जातेसू ति	११८	११
९४९	भयस्स किच्चं करोती	११९	११
९५०	पमत्तस्स सापतेय्यन्ति	१२०	८
९५१	वा इस्सरियापटिलाभं	१२१	५
९५२	तस्मा एवं आपदासु	१२२	४
९५३	पि कुलवंसं	१२३	२
९५४	सम्मापटिपन्नेसु	१२३	२५
९५५	सब्बदिसासु रक्खं	१२४	२१
९५६	दक्खा च होती	१२५	१६
९५७	मयं किञ्चि	१२६	९
९५८	सण्हो ति	१२७	२
९५९	पिण्डाय पाविसि	१२७	२५
९६०	एवं मे सुतन्ति	१२९	१
९६१	को मे वन्दति	१२९	१४
९६२	समणकप्पेहि फलं	१३०	२६
९६३	सब्बे. मारसेनप्पमद्दना	१३१	२२
९६४	जानन्ति । किन्ति	१३२	१८
९६५	मणिमयं, पच्छिमपस्सं	१३३	११
९६६	किरेत्थ जानपदो	१३४	८
९६७	उपपरिक्खमाना	१३५	७
९६८	कुलीरका ति	१३६	२
९६९	चण्डा ति	१३६	२२
९७०	भिक्खुसङ्घे गारवेन	१३७	१५
९७१	एवं मे सुतन्ति	१३९	१
९७२	किर सन्थागारे	१३९	१७
९७३	पदुमवनं	१४०	२२
९७४	अनुविलोकेत्वा ति	१४१	१७
९७५	अम्हाकं सत्थारा	१४२	१३
९७६	किं पञ्च आहारा	१४३	१८
९७७	भिक्खुना : अत्थि खो	१४४	१५
९७८	नामेन्ति । निब्बानं	१४५	१४
९७९	पापमित्तता ति	१४६	१३
९८०	पच्चवेक्खनेसु	१४७	१५
९८१	लज्जी कुक्कुच्चको	१४८	१०
९८२	विनयट्ठकथाय	१४९	८
९८३	समथो समाधि	१५०	६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९८४	कम्मस्सकतं ञाणं	१५०	२६
९८५	अधिमुत्ति नाम	१५१	२२
९८६	चेतनासम्पयुत्तधम्मा	१५२	१९
९८७	अकुसला कामधातू	१५३	२१
९८८	ते भूमका धम्मा	१५४	१५
९८९	पुरिमा भिक्खवे	१५५	११
९९०	विपरियेसगाहो	१५६	१०
९९१	ति, एतं मानं	१५७	९
९९२	सक्काय समुदयो ति	१५८	९
९९३	जानाति तथा	१५९	३
९९४	वस्सं अनुबन्धित्वा	१५९	२७
९९५	आहुनं अरहन्ति	१६०	२१
९९६	चतुब्भि अत्थज्झगमा	१६१	२०
९९७	दक्खिणेय्यअग्गी ति	१६२	१७
९९८	उप्पज्जति चेतना	१६३	१४
९९९	थेरतिके	१६४	१२
१०००	अनुमोदनवसेन	१६५	११
१००१	अत्तनो रूपं	१६६	५
१००२	चिन्तामयादिसु अयं	१६७	१
१००३	मंसचक्खुं	१६७	२५
१००४	किलेसानं अभावा	१६८	२३
१००५	मनोमोनेय्यं	१६९	२१
१००६	अकरणं अत्ताधिपतेय्यं	१७०	१९
१००७	सङ्खेपो । वित्थारो	१७१	१४
१००८	वुत्ता सञ्ञादयो	१७२	१७
१००९	उप्पन्नं कामवितक्कं	१७३	१३
१०१०	एत्थ च चीवरं	१७४	१४
१०११	सदिसेन भवितब्बं	१७५	११
१०१२	यथा लद्धेन	१७६	८
१०१३	नीलकद्दमकाळसामेसु	१७७	१६
१०१४	इतरीतरचीवरसन्तुट्ठियाति	१७८	२०
१०१५	अचिन्तेत्वा	१७९	१९
१०१६	सेनासनखेत्तं	१८१	५
१०१७	वुत्तनयेनेव	१८२	६
१०१८	एवं पटिसम्भिदामग्गे	१८३	२
१०१९	ति, एवं परवम्भनं	१८४	४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०२०	आणञ्च यथाह	१८५	२
१०२१	अवेच्चप्पसादेना ति	१८५	१९
१०२२	धम्मपदानी ति	१८६	१५
१०२३	समापत्तिविक्खम्भिते	१८७	११
१०२४	गन्थनवसेन	१८८	११
१०२५	पटिग्गाहकतो	१८९	१०
१०२६	समणपदुमो नाम	१९०	१८
१०२७	समन्नागतो भिक्खु	१९१	१३
१०२८	व्यसनं भोगव्यसनं	१९२	१६
१०२९	अरियसावकानं	१९३	१५
१०३०	उपहच्चपरिनिब्बायी	१९४	९
१०३१	चत्तारो फलट्ठा	१९५	६
१०३२	न सन्तिट्ठती ति	१९६	२
१०३३	धम्म पटिसंवेदिनो	१९६	२३
१०३४	बाहिरानी ति	१९७	१६
१०३५	सोमनस्सूपविचारा ति	१९८	१७
१०३६	मायावी ति	१९९	१३
१०३७	अनुत्तरियानी ति	२००	१०
१०३८	अभिजातियो ति	२०१	९
१०३९	समाधिपरिक्खारा	२०२	१०
१०४०	ति वत्वा, येहि	२०३	१६
१०४१	सीलविपत्तिया	२०४	८
१०४२	सम्मुखाविनयेन	२०५	१३
१०४३	आपत्तिं आपन्नो ति	२०६	६
१०४४	अनधिगतस्सा ति तस्सेव	२०७	६
१०४५	इमेसु पन अट्ठसु	२०८	१
१०४६	लद्धुं ? परो नाम	२०९	५
१०४७	सुब्बचो होती ति	२१०	६
१०४८	अधो ति हेट्ठा	२११	४
१०४९	सीलादिगुणसम्पन्ने	२१२	३
१०५०	वा सङ्खारारम्मणो वा	२१३	७
१०५१	अव्यापादे पि एसेव	२१४	१२
१०५२	रागो मे पहीणो ति	२१५	१३
१०५३	एवं मे सुतन्ति	२१७	१
१०५४	भगवा अहं तुम्हाकं	२१७	१८
१०५५	करोन्तो भिक्खूनं	२१८	२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०५६	संयुत्तनिकाये अप्पमादवग्गे	२२०	४
१०५७	अकुप्पा चेतोविमुत्ती	२२१	७
१०५८	उप्पादेतब्बपदे	२२२	१४
१०५९	पटिरूपदेसे उपनेति	२२३	१९
१०६०	पच्छिमस्स पच्छिमस्स	२२५	४
१०६१	तरुणसमथ विपस्सनापञ्ञाय	२२६	७
१०६२	सङ्गणिकारामस्सा ति	२२७	९
१०६३	वेदनानानत्तन्ति	२२८	१
१०६४	चतुसु मग्गेसु	२२८	२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

May the merits and virtues
earned by the donors and selfless workers of
Vipassana Research Institute, Igatpuri
be shared by all beings.

May all those
who come in contact with
the Buddha Dhamma through
this meritorious deed put the Dhamma
into practice and attain the best
fruits of the Dhamma.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

DEDICATION OF MERIT

May the merit and virtue
accrued from this work
adorn the Buddha's Pure Land,
repay the four great kindnesses above,
and relieve the suffering of
those on the three paths below.

May those who see or hear of these efforts
generate Bodhi-mind,
spend their lives devoted to the Buddha Dharma,
and finally be reborn together in
the Land of Ultimate Bliss.
Homage to Amita Buddha!

NAMO AMITABHA

Printed and Donated for free distribution by
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11th Floor, 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei, Taiwan R.O.C.
Tel: 886-2-23951198 , Fax: 886-2-23913415
Email: overseas@budaedu.org.tw
Printed in Taiwan
1998 , 1200 copies
IN046-2006

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Printed by
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11th Floor, 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C.
This book is for free distribution, it is not to be sold.
1998, 1200 copies
IN046-2006

ISBN 81-7414-055-7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org